श्रीः ।

शालहोत्रसंग्रह ।

(चित्रदर्पण–सहित)

घोडोंके क्रय विक्रय, शुभाशुभ गुण दोष, लक्षण-कुलक्षण,
अंग–प्रत्यंग–निरीक्षण तथा उनके विषयकी यावत्
बातें और सम्पूर्ण रोगोंके उपचार, विचार,
निदान, चिकित्साका विधिविधानासे
विस्तारपूर्वक वर्णन ।

श्रीकेशवसिंहजी साहब ताल्लुकेदार तिभरिद्वारा
नानाप्रकारके सुंदर, सुगम भावभरित
छंदोंमें निर्मित ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष–"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्–प्रेस, बम्बई

संवत् १९८५, शके १८५०



मुद्रक और प्रकाशक–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

मालिक–"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई



प्राक्कथन ।

सोरठा–विविध ग्रंथकर सार, निजपर अनुभवहू सहित ।
बुधिवर कविन विचार, मथि केशव अम्मृत लह्यो ॥

महाशय ! हमारे पूर्व ऋषि महर्षि प्रणीत सर्वमान्य संस्कृत ग्रंथ, संस्कृत पठन पाठनाभावसे प्रायः लुप्तप्राय होते जाते हैं, जिससे हमारी विद्या, बुद्धि, ज्ञान, विचार क्रमशः उन्हींके साथ साथ स्वाहा हो रहे हैं। हममे क्या करनेकी शक्ति थी और वर्तमान कालमें हम केवल विद्याभावसे कैसे अशक्त निर्जीव हो रहे हैं। जिस देशमें, जिन मनुष्योंमें विद्यागुणका गौरव है वही देश, वे ही मनुष्य धन्य हैं, लक्ष्मी महारानी उन्हींके आगे हाथ बांधे खड़ी हैं, ऐसी दशामें बड़े विचारका स्थल यही है कि विद्याकी वृद्धि कैसे हो? किन्तु परमात्माकी कृपासे अब मुद्रणकलाका प्रादुर्भाव होनेके कारण आप ही आप नित्यप्रति लाखों ग्रंथ ऐसी युक्तिसे छपते और वृद्धि पाते हैं कि जो पुस्तक कुछ ही पूर्व आपको ५०)रु० में भी समयपर इच्छानुरूप न मिलती थी अब वर्तमान कालमें वैसी ही नहीं किन्तु उससे सौ गुणी उत्तम पुस्तक रुपये दो रुपयेमें घर बैठे मिल जाती हैं। दृष्टान्तमें बम्बईका "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्–यन्त्रालय प्रत्यक्ष है, भाषा या संस्कृतकी कोई भी पुस्तक मँगा परीक्षा कर लीजिये बहुत ही कम खर्चमें मिलेगी, इस ईश्वरानुग्रहसे अब विद्वान् और गुणवान् होना कोई बहुत कठिन काम नहीं रहा, बहुत ही सुगम और सरल हो गया है।

यह जो पुस्तक "शालहोत्रसंग्रह" आपके दृष्टिगोचर है वह श्रीमान् तल्लुकेदार श्रीकेशवसिंहजी साहब तअल्लुके-तिआरि, तहसील-मोहाना, जिला-उन्नाव रचित और संगृहीत है। यह पुस्तक दोहा, चौपाई, सोरठा, छप्पय, कुण्डलिया, कवित्त, सवैया, हरिगीतिका, पद्धरी, भुजंगप्रयात, नरेन्द्र, तोमरादि नानाप्रकारके रुचिर, सरल छंद–प्रबंधसे विभूषित है तथा बहुत ही उपयोगी, बहुतेरे अनुभव और विचित्र चमत्कारिक प्रयोगों एवं परमपूज्य धर्मधुरंधर ऋषि, मुनि, पाण्डव, नकुल, शालहोत्रादि महान् ऋषियोंकी उक्ति युक्तिसे परिपूर्ण है। पूरा ग्रंथ दो काण्डोंमें विभक्त है।

प्रथमकाण्डमें–अश्वोत्पत्तिसे आदिले जन्मफल, रात्रि-दिवस–जन्मफल, वर्णविचार, गणविचार, आयुप्रमाण, बाजी–उत्पत्तिदेश, उत्तम, नीच अनेकों प्रकारके रंग

सितारे-पेशानी दोष, खरीद समयकी शुभाशुभ चेष्टा, श्यामताभ्रमौरी, शुभाशुभ-अगपहिचान, दंतविचार, युद्धसमय घोडा साजनेके शुभाशुभ लक्षण, वेगवर्णन, सवारीवर्णन, कदम-वर्णन आदि सैकडो परमोपयोगी विषय वर्णित हैं ।

द्वितीयकाण्डमें-घोडेकी सर्वोत्कृष्ट चिकित्सा (सर्वप्रकारके रोगों और आधि-व्याधि आदि बहुतेरे दैहिक दैविक निमित्तोंकी) विस्तारपूर्वक विधि विधान सहित वर्णित है तथा अश्व ताजा, तैयार, तेज, चालाक बनानेके अनेकों चूर्ण और मसाले हैं । सारांश यह कि घोडे सम्बधी कोई बात शेष नहीं है ।

इस प्रकार यह सर्वथा श्रेष्ठ और परम मान्य अपूर्व चमत्कारिक सिद्ध शालहोत्र ग्रंथ है, यदि निरंतराभ्यासी भारतवासी सुजन जन चाहेंगे तो वह इससे अनायास ही कुछ गुण ढंग सीखकर बडे भारी द्रव्योपार्जनके भागी बनेंगे । प्रायः लोगोंके व्यवहारमें घोडा आता है, उसमें भारतवासी तो घोडेका रखना बडा ही उच्चतर समझते हैं । यह परम दुष्प्राप्य दुर्लभ ऋषि-मुनि-प्रोक्त ग्रन्थ (घोडेके क्रय, विक्रय और व्यवहारमें) आपहीके लिये परम हितैषी सत्यवक्ता साक्षी और सच्चा सहायकमित्र होकर प्राप्त हुआ है । स्वल्प मूल्यहीमें कठा, दुस्साध्य, भयानक काम शाल्होत्र पास रखनेसे सहज ही दमडियोंमें सिद्ध होता है ।

इस ग्रन्थमें घोडोंके अनेक चित्र हैं । प्रति चित्रमें नम्बर पडा हुआ है, पाठक जब चाहेंगे सहजहीमें ग्रन्थके पृष्ठ लिखित घोडाके नम्बरसे ग्रन्थके आदिमें सम्मिलित चित्रदर्पणके चित्रोंमें उसी नम्बरका घोडा खोज लेंगे ।

फलतः घोडोंके प्रेमी और व्यवसायियोंको यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है, क्योंकि जो हुनर सर्वस्व देकर भी न पावें वह इससे अनायास ही सीखेंगे । घोडा पास होते हुए मार्गमें चलते समय भी यह पुस्तक अवश्य पास होनी चाहिये । क्या राजा, क्या रंक, क्या धनी, क्या कंगाल, क्या साधु, क्या गृहस्थ यह पुस्तक सबको समान सुखदायी है । अन्ततः घोडोंके दलाल, व्यवसायी, धनिक और जन साधारण सभी इस पुस्तकसे बहुत कुछ शिक्षा प्राप्त करेंगे और बडा लाभ उठावेंगे । शुभम् ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

श्रीः ।

शालहोत्रसंग्रहकी विषयानुक्रमणिका ।



इत्यनुक्रमणिका समाप्त।



यज्ञशाला चित्र नम्बर १ (देखोपृष्ठ २)

तैलिया कुमयत रग घोडा न २९ (दे पृ ४२)



मुश्की रग घोडा न्बर ३१ (दे पृ ४२)

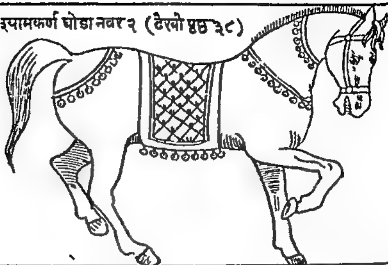


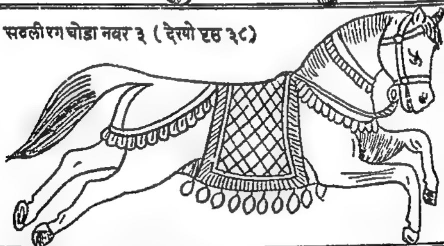
टोपरा रग घोडा नंबर ३० (दे पृ ४२)

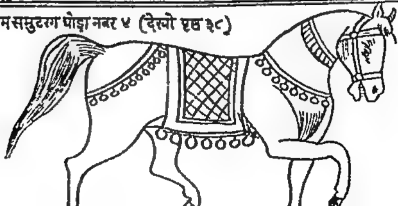


नोकरा रग घोडा नम्बर ३२ (दे पृ ४२)




द्वितीय श्यामकर्ण घोड़ा नंबर २ (देखो पृष्ठ २८)


सब्जी रंग घोड़ा नंबर ३ (देखो पृष्ठ २८)


प्रथम समुद्रंग घोड़ा नंबर ४ (देखो पृष्ठ २८)

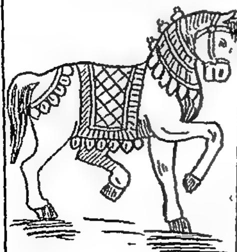
सिरगा रग घोडा नबर ३३ (दे पृ ४२)



सब्जा कोरण घोडा नबर ३५ (दे पृ ४२)



द्विविध सब्ज रग घोडा नं ३४ (दे पृ ४२)



सब्जा घोडा नबर ३६ (दे पृ ४२)



द्वितीय समुदरग घोड़ा नंबर ५ (देखो पृष्ठ ३१)



तृतीय समुदरग घोड़ा नंबर ६ (दे० पृ० ३१)



सुरंग अशुभ घोड़ा नंबर ७ (दे० पृ० ३१)



सुरखारंग शुभ घोड़ा नं० ८ (दे० पृ० ३१)



केहरीरग घोडा नवर३७ (दे पृ ४४)



बदामीरग घोडा नवर३९ (दे पृ [illegible])

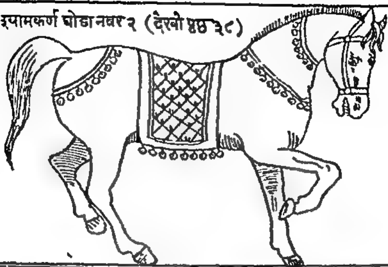


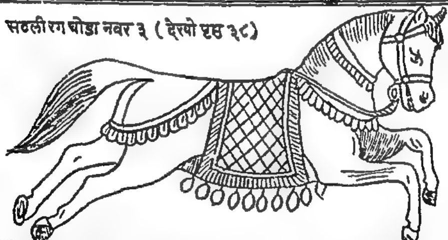
सिराजीरग घोडा नवर३८ (दे पृ ४४)

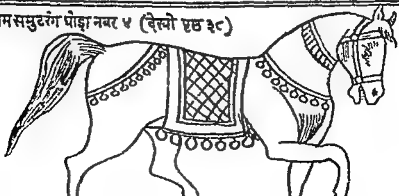


बोल्लारग घोडा नवर४० (दे पृ ४४)

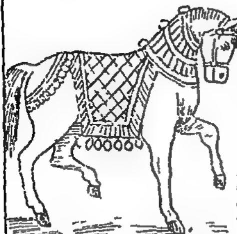



द्वितीय श्यामकर्ण घोड़ा नबर २ (देखो पृष्ठ ३८)


सब्ली रग घोड़ा नबर ३ (देखो पृष्ठ ३८)


प्रथम समुद्रंग घोड़ा नबर ५ (देखो पृष्ठ ३८)

खजरेट रग घोडा नबर४१ (दे पृ ४४)



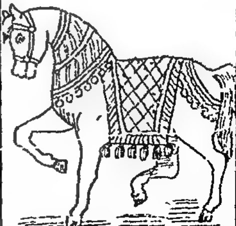
विलोरे रग घोडा नबर४२ (दे पृ ४५)



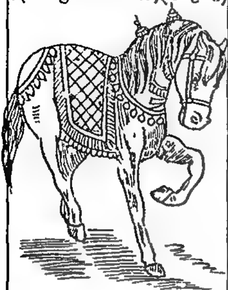
कागजी रग घोडा नबर४२ (दे पृ ४५)



कपूरी रग घोडा नबर४४ (दे पृ ४५)



द्वितीय समुदरग घोडा नंबर ५ (देखो पृष्ठ ३१)



तृतीय समुदरग घोडा नंबर ६ (दे॰ पृ॰ ३१)



सूररग अशुभ घोडा नंबर ७ (दे॰ पृ॰ ३१)



सुररवारग शुभ घोडा नं॰ ८ (दे॰ पृ॰ ३१)



तुसीरग घोडा नवर ४५ (देखोपृष्ठ४५)



भिग रग घोडा नवर ४७ (देखो पृष्ट ४५)



धूरियारग घोड़ा नबर ४६ (देखोपृष्ठ ४५)



कबूतरग घोडा नबर ४८ (दे पृ ४५)



सुरग गुजारग घोड़ा नं ९ (दे॰ पृ॰ ३९)



श्यानसुरग घोडा नंबर १० (देखो पृष्ठ ३९)



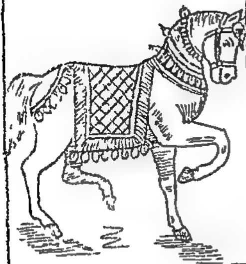
तैलसुरग घोडा नंबर ११ (देखो पृष्ठ ३९)



केहरी सुरग घोडा नंबर १२ (देखो पृष्ठ ३९)



रमनी रंग घोडा नंबर ४९ (देखो पृष्ठ ४५)



चाल घाररंग घोडा नंबर ५१ (देखो पृष्ठ ४६)



कल्याणी रंग घोडा नंबर ५० (देखो पृष्ठ ४६)



चम्मा रंग घोडा नंबर ५२ (देखो पृष्ठ ४६)



चिनीरग घोडा नबर १३ (देखो पृष्ठ ४०)



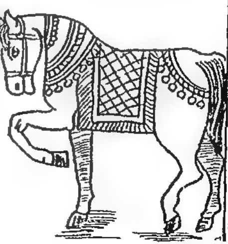
चौघरग घोडा न १५ (दे पृष्ठ ४०)



सजाफरग घोडा नबर १४ (देखो पृष्ठ ४०)



नीलरग घोडा नबर १६ (देखो पृष्ठ ४०)



लख्वी रग घोडा नबर ५३ (देखो पृष्ठ ४६)



धूसरा रग घोडा नबर ५४ (दखो पृष्ठ ४६)

मकसी रंग घोडा नंबर १७ (देखो पृष्ठ ४०)



ताबडा रंग घोडा नंबर १९ (देखो पृष्ठ ४०)



हरदल रंग घोडा नंबर १८ (देखो पृष्ठ ४०)



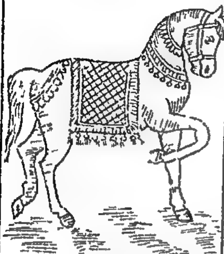
अरुण रंग घोडा नंबर २० (देखो पृष्ठ ४०)



सुकाली रंग घोड़ा नंबर ५५ (देखो पृष्ठ ४७)

हरदल रंग घोडा नंबर ५६ (देखो पृष्ठ ४७)

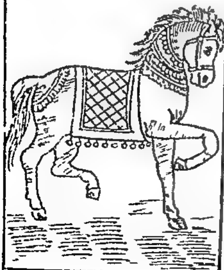
श्यान कर्ण घोडा नबर२१ (दे पृ ४१)



मोमिया रग घोडा नबर२३(दे पृ ४१)



अबलरव र ग घोडा नबर२२ (दे पृ ४१)



मटिहा रग घोडा नबर२४ (दे पृ ४१)



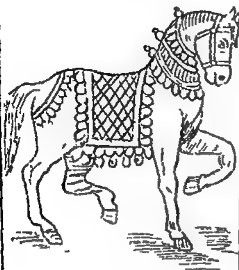


नूसली रग घोडा नबर ५७ (देखो पृष्ट ४७)



अहि मूसली रग घोडा नबर ५८ (देखो पृष्ठ ४७)

महुवा रग घोडा नबर२५ (दे पृ ४१)



फुलवारी रग घोडा नबर२७ (दे पृ ४१)



कुल्ला रग घोडा न॰२६ (दे पृ ४१)



कुमईत रग घोडा नबर२८ (दे पृ ४२)



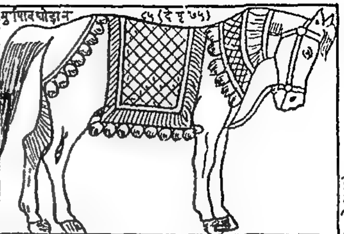
स्तग रग घोडा नबर ५९ (देखोपृष्ठ ४७)

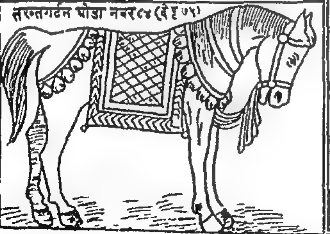
पचकल्याण रग घोडा नबर ६० (देखोपृष्ठ ४७)

पिस्तई रग घोडा नबर ६१ (देखो पृष्ठ ४७

चक्रवाक रग घोडा नबर ६२ (देखो पृष्ठ ४८)


सुतर दंत घोड़ा नंबर ८३ (दे पृ ७५)


(दे पृ ७५)


तरन्तगर्दन घोड़ा नंबर ८४ (दे पृ ७५)


हीनदंत घोड़ा नंबर ८६ (देखो पृष्ठ ७५)

मलि कच्छ रग घोडा नं० ६३ (देखोपृष्ठ ४८)

मगल अष्टक रग घोड़ा नं० ६४ (दे० पृ० ४८)



अहिमुखी घोड़ा नं ८७ (दे पृ ७७



उपरकलेदा होठ उठाते घोडा न ८ (दे पृ ७७)



कराली दोष घोडा न ९ (दे पृ ७७



मूसली घोडा नंबर ९ (दे पृ ७६



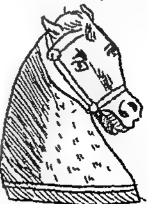
ससाकरण घोड़ा न ११ (दे पृ ७७



गजकरण घोडा न १२ (दे पृ ७७



एक छोटा कान एक बडा कान घोडा न १२ (दे पृ ७७)



तापी घोडा न ७ (देखो पृष्ठ ७७

सुगल रंग घोडा नंबर ६५ (दे॰ पृ॰ ४८)

वधिक रंग घोडा नंबर ६६ (दे॰ पृ॰ ४८)



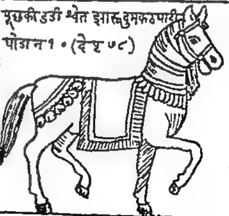

चक्रदोष घोडा न १५ (दे पृ ७७)


महिषागदोषघोडा न १६ (दे पृ ७७)


बिल्लीनेत्रवर्णदोषघोडा न १७ (दे पृ ७७)

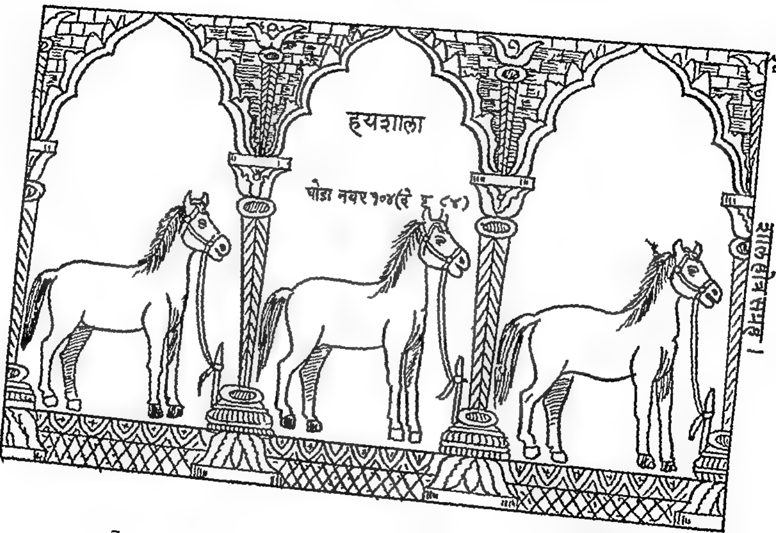

कामाली थैलग्रीव मनीदोष
घोडा न १८ (दे पृ ७७)


कालिज लिंगपर टीका माहुमी
सुरसुरमी घोडा न १९ (दे पृ ७७)


पूछकी डंडी श्वेत झारूदुमकठपादीन
घोडा न १० (दे पृ ७८)

चापदस्त रग घोड़ा नवर ६७ (दे॰ पृ॰ ४८)

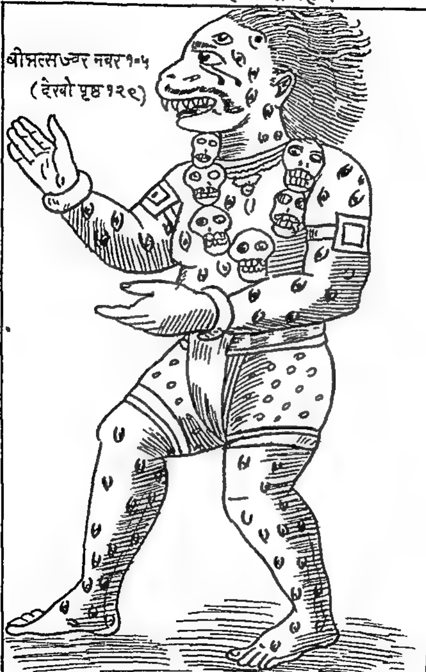
अरजुल रग घोड़ा नवर ६८ (देखो पृष्ठ ४९)


हयशाला

सबुज पायरंग घोड़ा नंबर २१
(दे पृ ४१)

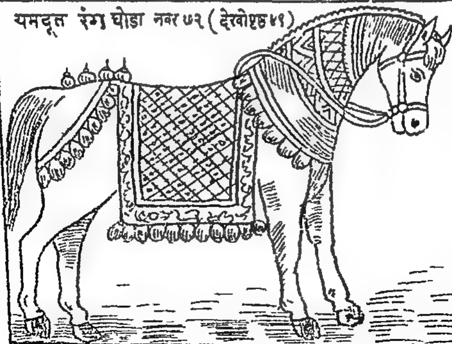


श्वेतचरण घोडा न० ७० (दे पृ २१)


बीभत्सज्वर नवर १-५
(देखो पृष्ठ १२९)

चौपटरंग घोड़ा नंबर ७१ (देखोपृष्ठ४१)

यमदूत रंग घोड़ा नंबर ७२ (देखोपृष्ठ४१)



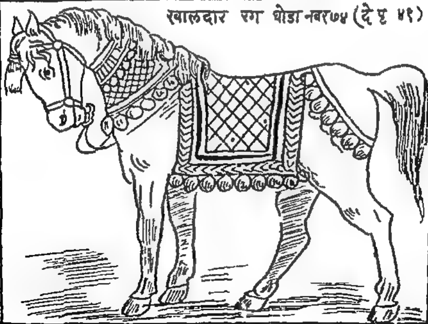


त्रिशिराज्वर नबर-१०६ (देखो पृष्ठ १३०



फपिला ज्वर नमर १०७ (देखो पृष्ठ १३०)


समरदूत रग घोडा नबर७३ (दे पृ ५१)


ख्यालदार रग घोडा नबर७४ (दे पृ ५१)


भस्म प्रहार ज्वर नंबर १०८
(देखो पृष्ठ १३०)


त्रिपाद् ज्वर नंबर १०९
(दे पृ १३१)



आलियारंग घोड़ा नम्बर ७५ (देखो पृष्ठ ५०)

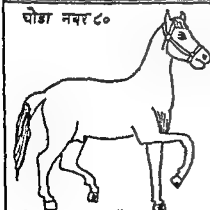

मूत्र शूल घोडा नं० ११३ (दे० पृ० १५७)


घोडा नंबर ७६


घोडा नंबर ७७

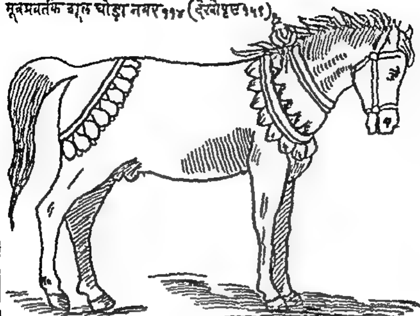

घोडा नंबर ७८


घोडा नंबर ७९


घोडा नंबर ८०


घोडा नंबर ८१

मूत्रप्रवर्तक शूल घोड़ा नंबर ११४ (देखोपृष्ठ १५१)



लीदिबद शूल घोड़ा नंबर ११५ (देखोपृष्ठ १५१)





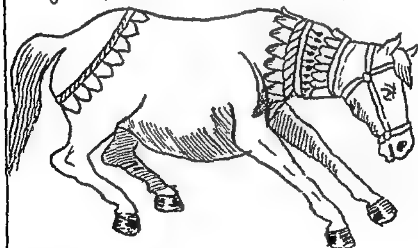
घोडी नंबर ८२ (दे पृ ७२)

वायशूल घोडा नंबर ११६ (देखो पृष्ठ १६०)

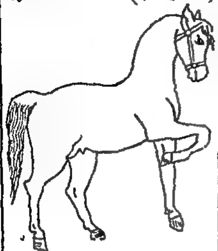
दूसरा वायशूल घोडा नंबर ११७ (देखो पृष्ठ १६०)



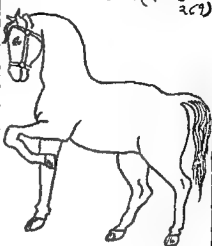

दुम डामरी शूल घोडा नंबर ११८ (देखो पृष्ठ १६१)


वायुभक्ष शूल घोडा नंबर ११९ (देखो पृष्ठ १६१)

हड्डा घोडा नंबर १४८ (देखो पृष्ठ २८९)



मोतरा घोडा नंबर १४९ (देखो पृष्ठ २८९)



वैजा मोतरा घोडा नंबर १५० (दे पृ २८६



गज पैर घोडा न १५१ (देखो पृष्ठ १००



अॅतावरि शतल घोडा नबर १२० (देखो पृष्ठ १६१)



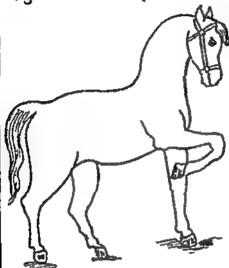
जीमार शतल घोडा नबर १२१ (देखो पृष्ठ १६१)



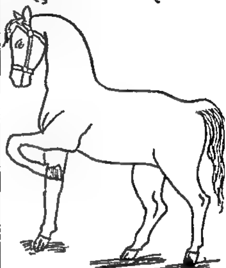
कुलिज शतल घोडा नबर १२२ (देखो पृष्ठ १६२)



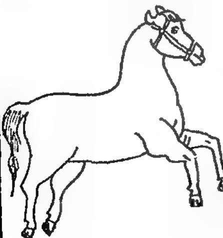
जानुआ घोडा नबर १५२ (देखोपृष्ठ २८८)



बेरहड्डी घोडा नबर १५३ (देखोपृष्ठ २९०

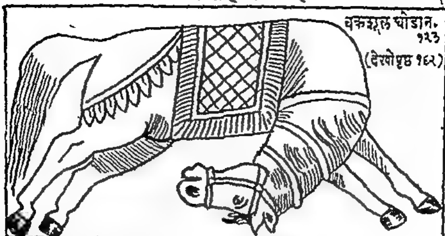


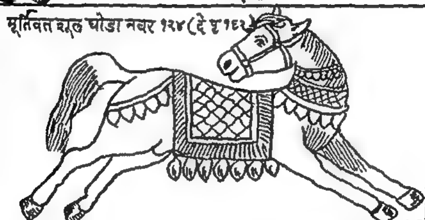
जेरयाई घोडा न १५४ (दे पृ २९३)

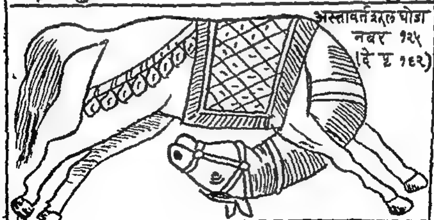


चकावरी घोडा न १५५ (दे पृ २९४)




वक्रशूल घोडा न.
१२३
(देखो पृष्ठ १६२)


मूर्तिवत शूल घोडा नबर १२४ (दे पृ १६२)


अस्तावर्त शूल घोडा
नबर १२५
(दे पृ १६२)

पुस्तक घोडानबर१५६ (दे पृ २१५)



मानारोग घोडानबर१५७ (दे पृ २१६)



सुम फाटे घोड़ानबर १५८ (दे पृ २१६)

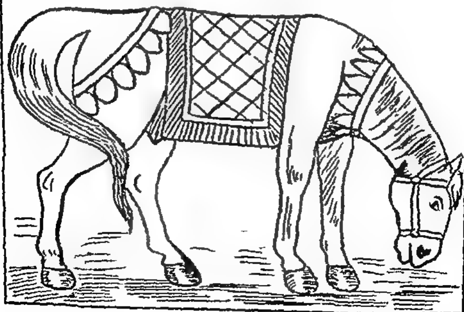


छाला सुम भीतर घोडानबर१५९ (दे पृ २१७)



वात शूल घोडा नबर १२६ (देखो पृष्ठ १६३)

शुष्क वातशूल घोडा नबर १२७ (देखो पृष्ठ १६४)



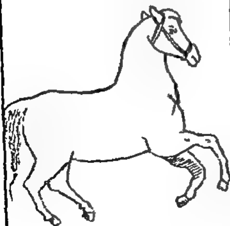
छी वालरोग घोड़ा न १६० (दे पृ २१७)



मास वृद्धि घोडा न १६१ (दे पृ २१



कफ मीरा घोडा न १६२ (दे पृ २१८)

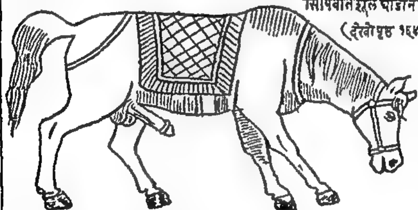


मधुपकज रस घोडा न १६३ (दे पृ २





कठवात शूल घोडा नवर १२८ (देखो पृष्ठ १६४)



सिपिवात शूल घोडा न° १२९ (देखो पृष्ठ १६५)



अपरशूल घोडा नवर १३० (देखो पृष्ठ १६५)

श्रीगणेशाय नम ।



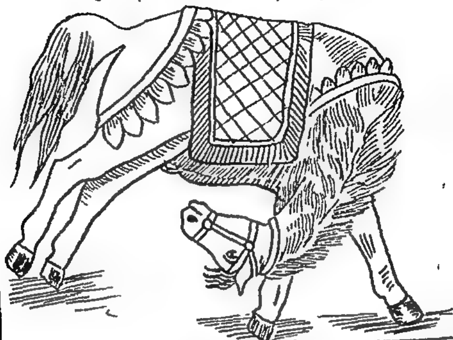
अथ

शालहोत्रसंग्रह--प्रारम्भ ।

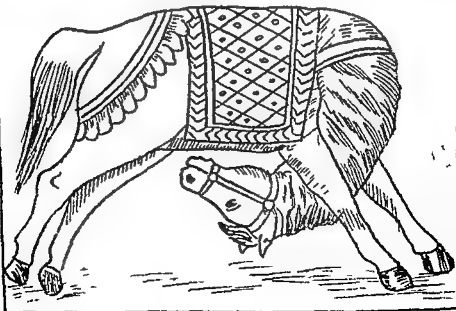
मगलाचरण ।

दोहा–सिद्धिकरन अरु दुखदलन, गिरिजातनय गणेश ।
हयचरित्र वर्णन करौ, दाया धरौ हमेश ॥ १ ॥
दुर्गा दुर्गति दुखदलन, भक्तनके सुखहेत ।
दुष्टजननको नाश करि, रचो धर्मश्रुतिसेत ॥ २ ॥
मार्तण्ड ब्रह्मांड यहि, तव प्रताप अधिकार ।
कृपा करौ जन जानि मुहि, सुमिरौ चरण तुम्हार ॥ ३ ॥
कीन्ह रजोगुण सृष्टि सब, रचना रची अपार ।
चतुराननकी वन्दना, हृदय चरण धरि सार ॥ ४ ॥
तमोगुणी अवतार है, महादेव जगदीश ।
तव चरणनकी वन्दना, नाइ धरणि धरि शीश ॥ ५ ॥
सतोगुणी जो रूप हरि, पालन करन अनन्द ।
तिहि चरणनको ध्यान धरि, वर्णत चेतन चन्द ॥ ६ ॥

कृमिशूल घोडा नंबर १३१ (देखो पृष्ठ १६५)



सर्व कृमिशूल घोडा नंबर १३२ (देखो पृष्ठ १६६)



कवित्त गंगाजीका ।

निकसि कमंडलुसों नभ सोर लोकनमें, धारा बाँधि छूटि शिवजटनमें हितै हितै ॥ जाके गुण गावत है शारद रु सिद्धि सवै, महिमा अपार सुर ध्यावत नितै नितै ॥ भनत (कवि निधान गंग तेरही तरंगनसों, भाजत मतंग पाप हेरत इतै इतै ॥ यम आगे दूत रोवै दूत आगे यम रोवै, चित्र औ गुपित्त रोवै कागज चितै चितै ॥ १ ॥

दोहा–सकल सुरनपद वंदिकै, वरणौ अश्वचरित्र ।
कृपा करो जन जानि मोहि, भाषौ ग्रंथ विचित्र ॥ १ ॥
अवध राजधानी जहाँ, शहर लखनऊ जान ।
ताके पश्चिम जानियो, सोरह कोश प्रमान ॥ २ ॥
जिला लिखौ उन्नावँको, मियागंजके पास ।
आसीवनको परगना, ताहीमें मम वास ॥ ३ ॥

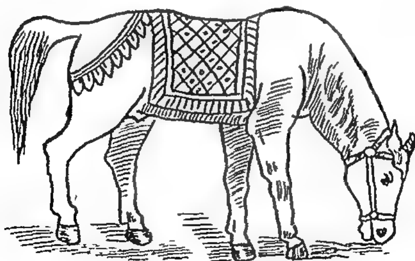
छंद–वैश्य वर्ण गोपनको ग्रामा तीयरि नाम कहायो ।
केशवसिंह तहाँके वासी जिन यह ग्रन्थ बनायो ॥
शालहोत्रसंग्रह करि बहुमत अश्वनको सुखदाई ।
देव पितृ सुरगुरु भूसुर जो सबके चरण मनाई ॥
संवत उनइससै पैंतीसा (१९३५) नौमी तिथि मधमासा ।
जो यह ग्रंथ लिखी विधि करि है अश्वनको दुख नासा ।

दोहा–पाण्डवसुत कुलकमलरवि, धर्मात्मा धर्मज्ञ ।
सत्यसिंधु धीरज धुरी, राज युधिष्ठिर सज्ञ ॥ १ ॥
भीमसेन अर्जुन अनुज, अरु सहदेव सुजान ।
नकुल स्वकुलभूषण सकल, तुरँग तत्त्व -गुरु ज्ञान ॥ २ ॥

समवर्तग्रूल घोडा न १३३ (देखोपृष्ठ) १६६



वैवर्तग्रल घोडा नवर १३४ (देखोपृष्ठ १६६)



ग्रन्थ देखि बहु मुनिनके, कीन्हों नकुल विचार।
शालहोत्र मत समझिकैं, रचना रची अपार ॥ ३ ॥
शालहोत्र पांडवसुवन, प्रथम रचि सुखकन्द।
ताहीके अनुसारते, ग्रन्थ बने बहु वृन्द ॥ ४ ॥
सतयुग त्रेता द्वापरे, कलियुग युग सब योग।
ताहीमें भाषा रची, जो पहिचानै लोग ॥ ५ ॥
विजयकरण आनँदभरण, गावत चारौ वेद।
नकुल कहै सहदेवसों, रविवाहनको भेद ॥ ६ ॥
विविधग्रन्थ अवलोकिकै, और कविन मत जानि।
केशव यह संग्रह रची, जो तुरगन-सुखदानि ॥ ७ ॥

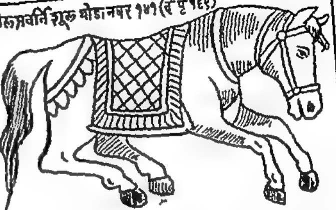
अथ अश्वोत्पत्तिवर्णन।

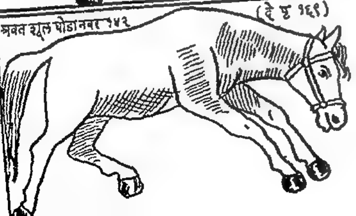
अश्वाऋषिके सुवन इक, शालहोत्र तिहि नाम।
तिनके चरण कमलद्युति, कविजन करें प्रणाम ॥ १ ॥
ऋषि कीन्हों आरम्भ मख, होमधूम रह छाय।
लागो लोचन ऋषिहिके, सलिलबुन्द परे आय ॥ २ ॥
वामनेत्रते अश्विनी, दहिने भयो तुरग।
भाष्यो ऋषि तब सुवनसों, हयको करो प्रसंग ॥ ३ ॥

अथ यज्ञशाला। देखो चित्र नंबर १

[illegible]ा–शालहोत्र कह तातसों, अशुपति करो विचार।
बाजीके गुण दोष कछु, भाषौ मति–अनुसार ॥ १ ॥
नमो निरञ्जन देवगुरु, मारतंड ब्रह्मंड।
रोगहरण आनँदकरण, सुखदायक जगपिंड ॥ २ ॥


एकस शूल घोडा नवर १४० (देखो पृ १६८)


शीलप्रवर्नि शूल घोडा नवर १४१ (दे पृ १६९)


श्रवत शूल घोडा नवर १४२
(दे पृ १६९)

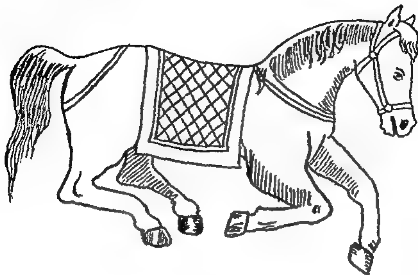

सुधावृत शूल घोडा नवर १४३
(दे पृ १६९)

छंद–बाजी समक्ष मनहरन वेश । श्रीजयकरता राजै हमेश ।
लखिकै भाष्यो यह देवराइ।किहि विधि ये वाहन होइँ आइ॥
यह दिगिशनसों भाष्यों सुरेश । याको उपाइ कहिये सुवेश ।
सब दिगईशन यह विनय कीन।ऋपि शालहोत्र याँमे प्रवीन॥
दोहा–शालहोत्रके पास चलि, विनय करौ बहुभाव ।
शालहोत्रकी विन कृपा, नाहिंन और उपाव ॥ १ ॥
सब विधि जीमों ठीक दे, लै दिगीश सब साथ ।
शालहोत्रके आश्रमहि, गये सबै सुरनाथ ॥ २ ॥

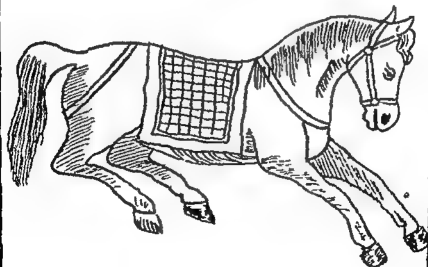
अथ आश्रमवर्णन । देखो चित्र नंबर २

छंद–जहँ वेद घोप निज पाप हरै।शुक सारिकादि मुख कहत रेरै।
पिक हंस सारसन वाद परै । मतद्वैत भेद निर्वेद करै ॥
स०–बाघ बछानिको गाय जियावत,बाघिनिये सुरभी सुत चोषै।
न्योरनको सहरावत सांप, अहारनि देवै उन्हें प्रतिपोषै ॥
व्याघके थानहिमें सुनिये, अपलोकवसै जलकुण्डनि न्नोषै ।
नैननि रागमई पिकके अब, विग्रह वैर शरीरके थोपै ॥
दोहा–एक एकते सरस सब, तप पवित्र अवतार ।
शालहोत्र मुनि तिनविषै, जनु दूजो करतार ॥ १ ॥
वेदी वृक्ष अशोकतर, कुशको आसन चारु ।
शालहोत्र मुनि ताहिपर, बैठ तप अवतारु ॥ २ ॥
चारों ओर ऋषीश सब, दंड कमण्डलु चार ।
आनि सतोगुणको बस्यो, सुख पावत परिवार॥ ३ ॥
अतिदुर्वल तनुहू बढो, झलक पुंज परकास ।
सेवन हित जनु व्रतन मिलि, करयो शरीरनिवास ॥ ४ ॥

रयड शूल घोडा नबर १४४ (देखो पृष्ठ १६९)

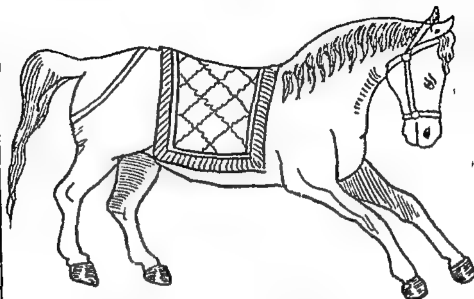


सरयत शूल घोडा नबर १४५ (देखो पृष्ठ १७०)

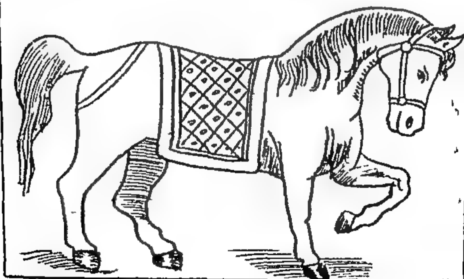


त्रि०छं–सन्मुख तब आयो क्षिति शिर नायो टेर सुनायो करजोरे।
सुनि सुरपति जान्यो उठि सन्मान्यो गुणन बखान्यो मनभोरे॥
सादर उर लायो आसन आयो बैठायो सुखमानि सही ।
हँसिके मुनि बूझी प्रेम अरूझी तपबल सूझी कुशल कही ॥
दोहा–सकल सुरन शिर मुकुटमणि, मिलत बोध सरसाति ।
चरणकमल मुकुतावली, लखत नखनकी पाँति ॥ १ ॥
मुनि भाष्यो पै धन्य भो, त्रिभुवनमें यशवंत ।
आये मो गृह देवपति, करिकै कृपा अनंत ॥ २ ॥
ह०गी०–भाष्यो ऋषीश सुरेशसो तुम तौ सदा सुखसौं रहौ ।
केहि हेतु आयो एहि थल अभिलाष सब जियकी कहौ॥
अति कुल तुरगनको उड़ै बहु पवनते किहि विधि धरौ।
अब आप कहहु उपाइ जातें पकरि मैं वाहन करौं ॥
दोहा–यहि उपायके करनको, और न आप समान ।
ताते मुनिवर करि कृपा, देहु यहै वरदान ॥ १ ॥
तो०छ०–मुनि शक्र ओर निहारि । दिय मन्त्र शास्त्र विचारि ।
हिय काजुभो अवगक्ष । काटिहौ तुरंगन पक्ष ॥
मनको मनोरथ पाइ । चलिकै शचीपति राइ ।
सगरे तुरंगम डाटि । सब पक्ष डारे काटि ॥
छं०रो०–कटे पक्ष व्याकुल अतिबाजी पीडित वचन पुकारे ।
चलै पगनते शोणितधारा लखि लखि धीर न धारें ॥
सुन्यो ऋषीश्वर शालहोत्रके मत मघवा पर खोये ।
तब तुरग घायल हो मुनिके द्वार जाइके रोये ॥
नहिं कीन्हा अपराध कछू हम निशिदिन दूब अहारी ।
बास करैं निरजन जगलमें विहरे व्योम-विहारी ॥

वातोदर शूल घोडा नबर १५६ (देखो पृष्ठ १७०)



प्रवर्त्ती शूल घोडा नबर १५७ (देखो पृष्ठ १७०)



तुम सर्वज्ञ सदा सम देखो सवहीको हरपायो ।
अय मुनि करुणाकर किहि कारण हमै विपक्ष करायो॥
किहि कारण यह दशा कराई हम सगरे निर्दोषी ।
दयासिंधु मुनि सुनिये अरजी को हमको अव पोषी ॥
काँपे तनु घायनकी पीडा व्याकुलता मरसाई ।
तुम गुणसागर विन त्रिभुवनमें को अव हमै जिआई ॥

तो छं ·अरजी सुनिकै मुनि बात कही।सब वाजिनके हिय चित्त चही
तुम्हरे ततुके क्षत नीक करौं। अरु औरडु रोग अनेक हरौं॥

दोहा—देव अदेव नृदेव अरु, धनी त्रिलोकी माहि ।
तिनके वाहन होहुगे, रहियो सुखसों चाहि ॥ १ ॥
जे तुमपर करिहै सदा, अतिसनेह महिपाल ।
तिनके लक्ष्मी गृह बसे, होइ शत्रु-उर-शाल ॥ २ ॥
जो पोषै तव गातको, सुरसमाज चितचाहि ।
ताहि डरै दिगपाल सब, अपर शत्रु को आहि ॥ ३ ॥
दै वरदान तुरीनको, बिदा कियो मुनिराइ ।
किहि विधि ये सुखसों रहै, करौ सुतासु उपाइ ॥ ४ ॥
जिहि प्रकार वाजी सबै, निशिदिन रहै अरोग ।
करौ चिकित्सा याहि विधि, करै सदा सुखभोग ॥ ५ ॥

प० छ०—तब शालहोत्र संकल्प कीन।सोरहसहस्र अरु काण्ड तीन।
सोई लखिकै श्रीधर सुपन्थ।भाषा भाख्यो सो रुचिर ग्रन्थ॥

दोहा—शालहोत्रकी प्रतिज्ञा, हरिकुलको सुखदानि ।
शालहोत्रकी कृपाते, श्रीधर कह्यो बखानि ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत पंचदेववन्दना अश्वउत्पत्ति यज्ञ अश्ववंश अवतरणकथन नामक प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

अथ उत्तरायण वा दाक्षिणायन फल ।

दोहा—उतरायण शुभ फल कहौ, दक्षिण मधयम जानि ।
ताहूमें श्रावण विषे, महानिषिद्ध बखानि ॥ १ ॥
उतरायणमों रातिको, वाजी जन्म जु होय ।
रातिकेर जस फल अहै, ताते दूनो जोय ॥ २ ॥
उतरायणमें दिन विषे, बडवा जासु बियानि ।
जैस दोष दिनको कहो, ताते थोरा जानि ॥ ३ ॥

उसकी शांति ।

दोहा—आहुति दीजे व्याहृतिन, सुतौ एकसौ आठ ।
अरु कीजे दश बार फिरि, सहस्रशीर्षा पाठ ॥

अथ दाक्षिणायन विचार ।

दोहा -दछिनायनमें दिन विषे, जन्मे घोडी जासु ।
निशिमां जैसा फल कहा, आधा जानो तासु ॥ १ ॥
दिनमें दूनो दोष है, जैसा दिनको आहि ।
शांती कीजिय तासुकी, दिनकी जैसि कहाहि ॥ २ ॥
फिरि व्याहृतिको होम करि, करै एक गोदान ।
दोष मिटै सब ताहिते, जानो बात प्रमान ॥ ३ ॥

अथ अमावसका दोष ।

दोहा–जौन अमावस तिथि विषे, निशिमों घोड़ि विआइ ।
तासु फलाफल कछु नही, शालहोत्र मत आइ ॥ १ ॥
उतरायण मावस विषे, निशिमें घोड़ि विआइ ।
तासु फलाफल कछु नहीं, शालहोत्र मतआइ ॥ २ ॥
चौ०–तिथि मावस उतरायन होई । दिनमें जन्मी घोड़ी सोई ॥
दिनमें शांति यही है जैसी । शांति कीजिये ताकी तैसी ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अरु, शूद्र वर्ण हय जानि।
तिनके लक्षण कहत हौं, शालहोत्र मत मानि॥ ९॥

अथ ब्राह्मणवर्णलक्षण।

दोहा—स्वच्छ स्वभाव अनूप छवि, जासु तेज अविकार।
जाको देखत मोहिकै, नमित होत ससार॥ १॥
भोजनकी रुचि जासुकी, जल्सों नही सकाइ।
अग्निपुंज सम ज्वलित अति, रण देखत ह्वै जाइ॥२॥
अरु प्रतिभटको देखिकै, नहि भय मानै सोइ।
सरल सुभाव विवेक अति, जल पीवै सुख धोइ॥ ३॥
पुष्पसमान प्रस्वेद तनु, आवै वासु सुवासु।
श्वेत रग है तासुको, पैन नैन सम जासु॥ ४॥
तातै वार गरीब अति, बडो जासुको बोल।
सूरति प्यारी होय अति, ऐसो अश्व अमोल॥ ५॥
रणमें दगा करै नही, क्षतते नहि अकुलाइ।
विह्वल भे असवारको, घर हि देहि पहुँचाइ॥ ६॥
हठ पकरै छोड़ै नही, डरै न त्रासे त्रास।
विप्रवर्ण पहिचानिये, रससों आवै रास॥ ७॥
ते दरियाई बाजि वा, नीलसरोके पार।
श्वेत रगके जानिये, होत विशेष अपार॥ ८॥

अथ क्षत्रियवर्णलक्षण।

दोहा—मानै हारि न नेकहूं, करै विरोध जु कोइ।
संगरमें लखि शत्रुको, अतिशय क्रोधित होइ॥ १॥
युद्ध समय असवारके, मनके साथ उडाइ।
शत्रु शस्त्र निज स्वामिपर, लागत देइ बचाइ॥ २॥

अथ दक्षिणायन अमावसका दोष ।

सोरठा--बडवा होइ बियानि, तिथि मावसकी रातिमें ।
पुनि दछिनायन जानि, दोष होय दिनके समय ॥
दोहा-शांति कीजिये तासुकी, जैसी दिनकी जानि ।
ऐसो योगहि दिन विषे, बडवा होइ बियानि ॥

उसकी शांति ।

दोहा-यम कुबेरको मंत्र जपि, होम करै सुखदाइ ।
और कही जस शांति है, दिनकी देहु कराइ ॥

अथ श्रावणका फल ।

दोहा-श्रावणके महिना विषे, घोड़ी होइ बिआनि ।
निधन करै निजस्वामिको, धनकी हानि बखानि ॥

उसकी शांति ।

दोहा-श्रावणमें जो रातिको, जन्म घोडिका होइ ।
सहित बछेरा विप्रको, घोड़ी दीजै सोइ ॥ १ ॥
श्रावण महिना दिन विषे, कोइ पहर जो होइ ।
सबै दिगीशन कोपसों, जानि लेहु जिय सोइ ॥ २ ॥

उसकी शांति ।

दोहा-दिगपालनके मंत्र जें, पृथक् पृथक् जपवाइ ।
अरु व्याहृतियुत होम करि, दुइ गोदान कराइ ॥ १ ॥
और शांति दिनकी कही, जैसी दिनकी आइ ॥
शालहोत्र मुनि यों कहैं, सबै दोष मिटि जाइ ॥ २ ॥
शांति करैकी स्वामिको, जो सामर्थ्य न होइ ।
यथाशक्ति करि दीजिये, दान विप्रको सोइ ॥ ३ ॥

वारवार मुख शब्दको, ललकारै जनु वीर ।
एकीएका शत्रुको, आवै देर्डे न तीर ॥ ३ ॥
टापे हीसे बल करै, युद्ध समय उत्साह ।
ऐसो बाजी भाग्य सौं, पावत है नरनाह ॥ ४ ॥
असवारी प्यारी लगै, निशि वासरमो ताहि ।
बंधन तोरत तासुते, ताको दोष न आहि ॥ ५ ॥
रण देखत परचंड है, पवन समान उड़ाइ ।
अखचोट मानै नही, सम्मुखगोल मझाइ ॥ ६ ॥
अगर समान प्रस्वेद तनु, आवत जाके वासु ।
अथवा और सुगन्धको, तनुते होत प्रकासु ॥ ७ ॥
सहजै चौंकत है नही, चहुँदिशि चितवत जाइ ।
गनै नही उपवासको, सघन तेज सरसाइ ॥ ८ ॥
सदा क्रोध राखै बहुत, जलदी करै अहार ।
पानी पीवै टापिकै, ऐसो तासु विचार ॥ ९ ॥
वेग तासुके तेज बहु, कदम चलै सुखदाइ ।
बोलत बोल सु लगै इमि, मानौ बाघै आइ ॥ १० ॥
अग्नि पवन अरु तोपसों, नेको नही सकोइ ।
रीच्छ बाघ गज देखिकै, सम्मुख ताके जोइ ॥ ११ ॥
मरदानो क्रोधी बड़ो, क्षत्रिय वर्ण जु होइ ।
ताके बल अरु पौरुषे, बाजि न दूजो कोइ ॥ १२ ॥
घोड़ी लखि बोलै नहीं, नाहिन करै सरार ।
दुइपद ठाढो होइ नहि, करै न पॉय प्रहार ॥ १३ ॥

घोड़ी दवेको लिखी, तहा बछेरा युक्त ।
होय नहीं सामर्थ्य जो, तौ कीजे यह युक्ति ॥ ४ ॥
करे एक गोदान सो, उत्तम विप्र बुलाय ।
यथाशक्ति कछु दीजिये, अन्नदान करवाय ॥ ५ ॥
श्रावण महिना माहिमें, सूर्य कर्कके होय ।
तिथिहि अमावस जो अहै, ऐसो दिन है जोय ॥ ६ ॥
यही योगमें दिन विषे, पहर तीसरो होइ ।
घोड़ी जन्मै पुत्रको, तासु शांति नहि कोइ ॥ ७ ॥
जाकी घोड़ी होय यह, दोष ताहि अस होइ ।
धन दारायुत पुत्रको, नाश करेगो सोइ ॥ ८ ॥

अथ रात्रिजन्मका फल ।

दोहा--निशामाहि पहिले पहर, बडवा जासु बिआइ ।
शत्रु न जीवे ताहिको, फल यह ताको आइ ॥ १ ॥
ताके होत तुरंग बहु, नितप्रति सुख अधिकाइ ।
निश्चय जानो बात यह, कृपा शक्रकी आइ ॥ २ ॥
पहर दूसरे रात्रिको, घोडी बच्चा देइ ।
घोड़ी है जेहि पुरुषकी, जीति शत्रु सो लेइ ॥ ३ ॥
धन अति बाढ़े ताहिके, जाकी घोडी होइ ।
संवतसरके भीतरे, पुत्र तासुके होइ ॥ ४ ॥
सोरठा-पहर तीसरे माहि, बडवा जन्मै पुत्रको ।
जाकी घोड़ी आहि, होइ तासुके धान्य बहु ॥
दोहा--जानो चौथे यामको, घोड़ी जासु बिआइ ।
गो अरु महिषी ताहिके, नितप्रति अति अधिकाइ ॥

अड़ै न काटै भूलिहू, अति गरीब सो होइ।
रससों रस राखे रहै, क्षत्रिय वाजी सोइ ॥ १४ ॥
रंग कुमैत मो होत है, जानौ ताहि प्रमान ॥
ब्योपा ईरानी थवा, ईराकी हय जान ॥ १५ ॥

अथ वैश्यवर्णवाजीवर्णन।

दोहा–सुरत होइ सिमिटै बहुत, मनमलीन वैजात ॥
तग कसत तरसत अहै, काँपि उठै सब गात॥ १ ॥
रहे अधीन सवारके, क्रोध करै डरि जाइ।
भीर देखि झझकै बहुत, डरु मानै अधिकाइ ॥ २ ॥
चाबुक मार क्रोध करि, तबहि शीघ्रगति होइ।
मन कपटी अरु मन्दगति, जानिलेहु यह सोइ ॥ ३ ॥
जलदी चल्त न दूरिलौं, कितनौ करै उपाइ।
अरगा अविआ कदम है, जाको जाति सुभाइ ॥ ४ ॥
दाना नीको होइ जो, तौतौ खाइ अघाइ।
भौंडो छाँड़ै तुरत ही, की थोरो सो खाइ ॥ ५ ॥
रण काचो नाचो फिरै, कीतौ जाइ पराय।
तेज सहै नहि तोपको, भयते अति सकुचाइ ॥ ६ ॥
चाह करै घोड़ीनकी, बारबार हिहनाइ।
मारेते सीधो चलै, मोटी खाल लखाइ ॥ ७ ॥
बासु भस्वेदहि बीवसम, कै अजया सम होय।
की तौ आवै बासु नहि, जानि लेहु जिय सोय ॥ ८ ॥
जल पीवत है ओंठसों, मोटो होइ शरीर।
ए लक्षण सब जानियो, वैश्यवर्ण तासीर ॥ ९ ॥

अथ घोडीके प्रसव समयमें बछेरेके रखनेकी विधि ।

दोहा–घोड़ी करे प्रसवको, समय आनि जब होइ ।
तबही या विधिसों करे, वर्णत हौं अब सोइ ॥ १ ॥
बच्चा निकसै पेटसो, कम्मर पर ले लेइ ।
लिये ताहि ठाढो रहे, भूमि न आवन देइ ॥ २ ॥
घोडी ताके तनुहिको, लेट चाटि सब लेइ ।
लिये रहै तेहि ऊपरैं, तौलौ भुइँ नहिं देइ ॥ ३ ॥
होइ बछेरा जलद अति, पवन समान उड़ाइ ।
रोग होइ नहिं देह तेहि, ऐसी विधि यह आइ ॥ ४ ॥
यहि विधिमें यक खोफ है, देइ बछेरा छोड़ि ।
तेहि विधि दूसरि कहो, जानि लेहु मतिजोड़ि ॥ ५ ॥
जो यह विधि नहि ह्वै सके, तौ यह यत्न करेइ ।
धरामाहि नहि आवई, थाँभि ऊपरै लेइ ॥ ६ ॥
की कमरी की घासपर, बच्चाको धरि देइ ।
लेट ताहिकी देहको, चाटि घोड़िका लेइ ॥ ७ ॥
देहमाहिं रहिजाय जो, पोंछिलेइ निज हाथ ।
लेट रहन नहि दीजिये, यह भाष्यो मुनिनाथ ॥ ८ ॥
ठाढो बच्चा होय जब, धरामाहि निज पॉय ।
तब तौ ताको दोष नहि, भूमि विषे जो जाय ॥ ९ ॥
तबहूँ होय चलाक यह, पै तासम नाहि होय ।
ये दुइ विधिको छांडिकै, नीकी विधि नहि कोय ॥१०॥
बच्चा निकसत पेटसो, जब आधा दरशाय ।
अक्सर की उठिकै तबै, घोड़ि ठाढि होजाय ॥ ११ ॥

सिरगा रंग विशेषके, वैश्यअश्वको होय ।
तेपरत्तीके जानिये, निश्चय करिके सोय ॥ १० ॥

अथ शूद्रवर्णवाजीवर्णन ।

सोरठा–मलिन रंग है जासु, शूद्र वर्ण सो जानिये ।
तासु प्रस्वेदहि वासु, आवत है सम मीनके ॥
दोहा–खाल जासु मोटी अहै, मोटे है सब बार ।
लीदि मूत्र युत थानमें, लोटत बारहि बार ॥ १ ॥
मंदमंद भोजन करत, झझकै पानी देखि ।
पलकैं मोटी होंइ अरु, मुखमें गंधि विशेषि ॥ २ ॥
निपटहि धीमो होइ सो, बोलत बारहि बार ।
बोल न प्यारो तासुको, बहुतै करै सरार ॥ ३ ॥
कहा न करै सवारको, मोटो होइ शरीर ।
लड़ै बहुत घोड़नसों, आवन देइ न तीर ॥ ४ ॥
काटै मारै लात अरु, दुइ पग ठाढो होइ ।
करै हरामी बहुत विधि, शूद्र वर्ण हय सोइ ॥ ५ ॥
सोरठा–मारे सीधो होय, करै हरामी फेरि बहु ।
फिरि मारै जो कोय, तौ तौ फिरि सीधो चलै ॥
दोहा–कोई रंग जो देहमें, होइ मलीन विशेषि ।
ते सडहर भडवारके, जान्यो मनमें देखि ॥

अथ संकरवर्णवर्णन ।

दोहा–मिलि लक्षण जहँ होति है, दोइ वर्णके आनि ।
तिन अश्वनको कहत हौं, संकरवर्ण बखानि ॥
चौपाई–संकर वर्ण होहि बहुतेरे । ते नहि वर्ण यामधि घोरे ॥
तिनके लक्षण बहुविधि जानौ । तासों कछु संक्षेप बखानौ ॥

गिरत बछेरा भूमिपर, तासु ऐसि गति होय।
झटका लागत कमरमें, यातो कमरी जोय ॥ १२ ॥
बच्चा ओदो लेटसों, भूमि परश तेहि होय।
धींग होत है ताहि ते, कहत सयाने लोय ॥ १३ ॥
यासे औरौ कहत हौ, यत्न एक परमान।
बच्चा जननेके समय, कीजै यहँ विधान ॥ १४ ॥
कमरी एक मँगाइकै, चारौ कोन पसारि।
बच्चा जब निकरन लगे, उपरै लेवै धारि ॥ १५ ॥

अथ खूझा निकालनेकी विधि।

दोहा-घोड़ीकेरे पेटसों, बच्चा बाहर होइ।
खूझा ताके सुमनसों, काढि डारिये सोइ ॥ १ ॥
खूझा ताको कहत है, नीचे सुमके होइ।
सुममें लागो होत है, सुम सभान है सोइ ॥ २ ॥
श्वेतरूप सुमके तरे, प्रकट देखाई देत।
सुमके टेढे होनको, ताहि जानिये हेत ॥ ३ ॥
जो खूझा नहि काढिये, औरौ दोष लखाय।
रस गंधादिक रोग जे, होत तुरीके आय ॥ ४ ॥

इति श्रीशालिहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत घोड़ीके प्रसवसमय बछेराकी विधिकथन नाम तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

अथ बच्चेके दूध पिलानेकी विधि।

दोहा-प्रथमै घूटी देइ करि, पीछे दूध पिआइ।
दोष करत नहि दूध तब, जानौ सत्य उपाइ ॥

अथ उचित अश्वकथन ।

दोहा–विप्र योग ये चारिहै, तीनि नराधिप चाहि ।
वैश्य सुखद दोई अहै, शूद्रहि एकहि आहि ॥ १ ॥
कोऊ पंडित कहत है, भूपयोग ए चारि ।
वर्ण वर्णके काज सब, भिन्न भिन्न विचारि ॥ २ ॥

चौ०–मंगलकाजसिद्धि द्विज देई । क्षत्रियजाति विजयरण लेई॥
धनके काज वैश्य चढ़ि जाई । औरे काज शूद्र सुखदाई॥
चारों वर्ण रहे ये जाके । संपति भवन तजति नहिं ताके॥
बहुतक सुख आवे तिहि पाहीं । देखत शत्रु नाश ह्वै जाहीं॥

दोहा–सब बाजिनमें होत नहिं, सब ए लक्षण आनि ।
एक दोइ जो होइ कछु, लेहु वर्ण पहिचानि ॥ १ ॥
सब देशनमें होत है, चारि वर्ण जो आनि ।
जौन देशमें जो कहे, ते विशेष करि मानि ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रमतं कदार्नसिंहकृत वाजीवर्णकथन नामक
पंचम अध्याय ॥ ५ ॥

अथ गणविचार ।

दोहा–शुभवाजी अशुभै करै, अशुभ करै शुभ आनि ।
ताको कारण गण अहै, शालहोत्र मत जानि ॥ १ ॥
सब वाजी हैं तीनि गण, सो अब कहौ बखानि ।
देवतागण मानुष्यगण, अरु राक्षसगण जानि ॥ २ ॥

घेला भरिसे लाइ, पैसा भरि तक दीजिये।
उमरि देखिकै ताइ, खील सोहागा देहु तेहि ॥ २ ॥

दोहा-दूध पियेते अश्वतनु, होत वात अधिकार।
दिये सोहागा होत नहिं, कीन्हों यह निरधार ॥ १ ॥
प्रथमहिं दीजै दूधको, पावसेरसों लाइ।
फिरि जितना वह पीजिये, वतना देहु पिआइ ॥ २ ॥
जो यतना नहिं दीजिये, जबते दाना खाइ।
दाना दूध भिगोइ करि, दीजै ताहि खवाइ ॥ ३ ॥
चनाको दाना दूधमें, दीजै ताहि भिगोइ।
दिनामानु भीजा करै, अश्वहि दीजै सोइ ॥ ४ ॥

अथ मक्खन देनेकी विधि।

दोहा-दोइ टकाभरि दीजिये, प्रथमहि माखन लाइ।
दिन दिन ताहि बढ़ाइये, एक सेर लगुजाइ ॥ १ ॥
मक्खन दीजै अश्वको, सैंधव लोन मिलाइ।
देइ टकाभरि लोनको, मक्खन सेरहि माइ ॥ २ ॥
एक सालभरि अश्वको, माखन देइ खवाइ।
ताको बल औ पौरुषौ, घटत कबहुँ नहिं आइ ॥ ३ ॥
तुरी दूध जबलौ पिये, कीतो माखन खाइ।
पैसा भरि अजवाइनिहि, देत निताहि माति जाइ ॥ ४ ॥

बछेरेको मुसव्वर देनेकी विधि।

दोहा-अलुआ मासे दोइलै, दूधमांहि पकवाइ।
कद अरु वैस विचारिकै, दीजै ताहि खवाइ ॥ १ ॥

अथ देवतागण वाजी ।

दोहा–देखत ही मनको हरै, ऐसो रूप ललाम ।
देह धरे है वाजिकी, सोहत मानौ काम ॥ १॥
नमित होहि सब देखि नर, जानो सरस सुभाउ ।
अंग सुपुष्टित होइ सम, देवजात परभाउ ॥ २ ॥
भौरी कही अनिष्ट जो, होइ नहीं ते कोइ ।
जे शुभ लक्षण है कहे, तिनयुत वाजी होइ ॥ ३ ॥
दहिने नासा भीतरै, परै भँवरि अरु आनि ।
मिलत भाग्यसों वाजि अस, देव जाति सो जानि ॥४
बाँधे हाथी युत्थ सो,अस हय जाके होय ।
होनहार निज स्वामिसों, कहत सयाने लोय ॥ ५ ॥

अथ मनुष्यगण वाजी ।

दोहा–भौरी दुष्ट अनिष्ट जो, होंय नही ते कोइ ।
देखत होय सुहावनो, मानुषगण हय सोइ ॥

अथ राक्षसगण वाजी ।

दोहा–भौरी परै अनिष्ट कोइ, जा वाजीके आनि ।
और चिह्न सब शुद्ध है, रौद्र रूप पुनि जानि ॥ १ ॥
टेढ़ा होइ सुभाव सब, पुष्ट बहुत सो आहि ।
क्षुधा तृषा अधिकार बहु, राक्षसगण कहि ताहि ॥

अथ द्वितीय प्रकार गणविचार ।

दोहा–मनुज राक्षस देवगण, सकल नरनको जानि ।
जात जाने जाहि गण, सो अब कहौ बखानि ॥ १ ॥
आदि वर्ण जो नामको, जौन ऋक्षको होइ ।
तौन ऋक्ष जेहि गण विषे, गण है नरको सोइ ॥ २ ॥

दिये मुसव्वर अश्वको, सगरे रोग नशाई।
शरदी बलगम वातते, जनित रोग सब जाईं॥ २ ॥
भक्खन पयके दियेसे, जो अवगुण कछु होइ।
दिये मुसव्वर अश्वको, पचत सकल है सोइ॥ ३ ॥
कद अरु वैस विचारिकै, देइ मुसव्वर ताहि।
कम ज्यादा मौताजसे, करदीजे सो वाहि॥ ४ ॥
दूध परत जहँ होइ नहि, शरद मुलक अतिहोइ।
दूनि देइ मौताज यह, मुसव्वरकी सोइ॥ ५ ॥
होत ज तुर्वा नहीं तिहि, सो जानौ मतिवान।
शालहोत्रमत देखिकै, कह्यो सुतौन विधान॥ ६ ॥

अथ बछेरेकी चौबदी दागनेकी विधि।

मास ग्यारहें ऊपरें, दागिय बाजी सोइ।
तब चौबंदी दागिये, मोसम जाड़ा होइ॥ १ ॥
दोइ साल पर्यंतलौं, दागत हय सबकोइ।
ताते बढ़िकै वैसमहँ, दागे गुण नहि होइ॥ २ ॥
ऊपर आगुर चारिसों, चारिउ गाठिन माहि।
रगै देखाई देतिहै, तरफ भीतरी आहि॥ ३ ॥
तहां दागिये अश्वको, ताते बहु गुण होइ।
दुइदुइ लीकै कीजिये, कहत सयाने लोइ॥ ४ ॥
और रगैहै अश्वके, तेऊ दागी जाइ।
ते अब वर्णन करत हौं, ताको गुण दरशाइ॥ ५ ॥
दाढ पिछारी शिरहितर, गर्दनिको जहँ जोर।
रगै दोइ तहँ होति है, तहां दागिये घोर॥ ६ ॥

अथ राक्षसगण कथकथन ।

दोहा–चित्रा शतभिष ज्येष्ठा, मघा विशाखा जानि ।
अरु अश्लेषा कृत्तिका, मूल धनिष्ठा मानि ॥ १ ॥
ये नक्षत्र सब जानिये, गण राक्षसके आहि ।
मुनिवर बरणो चाउ करि, जानिलेहु मनमाहि ॥ २ ॥

अथ मनुष्यगण ।

दोहा–तीनों पूर्वा रोहिणी, भरणी आर्द्रा मानि ।
और उत्तरा तीनि जे, ये मनुष्यगण जानि ॥ १ ॥

अथ देवतागण ।

दोहा–पुष्य पुनर्वसु मृगशिरा, अश्विनि श्रवण बखानि ।
अनुराधा स्वाती सहित, हस्त रेवती जानि ॥ १ ॥
कहे देवगणके विषे, ये नव नखत बखानि ।
ताहि प्रयोजन अब कहों, शालहोत्रमत जानि ॥ २ ॥

अथ नर (स्वामी) देवगण, घोडा मनुष्यगण हो उसका फल ।

सोरठा–नरगण बाजी होइ, मोल लेइ सो देवगण ।
ताको फल अस जोइ, तुरी रहै आधीन तोहि ॥

अथ नर देवगण, बाजी राक्षसगण ।

सोरठा–देवगणहि नर जानि, बाजी राक्षस गण अहै ।
ताको फल यह मानि, करै उपद्रव स्वामिघर ॥

अथ नर बाजी दोनो देवगण ।

दोहा–बाजी जानो देवगण, नरो देवगण होइ ।
देत अहै निजस्वामिको, पूरण सुखको सोइ ॥

शिरके जेते रोग है, सो हयके नहि होइ।
दागी जाकी रँग वे, विरले जानत कोइ ॥ ७ ॥
दोऊ तरफन दागिये, पारा करिये चारि।
आँगुर तीनिके होंय सो, याही भांति विचारि ॥ ८ ॥
दोऊ आगिले भुजनपर, बन्द होंइ तहँ दोइ।
जहाँ हाड़को जोर है, तहाँ दागिये सोइ ॥ ९ ॥
ताकी छाती भरति नहि, ये बन्द दागे जाहि।
दागै पारा चारिकारि, शालहोत्र मत आहि ॥ १० ॥
दोइ बन्द कोखिनविषे, वाजीके सो होइ।
जहँ भौरी है कोखिकी, ताके पीछे सोइ ॥ ११ ॥
तहाँ दागिये अश्वको, ताको फल अस आइ॥
होत कुरकुरी ताहि नहि, उदररोग नशि जाइ ॥ १२
रँग चारि औरौ अहै, वाजी पाइनमाहि।
होत मुजम्मा ऊपरै, तरफ भीतरी आहि ॥ १३ ॥
मोजाको जो जोर है, तापर जानौ सोइ।
तहाँ दागिये अश्व जो, यतने रोग न होइ॥ १४ ॥
पुस्तक और चकावरी, ता हयके नहि होइ।
बन्द एक है औरऊ, भाषत हौ अब सोइ ॥ १५ ॥
लिंग अगारी पेट तर, नसैं जौन दरशाइ।
तहाँ दागिये अश्वको, ताको गुण यह आइ ॥ १६ ॥
अंडकोश ता वाजिके, कबहूँ नाहि घटि जाइ ॥
उतरत नाहिन आँत है, ता वाजीकी आइ ॥ १७ ॥

अथ नर राक्षसगण, घाजी देवगण हो उसका फल।

दोहा–घोड़ा जानौ देवगण, नर राक्षसगण होइ।
यद्यपि भौरी शुभ सहित, हानि करै यह सोइ ॥

अथ नर राक्षसगण, घोडा मनुष्यगण हो उसका फल।

दोहा–राक्षसगण नर होइ सो, नरगण वाजी आइ।
ताहि खरीदे फल यहै, तुरी सही मरि जाइ ॥

अथ नर राक्षसगण, वाजी राक्षसगण हो उसका फल।

वाजी राक्षसगण अहै, नर राक्षसगण जानि।
यद्यपि भौरी अशुभ युत, तदपि होइ सुखदानि ॥

अथ नर मनुष्यगण, वाजी देवगण हो उसका फल।

दोहा–अश्व जानि सो देवगण, नरगणको नर लेइ।
ताहि खरीदे सुख लहै, नितप्रति उत्सव देइ ॥

अथ नर नरगण, वाजी राक्षसगण हो उसका फल।

सोरठा–हय राक्षसगण होइ, खरीदार मानुष्यगण।
स्वामी नाशै सोइ, धन दारा अरु कुलसहित ॥

अथ नर वाजी दोनो मनुष्यगण हों उसका फल।

सोरठा–मोल लेइ नर जोइ, मानुषगणको होइ सो।
वाजी नरगण होइ, तासु फलाफल कछु नही ॥

दोहा–शुभचेष्टा वाजी करै, शुभ भौरी युत सोइ।
नहि दूषित गणभेद सो, तव पूरण फल होइ ॥ १ ॥
वाजी मिश्रित गण अहै, ताहि खरीदे कोइ।
तहाँ विचारे गण नही, शालहोत्र कहि सोइ ॥ २ ॥
भौरी जे शुभ अशुभ है, त्यों गण चेष्टा जानि।
एक एक ये फलद नहि, द्वै त्रिय मिलि सुखदानि ॥ ३

दागेते इन वदनको, गुणतौ येते आहि ।
याते दागत है नही, अवगुण कुछ दरशाहि ॥ १८ ॥
रोग होत है वाजिके, कोउ यक ऐसो आइ ।
फस्त खोलना परति है, विना फस्त नाहि जाइ ॥ १९ ॥
जेती दागी नसै है, ते नाहि खोली जाहि ।
हठ करिकै जो खोलिये, लोहू निकसत नाहि ॥ २० ॥
दागत नहिं सो तारिते, वाजीको सब कोइ ।
जो कदाचि कोइ दागि है, अवगुण और न सोइ ॥२१॥
चौबंदी जो दाग है, दागौ ताहि जरूर ।
शालहोत्र मुनिके मते, जानि लेउ जारूर ॥ २२ ॥

अथ बछेरेकी परीक्षा (कैसा घोडा होगा यह जाननेकी रीति)

दोहा–कर्ण जासुके लघु लसै, छाती चौड़ी होइ ।
बीचु जाहिके अधिक है, दुहूँ कानते सोइ ॥ १ ॥
गर्दन लम्बी होइ अरु, चौड़े सुम है जाहि ।
कर्ण होंइ ढीले नही, लम्बो मुख है ताहि ॥ २ ॥
पातर मुखको वा सुछम, आँखि बड़ी जब होइ ।
थुथुनी होइ नुकीलि अरु, बाँसा ऊँच न सोइ ॥ ३ ॥
पूँछ पातरी अश्वकी, गुदा चाकली होइ ।
चढिकै जामै पूँछ अरु, चौडे पुट्ठन सोइ ॥ ४ ॥
ये लक्षण जामें अहै, नीक तुरी सो होइ ।
इनते होइ विरुद्ध जो, मध्यम जानौ सोइ ॥ ५ ॥
जा वाजीकी देहमें, ये लक्षण नाहि आहि ।
होय नही सो नीक बहु, ऐसो जानौ ताहि ॥ ६ ॥

कहुँ चेष्टा भौरी फलद, कहुँ चेष्टा गण मानि ।
कहुँ गण भौरी फलद है, कहुँ तीनों ते जानि ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीगणविनाशकथन
नामक षष्ठ अध्याय ॥ ६ ॥

अथ वाजी आयुप्रमाण दंतपरीक्षा ।

दोहा—आयु अश्वकी होति है, बत्तिस वर्ष कि जानि ।
यातें नाहिन बाढ़ि है, शालहोत्र-मत मानि ॥ १ ॥
कितनी बीती ताहिमें, तासु कहौं पहिचानि ॥
देखि रदन जान्यो परत, तातें रदन बखानि ।
कितने दिनमें होत कस, सो अब कहौं बखानि ।
जातें सब वाजीनके, साल परति है जानि ॥ २ ॥

अथ दंत वर्णन ।

दोहा—प्रथम दिवसके अश्वके, चारि मसूढा होइ ।
आठ रोजको होइ जब, दाँत जमति है दोइ ॥ १ ॥
चारि महीना होयँ जब, दाड दोइ अरु आनि ।
चारि दाँत तरके लसै, ऊपर चारिय जानि ॥ २ ॥
दोइ और तरके कढ़े, दोइ उपरके जानि ।
षट तर षट ऊपर लसैं, एक सालको मानि ॥ ३ ॥
ताहि कहत आपड है, जे जानत है कोइ ।
दशमहिनाके ऊपरें, बारह लघु तेहि होइ ॥ ४ ॥
एक सालको अश्व जो, श्वेत रदन तेहि आहि ।
षटदश मास प्रर्यंतलौ, ताही सम दरशाहि ॥ ५ ॥

• होय गामची छोटि वहु, यहू सुलक्षण होय ।
शालहोत्र मुनिके मते, जानिलेहु तुम सोय ॥ ७ ॥

अथ वेचहे अश्वकी परीक्षा कदम चलेगा कि नही ।

दोहा–अगिलो जाको पग जहाँ, परत धरणिमें सोइ ।
ताते पछिलो बहि परै, कदमबाज सो होइ ॥ १ ॥
पछिले पुट्ठा जाहिके, अति ही उतरे जानि ।
सेर कूंच सो होइ हय, कदमबाज सो मानि ॥ २ ॥

वछेराकी उँचाई यानी कितना ऊँचा होगा ।

दोहा–सुम ऊपरकी टॉकते, चौगुण ताको जान ।
तुरी उँचाई होति है, ताको मनमें मान ॥ १ ॥
या तौ कान प्रमाणको, नव गुण कीजे तात ।
अश्व उँचाई जानिये, सही सही यह बात ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसग्रह केशवसिहकृत घोंटेके सकल उपचार कथन नामक चतुर्थ अध्याय ॥ ४ ॥

अथ वाजीवर्णवर्णन ।

दोहा–हय अपार वल सहज ही,जानत सकल जहान ।
तिनमें चारिउ वर्ण है, तिनको करौ बयान ॥ १ ॥
अश्व सबै समरत्थ है, एकै रूप लखात ।
तिनके लक्षण कहत हौ, जाते जाने जात ॥ २ ॥
वर्ण वर्णके भेदसों, भिन्न भिन्न हय होत ।
कितने पाले देह है, कितने रण उद्योत ॥ ३ ॥
तिन अश्वनको जानिके, वर्ण भेदसों कर्म ।
देश प्रभावहि लखि कछू, कहत यथामति मर्म ॥ ४ ॥

जौन सफेदी रहति है, पोडशमास प्रमान ।
ता ऊपर जे मास है, कीजै तासु बखान ॥ ६ ॥
लागत सत्रह मासते, हीन सफेदी होइ ।
जरदी बाढ़ति जाति है, दोइ साल लगु सोइ ॥ ७ ॥
जरदी दशनन माहि जो, दोइ साल लगु जानि ।
ताहि कहत नाकन्द है, शालहोत्र मत मानि ॥ ८ ॥
दुइ दांतनमें मेलु जो, मास पचीसे होइ ।
मेलु दियो है दोकको, ताहि कहत सब कोइ ॥ ९॥
तीस मास लगु रदनमें, रहत मेलु यह जोइ ।
ता ऊपर जो बाजि है, दोक जानिये सोइ ॥ १० ॥
तीसमासके ऊपरै, छत्तिस मास प्रमान ।
दोइ दाँत तरके गिरै, दुइ ऊपरके जान ॥ ११ ॥
छतिस मासके ऊपरै, जामि बरोबरि होइ ।
तीनि साल पट मास लै, दोक कहावै सोइ ॥ १२ ॥
संवत साढे तीनिके, जब ऊपर हय होइ ।
दोइ रदन तरके गिरै, दुइ ऊपरके सोइ ॥ १३ ॥
चारि वर्ष पर्यंतमें, जामि बराबरि होइ ।
ताहि तुर्राका कहत है, चारि साल सब कोइ ॥ १४ ॥

सोरठा—तब निकसति है नेस, बैस कुमारहि जानिये ।
चढ़िबे लायक वेश, इच्छासम मेहनति करै ॥

दोहा—चारि सालके ऊपरै, पाँच साल लगु मानि ।
दुइ दुइ रद औरौ गिरै, तर ऊपरके जानि ॥ १ ॥

पाचवर्ष पर्यंतमें, जामि बरोबरि होइ ।
युवा अवस्था वाजि है, पंज कहावे सोइ ॥ २ ॥
पांच वर्षके ऊपरे, षष्ठ वर्षमें जानि ।
स्याही सब दांतन विपे, रेख समान बखानि ॥ ३ ॥
पट संवतके ऊपरे, सात वर्ष लगु जानि ।
सब दांतनके बीचमें, छिद्र परति है आनि ॥ ४ ॥
भले पंज सो जानिये, शालहोत्र कहि सोइ ।
युवा अवस्था वाजिकी, तहा लगे सो होइ ॥ ५ ॥
सात वर्षके ऊपरे, जहँ लगु अठई वर्ष ।
सब दांतनके शिर विषे, पहुँचत स्याही सर्ष ॥ ६ ॥
बीतत अठई वर्षके, नव वर्षन परयत ।
सब दांतनके बीचमें, जरद होत हुइ दन्त ॥ ७ ॥
सो वह जरदी यों लगे, जिमि मैलो हदतार ।
और दांत सब स्याह है, यह कीन्हों निरधार ॥ ८ ॥
नव वर्षनके ऊपरे, दशवर्षन लगु जानि ।
सब दांतनमें होति है, जरद रेखसी मानि ॥ ९ ॥
जरद होति है दात सब, वर्ष ग्यारहीं माहि ॥
नेसनकी जो नोक है, ते मोटी है जाहि ॥ १० ॥
ग्यारह वर्षन बीतते, वर्ष बारही माहि ॥
जरदी दांतन शीश जो, कछुक श्वेत दरशाहि ॥ ११ ॥
सोरठा–बीते बारह वर्ष, वर्ष चौदहीलों कहो ।
होत सफेदी सर्स, हयके दशनन माहिसो ॥

श्याम गरा। देखो घोड़ा न० २१

दोहा—अरुण श्वेत रोमावली, अश्वाके तनु माहिं।
श्याम पूँछरी कन्ध कच, गर्रा श्याम कहांहि॥

अवलख रग। देखो घोड़ा न० २२

दोहा -अश्वाकेरे गातमें, अधः ऊर्ध्व द्वै रंग।
अवलख नीको रंग है, कीजे ताहि प्रसंग॥

चौपाई।

नील श्वेत यक अवलख भाषो। अरुण श्वेत दूजोविधि राषो॥

मोमिया रग। देखो घोड़ा न० २३

दोहा—मोमरंगको मोमियॉ, अश्वाके तनु होइ।
ताहूमें जो गुल परै, गुली मोमियां सोइ॥

मटिहा रग। देखो घोड़ा न० २४

दोहा—मटिहा रंग पतंग सम, तनुको वांचा होइ।
चुस्त दुरुस्त सब काममें, याहि लेउ मति कोइ॥

महुआ रग। देखो घोड़ा न० २५

दोहा—मधु समान रोमावली, महुआ रग बखानें।
अरुण चमक कछु गातमें, ताहि सुनहुला जान॥

कुल्ला रग। देखो घोड़ा न० २६

दोहा—जरद रंग सब गातमें, सेली पीठिमें होइ।
पैरनमें पंजा परै, कुल्ला कहिये सोइ॥

फुलवारी रग। देखो घोड़ा न० २७

दोहा—जगह जगह तनु होत है, बहु रंगनके फूल।
अति शुभ ताहि बखानिये, कँह नकुल प्रतिकूल॥

दोहा–तीन सफेदी होइ यों, दही रूप ज्यों आहि ।
याहि उमरके ऊपरे, और परीक्षा नाहि ॥ १ ॥
बीतत चौदह वर्षके, वर्ष सत्रही जानि ।
बाजीरदनन परत है, जरद बिन्दुसे आनि ॥ २ ॥
जानौ यकइस वर्षते, बीते तेइस वर्ष ।
दशननमें जे बिन्दु है, ते वे बाढ़त सर्स ॥ ३ ॥
बीते तेइस वर्षके, वर्ष पचीस समात ।
रदन जातिहे बढ़ति अति, अरु सीधे है जात ॥ ४ ॥
दांतनकेरी जर विषे, लीक समान देखात ।
शालहोत्र मुनिके मते, जानि लेहु अवदात ॥ ५ ॥
बढ़े पचीसहिते उमिरि, तीस वर्षलौं जानि ।
दांत जाति है हालि सब, बाजीके यह मानि ॥ ६ ॥
कटत घास नहि दशनसो, करत कूत्रिका तात ।
ता ऊपर बत्तीसलौं, बाजी रदन निपात ॥ ७ ॥
अरबी और इराकके, बहुरी जानि इरान ।
इन्है आदि जे है तुरी, दीरघ आयु प्रमान ॥ ८ ॥
तिनके दांतन भेद कछु, कहति अहौं अब सोइ ।
तीसमास पर्यन्तलौ, बाजि अखेडे होइ ॥ ९ ॥
तीनि वर्ष पट मासलौ, सौन कंद कहि जात ।
चारिवर्षको होय जब, तब तोरै दुइ दांत ॥ १० ॥
दोक कहत है ताहिको, शालहोत्र कहि सोइ ।
चारि दांत जबही गिरे, आठ वर्षको होइ ॥ ११ ॥

कुम्मैत रग । देखो घोडा नबर २८

दोहा–गात होइ जो अरुणता, आल चरण दुम श्याम ।
सो कुंमैता कहत है, नकुल मते अभिराम ॥

तेलिया कुमयत रग । देखो घोडा नबर २९

दोहा–लाखरंगसो रंग है, श्यामचरण दुम आल ।
तेल कुमयता नाम तिहि, नीको रंग विशाल ॥

टोपरा रग । देखो घोडा नबर ३०.

दोहा–जिहि वाजीके शीश पर, श्वेतटोप दरशाइ ।
कहेउ टोपरा नाम ऋषि, युद्धधीर सो आइ ॥

मुश्की रग । देखो घोडा नबर ३१

दोहा–श्याम वर्ण रँग अश्वको, महिषी रूप शरीर ।
पाक फरिंदेसी चमक, मुशकी रंग सुधीर ॥

नोकरा रग । देखो घोडा नबर ३२

दोहा–चरण आल दुम गात सब, श्वेतवर्ण जो होइ ।
नयन नासिका शीशली, कपिला नुकरा सोइ ॥

सिरगा रग । देखो घोडा नबर ३३

दोहा–होय सफेदी गात सब, जैस रुकुमको रंग ।
कहो रंग है नाम ऋषि, सिरगा चपल तुरंग ॥

द्विविध सब्जा । देखो घोडा नबर ३४

दोहा–श्याम श्वेत मिलि अरुणता, रोमावली शरीर ।
सब्जा द्विविध बखानिये, नकुल कहैं मतिधीर ॥

सब्जा सारो रंग । देखो घोडा नम्बर ३५.

दोहा–पीठ लीक है अरुणता, सबुजा है सब अंग ।
श्वेत शीश आनन सकल, सबुजा सारो रंग ॥

नव वर्षनके ऊपरै, ग्यारहलौ यह मानि।
होत पच तव वाजि है, श्रीधर कहो वखानि ॥ १२ ॥
ग्यारहते बारह लगे, दशनन रेख लखाइ।
बारहते तेरह लगे, छिद्र परति है ताइ ॥ १३ ॥
बीतत तेरह वर्षके, जहँलगि चौदह वर्ष।
सब दांतनके ऊपरै, बाढ़त स्याही सर्स ॥ १४ ॥
बीतत सोरह वर्षके, अष्टादश पर्यंत।
सब दांतनके बीचमें, जरद होत दुइ दंत ॥ १५ ॥
जरद रेख दशनन विषे, बीस वर्षमें होइ।
एकबीस वर्षाहिं विषे, जरदी व्यापति सोइ ॥ १६ ॥
दोइ औरके बीतत, जरदी कछुक सफेद।
होत आइ दशनन विषे, जानि लेउ विन खेद ॥ १७ ॥
बढ़ति सफेदी सो अहै, वर्ष पचीस प्रमान।
जरद बिन्दु दशनन परै, धतिस वर्ष बखान ॥ १८ ॥
दोइ और बीते वरष, बिन्दु स्याह वै होइ।
सो वह स्याही अति बढै, पैंतिस वर्षन सोइ ॥ १९ ॥
बीते छत्तिस वर्षके, दांत बाढि सब जाहिं।
हालि जाति सब दांत है, अतिस वर्षन माहिं ॥ २० ॥
फिरि चालिस वर्षन विषे, वाजी रदन निपात।
और तुरिनके रदनते, यतनो भेद लखात ॥ २१ ॥
येती आयु तुरीनकी, रदन भेदसों जानि।
शालहोत्र लिखि देखिकै, श्रीधर कह्यो बखानि ॥ २२ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत बाजीआयुप्रमाण रदनपरीक्षा वर्णन नाम सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

सब्जा । देखो घोडा नम्बर ३६

दोहा—सब्जा होवे श्याम सित, कहै रंग परवीन ।
श्यामलीक हय आल द्रुम, महासुफल सुख दीन ॥
चौ०—कहुँ कहुँ श्याम श्याम गुल देखै।गुलेदार सब्जा अवरेखे॥

अथ सत्रह रंग मिश्रित ।

कवित्त—केहरी बदामी औ सिराजी बोस्ता खजरेट,
बिल्लौरी कागजी कपूरी और तूसी रेपिये ।
पिंग रंग धूरिया कबूतई रमनी त्यों चालधार,
कल्यानी चभालखी सुमति विशेपिये ॥
प्रथम कवित्त पटाविंशति गनाये रंग,
यामें सप्तदश ठीक तेतालिस लेखिये ।
येते रँग प्रगट तुरगनके युद्धवीर,
इनहीमें केवल अरु मिश्रित परेपिये ॥

पुन भिन्न भिन्न रंगोंकी पहिचान—छन्द पद्धरी ।

मुख उदर जानुसेती निहारि । सुरखा तजि सब केहरि बिचारि॥
फुटती बदाम सम श्वेत माहि । लखि रंग बदामी कहि सो ताहि॥
मिलि श्वेत रंगमें पीत रोम । कहि नकुल सिराजी तुरी कोम ॥
नाहिं सफेद न सुरखा रंग पाय । तिनको बुध बस्ता रँग बताय ॥
तल नैन ग्रीव अरु असित रेष। खजरेट कहौ तिनको विशेष ॥
बिल्लौर अरुण तुच जहँ लखाय । तुच अतिमहीन कागजी पाय॥
जहँ तनु कपूररँग भासमान । तह कहत कपूरी नकुल जान॥
समफूल तीसिया तूसरंग । लखि बागरोम सेली जु पिंग ॥
मैलो सफेद जिमि धूपरंग । कहि नकुल प्रगट धूरी तुरंग ॥
लखि दादुरके रँग तुरंग वेष । तिनको कबूत कहिये विशेष ॥

अथ बाजीउत्पत्तिदेशकथन ।

दोहा- बाजी चारि प्रकारके, औरो होत सुजान ।
देश प्रकृतिके भेदसों, तिनको करौ बखान ॥ १ ॥
उत्तम मध्यम अधम अरु, नीच जानिये और ।
तिन बाजिनके कहत हौं, शालहोत्र मत ठौर ॥ २ ॥
देश प्रभावहि होत है, बाजी प्रकृति सुभाउ ।
देश देशके हय कहौ, करि करि चितमें चाउ ॥ ३ ॥
सब देशनमें होति है, बाजी उत्पति आइ ।
ए जे देश विशेष हैं, तेई कहत बनाइ ॥ ४ ॥

अथ बाजी उत्पत्ति उत्तम देशकथन ।

दोहा–नील रोदके पारके, दरियाई पुनि जानि ।
अरबी जाति सुठार है, और इराकी मानि ॥
सोरठा–इनसम जानि इरान, बलख बुसारो है कहौ ।
भक्खर तुरकिस्तान, देश कुरंग तुरंग है ॥
दोहा–चक्रवार पुठवार अरु, बहुरि कहौ कंधार ।
सिंधुदेश तिब्बत सहित, जानि लेहु चिन्हार ॥ १ ॥
पुनि ये सौंरो जानिये, धन्नीसो हय मानि ।
अरु पंजाबौ देशको, श्रीधर कहत बखानि ॥ २ ॥
कच्छभुज्ज अरु जानिये, बहुरि काठिआवार ।
फेरि भीमनाथली कहि, इनके हरि सुखसार ॥ ३ ॥
इन देशनके बाजि जो, उत्तम लीजो जानि ।
शालहोत्र मत जानिकै, दीन्हें इहां बखानि ॥ ४ ॥

रमनी विलोकि रँग मारजार। बहु रंग रोम मिलि चालधार॥
लखि क्षेमकरीसम तनु विचित्र। कल्यानी है सो कहिये मित्र॥
चंभा रँगा मुख सित अरुण जान। तनुकहूँ श्वेत कहुँ श्याम आन॥
अतिही गहिरो कुम्मयत जान। सो रँग लक्खी कहिये सुजान॥
दोहा–वर्ण वर्ण मिश्रित भये, शुद्ध अशुद्ध अनेक।
लक्षण सबके कहत हौं, युद्धवीर सविवेक॥ १॥
चोख रु मंद विभेद करि, नाहि भाष्यो यहि हेत।
हयगति कला प्रवीन जो, चढि फिराय लखि लेत॥२॥

अथ सत्रह रंगके घोडोकी पहिंचान वा लक्षण।

केहरी रंग। देखो घोडा नंबर ३७

दोहा–उदर जानु मुख श्वेत है, सुरखा तजि कहि सोइ।
कह्यो केहरी नाम ऋषि, रंग असीलो सोइ॥

सिराजी रंग। देखो घोडा नंबर ३८

दोहा–श्वेतरंग सब गात है, पीतरोम मिलि जाय।
ताहि सिराजी कौमियाति, मध्यम रँग कहाय॥

बदामी रंग। देखो घोडा नंबर ३९

दोहा–फुटकी होय बदाम सम, श्वेतरंग तनु माहि।
ताहि बदामी कहत है, नकुल मतो सो आहि॥

बोस्ता रंग। देखो घोडा नंबर ४०

दोहा–नहि समुदा नहि सुरखा, रंग लेहु पहिचानि।
ताको बोस्ता कहत है, मध्यम कहौ बखानि॥

खंजरेट रंग। देखो घोडा नंबर ४१

दोहा–तालु नयन ग्रीवा अधर, रेखा असित सुजान।
खंजरेट ताको कहै, मध्यम रँग प्रमान॥

अथ मध्यदेशवाजीवर्णन।

दोहा—सतलजके यहि ओरके, जे जगलके खेत।
वाजी होत बिशाल है, ये मध्यम कहि देत ॥ १ ॥
पना रजहरिया बहुरि, ग्वालिआरिया मानि।
एते देशन वाजि जे, पौरुषहीन बखानि ॥ २ ॥
और कही करनाट है, जानौ पुनि गुजरात।
इन वाजिनमों बल बड़ो, अधिक तेज सरसात ॥ ३ ॥

सोरठा—एक देश कुरंग, इनमें वाजी होत जे।
तिनके पुष्टित अंग, शालहोत्र मुनिको मतो ॥ १ ॥
बहुत दूरि चलि जाहि, मानत नाहिन हारिको।
अतिहि बली सो आहि, पै वे टरों होति है ॥ २ ॥

दोहा—रंगपुरी झुमिला सहित, ओर भुटानी जानि।
इनमें जे टांघन अहे, ते मध्यम करि मानि ॥ १ ॥
सनीपूर जैता सहित, कनकाई अरु मानि।
इन देशनके वाजि लघु, तेऊ मध्यम जानि ॥२॥

अथ अधमवाजीवर्णन।

दोहा—अधम खेत अब कहत हौं, वाजिनके जे आहिं।
माडवार खडहर सहित, अति बलहीन कहाहिं ॥ १ ॥
रंगपुरी झुमिला सहित, और भुटानी जानि।
इनमे बड़े तुरंग जे, तेऊ अधम बखानि ॥ २ ॥

अथ नीचतरवाजीवर्णन।

दोहा—महानीच तिरहुति विषे, वाजी उत्पति होइ।
औरो जे पर्वत अहे, तिनमे नीचे जोइ ॥ १ ॥

कागजी रंग। देखो घोडा नंबर ४२

दोहा-त्वच महीन रँग श्वेत लखि, जा वाजीकी होत।
कह्यो कागजी नाम शुभ, राजनको सुख देत॥

बिल्लौर रंग। देखो घोडा नंबर ४३

दोहा-श्वेतरंग सब अंगमें, अरुण त्वचा दरशाय।
बिल्लौरी सो जानिये, उत्तम महा कहाय॥

कपूरी रंग। देखो घोडा नंबर ४४

दोहा-जा हयकी रोमावली, रँग कपूर सम होय।
ताहि कपूरी जानियो, उत्तम भाषों सोय॥

तूसी रंग। देखो घोडा नंबर ४५

दोहा-फूल बराबरि बदनमें, रंग तीसिया तूस।
महाअशुभ ताको कहे, करै वित्तको खीस॥

अथ धूरिया रंग। देखो घोडा नंबर ४६

दोहा-मैल सफेदी बदन सब, धूपरंग सम रंग।
कह्यो धूरिया तुरँगको, मध्यम है सब अंग॥

पिंग रंग। देखो घोडा नंबर ४७

दोहा-आल रोम दूनो तरफ, सेलीसी दरशाय।
कहेउ पिंग रँग सुभग बहु, शालहोत्रमत आय॥

कबूतई रंग। देखो घोडा नंबर ४८

दोहा-दादुरके रँग तनु सबै, वेष वाजिको होइ।
ताको नाम कबूतई, शालहोत्रमत सोइ॥

रमनी रंग। देखो घोडा नंबर ४९

दोहा-रमनीरंग मँजारसम, देखि चिह्न पहिचान।
कहेउ नाम हयको बिदित, शालहोत्र परमान॥

और सुदेश कहे नही, वाजी सब जग होइ।
जेते देश विशेष है, या मधि वर्णे सोइ ॥ २ ॥
सोरठा–नीच देशमें नीच, उत्तम देश न नीच कहुँ।
यह करि जियके बीच, वाजी लेहु विचारि यो ॥

अथ अन्य मत–चौपाई।

उरकर साकर खुरकर मोटा। लंबी गर्दन कमरक छोटा॥
सो अरवी सोई ईरानी। पथरी थोबरी खुंदाकानी॥
चौड़ी माथ थोबरी पतरी। रोम महीन कनौटी सुथरी॥
थाने सूय चढ़े बहु तलषी। यत्रीसेत सो हय इमि परषी॥
अधिक असाल तलासिक भारी। कूदफांदमें आतुरकारी॥
छवोबंद अति शुद्ध बनो है। सोई भक्खर खेत गनो है॥
ठट्टर भक्खर औ कंधारा। जंगल और काठियावारा॥
सुमको हलुक रोमको मोटा। ना अति सुन्दर ना बहु खोटा॥
तिनके नीचे काबुल भाष्यो। देशमें एक विलाती राख्यो॥
सोइ जटिआला रजपूताने। गर्दन बड़ी बड़ोई कानै॥
कमर गामची श्रुतिको छोटा। दुम सुम भारी मुखको मोटा॥
आगे पाछ बराबरि देखै। ताको सब कोइ तुरकी रेखै॥
तुरकी टापन घुटकन काई। चारिहुको बँद एकै ठाई॥
कहुँ कहुँ तसवीरन देख्यो। सो तुरंग दरिआई लेख्यो॥
दोहा–जा घोड़ेकी पीठि बुध, अतिखाली अवरेखि।
ताको कच्छी कहत सब, अति स्वरूपका देखि॥
चौ०–उत्तम वाजी देश बखानौ। चारु बुखारु महामन मानौ॥
खुरासानके होत हैं नीके। राजत साजत काजनहीके॥

जालिया रंग। देखो घोडा नम्बर ७५.

दोहा–पुट्टा पछिलो आगिले, औरौ अंगम होइ ।
जारीसम रँग श्वेत है, महादोष कहि सोइ ॥

सोरठा–जाल परै तनुमाहि, कछुक अवस्थाके गये ।
भूलि न राखौ ताहि, याको त्यागन कीजिये ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहे केशवसिंहकृत वाजीरंगकथननामक नवम अध्याय ॥ ९ ॥

अथ पद्म रंग शुभ ।

दोहा–हाथ सफेदी माहि जो, किंचित तिल परिजाय ।
पद्मनाम ताको कहै, अति शुभ लक्षणराय ॥

अथ दाग अजनीदोष वर्णन ।

दोहा–दाग निशानी चारिविधि, ताहि अंजनी नाम ।
भिन्न भिन्न सो कहत हौं, दोष सहित अरु नाम ॥ १ ॥
दाग अंजनी कहत हौं, दूसर नाम बखान ।
कोऊ कोऊ कहत हैं, लहसुन नाम सुजान ॥ २ ॥
दाग होइ जो अश्वके, धूमवर्णको आनि ।
की कस्तूरि रंगको, की असमानी जानि ॥ ३ ॥
लाल अंजनी कहत हौं, ताकर नाम बखानि ।
तैसो दाग जु श्वेत है, श्वेत अंजनी जानि ॥ ४ ॥
जरद दाग जो अश्वके, अंजनि पद्म कहाइ ।
वाम अंग जो अश्वके, होत अंजनी आइ ॥ ५ ॥
ताकर फल अस कहत हैं, सकलसयाने लोइ ।
स्वामीघातक अश्व है, तजौ ताहिजो जोइ ॥ ६ ॥

करनाटक गुजरात बखानौ। अति अहार सो मध्यम जानौ॥

दोहा–माडवार कसमीरके, उत्तर दिशिके अश्व।
नीच कहे है नकुल मत, शालहोत्र सर्वस्व॥ १॥
कहे बाजि जे विपिनके, सिधनदीके तीर।
और देशके जानियो, है कनिष्ठ मतिधीर॥ २॥

अथ देश आयु वर्णन।

दोहा–काशीपूरव दश बरष, हरद्वार लगु बीस।
कहुँ कहुँ जंगलके तुरँग, जियत तीस चालीस॥ १॥
जे असील है ठौरके, खुरासान मुलतान।
और इरानी अरबके, कच्छी दीरघ जान॥ २॥
तिनकी तैसी आयु है, दीर्घ वर्ष प्रमान।
चदनसदनते जानियो, रदन वदन पहिचान॥ ३॥

इति श्रीशालहोत्रसमद केशवसिंहकृत बाजीदेशउत्पत्ति-
कथन नामक अष्टम अध्याय॥ ८॥

अथ रंग नाम पहिचान छब्बिस रंग वर्णन।

कवित्त- श्यामकर्ण संदली समुद सूर सुरसा सुरंग,
चीनी चौधर संजाफ नीलमकसी प्रमानिये॥
तामरा हर्यल गर्रा मोमिआ अबलख मटिहा,
महुआ फुल्वारी कुल्हा रंगन बिहानिये॥
भापहुँ कुमेत मुश्की टोपरा सो युद्ध धीर,
नौकरा सिरगा सागे सबुजा बखानिये॥
रंग ये भने है षटविंशति प्रसिद्ध करि,
अतिही प्रवीन जो तुरंग कला जानिये॥

श्वेत अंजनी बगलमों, जो बाजीके होय।
त्रिया मरै ताकी सही, जाके अस हय होय ॥ ७ ॥
यह फल जो वर्णन कियो, श्वेत अरुणको जान।
दहिने अंग जु अजनी, ताको दोष न मान ॥ ८ ॥

अथ पद्मअजनी दोष।

दोहा–दहिने बाँये अंगमो, पद्मअंजनी होइ।
संवत्सरके भीतरे, दोषहि लीजो जोइ ॥ १ ॥
अश्व अहै घर जाहिके, ताहि परै अस दुःख।
भाईको बेटा मरै, लहै न सपने सुःख ॥ २ ॥
सोरठा–जेई अंजनि माहि, बिंदु होइ रँग देहको।
बालअजनी आहि, स्वामीको नाशै सही ॥
दोहा–केहरि फुलवारी सहित, अरु सबजा गुलदार।
इनमें अंजनि दोष नहि, कीन्हों यह निरधार ॥ १ ॥
औरौ दोषी रंग जे, ते अब कहौं बखानि।
चापदस्त हय एक पुनि, दूजो अरजल मानि ॥ २ ॥
सब देहीको एक रँग, कोई रँग किन होय।
तामें ये लक्षण परै, कहत अहौं अब सोय ॥ ३ ॥
और सफेदी अंग नहि, आगिल पांउ सफेद।
चापदस्त सो जानिये, उपजत लीन्हें खेद ॥ ४ ॥
यही प्रकारहि अंग सब, पाछिल पाँव सफेद।
अरजल ताको नाम है, बहुत करै सो खेद ॥ ५ ॥
सोरठा–जाके हय यह होय, तासु त्रिया रोगिनि रहै।
भूलि न लीजे कोइ, जाको ऐसो रंग है ॥

अथ प्रथम श्यामकर्ण रंग स्वरूप वर्णन । देखो घोडा नंबर १.
यह घोडा रामाश्वमेधमें छोडा गया था ।

दोहा–श्रवण श्याम बिंबा अधर, शशि समान सब गात ।
पीत पूँछ नख अरुण जिहि, वेगवंत जिमि वात ॥

चौ०–शीश केश बहु पीत सुहायो । मुनिवसिष्ठके सो मन भायो ॥
सुरँग रत्न मणि माल गुहाये । तुरँग कंठ बहु विधि पहिराये ॥
कंचनपत्र कीन्ह यक सुंदर । वाजिभाल बांध्यो लिखि ऊपर ॥
तब प्रभु कह्यो बोलि रिपुदमनू । तात तुरंग संग करु गमनू ॥

अथ द्वितीय श्यामकर्ण रंग । देखो घोडा नंबर २
इस रंगका घोडा युधिष्ठिरके अश्वमेधमें छोडा गया था ।
व्यासमुनि राजा युधिष्ठिरसे कहते हैं–चौपाई ।

पुनि यह वाजिमेधहित भूपा । चहिय तुरँगवर सुभग स्वरूपा ॥
दोहा–जो वैसा हय ना मिले, प्रथम चिह्नके रूप ।
तो यहि विधिको छांडिकैं, यज्ञ कीजिये भूप ॥
चौ०–श्रवणहु पूँछ श्याम शिर केशा । होय जासु वपु वर्ण नरेशा ॥

संदली रंग । देखो घोडा न० ३

दोहा–रंग बदामी संदली, बरणै सुकवि विधान ।
फीको हय सब रँगनमें, भाषै तिहि गुणवान् ॥

समुदरंग तीन तरहके । प्रथम समुद रंग । देखो घोडा नंबर ४

दोहा–रोमावलि जो अश्वकी, उदर फेन सम होइ ।
चरण आल दुम श्याम है, समुद कहावै सोइ ॥

चौ०–प्रथम सितार पेसानी जानो।दूजौ अकवर नाम वखानौ॥
ईनयुत वाजी दोपी होइ । शालहोत्र मुनिको मत सोइ ॥

अथ सितारे पेसानी वर्णन ।

चौपाई–भाल जासुके टीका होई । नखत बरोवरि जानौ सोई॥
और देह सव एकै रंगा । नाहि सफेदीकर परसंगा ॥
जाके तनु ये लक्षण अहै । सितार पेसानी ताको कहै ॥
सो वहु मध्यम दोष वखानौ।जहँ वहहय तहँ चिन्ता मानौ ॥

अथ अकरव दोष वर्णन ।

दोहा–भाल जासु टीका अहै, और कहूँ नहि सेत ॥
ता मधि देही रंग है, अकरव सो कहिदेत ॥ १ ॥
जाके वाजी यहु रहै, ताके सुख नहि होत ।
शालहोत्र मुनि यों कहै, दिन दिन दुख उद्योत ॥ २ ॥

अन्यञ्च ।

दोहा–ऐव दोइ औरौ अहै, ते अव कहौ वखान ।
कसका जानौ टेढ़ यक, अधर विन्दु यक जान ॥ १ ॥
कसका जाके भालको, टेढ़ो होइ वनाय ।
और सफेदी अंग नहि, सोऊ ऐव कहाय ॥ २ ॥

अथ अधरविन्दु दोष ।

दोहा—श्वेत अधर जा वाजिके, तामे भॅवर समान ।
श्यामविन्दु जाके परै, सोऊ अधम वखान ॥
चौ०–की वाजी आपुहि यह्न मरै । की कछु और हानिको करै ॥
दोहा–कहूँ सफेदी अंग नहि, ऐसो वाजी होइ ॥
श्वेत होइ जो नाकपर, ऐवी वाजी सोइ ।

द्वितीय समुद रंग । देखो घोडा नंबर ५

दोहा–रंग होइ सब समुदको, कर्णश्याम कछु जान ।
समुदकर्ण तेहि नाम है, जानौ चतुर सुजान ॥

तृतीय समुद रंग स्याह जानु । देखो घोडा नंबर ६ ।

दोहा–समुद स्याह जानू कहौ, जाके जंघा श्याम ।
वड़ो रंग मजबूत है, याको राखो धाम ॥

शूर रंग अशुभ । देखो घोडा नंबर ७ ।

दोहा–धूम्रवर्ण जनु भस्म है, देखत दूरि कराहि ।
शूर कहावत नकुलमत, सेंति न लीजे ताहि ॥

सुरखा रंग शुभ । देखो घोडा नंबर ८

दोहा–होइ सफेदी गात सब, दूधफेन अनुहारि ।
सुघर पूँछरी कंध कच, सुरखा कहेउ विचारि ॥

सुरंग गुंजारंग । देखो घोडा नंबर ९

दोहा–अरुणगात जिहि अश्वको, जिमि गुंजाको रंग ।
अरुण पूँछरी कंध कच, जानब ताहि सुरंग ॥

श्वान सुरंग । देखो घोडा नंबर १०

दोहा–अरुण गात जिहि वाजिको, जिमि हाटकको रंग ।
तैसे पूँछरी कंध कच, कहिये श्वान सुरंग ॥

तैल सुरंग । देखो घोडा नंबर ११

दोहा–होय अरुणता आलदुम, मिलै श्यामता जाहि ।
कह्यो नाम है कोविदन, तैल सुरंगी ताहि ॥

केहरी सुरंग । देखो घोडा नंबर १२

दोहा–आलचरण दुम श्वेत है, अरुण गात सब होत ।
सो केहरी सुरंग लखि, शालहोत्र कहि देत ॥

अथ वागरंग गोमै।

दोहा–होय रंग जो बाघको, बरगोले महँ होय।
गोमै कहिये नाम तिहि, बड़ो दोष है सोय ॥ १ ॥
गोमय होय जु पेट तर, कटि आननपर सोइ।
बाम दाहिने होइ जो, कहो नीक नहि कोइ ॥

स्तुति मंगलवाग शुभ।

दोहा–जिहि घोडेकी पूँछपर, खायलकेर नगीच ॥
हृदय चरण अरु शीशपर, दाढीकेरे बीच ॥ १ ॥
होइ सफेदी ठौर इन, तौ है बाहर रंग।
अस्तुति मंगल नाम तिहि, लक्षण भले तुरंग ॥ २ ॥

अथ पुष्परंग अशुभ।

दोहा–लोप करे निज बरन जो, प्रगट करै बियरंग।
पुष्पाहय ताको कहैं, भूलि न करौ प्रसंग ॥

अथ अशुभ रंग दाग।

छप्पय–अतिलघु टीका श्वेत सितारा कहि दुखदायक।
शिरको टीका कठो आशु स्वामी सुखनाशक ॥
शिरशित टीकामाहि परै तनु रंग अकरवगति।
श्याम अरुण कै टीक भालकारि दोष फहस अति ॥
जहँ टीका ऊपर नोक बाढ़ि दलभंजन अति दोषकर।
काकटोंट पद श्वेत विषम अति प्रबल दोषवर ॥
कै एक सफेदी भाल लखि मन न इन्है लेवो करै।
सप्तदोष विचारिकै तब भूप अश्व चढ़ि रण करै ॥

चीनी रंग । देखो घोडा न० १३

दोहा–कहुँ कहुँ श्वेत रु नील कहुँ, त्वचा कहो कहुँ श्याम ।
सो चीनीरंग कहत हैं, नकुल मते अभिराम ॥

संजाफ रंग । देखो घोडा न० १४

दोहा–पूँछ चरणलगु जानिये, दूजी रंग लकीर ।
जो संजाफी नाम कहि, सब रंग केर वजीर ॥

चौधर रंग । देखो घोडा न० १५

दोहा–गज समान जिहि अश्वको, रंग होइ सब गात ।
चौधर चौकस अशुभ अति, करो न याकी बात ॥

नीला रंग । देखो घोडा नं० १६

दोहा–नील वर्ण जा अश्वको, रोमावली शरीर ।
नीलारंग बखानु तिहि, बड़ो जोर गंभीर ॥

मकसी रंग । देखो घोडा न० १७

दोहा–श्याम श्वेत फुटकी परै, सकल शरीर समान ।
मकसीरंग बखानिये, नकुल कहैं पहिचानें ॥

हरयल रंग । देखो घोडा न० १८

दोहा–असित हरित मिश्रित ह्वै, रोमावली शरीर ।
हरयलरंग जग छिप्र है, नकुल कहैं मतिधीर ॥

तामडा रंग । देखो घोडा न० १९

दोहा–चमके ताँबेकी झलक, रंग तामरा नाम ।
युद्ध विषे स्वामी सहित, करै आपु संग्राम ॥

अरुण गर्रा । देखो घोडा न० २०

दोहा–अरुण गात जिहि अश्वको, मिलै सफेदी जाहि ।
अरुण पूछरी कन्ध कच, गर्रा जानवं ताहि ॥

अथ पीठिदाग अशुभ।

दोहा–अश्वाकेरी पीठिपर, दीरघ होय सफेद।
लीन होइ तौ फेरिये, दूरिहि दूरि खरेद ॥

अथ तिलकतोर दोष।

दोहा–जिहि घोड़ेके वदनपर, बढी सफेदी होइ ॥
बीच बीच खंडित परे, तिलक तोर हय सोइ ॥ १ ॥
याको कबहूँ न लीजिये, महादोष गंभीर।
राज्य विनाशै सुख हरै, रोगी रहै शरीर ॥ २ ॥

अथ शहर भूकरग दागदोष।

दोहा–होइ सफेदी नासिका, शहर भूक तेहि नाम।
पेट भरै नहि ताहिको, जो यहि खरचै दाम ॥

अथ कंचुकी दागरग अशुभ।

दोहा–जानु पाछिले वाहु युग, कॉयो अंड जु सेत।
नाम कंचुकी अशुभ अति, नाशै कुल धन खेत ॥

अथ चौरंगीरग दागदोष।

दोहा–नासाकेरे भीतरे, फुटकी श्वेत देखाय।
सो चौरंगी दोष वर, करै अलक्षण आय ॥

अथ श्रुतिहतरग दागदोष।

दोहा–श्रवण श्वेत यक कछु निरखि, श्रुतिहत दोष कहाइ।
रोग करै सब सुख हरै, नकुल मतो सो आइ ॥

अथ श्यामतालु।

दोहा–टीका तालू मधि लखै, श्यामवर्ण रँग होय।
महानिषिद्ध बखानिये, शालहोत्र कह सोय ॥

अथ पचस्थल शुभ।

दोहा–गर्दन पोता पीठि दुम, चरण श्वेत जो होइ।
पंचस्थल सित तुरगके, महासुलक्षण सोइ॥ १॥
की थल चारौ तीनकी, की दुइ जानौ भीत।
गुलदस्ती शुभ नाम है, शालहोत्र परतीत॥ २॥

अथ मिश्रित रग।

स०–श्वेततुरंगम है हिमरूप, सो भूपतिको सुखदायक नीको।
रक्ततुरंगसो औ पुनिपीत, लस सबभाँति गौरंगुल फीको॥
नील तुरगम पन्नगके हत, श्यामनिधानसो नीलम नीको।
भाग्य वड़े घर आवत जासुके,सुंदर रूप सो भावत जीको॥
चौ०–सबते अधिक श्वेत जियजानौ।राजतिलककेयोग्यवखानौ।
सो न होइ तौ कमकै लीज। श्यामरगको दूरि करीजै॥

दोहा–रग न जाको समुझिये, बाजी होय विशाल।
और अश्वको भय करै, ताहि तजौ ततकाल॥ १॥
बाल अवस्था नील है, दिन दिन बढ़े जु श्याम।
सो वाजी निज परिहरौ, भूलि न राखौ धाम॥ २॥
अधिकरंग जाकी सुरति, घटै सो नितप्रति मान।
होय वृद्ध बहु लघु बरन, ताहि न लावै जान॥ ३॥
नुकरा हंस स्वरूप है, राजत सित यक-रग।
सुर्खा सुरँग कुमैत कहि, सुसकी सफल प्रसग॥ ४॥
ए पांचौ रँग अतिहि दृढ, महा वलिष्ठ वखानु।
पंचदेवकी सकल महि, शालहोत्र मत जानु॥ ५॥

अथ शुभाकर भौरी ।

दोहा—भौरी गामचिके तरे, सुमके ऊपर होइ ।
ताहि शुभाकर जानिये, शुभकी आकर सोइ ॥ १ ॥
अगिले बायें पॉइपर, जो यह भौरी होइ ।
ऐसो वाजी जहँ रहै, नितप्राति उत्सव होइ ॥ २ ॥
ताहि चढ़े असवार जो, लक्ष्मी ताके हाथ ।
अधिप होय सो भूमिको, शत्रु नवावै माथ ॥ ३ ॥

अथ विजयकर्ण भौरी ।

दोहा—जाके पछिले पॉवमें, भँवरि गामची माहि ।
विजयकरण है नाम तिहि, शुभगुण जानौ ताहि ॥ १ ॥
सो स्वामीको सुखद नित, रहै जासुके साथ ।
युद्ध विजय यह जानियो, विजय तासुके हाथ ॥ २ ॥

अथ चक्रीनामक हय ।

दोहा—होय तुहिन सम श्वेत हय, श्वेत नेत्र अरु होय ।
चक्र परै तालूविषे, चक्री वाजी सोय ॥ १ ॥
सो स्वामीको सुखद नित, सकल मिटावै दोष ।
कीरति बाढै तासुकी, दिन दिन बाढ़ै कोश ॥ २ ॥

अथ कामबिगारी भौरी ।

दोहा—अश्वाकेरे जीभतर, होय जु आलि यहि ठौर ।
कामबिगारी नाम तिहि, काज बिगारै और ॥

अथ वनियाँ भौरी ।

दोहा—भौंरी होय जो पेटतट, अंगुल युगल प्रमान ।
कच्च दीरघ वा ठौरमें, वनियां ताहि बखान ॥ १ ॥

अथ दूसरी सिंगिनि।

दोहा–औरो सिंगिनि एक है, कहत अहो अब सोइ।
सहसपाद समलीक द्वै, बीच भालमें होइ॥
सोरठा–यकै लीक जु होय, ताहूको सिंगिनि कहै।
ऊरध कह हय सोय, शालहोत्र मत जानियो॥
दोहा–औरौ सिंगिनि रूप यक, सोऊ कहौं बखानि।
तासु रूप वर्णन करौं, महादोषकी खानि॥ १॥
भौंरी है बिच भालके, ताके ऊपर सोइ।
काननके तर जानियो, या भांति गुच्छा होइ॥ २॥
बार बड़े सब भालते, ता गुच्छाके आहि।
तामें घूमे होइ कछु, शृंगरूप दरशाहि॥ ३॥

सिंगिनिको फल।

दोहा–धनको नाश करै सही, कोई सिंगिनि होइ।
नाश करै निज स्वामिको, समर पराजय होइ॥

अथ दोकरा भौंरी।

दोहा–भौंरी चोटीतर अहै, ताके पॉजर होइ।
चोटीतरकी भौंरि युत, दुइ भौंरी है सोइ॥ १॥
कहत विलाइतमें अहै, ताको खोसा जानि।
मध्यम दोषी सो अहै, भँवरि दोकरा मानि॥ २॥

अथ गजनी भौंरी।

दोहा–भौंरी जो बिच भालके, ताके ऊपर होइ।
की तौ ताके तर लसै, भौंरी तीसरि सोइ॥ १॥

कटिसमूल ग्रीवा अस्थूला । छाती चौड़ी उदर समूला ॥
सूधे सूक्षम मास न होई । करपद मृगसमान है सोई ॥
ग्रीवा पूंछ ऊँच सब आवै । कटि लघु चौडी पीठि लखावै ॥
छोटे कर्ण श्याम शुभभारे । लंबोदर कोपा फुलवारे ॥
चारौ चौका आठौ बंदा ॥ जो पावे या मनको चंदा ॥
भूरि भाग्य तिहि नरको गावै । जो घोड़ा या विधिको पावै ॥
छप्पय-ग्रीवा दीरघ नैन भाल जाके विशाल अति ।
पीन उरस्थल भीर नटी सुगम सूधे अति ॥
अरुण अधर मणिताल अरुण रसना निधानधनि ।
स्वच्छ केश शुभ चारु चरण लघु पुच्छ अधरमनि ॥
अतिगोल जंघ अरु जानु गीन सम श्वेत दशन बखानिये ।
इमि अंग शुद्ध वाजी सुभग सब भूपनके मनमानिये ॥
छंद-दृग दीरघ अग्वा पीनमाहि। अरु ठनत कंध सो ग्रीवताहि॥
चामरके सम केश लसै । पुच्छनिसुच्छ सो बारत्रसै ॥
अति चीकन रोम कठोर कटी । उर उन्नत उर्ध सुबीच अटी ॥
थूल भुजा दृग ग्रंथि गही । है पग सोतन पीन तही ॥
सोरठा-ऐसो वाजी पाय, सुखी होत भूपति महा ॥
समर सुधारो जाय, शत्रुनको शालै सदा ।

अगनकी नाप वर्णन ।

छंद मनहरन-अंगुल सत्ताइसलों आनन प्रमानको,
करण प्रमान रसअंगुल बखानिये ।
अंगुल नरसतके प्रमाण कटिपुच्छ तट,
लघु अति पुच्छ हाथ युगल प्रमानिये ॥

भौरी जो विच भालके, तायुत जानौ होइ।
दोइ दोइकी तीनि पुनि, ताहि गंजनी सोइ ॥ २ ॥
ताको नाम प्रसिद्ध यह, कहत भड़ेहरि लोग।
शालहोत्र मुनिके मते, अशुभ तासु सयोग ॥३॥
सो वह होत विशेषसों, तर ऊपर यह जानि।
पॉजर पॉजर होति नहि, यहौ भेद पहिचानि ॥ ४ ॥

इसका फल।

दोहा–नाशै स्वामीकुलसहित, जाहि भडेहरि होइ।
ताहि तुरी असवार जो, रणमें हारै सोइ ॥ १ ॥
नाम भड़ेहरि भ्रमरि जे, तिनको कहौं बखानि।
भाँति दुई अरु तीनिकी, होती है यह जानि ॥ २ ॥
थोरी पॉजर तरफ दवि, सोइ भड़ेहरि आइ।
तर ऊपर पय होय जो, दोष विशेष कहाइ ॥ ३ ॥
चोटी केरी भ्रमरि जो, तातर भौरी और।
नाम भड़ेहरि तेहुको, कहत मुनिन शिरमौर ॥ ४ ॥

अथ भौहवर्ती भौरी।

सोरठा–भौरी जाके होइ, एक भौह वा दुहुँनमें॥
भौहावर्ती सोइ, बुद्धि स्वामिकी हरति है॥

अथ ऑसूढार भौरी।

चौपाई–ऑखिनतर भौरी जो होई। ऑसूढार नाम है सोई ॥
एकै ऑखि तरे जो अहई। ऑसूढार तेहुको कहई।
नाशै वह घोडा है जाको। ऑसूढार नाम है ताको ॥

अथ कर्णमूल भौरी।

दोहा–वामकर्णके तर भॅवरि, होइ कनपटीमाह।
कर्णमूल ताको कहै, दोपनको नरनाह ॥

तारु चारि अंगुल विदित कंध सैतालिस,[1]
पीठि पीन चौविसई अंगुल सो जानिये।
ग्रीवाको प्रमाण अत्र अगुल चालीम लगु,
जानु चारु चौविसई अंगुल सो ठानिये॥

दोहा-लिंग सु हस्त प्रमाण है, अङ चारि शुभ जान।
मोजा अंगुल चारिके, कहत ग्रंथ परमान॥ १॥
पुच्छनते गनि ग्रीव लगु, लीजै वहै प्रमान।
अंगुल असी विचारिये, वर्णत सुकवि निधान॥ २॥
दुइ अगुल वत्तिस समुझि, ऊँचो वाजिप्रमान।
सो भावै भूपतिनको, ताते करो सुमान॥ ३॥
इनते अगुल जो अधिक, जा वाजीको होय।
शालहोत्र मुनिके मते, यह प्रमाण है सोय॥ ४॥

मध्यम।

कवित्त-कहिये सुतुरदत रदन बड़ो है जासु,
ढील श्रवण चौड़ी श्रीपरे सागोस भाषे है॥
छोटी पेस जासुकी कहत तख्त गर्दनै है,
ऊंचो बाहु जाको गावसाना नाम राखे है॥
सीधो पांव जाहिको गुरुगँपॉव ताको कहै,
लागै घूट चलत कचल कहि लस है।
सूक्षम उदर पीठि लपट्यो न ताजा होत,
सोई आहूशिकम अशन कम चाषे है॥

---

१ देखो घोडा नम्बर ८३. २ देखो घोड़ा नम्बर ८४. ३ देखो घोडा नम्बर८५.

दोहा–भौंरी अरमनिकी कही, आलअंतलौं होइ ।
होइ बरोबरि दुहुँदिशि, बाग कहावै सोइ ॥ १ ॥
आल कानके बीचमें, अरमनि भौंरी होइ ।
कमजाफातिनि पुच्छ है, डेढ़ बाग है सोइ ॥ २ ॥

अथ केशवावर्त्ती भौंरी ।

दोहा–चोटी पाछे आल बिच, भौंरी जाके होइ ।
केशावर्त्ती जानियो, हनै स्वामिको सोइ ॥

अथ शोकावर्त्ती भौंरी ।

दोहा–आलअंतलौ जे भँवरि, शोकावर्त्ती सोय ।
शालहोत्रमुनिके मते, नाम सदृश फल होय ॥

अथ गिद्धिनि भौंरी ।

दोहा–दहिने बायें ककुदके, भौंरी निकटै होइ ।
मृत्यु देइ निज स्वामिको, गिद्धिनि जानौ सोइ ॥

अथ छत्रभग भौंरी ।

सोरठा–तीनि भँवरि जो होइ, जा बाजीकी पीठिपर ।
छत्रभग है सोइ, स्वामीको नाशित करै ॥

अथ धूमकेतु भौंरी ।

सोरठा–जाके भौंरी होइ, जीन पिछारी पीठिपर ।
धूमकेतु है सोय, अतिदोषी सो बाजि है ॥
दोहा–धूमकेतुयुत बाजिको, घरमें आनै कोइ ।
पुत्र त्रिया हय स्वामिको, नाश सहित होइ ॥

अथ हीनदंत दोष । देखो घोडा न० ८६

दोहा–अश्वाकेरे बदनमों, एक दंत नहिं होइ ।
हीनदंत है नाम तिहि, वाहि लेइ मति कोइ ॥

कवित्त–पद छिदको है ताहि कहत कुसादेख,
पतले सुमनको चपाती सुम रेपियो ।
अतिहि फिरायेते पिछानो जात लंगपद,
लंगकोहनाशो अतिनीठि करि पेपियो ॥
कमखोर जानो जात छोटी लेडी एड़ी ही ते,
करत रदन घाव बन्दा गिरि लेखियो ।
निशिमें न देखै सब खोर ताकी पहिचान,
कमल देखायेते अँधेरेमें न देखियो ॥ १ ॥

सोरठा–अधिक हीन रद जासु, बिरले बिरले जो लैहें ।
करें वित्तको नासु, धनी धाम नहिं रहि सकें ॥

दोहा–अश्वाकेरे बदनमें, उभै होइ बड़दन्त ।
जठरदन्त दूषित बड़े, स्वामीको बहु चिन्त ॥ १ ॥
सात दशन जो देखिये, बाजि सदन सो मानि ।
महादोष त्यागौ तुरत, घरमें राखे हानि ॥ २ ॥
दन्त अधिक जिहि अश्वके, मधन आनिये जोइ ।
गनि कराल दूषण महा, नकुल मते है सोइ ॥ ३ ॥

सोरठा–आधा रदन जु एक, इक विहीन जो देखिये ।
दूषण महा विशेष, नकुल कहैं सहदेवसों ॥

अथ अशुभ लक्षण–छन्द पद्धरी ।

तजुनेसदन्त मुनि अधिक जानि।लखिपांचदन्त दोउ दुखदमानि

अथ त्रिकालवर्त्ती भौरी।

दोहा–भौरी जाके कटिविषे, एक होइ की दोइ।
नाश करै संग्राममें, त्रिकालवर्त्ती सोइ॥

अथ मूलघातिनी भौरी।

दोहा–पूंछमूलमें जो भँवरि, तीनहोइकी दोइ।
अथवा एकै होय जो, मूलघातिनी सोइ॥ १॥
ताहि चढ़ै असवार जो, ताकी असि गति होय।
पुत्र त्रियायुत जाइहै, यमके घरको सोय॥ २॥

अथ स्वामिघातिनी भौरी।

दोहा–गुच्छ पुच्छमें भँवरि जिहि, ऐसो तुरी जु होइ।
ताको जनि संग्रह करो, यमदूतै है सोइ॥ १॥
ऐसो वाजी जाहिके, घरमें आयो होइ।
प्राणहरणको दूत है, यमको जानौ सोइ॥ २॥

अथ दुष्पावर्ती।

दोहा–भँवरि होइ या वार जो, मूलद्वार जिहि वाजि।
दुष्पावर्ती तिहि कहै, भरो दुःखकी राजि॥

अथ निंदुक भौरी।

दोहा–गले हृदयके जोरपर, जो आवर्तक होइ।
निंदुक ताको कहत हैं, पुत्र नाशकर सोइ॥

अथ भुजउट भौरी।

दोहा–जाके दोऊ भुजनपर, या एकेपर होइ।
भौरीकी सी लीक है, भुजआउट है सोइ॥ १॥
षट महिनाके भीतरै, दोष जनावै सोइ।
स्वामीको भाई मरै, नाश पुत्रको होइ॥ २॥

बिनु कारण रसना लफलफाय।अहिमुखीदोष तेहि नकुल गाय॥
मुख अर्द्ध ऊर्द्ध संपुट कराहि । नृप देखतही परिहरौ ताहि ॥
जो अधरै दौट रासै वगारि । सो दोष करौली अशुभकारि ॥
वड छोट होत जेहि अधर दोय । अतिदोष मूसली भनत सोय ॥
नित अधर वुलावै जो तुरग । कहि वायभक्ष सुख करत भंग ॥
जो शशाकरन सम अश्वजानि । सो शशाकरन दोषै बखानि ॥
त्रयकरन जासु लखिये तुरंग । गजकरन नाम नहि करु प्रसंग॥
अति अशुभ ताहि भाष्यो सुजान।यक छोट बड़ो यक तुरै कान॥
यक कंजनैन अरु श्याम एक । अतिदोष गनौ तापी विवेक ॥
जब दुवौ नैन कजा लखाय । तेहि चक्रदोष कहि नकुल गाय ॥
दृग कंज दोष इनमें विहाय । दुइरग दुखद अतिही कहाय ॥
महिषा दृग सम लखि नैन जासु।मुजायुततजिकृतविविध नासु
जो तुरै नेत्र बिल्ली समान । तेहि रीति न लीजो बुधिनिधान ॥
कामोली लखि हय बैल ग्रीव । दृग ढरत रहत युग दोपसीव ॥
ना जाँव वाके बीचमाहि । पेसदनथनी अतिदोष चाहि ॥
लघु देखि मनी कहिये सु दोष । तुचने जाके ढिग उपर चोष ॥
थुतनापर टीका श्याम हेरि । कालिंजनीय अस दोष टेरि ॥
कहि शालहोत्र मत जो प्रवीन । ऐसो तुरंग सो त्याग कीन ॥
लखि एक अंडकी तीनि हेरि । कसन अंड मत नकुल केरि ॥

१ देखो घोड़ा न० ८७, २देखो घोडा न० ८८ ३ देखो घोड़ा न० ८९ ४ देखो घोड़ा नं० ९० ५ देखो घोड़ा न० ९१ ६ देखो घोड़ा न० ९२ ७ देखो घोडा न० ९३ ८देखो घोड़ा न० ९४ ९ देखो घोडा नं० ९५ १०देखो घोडा न० ९६. ११ देखो घोडा न ९७ १२ देखो घोड़ा न ९८ १३ देखो घोडा नम्बर ९९

अथ क्षुरिकावर्ती भौंरी ।

दोहा–जाके अगिले जानुमें, भँवरि ग्रन्थि पर होय ।
हनै स्वामिको पुत्र धन, क्षुरिकावर्ती सोइ ॥

अथ पीडावर्ती भौंरी ।

चौ०–अगिले पगन भँवरि जो होई । पगँस पैर कहूँ पर सोई॥
पीड़ावर्ति भँवरि सो जानौ॥खुट उखार जाहिर जग मानौ॥
सो वह होत सुजम्भा ऊपर । एकै पगपर की पग दूसर ॥
ताहूमें यह भेद विचारौ । जंघमाहि दुख देइ अपारौ ॥

दोहा–भौंरी जाके जानुमें, ऐसो अश्व जु होय ।
स्वामीको निधनी करै, वंशहि डौर खोय ॥

अथ जान्वावर्ती भौंरी ।

दोहा–जाके पछिले जानुमें, भँवरि होय जो आनि ।
डंख उजारि प्रसिद्ध है, जान्वावर्तीजानि ॥ १ ॥
जान्वावर्तीभँवरियुत, जाके हय यहु होय ।
सदा रहै परदेशमें, चिताव्याकुल सोय ॥ २ ॥
जा घोड़ेकी गुदामें, भँवरि होयकी वार ।
दुखदायक सो वाजि है, कीन्हों यह निरधार ॥ ३ ॥

अथ मस्तककी भौंरी ।

दोहा–भौंरी जो विच भालके, जानौ अंग प्रभाव ।
ताको कछु दोषौ नहीं, गुणो नहीं कविराव ॥

अथ चद्रकोप भौंरी ।

दोहा–तीनि भँवरि हय भालमें, ऊरध मुखहि बखानि ।
तासम लक्षण और नहि, चंद्रकोश सो जानि ॥

जहँ बार जम्यौ लखितुरे अंड । इनको तजिये जहँ दुअन झुंड॥
जहँ पूँछ दंडि सेती तिहारि । कहि दोष अन्नहत दरिद कारि ॥
खर सरिस सुंम खरसुभी भाषि । सो दोषनमें बहु गनित राषि॥
बोलै तुरंग निशि बार बार । निज स्वामि गवन परदेश कार ॥
द्रुम अंग सबै निशि चमक आसु।चिलकै चिलगी कच करत नासु॥
जब मादवान सम तुरय हेरि । तिनको नहि लीजै कहत टेरि ॥
द्रुम परसै जो महिमें तुरंग । कहि झारु द्रुम साउदोष अंग ॥
बहु शीश हलावै तुरँग जोन।सो थान त्याग करि सकै भौन॥
जब लीदि करै आँस ढराइ । बहु टेरै सो रणमें पराइ ॥
जिहि तुरँग घाँटि है कंठमाहि।तिहि स्वामि भारजा रुज कराहि॥

अथ श्वेततालु ।

दोहा–तालू जाको श्वेत सब, नाहि ललाई आहि ।
तामहँ शंख समान सो, चिह्न कछू दरशाहि ॥
चौ०–ऐसो वाजी जो कोइ होई। निंदित भँवारि सहित शुभ सोई॥
जो कोउ आपन जीवन चहै । भूलिहु ताको जनि संग्रहै॥

अथ श्यामजिह्वा वाजी ।

दोहा–जाकी जिह्वा श्याम सब, की बिंदुक कोउ श्याम ।
जिह्वा श्याम बखानही, वाको सब दुखधाम ॥

उद्दालक एव ।

दोहा–ऊपरको रद बाढ़िकै, अधरहि लेइ दबाय ।
सो उद्दालक नाम है, स्वामीको दुखदाय ॥ १ ॥
बाढि जाहि अधको रदन, ओठहि लेइ दबाइ ।
सो उद्दालक हय अहै, करै अमंगल आइ ॥ २ ॥

---

१ देखो घोडा नम्बर १००.

सोरठा- दोइ बरोबरि होय, तातर भौरी भालकी ।
चंद्रकोश है सोय, ताहि निश्रेनी कहत है ॥ १ ॥
जो द्वै भौरी होंइ, तासु पुन्छ तरको लसै ।
पै अवगुंठित होइ, चंद्रकोश सोऊ अहै ॥ २ ॥
दोहा-चंद्रकोश है जाहिके, अस हय पावै कोइ ।
पुत्र पौत्र दारा सहित, चिरंजीव जग सोइ ॥ १ ॥
देय विजय संग्राममें, चंद्रकोश है जाहि ।
देश कोष महिपालके, सदा बढ़ावत आहि ॥ २ ॥

त्रिकूट भौरी ।

दोहा-जाके भँवरि ललाटमें, तीनि अधोमुख देपि ।
ताहि त्रिकूट बखानियें, संपति करै विशेषि ॥ १ ॥
भँवरि होय जो ऊर्द्धमुख, चंद्रकोश सो जानि ।
ताहि त्रिकूट बखानियें, होइ अधोमुख आनि ॥ २ ॥
भौरि होइ त्रिकूट जिहि, सो हय जाके होय ।
धन दारा अरु पुत्रसुख, देइ स्वामिको सोय ॥ ३ ॥

अथ चन्द्रार्क भौरी ।

दोहा-बीच भालमें भँवरि जो, दूसरि ताके पास ।
होइ बरोबरि ताहिके, सो वह करिके रास ॥ १ ॥
सोतर ऊपर होय नहि, नही लीक सम आहि ।
तासु नाम चंद्रार्क है, लक्षण नीक कहाहि ॥ २ ॥
जाके होय ललाटमें, भँवरि युगल रविचंद ।
देइ स्वामिको भ्रातसुख, दिन दिन करै अनंद ॥ ३ ॥

अथ भल्लुकास्य हय ।

सोरठा--डुँह तरफको होइ, आल गिरे जा वाजिके ।
भल्लुकास्य है सोइ, हरै स्वामिके वंशको ॥

दोहा-नेस निकासे होय जो, ऐसी घोडी होय ।
ऐवी जानौ ताहिको, भूलि न लीजै कोय ॥

अथ मेषदत वाजी ।

दोहा-विरले जाके दंत है, मेषदत कहि ताहि ।
शालहोत्र मुनि यों कहे, भूलि न लीजे वाहि ॥ १ ॥
तिहिकी आदिक जे कहे, ऐसे ऐव वखानि ।
करत स्वामिको घात अरु, समर पराजय जानि ॥ २ ॥

अथ अगविकार ।

सोरठा-गुलरीफल आकार, गूंथी कोवा माहि जेहि ।
कीजै तहाँ विचार, मासाते अतिरिक्त है ।

दोहा-ऐसी गूंथी देहमें, होइ कहूँ पर आय ।
जानो अगविकार सो, महादोष दरशाय ॥

अथ शृगी वाजी ।

दोहा-दोउ काननके वीचमें, होत शृंग यह जानि ।
मासा सम है रूप तेहि, कहो तासु पहिचानि ॥ १ ॥
अजयासुतके शृग ज्यों, प्रथमहि निकसति आय ।
खालके भीतर ऊँच कछु, टोयेते दरशाय ॥ २ ॥
शृंगीवाजी होय जो, महिपालोंके आय ।
नाशै धन कुल स्वामियुत, अपर पुरुषको आय ॥ ३ ॥

अथ दृष्टान्त पूर्वक विशेष दोष ।

हरिश्चन्द्र त्र्यकर्णते, वेणु दुसफते जानि ।
रावण शृंगीअश्वते, श्रीधर कहो वखानि ॥ १ ॥

अथ शिव भौरी।

दोहा–भौंरी होइ कपोलमें, दक्षिण अंक सुजान।
ता भौरीको शिव कहत, नितप्रति कर कल्यान॥
चौ०–दुऔ कपोल भवँरि जो होई। जानों शुभ लक्षण है सोई॥
बाजी रहै सदा अस जाके। दिन दिन बाढ़ै संपति वाके॥

अथ इन्द्राक्ष भौरी।

दोहा–कान पिछारी मूलमें, दक्षिण अंक बखानि।
भँवरि होय जा वाजिके, इंद्रअक्ष सो जानि॥ १॥
इंद्राक्षी जो बाजि है, होय सु जाके आनि।
वासव सम सुख देत है, कहँलौं कहौं बखानि॥ २॥

अथ यशोदा भौरी।

दोहा–वामकर्णके मूलमें, भँवरि पिछारी होइ।
नाम यशोदा जानियो, सुखकारी हय सोइ॥

अथ चक्रवर्ती भौरी।

दोहा–ये दोनौ लक्षण परै, तामधि लक्षण येइ।
भौरी कानन कोशमें, चक्रवर्ति कहि देइ॥ १॥
राजनके वह योग है, सकल सिद्धिकहँ देइ।
तापर जो कोई चढ़ै, विजय युद्धमहँ लेइ॥ २॥

अथ वृषभाण्ड भौरी।

दोहा–कर्ण मूलको छोड़िके, नेत्रप्रांतलौ जानि।
भौरी दाहिने अंगमें, सो वृषभांड बखानि॥ १॥
पुत्र पौत्र निजनाथको, देति अहै वृषभांड।
राज्य अभूषण धन सहित, संपूरणफल भांड॥ २॥

कृष्णक्षीणरँग वाजिते, सहसार्जुनका नास ।
हरितरँगके वाजिते, रामचन्द्र वनवास ॥ २ ॥
शंखाक्षी हय त्रिशंकुको, कर्णश्वेत रँग छीन ।
अधिक रदन दुर्योधन, पांडव दन्तन हीन ॥ ३ ॥
सोकावर्ती वाजिते, भयो परीक्षित काल ।
ऐवी वाजी संग्रहै, ऐसो होय हवाल ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृतवाजीविशेषादिदोपकथन नामक द्वादश अध्याय ॥ १२ ॥

अथ अश्व लेनेका मुहूर्त चक्र।

ति.	वा	नक्षत्र
१	र	पु पु.
२		
३	च.	
५		रे मृ.
६	बु.	
७		
८		अ श
१०	वृ	
११		स्वा
१२	शु	
१३		ह.
१५	श	
३०		



प्रसादतारन भौंरी ।

सोरठा–दहिने नायें तात, चोटीतरके भँवरिके ।
चारि पांच पट सात, सो प्रसादतारन अहै ॥ १ ॥
जाके अस हय होइ, उत्सव ताके नित रहै ।
देत अहै धन सोय, संपूरण अभिलाष मन ॥ २ ॥

अथ विजय भौंरी ।

चौ०–दहिने नासा भौरी होई । विजय नाम लक्षण शुभ सोई ॥
जाके घर वाजी अस आवै। विजयसहित कीरतिको पावै॥

अथ सग्विनी भौंरी ।

हा–नासापुटके ऊपरै, दहिने अंगहि जानि ।
धनवर्द्धक है स्वामिको, ताहि सग्विनी मानि ॥

अथ ग्रीवाकी भौंरी शुभ ।

–भौरी चारि गरेतरे, शुभ है सुरको धाम ।
तिनके कहि अस्थान अब, अरु लक्षणयुत नाम ॥ १ ॥
चिंतामणि अरु गुणमणि, होत कठमणि नाम ।
चौथी घोमणि जानिये, करै सुःख अभिराम ॥ २ ॥

अथ चिंतामणि भौंरी ।

ा वाजीके कठमें, भँवरि तीनि सुखदानि ।
ाको चिंतामणि कहै, जयकारी हय जानि ॥

अथ कण्ठमणि भौंरी ।

माहि भौरी सुभग, जाके एके होइ ।
हि कठमणि कहत है, जयकारी हय सोइ ॥

दोहा–अश्वाकारहि चक्र लिखि, अभिजित सहित नक्षत्र ।
न्यास कीजिये तासुमें, या क्रमसों सर्वत्र ॥ १ ॥
कन्ध पांच रवि नषतते, दश पीठीपर धारि ।
फेरि देइ धरि पूँछमें, द्वै चरणनमें चारि ॥ २ ॥
पाँच नषत पुनि उदरमें, द्वय मुखमें पुनि जानि ।
अर्थलाभ मुखमें परै, उदर वाजिकी हानि ॥ ३ ॥
भागै रणते पगनमें, पूँछहि त्रिया विनासु ।
पीठिमाहि सुख देइ बहु, कंधमाहि सुख जासु ॥ ४ ॥

मुहूर्त ।

दोहा–पुष्य पुनर्वसु रेवती, मृगशिर अश्विनि होइ ।
शतभिष स्वाती जानियो, हस्त सहित शुभ सोइ ॥
सोरठा–इन नषतनमें कोइ, रिक्ता तिथि कुजवार विन ।
वाजिकर्म शुभ सोइ, शुद्ध परै जब चक्रमें ॥

अथ खरीद समयकी चेष्टा ।

दोहा–शुभ वाजी नहि शुभ करै, अशुभ करै नहि हानि ।
सो फल चेष्टा देखिकै, ताको कहौ वखानि ॥ १ ॥
प्रथम ऐब देखै नहीं, चेष्टा लेइ विचारि ।
बद चेष्टा जो हय करै, ताको तजो निहारि ॥ २ ॥
नीकी चेष्टा हय करै, ताहि जरूरी लेइ ।
घरमें पहुँचे वाजि बहु, तुरतै सुखको देइ ॥ ३ ॥

अथ शुभ चेष्टा ।

सोरठा–अश्व खरीदन जाइ, देखि खरीदारै तुरी ।
फुरकै अति सुख पाइ, ताहि खरीदै सुख लखै ॥

अथ गुणमणि भौंरी ।

दोहा–भौंरी ऊपर कंठके, दहिने अगहि होय।
एक दोय की तीनि पुनि, गुणमणि जानौ सोय ॥

देवमणि भौंरी ।

दोहा–बीच गलेके होति है, कंठहिके कछु दूरि ।
द्यौमणि जानौ ताहिको, देत अहै सुख भूरि ॥

चारौ भौंरिनको फल ।

दोहा–पुत्र पौत्र धन राज्य सुख, विजय कीर्ति अरु जानि
इन चारोंमें एक जो, मनइच्छित फलदानि ॥

अथ गरुडमणि भौंरी ।

दोहा–दोउ भुजनके बीचमें, आवर्त्तक जो होइ ।
नाम गरुड़मणि ताहिको, सकल दुःख हरि लेइ ॥

अथ क्षेमकरी भौंरी ।

दोहा–द्वै भौरी बिच कंठके, ते तर ऊपर होय।
नितप्रति जानौ सुखद बहु, क्षेमकरी है सोय ॥

श्रीवत्साक भौंरी ।

दोहा–भौंरी छाती माहिकी, प्रथमहि बरणी जोइ ।
वामअंग सो होइ नहि, दहिने अगहि होइ ॥
सोरठा–नायुत वाजी सोइ, श्रीवत्सांकसुचिह्न है ।
जा घर अस हय होय, देह धरे लक्ष्मी बसै ॥
दोहा–तिन दोनोंके मध्यमें, एक भँवरि की दोइ ।
सोऊ वह वत्सांक है, शालहोत्र मत सोइ ॥

दोहा–याही विधिसों देखिये, शॉक साधि हय लेइ।
ताहि खरीदे सुख लहै, नफा बहुत कछु होइ॥
सोरठा–बाजी देखन जाइ, लीदि करै तब वाजि जो।
सो सुख पतिको देइ, ताहि जरूरी लीजिये॥
चौ०–हींसै बाजी नृत्यहि ठानै। धरै पगन हर्षित मन मानै॥
लेनहारको यहै बतावै। संपति घरमें बहुत बढ़ावै॥

अथ अशुभ चेष्टा।

दोहा–लेनहारको देखि हय, पीठिहि देइ खलाइ।
मोहि खरीदे नहि नफा, बाजी देइ बताइ॥ १॥
कितनौ मद्दा होइ जो, तहँ न लीजै वाहि।
हठ करि कोऊ लेइ जो, घटी सही परिजाहि॥ २॥
जाइ खरीदन अश्वको, खरीदार जो कोइ।
काढ़ै अपनो लिंग हय, की तो मूतै सोइ॥ ३॥
कितनो लक्षण शुभ अहै, बाजी होय विशाल।
शालहोत्र अस कहत है, ताहि तजौ ततकाल॥ ४॥
लेनहारको देखि हय, सभय डुलावै पॉइ।
ताहि खरीदेते तुरत, अवशि बाम नाशि जाइ॥ ५॥
पूँछ हलावै करनहू, की तो तानै देह।
नाश करै निज स्वामिको, बाजी बिन संदेह॥६॥
शुभ भौंरी जाके परै, बदचेष्टित हय होइ।
सो शुभ ताको नाहि करै, जानि लेहु सब कोइ॥ ७॥
चेष्टा नीकी जो करै, भँवरि अशुभयुत जानि।
ता बाजीको जानियो, करत नही सो हानि॥ ८॥

शुभ चेष्टा वाजी करै, शुभ भौंरीयुत होइ ।
देत अहै निज स्वामिको, पूरणसुखको सोइ ॥ ९ ॥
भौरी जाके अशुभ है, बदचेष्टित हय होइ ।
करती पूरण दोषको, श्रीधर वरणो सोइ ॥ १० ॥
घोड़ा लेने जाइ जो, पीठि डुलावत देषि ।
महा अशुभ नहिं लीजियो, करि है नाश विशेषि ॥ ११ ॥
दूर्व भक्षते तुरँग जो, निकट श्रवणके जाहि ।
देखत छोंड़े घासको, सेंति न लीजो ताहि ॥ १२ ॥

अथ शिक्षा वर्णन ।

दोहा—कइ यक ऐसे रोग है, प्रथम परत नहिं जानि ।
फिरि वीते कछु कालके, ते उघरत हैं आनि ॥ १ ॥
लीजौ वाजी मोल जब, तिन रोगनको जानि ।
जहां चिकित्सा है कही, कहौं तहां पहिचानि ॥ २ ॥
बड़ी नजरबीनी किये, पैर रोग वे जानि ।
तजौ वाजि तिन रोगयुत, ते अब कहौं वखानि ॥ ३ ॥
हड्डा पुस्तक मोतरा, पछिले पगमें होइ ।
लँगड़ा वाजी होइगो, इन रोगनको जोइ ॥ ४ ॥
होत अगिले दोउमें, रोग चकावरि एक ।
दूजो जानो जानुआँ, करिकै बहुत विवेक ॥ ५ ॥
दाग परदे जाहिके, जालदारकी आहि ।
इन रोगन युत वाजिको, देखत छोंड़ो ताहि ॥ ६ ॥

इति श्रीशालहोत्रसमह केशवसिंहकृत वाजीमुहूर्त्तनखरीदसमय चेष्टादि शिक्षाकथन नामक त्रयोदश अध्याय ॥ १३ ॥

अथ वाहभूमि ।

श्लोक–शतहस्तादिकं भूम्यां सप्तहस्तावसानकम्-।
भ्रामयेद्वाजिनं सादी सव्यासव्येन वाजिनम् ॥ १ ॥
मण्डलं चतुरस्रं वा गोमूत्रं वार्द्धचन्द्रकम् ।
नागपाशे क्रमेणैव भ्रामयेत्कटपञ्चकम् ॥ २ ॥

दोहा–शत हस्तादिक भूम्यमित, सप्तहस्त अवसानु ।
भ्रमण करै वाजी सुघर, सव्यासव्य प्रमानु ॥ १ ॥
मण्डल तिमि चतुरस्रगति, गोमूत्राभ निबेर ।
नागपाश चन्द्रार्धविधि, पांच रीति है फेर ॥ २ ॥

चौ०–काकर ठोकर सॉकर तालै। कँच खालि तृण कँाष्ठ न घालै॥
समसो भूमि अश्व दौरावै । तजि कठोर जहँ धूरि देखावै ॥
वर्षाऋतुमें महिजल भारी । वगधर चढै सो होइ अनारी ॥
शरदऋतुहिंमें उष्ण विहाई । हिमऋतुमें मिल दोष बराई ॥

दोहा–अर्धमाघते चैतभरि, राति दिवस दौराय ॥
मेष रु वृष आषाढली, थाने पानि पिआय ॥ १ ॥
ऋतुवसंत ग्रीषम तलक, असवारी करि चाहि ।
तौ याही विधिते सुघर, करै जतन निबाँहि ॥ २ ॥

चौ०–निबपत्र अरु लोनु मँगावै । दूनो टका चारि भरिलावै ॥
याहि बनाय वाजिकहँ देई । बहुत भूँख बल रोग न होई ॥
हरी घास ग्रीषममें पावै । घिव दानामें राँधि खवावै ॥
छाही सूखे हयको बाँधे । होय बली जो या विधि साधै ॥

दोहा–छोटे मोटे वृद्ध अरु, रुजी सुपारी सोय ।
क्षुधी तिमिर सवार है, डारत है हय सोय ॥

मुहूर्त हयशाला, प्रवेशन, शुभलग्न अष्टम शुद्ध हो.					
ति.	वा.	नक्षत्र	ति.	वा.	नक्षत्र
१	र	अ.	१	र.	
२	च		२		अ. म.
३		ध.	३	च.	कृ मृ
५	बु.	श.	५	बु	आ. पु.
६			६		पु. श्ले.
७	बृ	पुन	७	बृ	म पू फा
१०			१०		ह. वि
११	शु		११	शु	ऽनु ज्ये मू
१२			१२		पू षा ध
१३	श.		१३	श	श पू भा
१५			१५		रे

मुहूर्त अश्वकृत्य			मुहूर्त गजकृत्य		
ति.	वा.	नक्षत्र.	ति.	वा.	नक्षत्र.
१	र.	ह. अ.	१	र.	मृ. रे
२			२		
३	च	पु पु	३	च.	चि ऽनु.
			५		
५	बु	मृ. स्वा.	६	बु	ह अ.
६			७		
७	बृ	ध आ.	८	बृ.	पुष्य.
८			१०		
१०	शु	श. रे.	११	शु.	अभि.
११			१२		
१२	श		१३	श.	स्वा. पु.
१३			१५		श्र. ध.
			३०		
१५					
३०					श

अथ अश्वगजादि कर्म।

नरेन्द्र छन्द—हस्त अश्विनी पुष्य पुनर्वसु मृग स्वाती वसु लीजै॥
शिव शतभिषा रेवती इनमे वाजिकर्म सब कीजै॥
रिक्ता मंगल विना कहत अब गजराजनके कर्म॥
मृदु चर क्षिप्र नषत लै भाषत जे जानत है मर्म॥

अथ हयशालाप्रवेशनविधि।

दोहा—शालाविधि हय सब कही, शालहोत्र मत जानि।
तामें वाजि-प्रवेश-विधि, सो अब कहौ बखानि॥ १॥

आरोहणविधि ।

दोहा–अब आरोहणविधि कहौं, जा हित वाजी आहि ।
शालहोत्रमत देखिकै, वर्णत हौं अत्र ताहि ॥ १ ॥
आरोहणमें जानिये, एक बाग है सार ।
ताहि विना जाने अहै, वृथा सकल व्योहार ॥ २ ॥
गुणी पुरुष विन जो सभा, विन दिनेश दिन जानि ।
विना बागके ज्ञान त्यों, वृथा सकल गुण मानि ॥ ३
असवारीमें हय रहै, केवल बाग अधीन ।
तातै प्रथमै बागको, या मधि वर्णन कीन ॥ ४ ॥

अथ बाग धरनेकीविधि ।

दोहा–तुला समान गहे रहै, बागहिको हय जानि ।
ना अतिलंबी राखिये, ना अति ऊँची मानि ॥ १ ॥
प्रथम कदम काढ़नविषे, अरु धावनमो जानि ।
या विधिसो बागहि गहै, सो अब कहौं बखानि ॥ २ ।

अथ कदम काढनेकी विधि ।

दोहा–सांझसमय असवार हो, कोश एक चलि जाइ ।
दुलकी डपटन देइ नाहि, तहँते देइ घुमाइ ॥ १ ॥
मंद मंद गृहमॉझलौ, आवे लौन्हे ताहि ।
बाग तंग नहि राखिये, ना अति ढीली ताहि ॥ २ ॥
नितप्रति फेरै याहि विधि, कदम गाम ठहराइ ।
दूगा महि कीन्हों चहै, ताकी या विधि आइ ॥ ३ ॥
बाग पकरि हे तंग तेहि, अरु ऊँची कछु जानि ।
जेरबंद ढीलो करै, या विधि ताकी मानि ॥ ४ ॥

प्रथम पूंछिये विप्रसों, दिन नीको जब होई ।
ताके पहिले एक दिन, तासम नीको सोइ ॥ २ ॥

तादिन कीजे ताहिमें, सो अब कहौं बखानि ।
उच्चश्रवाको कीजिये, अस्थापन जिय जानि ॥ ३ ॥

पूजा कीजै तासुकी, सो षोडश उपचार ।
फिरि लक्ष्मीको पूजिये, करिकै सब विस्तार ॥४॥

लक्ष्मीजीको दीप तहँ, दजि एक बराय ।
बरत रहै सो राति दिन, ताकी विधि यह आय ॥ ५ ॥
पूजै तहाँ कुबेरको, और वरुणको जानि ।
तादिन राखे ताहिमें, सात धेनु यह मानि ॥ ६ ॥
दोइ वृषभ अरु जानिये, थनवारहि युत मानि ।
दीपहि रक्षक होइ जो, तिनते अधिक बखानि ॥ ७ ॥
प्रात भये, सब लीजिये, गाई वृषभ खुलाइ ।
बन्दनवारी बाँधिये, भूमि सबै लिपवाइ ॥ ८ ॥
वास्तुविधानहि कीजिये, नवग्रह देउ पुजाइ ।
पूजा कीजै वायुकी, दीजै होम कराइ ॥ ९ ॥
फेरि खवावे विप्र बहु, तिन्है दक्षिणा देइ ।
चारि विप्रको दीजिये, वस्त्र गहनयुत सोइ ॥ १० ॥
या विधिको जब करि चुकै, बाजी लेइ मँगाइ ।
विधि पूजनकी कीजिये, तिन बाजिनकी जाइ ॥ ११ ॥
तिन विप्रनको बोलिये, अति आदर करवाइ ।
अलंकार अरु वस्त्र जो, जिन्हको दीन्हें आइ ॥ १२ ॥

मद चलत जानै जवै, ऍंडै दइ लगाइ ।
आसन मसकत जाइ अरु, नहिं अति जोर कराइ ॥५ ॥
तुली वाग दुहुँ राखिये, दुलकी डखरि न जाय ।
दौरन दीजै ताहि नहि, कदम ठीक ह्वै जाय ॥ ६ ॥
जेरवंदको कीजिये, थोरा थोरा तंग ।
सूरति प्यारी होति हैं, याविधि किये तुरंग ॥ ७ ॥
होइ तुरंगम जल्द अति, कूदन लागत सोइ ।
याही विधिके करत ही, सो जानौ सब कोइ ॥ ८ ॥
हाँकौ याही विधि तुरी, वाग रसाइनिथाहि ।
थोरी थोरी कीजिये, तंग ताहिको आहि ॥ ९ ॥
औ ऊँची नहि पकरिये, तुली रहै तहि वाग ।
कायम दोनौं कदमपर, होत वाजिसे भाग ॥ १० ॥
होत सही यह बात है, देकर जानौ सोइ ।
शालहोत्रमत देखिकै, वर्णत है सबकोइ ॥ ११ ॥
तंग वाग अतिही किये, या विधि फेरत जाइ ।
तौ अवियाकदमै चलै, पीठि हलाइ हलाइ ॥ १२ ॥

अथ लगार डालक कदमकी विधि ।

चौपाई–दोई रस्सी लेइ वनाई । सूत मुजम्मा वाँधे भाई ॥
अश्वके गाठिन ऊपर वाधै । यन समेत यही विधि साधै ॥
ऊपर चढिके हाँकै कोई । अवियां कदम होति है सोई ॥

अथ विधि ।

दोहा–अगिले पद दहिने विषे, पछिले वायें जानि ।
पछिले दहिने पगहिमें, अगिले वाम वखानि ॥ १ ॥

तितहीते पठवाइये, इन मन्त्रनको जानि।
शत शत बारहि मन्त्रमति, शालहोत्रमत मानि ॥ १३ ॥

मंत्र-श्रीकृष्णाय नमः॥ श्रीगुरवे नमः ॥ श्रीसरस्वतीभ्यो नमः ॥ श्री वायुपुत्राय नमः ॥

दोहा-द्विजवर तहँ मंगल पढहिं, और शांतिको जानि।
शालामहँ तहँ बांधिये, बाजिनको सुख मानि ॥ १ ॥
यहि प्रकार बाजीनको, जे राखै महिपाल।
तिनको विघ्न न होइ कछु, भाषत बुद्धि विशाल ॥ २ ॥
यहि प्रकार बाजीनको, जे पालत महिपाल।
तिनके शत्रुन भाँझ हिय, बनी रहति है शाल ॥ ३ ॥
यह विधि राजनको कही, और नरनको नाहि ॥
राजनके तर नर अउर, यथाशक्ति तिन आहि ॥ ४ ॥
लालवर्ण कपि बांधिये, शालाद्वारे माहिं।
हय बलाय जो होइ कछु, ताके शिरपर जाहिं ॥ ५ ॥

अथ हयशालामें गिरगिट आनेसे अशुभ।

दोहा-सरटाको हयशालमें, आवन देहु न मीत।
जो आवै तौ सकल हय, कछू होयँ भयभीत ॥

अथ हयशालाउपद्रवकथन।

छन्दतोटक-मधु मक्षिका हयसार। जिन कीन्ह आनि अगार।
यह कहत पण्डित बात। ता अश्व नाहिं कुशलात॥
जब यहै अवगुण जानु। तब शांतिकी विधि ठानु।
द्विज पूजि हवन कराइ। बहु दक्षिणा दे जाइ ॥

अथ वाजीको ओठिनपर और लविनपर कुदावनविधि ।

दोहा--प्रथमहि सूरति बाँधिये ताकी या विधि आहि ।
रासिन डारि चलाइये, मंद मंद सो ताहि ॥ १ ॥
सूधो जब चलने लगै, तबै देइ झमकाइ ।
झमकावनकी विधि कहौं, जात कूदत आइ ॥ २ ॥
आपु होइ दहिनी तरफ, वाजिके यह जानि ।
रासी डारै तासुके, सो अब कहौं बखानि ॥ ३ ॥
हयकी छातीके विषे, तंग जहाँ पर आहि ।
जेरबंदको छोर तहँ, तंग रहत जा माहि ॥ ४ ॥
बाईओर लगाममें, बाँधि रासिको देइ ।
जेरबंदके छोरमें, बाँधि रासिको लेइ ॥ ५ ॥
दहिनी तरफै लेइकै, बाँधि लगामै देइ ।
दुहू तरफकी रासिको, हाथमाहि गहि लेइ ॥ ६ ॥
जेरबंदमें रासि जो, संग कीजिये ताहि ।
दहिनी रासै हाथमें, तुरी चलावत जाहि ॥ ७ ॥
जहँपर झमकै नाहि तुरी, ओंगी मारै वाहि ।
ओंगी लीन्हें एक नर, रहै पिछारी ताहि ॥ ८ ॥
चलन अगारी देइ नहि, अरु कूदन नहि देइ ।
या विधि झमकैये तुरी, जानि तासुको लेइ ॥ ९ ॥
ओंगी लीन्हें जौन नर, खाखर राखै हाथ ।
जाइ बजावत ताहि सो, हयकी झमकनि साथ ॥१०॥
रासि कीजिये ढीलि कछु, दाहिने बढवत जाहि ।
ओठिन पर तब जानिये, कूदत वाजी आहि ॥ ११ ॥

दोहा—शत प्रकार रुद्री बनै, पूजै विधिवत सोय ।
अश्वमेध मधु मक्षिका, शांति करावै कोय ॥

अन्य शांति ।

दोहा—द्विजवर बोलै मान करि, तिनके पूजै पाँइ ।
ता पीछे जो कीजिये, सो अब देत बताइ ॥ १ ॥
पुजवावै तिहि विप्रसों, शत पार्थिव यह जानि ।
मृत्युंजयको जप करै, दश हजार सो मानि ॥ २ ॥
तासु दशांशहि होम करि, द्विजवर देइ खवाइ ।
शांति पढावै द्विजनसों, सबै दोप मिटि जाइ ॥ ३ ॥
फिरि दीजै व्याहृतिनसों, आहुति एक हजार ।
गाइनको घृत छानिकै, कीजै बुद्धि उदार ॥ ४ ॥
देइ दक्षिणा भाँति बहु, विप्रनको यह जानि ।
मधुमाखी जो वास किय, शांति तासुकी मानि ॥ ५ ॥

अथ युद्धसमय घोडा साजनेके शुभाऽशुभ शकुन ।

दोहा—इन चिह्ननते कहत हों, शुभ अरु अशुभ तुरंग ।
शालहोत्रमत जानिकै, भाषत बुद्धि उतंग ॥ १ ॥
सजत वाजिको होइ जब, उग्र वक्र हिहनाइ ।
भूमि उखारै टापसे, हारि बतावत आइ ॥ २ ॥
समर सामने जो करै, ऐसी चेष्टा वाजि ।
वाको स्वामी जीतिकै, घरको आवै गाजि ॥ ३ ॥
युद्धमाँहि चलबे लिये, सजत वाजिको होइ ।
करै जो लीदि पेशाबको, ताकी यह गति जोइ ॥ ४ ॥
आपु मरै स्वामी सहित, रणमाँहि यह जानि ।
शालहोत्रमत देखिकै, श्रीधर कह्यो बखानि ॥ ५ ॥

ढीली कीजे रासिको, दीजे बहुत चढाइ।
तब तौ जानौ वाजि बहु, लविनपर ले जाइ ॥ १२ ॥

अथ तुरी फरनेके महीने।

दोहा–सावन और अषाड पुनि, आश्विन भादौ जानि।
अतिमेहनति नहि लीजिये, इन महिननमों मानि ॥१॥
कातिक जेठहि मासमे, या विधि फेरत आहि।
बड़े प्रातमें फेरिये, घाम चढेमें नाहि ॥ २ ॥
हठ करिकै जो फेरई, मर्म न जानत ताहि।
पित्तविकार जु रोग है, वाजीके है जाहि ॥ ३ ॥
रहे मास जे षट अहे, तिनमे दूषण नाहि।
जैसी मेहनत चाहिये, तैसी लीजे ताहि ॥ ४ ॥

अथ मंजिलकी विधि।

दोहा–मंजलि करि द्वै कोसपर, लीदि पेशाब कराइ।
पानी दीजे ताहिको, मूठिक घास खवाइ ॥ १ ॥
चहै तेतनी दूरि लग्, हयको लीन्हें जाहि।
वाजी ताको भरत नहि, या विधि चढ़त जुआहि ॥ २ ॥
उतरे हयको फेरि जब, तब यह औषधि देइ।
टका एक भरि फिटकरी, दूनि मिठाई लेइ ॥ ३ ॥
हयको दइ खवाइ सो, टहलावे घरि चारि।
तब ले आवे थान पर, जीनहि धरे उतारि ॥ ४ ॥
अरगीरको राखिये, तुरीपीठिपर जानि।
कैजा कीजे तासुको, श्रीधर कहत बखानि ॥ ५ ॥

युद्ध कार्यको चलतमें, वाजि सजावै कोइ ।
बिना व्याधि यह आँखिमों, आँसू निकसति होइ ॥ ६ ॥
जाको हय वह होय जो, ताको नीक न आहि ।
रोवत हय निज स्वामिहित, देत बतायो ताहि ॥ ७ ॥
जा वाजीकी पूँछते, झरन लगे चिनगारि ।
रणको चढ़ि तापर चलै, ताको काल विचारि ॥ ८ ॥
रणको निकसत होइ कोइ, वाजीपर असवार ।
सो वाजी निज पूँछके, थिरकावै जो बार ॥ ९ ॥
निज स्वामीको रणविषे, मारि डरावै सोइ ।
शालहोत्र यों कहत है, ताहि सवार न होइ ॥ १० ॥
बिन कामहि अधरातको, घोड़ा हर्षित होइ ।
जाको वह घोड़ा अहै, तासु पयाना सोइ ॥ ११ ॥
बार बार निज पूँछके, थिरकावै जो बार ।
जाको वह घोड़ा अहै, ताको यह निरधार ॥ १२ ॥
कितनो स्वामी होय थिर, भूप होइकी राइ ।
ताकी थिरता नहिं रहै, सही कहूँको जाइ ॥ १३ ॥
हयके शकुन अनेक है, कहँलौं कहौं बखानि ।
येते श्रीधर हैं कहे, शालहोत्र मत जानि ॥ १४ ॥

अश्ववेगवर्णन ।

दोहा–सब तुरीनके कहत हौं, क्रमते वेग बखानि ।
जानि जाहिं जाते सबै, सो वर्णत सुखदानि ॥ १ ॥
रूप वहो क्रम देह बल, गति आवर्त्तक जानि ।
वेग रहत सब वाजिके, लक्षण यही बखानि ॥ २ ॥

वाजीकी छाती विषे, मलवावै बहुबार।
की हत्थीकी घासतें, कै हयको सुखसार॥ ६॥

अथ रथके योग्य वाजी फेरनेकी विधि।

दोहा–प्रथम वाजिको फेरिये, रासिन पर हय जानि।
चलै ठीक पर अश्व जो, ता विधि कहौं बखानि॥ १॥
कीजै कॅडरा लोहको, तापर ऊन मढ़ाइ।
ता पर चाम मढाइये, ताकी यह विधि आइ॥ २॥
हयकी गरदनि माहिमें, देहु ताहि डरवाइ।
ताहि डारिकै फेरिये, जब वाको सहि जाइ॥ ३॥
तामें दूनौ तरफ करि, रसरी दुइ बॅधवाइ।
जबलौ रसरी नाहि सहै, तबलौ फेरत जाइ॥ ४॥
फिरि उन रसरिन माहिमो, हलुक काठ बॅधवाइ।
रसे रसे तेहि काठको, करत गरुव सो जाइ॥ ५॥
हयके कांधे माहिमो, जब ढट्ठा परि जाइ।
तब तेहि बाधे काठ पर, देहु सवार चढाय॥ ६॥
सो दुहुँ रासन हाथ लै, नितप्रति फेरत जाइ।
या विधि हय फिरि जाइ जब, रथमें देहु लगाइ॥ ७॥
शास्त्र चलावन जौन विधि, कहो सवारी माहि।
ग्रंथ होत विस्तार अति, यासों बरणों नाहि॥ ८॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीफेरनविधिवर्णन
नामक पंचदश अध्याय॥ १५॥

लज्जा भूषण त्रियनको, क्षत्रिय भूषण तेग ।
द्विजको भूषण वेद है, वाजी भूषण वेग ॥ ३ ॥
मातृदोषते होति है, लघुता वाजी माहि ।
करत सरारी अश्व जो, पितादोष सो आहि ॥ ४ ॥
स्वामिदोषते दूबरो, और पातरो होइ ।
नाही दोष तुरीनको, जानि लेउ जिय सोइ ॥ ५ ॥

अथ शीघ्रतावर्णन ।

छंद चौ०–खैचत लीकसी भूमिहिये । मानौ अंबर लेत पिये ॥
अमरादि समीर सुभूमि भरे । अरु पक्षिनकी गति लेत हरे ॥
जिनके तनु तागति जानि परै । नवला दृग जैसहि सैन करै ॥
मानौ मन हय यह रूप धरै । क्षणमें फिरि शीतल होत खरै ॥

अथ गतिवर्णन ।

हा–हलति देह नहि नेकहू, चलति ऐसि गति जाहि ।
अभरनगनते तनविषे, ते नाहिं बाजत आहि ॥ १ ॥
साह गाम यक जानियो, तेज गाम अरु मानि ।
मंद गाम यक होति है, और दुगामा जानि ॥ २ ॥
थरगा अविया दोइये, औरहिं वाल बखानि ।
येते भेदनगति तुरी, निजमति लेहु पिछानि ॥ ३ ॥

अथ आवर्त्तकका वर्णन ।

ावर्त्तक ताको कहत, सोइ कोइरी आइ ।
ा करि परसिद्ध है, वाजीको सुखदाइ ॥ १ ॥

अथ अग्निपुराणोक्त अश्वशान्ति।

शालहोत्र उवाच।

श्लोक-अश्वशान्ति प्रवक्ष्यामि वाजिरोगविमर्द्दिनीम्।
नित्या नैमित्तिकी काम्यां त्रिविधां शृणु सुश्रुत ॥ १ ॥
शुभे दिने श्रीधरञ्च श्रियमुच्चैःश्रवाह्वयम्।
हयराज समभ्यर्च्य सावित्रैर्जुहुयाद्घृतम् ॥ २ ॥
द्विजेभ्यो दक्षिणां दद्यादश्ववृद्धिस्ततो भवेत्।
आश्वयुक्छुक्लपक्षस्य पञ्चदश्यां च शान्तिकम् ॥ ३ ॥
बहिः कुर्य्याद्विशेषेण नासत्यौ वरुणं यजेत्।
समुल्लिख्य ततो देवीं शाखाभिः परिवारयेत् ॥ ४ ॥
घटान् सर्व्वरसैः पूर्णान्दिक्षु दद्यात्सवस्त्रकान्।
यवाज्यं जुहुयात् प्राग्यं यजेदश्वाश्च साश्विनान् ॥ ५ ॥
विप्रेभ्यो दक्षिणां दद्यान्नैमित्तिकमतः शृणु।
मकरादौ हयानाञ्च पद्मैर्विष्णु श्रिय यजेत् ॥ ६ ॥
ब्रह्माण शङ्कर सोममादित्यं च तथाश्विनौ।
रेवन्तमुच्चैःश्रवस दिक्पालांश्च दलेष्वपि ॥ ७ ॥
प्रत्येकं पूर्णकुम्भैश्च वेद्यां तत्सौम्यतो हुनेत्।
तिलाक्षताज्यसिद्धार्थान देवतानां शतं शतम् ॥
उपोषितेन कर्त्तव्यं कर्म्म चाश्वरुजापहम् ॥ ८ ॥

इत्याग्नेये महापुराणेऽश्वशान्तिर्नाम नवत्यधिकद्वि-
शततमोऽध्याय ॥ २९० ॥

करति मंडली वाजि है, तिनकी गति असि होति।
घूमतिमें नहि जानिये, ज्यों दीपककी ज्योति॥ २॥

इति श्रीशालिहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत हयशालारचनाप्रवेशनादि-
कथन नामक चतुर्दश अध्याय॥ १४॥

अथ सवारवर्णन।

दोहा—अब आरोहण गुण कहौ, शालहोत्रमत मानि।
लक्षण जाहि तुरीनके, प्रगट परत है जानि॥ १॥
शिला समानहि जानु जेहि, वज्रहि सो कटिदेश।
अरु क्रोधी है नाहिनौ, शास्त्र पढ़ो है वेश॥ २॥
होइ चलाक सवार जो, बुद्धिमान अति होइ।
जानै जो गति भेद सब, शालहोत्र मत जोइ॥ ३॥
शीत तोय अरु धूपते, नेको नहिं अकुलाइ।
समरमाहि उत्साह अरु, जासु हिये सरसाइ॥ ४॥
आवत नाहिं प्रस्वेद तनु, थोरी मेहनतिमाहि।
समय जानि ताडन करै, और दक्ष सो आहि॥ ५॥
येते गुण है जाहिमें, दृढ असवार सुजानि।
श्रीधर वरणो चावसो, शालहोत्रमत मानि॥ ६॥

अथ अश्वताडनविधि।

दोहा—प्रात समयमो मंद जो, तुरी चलत जो होइ।
ताको चावुक मारिये, पिछिले पुट्ठन सोइ॥ १॥
वाजी नीको नहिं चलै, प्रातसमय जो आहि।
कोखिन पुट्ठामाहिं लगु, मारै चावुक ताहि॥ २॥

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ शालहोत्रसंग्रह ।



चिकित्साकाण्ड-प्रारम्भ ।

दोहा-कहत चिकित्साकांड अब, शालहोत्र-मत जानि ।
विविध भाँतिके रोग जे, होहि जासुते आनि ॥ १ ॥
धातुकोपते होत है, रोग सकल विधि आनि ।
बात पित्त कफ रक्तकी, प्रकृति चारि विधि जानि ॥ २ ॥
तिनमें कोई विषम भा, धातुकोप सो जान ।
ताते प्रथमहि प्रकृतिको, कीन्हीं इहाँ बखान ॥ ३ ॥

अथ बाजीप्रकृतिवर्णन ।

दोहा-प्रकृति तुरिनकी चारि विधि, प्रथम पित्तकी जानि ।
दूजी कफकी जानियो, तीजी बात प्रमानि ॥ १ ॥
चौथी जानौ रक्तकी, तिनकी जो पहिचानि ।
ताको अब वर्णन करौं, जानि लेहु गुणखानि ॥ २ ॥

अथ बाजीकी पित्तप्रकृति-वर्णन ।

दोहा-पित्ती होइ मिजाज जिहि, ताकी यह पहिचानि ।
तेज चीजको खाइ बहु, कोधवंत अरु मानि ॥ १ ॥
दौरै अतिही दूरिलों, और जल्द अति होइ ।
रोआँ ताके साफ बहु, और मुलायम जोइ ॥ २ ॥
जलदी करत अहारमो, क्षुधावंत अति जानि ।
ऐसे लक्षण जाहि तनु, पित्तप्रकृति सो मानि ॥ ३ ॥

ऐसो चावुक मारई, जाय तुरी अकुलाइ।
आगे पूँछ उठाइकै, जलदी नाहि ठहराइ ॥ ३ ॥
काँधी करि पुस्तक करै, पूँछ दाविकी लेइ।
तबलौं वाको मारिये, बदी छोड़ि सो देइ ॥ ४ ॥
बिन जाने स्थानके, जे ताड़न कहँ देहि।
तासों हय वैरहि गहै, जानि हियेमहँ लेहि ॥ ५ ॥

अथ स्थानवर्णन।

कोखि गलहरी कटिविषे, पाछिल पुट्ठा जानि।
कंधमाहि अरु जानिये, ये स्थान बखानि ॥ १ ॥
तंग पाँजरे मारिये, दूनौ एँड़ी जानि।
जो ममरेजे बाँधिये, तौ अति मारु बखानि ॥ २ ॥
जो कदाचि धीमो चलै, यँड़ मारि तेहि देइ।
आसन मसकै जोरसों, जलद ताहि करिलेइ ॥ ३ ॥
मारो चाहै हाथसों, छपकातौ करिदेइ।
जस चाहै तस वाजिको, जल्द तुरत करिलेइ ॥ ४ ॥
बदी जौन हय करत है, परत नाहिं सो तेज।
ता घाजीके कारणै, बाँधिलेत ममरेज ॥ ५ ॥
जाहि चलै अति जोरसों, दौराये जियमाहि।
ताड़न कीजे तासुको, कोखिन पुठ्ठनमाहि ॥ ६ ॥
कियो चहत जब फैल हय, शिरहि हलावति जाहि।
ताड़न कीजे कंधमहँ, शुद्ध तबै है जाहि ॥ ७ ॥
जब हराभजदगी करै, ताहि समप्पे ताहि।
आगे चाहै ठौर तेहि, दोष नहीं सो आहि ॥ ८ ॥

अथ कफप्रकृति वाजी।

दोहा-रोआँ पतरे होई अति, और चमक बहु जोइ।
चाह करै घोड़ीन पर, और जल्द अति होइ॥ १॥
दाना घासहि खाइ कम, बहुत देरतक जानि।
ऐसो वाजी होइ जो, ताहि बलगमी मानि॥ २॥

अथ वातप्रकृति वाजी।

दोहा-सूखी देही होइ सब, गर्दन सीधी जानि।
रगें देखाई देईं बहु, मोटो रोम बखानि॥ १॥
मोटा होइ शरीर जो, या विधि जानें सोइ।
करै अहारै देर महँ, कहत सयाने लोइ॥ २॥
रोवाँ मैले ताहिके, अरु घुँघुआरे जानि।
दाना ताको कम पचै, मंदअग्नि अतिमानि॥ ३॥
असवारी भारी नहीं, ताहि उठाई जाइ।
राह चले थकिजाइ बहु, खट्टी चीजें खाइ॥ ४॥
ए लक्षण जामें मिलें, बादी ताको जानि।
शालहोत्र-मत मानिकै, श्रीधर कहा बखानि॥ ५॥

अथ रक्तप्रकृति वाजी।

दोहा-मीठी चीजें खाइ बहु, छोटे रोम लखाइ।
साफ तासुको बदन है, पतरी खाल देखाइ॥ १॥
मोटा होइ शरीर बहु, अरु टीला नहिं होइ।
क्रोधवत सो होइ नहिं, बहुत जलद लखि सोइ॥ २॥
दाना घासहि खाइ बहु, जलदी करै अहार।
राह चलेते थकत नहिं, ऐसो तासु विचार॥ ३॥

अथ फेरनविधि ।

दोहा–अब फेरन विधि अश्वकी, वरणों जेती आइ ।
जाहि जानि असवार सब, बाजी लेइ बनाइ ॥ १ ॥
प्रथमै बच्चा विधि कहौ, जैसो फेरो जाइ ।
ता पाछे सब ऋतुनको, फेरब देत बताइ ॥ २ ॥
दोइ दाँत जब होइ हय, फेरो तबते ताहि ।
की तौ देखौ गातको, फेरन लायक आहि ॥ ३ ॥
प्रथम रासिको डारिकै, राह देखावहि ताहि ।
जब कायम हो राहपर, कावा फेरै वाहि ॥ ४ ॥
रासि डारिके दीजिये, ताको कावा आहि ।
ठीक होइ दुहुँ बागपर, या हित कावा ताहि ॥ ५ ॥
जब कावा पर ठीक भो, हलुक सवार चढाइ ।
मंद मंद तेहि राह पर, नितमति फेरत जाइ ॥ ६ ॥
कावा फेरतके समय, मनुज एक बुलवाइ ।
ताहि पिछारी कीजिये, औंगी मारति जाइ ॥ ७ ॥
अरु कावा पर फेरिये, हलुक सवार चढ़ाइ ।
रासै डारै निज रहै, वाग सवार बढ़ाइ ॥ ८ ॥
जबै ठीक ह्वै जाय वह, रास देइ फढ़वाइ ।
मंद मंद मेहनति लिये, हय दुरस्त ह्वै जाइ ॥ ९ ॥

अन्य मत ।

सु०–जाँघ जमाय दुहूँ घुटुवानलौ, पेडुरी डोलौ दुहूँ करि चालै ॥
कानन मध्यम दृष्टि रहै, थिरता करिके कटि नेक न हालै ॥
वाग बराबरि राखे सुजान, सो धोख किये पर चाबुक घालै ॥
सोइ सवार सवारि सराहिये, राखै बचाय खतानिको जालै ॥

यह लक्षण जिहि वाजिको, रक्त प्रकृति तिहि जान ।
या सम वाजी और नहि, श्रीधर कहौ बखान ॥ ४ ॥

अथ धातुवर्णन ।

दोहा–धातु चारि ए वाजितनु, तिनमें कोपै कोइ ।
तिहि वाजीके जानिये, उत्पति रोगकि होइ ॥ १ ॥
धातुकोपको जाइकै, कीजै औषधि ताहि ।
तबही जानौ ताहिको, रोग दूर ह्वै जाहि ॥ २ ॥
नब्ज देखिकै होत है, धातुकोपको ज्ञान ।
यहिते प्रथमहि नब्जको, कीन्हों यहाँ बखान ॥ ३ ॥
नब्ज वाजिकी होति है, आँखि बताने माहि ।
ताहि देखि जान्यो परत, कोपधातु जो आहि ॥ ४ ॥
आँखिन ऊपर पलक जो, देखौ ताहि उठाइ ।
ताहि बताना कहत है, कोवा लगु जो आइ ॥ ५ ॥

अथ नाडिकावर्णन ।

दोहा–होइ गुलाबी रंग जो, अश्व बताना माहि ।
तबही जानौ वाजिको, सब विधि नीको आहि ॥

अथ धातुकोप प्रथम पित्त ।

दोहा–जासु बताने माहि मों, रंग जर्द अति होइ ।
कोप पित्तको जानियो, शालहोत्र कहि सोइ ॥ १ ॥
होइ बताने माहि मो, रंग सफेदी आइ ।
तब तौ जानौ वाजितनु, शरदी कोपी जाइ ॥ २ ॥
वही सफेदी माहि जो, लघु छाले दरशाहि ।
तबही जानौ अश्वतनु, कोप वातको आहि ॥ ३ ॥

ते छाले अस जानियाँ, कुटुका कुटुका होइ।
शालहोत्र मुनिके मते, वातकोप है सोइ ॥ ४ ॥
रंग बताने माहि मों, कछुक सफेदी होइ।
तौन सफेदी होइ यों, चरबीके सम सोइ ॥ ५ ॥
कफ कोपते जानियों, वाजीके तनुमाहि।
बलगम ताको कहत है, जानि लेहु लगि ताहि ॥ ६ ॥
जरदी मायल होइ जो, कछुक सफेदी आइ।
तुरी बताने रंगमहँ, कफ अरु पित्त लखाइ ॥ ७ ॥
होइ बताने रंगमहँ जरदी लाली आइ।
रक्तपित्तको कोप है, जानि लेहु सुखमाइ ॥ ८ ॥

अथ खनसे सफरा मिला।

दोहा-अश्व बताने माहिमों, सुरखी अति दरशाइ।
कोप रक्तको जानियों, सो गरमीते आइ ॥ १ ॥
थोरी सुरखी होइ जो, अश्व बताने माहि।
तो थोरी गरमी लखी, वाजी तनुमें आहि ॥ २ ॥
स्याही मायल लाल जो, अश्व बताना होइ।
पित्त गिरत है खूनपर, जानि लेहु यह सोइ ॥ ३ ॥
खून जरत है अश्वतनु, जानि लेहु मनमाहि।
शालहोत्रमत देखिके, यामें बरणों ताहि ॥ ४ ॥
तुरी बताने रंग जो, जामुनके सम होइ।
बिलकुल जरिगा खून है, जानि लेहु जिय, [illegible] ॥ ५ ॥
जानो ताहि असाध्य है, औषध करिये ना।
हठ करि औषध जो करै, होत अमर नहि

मुख पूरब करि बोलै वचन वैद्य होइ अरु स्वस्तिचित।
यह दूतपरीक्षा मुनि कही सो रोगीको होइ हित॥

अथ वैद्यदर्शन।

दोहा-पूरब दिशिको मुख किये, बैठ वैद्य या भांति।
अस्थल होइ पवित्र पुनि, रोग होइ सब शांति॥ १॥
श्वेत वसन ताम्बूल मुख, पंकज करमें होइ।
पूर्व दिशामें स्थित भयो, दूत जानु शुभ सोइ॥ २॥
बोलै गिरा प्रवीन अति, कहै तौ वचन रसाल।
दूत होइ या भांति जो, जाइ रोग ततकाल॥ ३॥
फल अक्षत दधि द्रव्य युत, देख्यो वैद्य विचारि।
शुभवानी मुख दूतकी, जाइ रोग सब झारि॥ ४॥

अथ दूतमुखवर्णपरीक्षा।

दोहा-दूत कहै मुखवर्णते, दूनौं करौ निशंक।
भाग लेहु पुनि तीनिको, जीवै रहै जु अंक॥

अथ दूतपरीक्षाचक्रम्।

६	३	२	४	७	६	४	३	१	२०	८
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अ
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह

दोहा-द्वादश रेखा ऊर्ध्व करि, पट रेखा सम जानि।
ता ऊपरकी पांतिमें, भरो अंक ये आनि॥ १॥

अथ चिकित्साविधि ।

दोहा–प्रथमहि यह लाजिम अहे, होइ बिमारी कोइ ।
औषध ताकी कीजिये, सेहत जल्दी होइ ॥ १ ॥
औषध दीजे ताहिको, लीजै समय विचारि ।
गरमीऋतुमें गरम अति, नहिं दीजे निरधारि ॥ २ ॥
यहि प्रकारसों जानियो, शरदीऋतुमे मीत ।
औषध ऐसि न दीजिये, जो होवे अति शीत ॥ ३ ॥
वादीको अधिकार जो, तुरी मिजाजहि माह ।
तौ सब औषधमाहिंमें, राखै तासु निगाह ॥ ४ ॥
सब बीमारी जे अहे, कोई ऋतुमें होइ ।
वादीकी तदबीर यह, चही जरूरौ सोइ ॥ ५ ॥
बादी कफको श्वेतरँग, जानि लेहु जिय सोइ ।
शरदी हयको है जबै, श्वेत बताना होइ ॥ ६ ॥
गर्म खुश्क जे औषधी, दीजे हयको लाइ ।
शालहोत्र यों कहत है, तुरत नीक ह्वै जाइ ॥ ७ ॥
सफराका रँग जरद है, हयको सो अधिकाइ ।
होइ बताना जरद तब, कहत मुनिनके राइ ॥ ८ ॥
होइ शरद तब औषधी, ताको दीजै लाइ ।
पित्तकोपको नाश तब, वाजीतनु ह्वै जाइ ॥ ९ ॥
रक्तप्रकृतिमें होत है, गरमीको अधिकार ।
रँग तासुको लाल है, कीन्हों यह निरधार ॥ १० ॥
रक्तकोप जब होत है, सुरख बताना होइ ।
रक्तप्रकृति है गर्मतर, श्रीधर वरणो सोइ ॥ ११ ॥

अंग राम पुनि पक्ष लिखि, वेद बार रस जानि ।
युग गुण शशिकर रध्र कहि, लिखो अंक ये आनि ॥२॥
अकारादिस्वर दीर्घ लघु, लिखो दूसरी पांति ।
कवर्गादि पुनि वर्ग सब, भरो चक्र या भांति ॥ ३ ॥
दूतनामके वर्ण स्वर, ता ऊपर जे अंक ।
जोरि करो यकत्तर सब, जानि लेहु निरशंक ॥ ४ ॥
रोगी नामहि वर्ण स्वर, वही भाँति गनि लेहु ।
जुदे जुदे करि दुहुँनको, भाग आठको देहु ॥ ५ ॥
रोगीनामहि अंक बढ़ि, दूत नामते होइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, जीवै रोगी सोइ ॥ ६ ॥
रोगीनामहि अंक गनि, दूतनाम जे अंक ।
ताते सम अरु हीन जो, रोगी मरै निशंक ॥ ७ ॥
दूतपरीक्षा वैद्य करि, रोगीके गृह जाइ ।
रोगी छूटै रोगसों, सुयश तासु अधिकाइ ॥ ८ ॥

अथ वैद्य चलनेके समयके शकुन ।

दोहा–रीतो घट आगे मिलै, की आमिष दृग देखि ।
विप्र मिलै जो तिलकयुत, है शुभ शकुन विशेषि ॥ १ ॥
वेणु वीण अरु दुंदुभी, शंख भेरि सहनाइ ।
मेघ सिंह गज धेनु कहि, शब्द इते सुखदाइ ॥ २ ॥
निजदाहिने जो लखि परै, विपम कुरंग सुजान ।
रोगी छूटै रोगसों, होइ वैद्य यशवान ॥ ३ ॥

चौपाई–मिलै जो आगे कन्या आई । पुत्रसहित युवती दरशाई॥
फल अरु फूल लिये कर सोई । देखि परै अस पूरुप कोई॥

औषध दीजै ताहिको, शरद खुश्कको लाइ।
कोप रक्तको होइ जो, तुरत नीक ह्वै जाइ॥ १२॥

अथ वाजी- असाध्य-परीक्षा।

दोहा-गध देहमें भूमि सम, होइ चताना स्याह।
ताको कहत असाध्य है, शालहोत्र मुनिनाह॥ १॥
या विधि जाके देहमें, लक्षण परै लखाइ।
दोइ मासके भीतरै, तुरी सही मरि जाइ॥ २॥
जरदी मायल स्याह जो, तुरी चताना होइ।
जतन करै सो बहुत विधि, मरत वाजि है सोइ॥ ३॥
कष्टसाध्य सो जानिये, ये लक्षण जहँ होइँ।
तीनि मासके ऊपरे, मरत वाजि है सोइ॥ ४॥

अथ जीभके असाध्य लक्षण।

दोहा-बिंदु श्वेत जा वाजिके, जीभमाहि परि जाइ।
ताको कहत असाध्य है, शालहोत्र मुनिराइ॥ १॥
बडी जतनसों मास पक, जीवत वाजी नाहि।
बिन कीन्हें जो जतनके, जानि लेहु मनमाहि॥ २॥
तसवरलु भोजन करै, खारी चीजै खाइ।
परै बिंदु है जीभमें, तिनको दोष न आइ॥ ३॥
पीत बिंदु जो जीभमें, तिन कारण परि जाइ।
दोइ मासके भीतरै, अवशि वाजि मरि जाइ॥ ४॥
जाहि तुरीकी जीभमें, हरित बिन्दु परि जाइ।
तीनि मासके ऊपरै, वाजी जीवत नाइ॥ ५॥
चित्रित बिंदुक जीभमें, जा हयके ह्वै जाय।
चारि मासके भीतरै, सही वाजि मरि जाय॥ ६॥

अथ अशकुन।

दोहा–मारग काटे अग्र है, गिरगिट श्वान शृगाल।
देखि परे जो गिद्ध पुनि, अशकुन अहै कराल॥ १॥
सजल कुंभ या पतित कछु, वृक्षपात भुवि होइ।
और ज्वलित ग्रह देखिये, अशकुन जानौ सोइ॥ २॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत चिकित्साकाण्ड दूत परीक्षाशुभाशुभवर्णन नामक द्वितीय अध्याय॥ २॥

अथ शिरामोक्षण–फस्द खोलना।

दोहा–प्रथम दवाईको करे, जो नहिं होइ अराम।
तब तौ लीजे फस्दको, ताके बरणौ ठाम॥ १॥
शिरा एक है जीभ तर, सो वह खोली जाइ।
दिलमें गरमी होइ जो, सो नीकी ह्वैजाइ॥ २॥
पक्के पाव भरेते, ज्यादा खून न लेइ।
शालहोत्र–मत जानिकै, ऐसे फस्दहि देइ॥ ३॥

दूसरी रग तालूकी।

चौपाई–तालूकी रग बरणौ भाई। दांततीरते सीठी ताईं॥
सीठी दोइ छोड़िकै जानौ। तिसरी सीठीके तर मानौ॥
नस्तर देइ शिरा वहिकेरो। गुणिजन शालहोत्र–मत हेरो॥
ज्वर दीमाग जिगरको खोवै। रुधिर आधसेर पक्का लेवै॥

तीसरी जगह फस्द लेनेकी विधि।

चौपाई–ओठनके भीतरमें देखौ। छाला ऐस परै औरेखौ॥
तिहिते अश्व घास नहि खाईं। मुँहते पानी गिरत सदाईं॥
तेहिकी दवा यहै करवावै। दोनों हाथसे ओठ उठावै॥

जा वाजीकी जीभमें, स्याह बिंदु परि जाहि ।
चारि मासके ऊपरै, जीवत वाजी नाहि ॥ ७ ॥
जाहि बताने माहिमे, पित्तदोष दरशाइ ।
तीनि कोनके श्वेत जे, बिंदु जीभ परि जाई ॥ ८ ॥
षट महिनाके भीतरै, वाजी सो मरि जाइ ।
कहत सयाने लोग सब, शालहोत्रमत आइ ॥ ९ ॥
चंपाके रँग बिंदु जो, तुरी जीभ परि जाइ ।
मास सातयें वाजिको, अवशि नाश है जाइ ॥ १० ॥
हरदीके रँग बिंदु जो, वाजि जीभ परि जाइ ।
दशये महिना अवशिकै, वाजी सो मरि जाइ ॥ ११ ॥
सुरख बिंदु जो वाजिके, जीभ माहि है जाइ ।
मास सातयें लागते, तासु नाश है आइ ॥ १२ ॥
साखी वर्णहि बिंदुसे, वाजि जीभ दरशाइ ।
मास ग्यारहें जानियो, वाजी सो मरि जाइ ॥ १३ ॥
जाकी रसना माहिमें, हिमसम बिंदुक होइ ।
एक सालके ऊपरै, नहि जीवत है सोइ ॥ १४ ॥
नितप्रति बाढ़ै श्वास जिहि, पुलकित अंग लखाइ ।
रसना ताकी होइ जो, हिम समान दरशाइ ॥ १५ ॥
षट महिनाके भीतरै, सो वाजी मरि जाइ ।
सो श्रीधर वर्णन कियो, शालहोत्रमत पाइ ॥ १६ ॥
दशन बसन अरु ग्रीवमें, गूंथीसी परि जाइ ।
मूत्र होइ युत रक्तके, सो वाजी मरि जाइ ॥ १७ ॥
शीतल जल पीवन चहै, शीतल छाँह सुहाय ।

ते छालनमें नस्तर लेई। ऊपर नमक चुपरि सो देई ॥
मलिकै नमक धोइ फिरि डारै । होइ अगम अश्व निरधारै ॥

चौथी रग–फस्द लेनेकी विधि ।

दोहा–ऑखितरे रग एक है, ऊपर दूजहि होइ ।
दूओ तरफसों होति है, खोलति है रग सोइ ॥ १ ॥
गरमी होइ दिमागमें, अरु भौरी जो होइ ।
ताही रगको खोलिये, तुरतहि नीको जोइ ॥ २ ॥
लीजै खून छटॉक भरि, ज्यादा ना ह्वै जाइ ।
कमती होइ तौ दोष नहि, शालहोत्रमत आइ ॥ ३ ॥

छठी रग–फस्द लेनेकी विधि ।

दोहा–नथुननमें रग होइ यक, सो वह खोली जाइ ।
जौनी विधिसों खोलिये, सो अब कहौ उपाइ ॥ १ ॥
पूजमालको दीजिये, प्रथमहि नथुना माहि ।
नथुना पकरै हाथ इक, तामधि देखै ताहि ॥ २ ॥
खूब ध्यानकरि देखिये, जबही रग दरशाइ ।
तामें नस्तर मारिये, शिरामोक्ष ह्वै जाइ ॥ ३ ॥
जो अति असवारी विषे, हफफत बाजी होइ ।
ताकी यह रग खोलिये, अतिहि फायदा सोइ ॥ ४ ॥
खून तासुको लीजिये, आधपाव परमान ।
ज्यादा लीन्हें होत है, अवगुण ताहि सुजान ॥ ५ ॥

अथ सतई रग–फस्दलेनेकी विधि ।

दोहा–कानतरे रग एक है, जहां कनगुदी आहि ।
दोऊ तरफन होति है, ध्यान किये दरशाहि ॥ १ ॥

सब विधि पित्तविकार जो, तासु बदन दरशाय ॥ १८ ॥
सब चेष्टा है याहि विधि, श्वेत बताना होय।
ये लक्षण नाहि नीक हैं, जियत बाजि नहि सोय ॥१९ ॥
पीडित बाजी वातसों, स्याह बताना होइ।
तीनि मासके ऊपरे, जियत बाजि नहि सोइ ॥ २० ॥
पीडित वाजी पित्तसों, नेत्र जर्द ह्वै जाय।
कष्टसाध्य तिहि जानिये, सतयें मास नशाइ ॥ २१ ॥
जा बाजीके होइँ बहु, रंग बताना माहि।
घर्घराइ बहु श्वासते, जीवत बाजी नाहि ॥ २२ ॥
एक बताना लाल अति, नील वर्ण यक होइ।
पीत वर्ण है देह सब, अरु सुखीसी जोइ ॥ २३ ॥
एकमासमें मरत सो, जानि लेउ तुम मीत।
कैसो अच्छी देइ जो, औषध करिके प्रीत ॥ २४ ॥
जा बाजीकी देहमें, पित्तदोष अधिकाइ।
घर्घराइ गल श्वासते, वर्षाऋतुको पाइ ॥ २५ ॥
पक्षभरेमें अवशि करि, सो बाजी मरि जाइ।
कोटि जतन कोऊ करै, नाहिन तासु उपाइ ॥ २६ ॥
जीभ स्याह ह्वै जाइ जिहि, दशन स्याह ह्वै जाहि।
और बताने माहिमों, पित्तदोष दर्शाहि ॥ २७ ॥
आठ रोजके भीतरे, सो बाजी मरि जाइ।
कवि श्रीधर वर्णन कियो, शालहोत्र-मत पाइ ॥ २८ ॥

इति श्रीशालहोत्रसमट केशवसिंहकृत चिकित्साकाण्ड वाजीप्रकृति
च नाडीपरीक्षावर्णन नामक प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

खून निकारे ताहिते, आधसेर यह जानि।
ताते निकसत खून है, गर्दनकी यह मानि॥ २॥
शिरके जितने रोग हैं, औरो कहो बखानि।
सूजनि गरके भीतरे, तिन्है फायदा जानि॥ ३॥
खुश्की होइ दिमागमें, और रोग सब जाहि।
गर्दनकी सूजनि मिटै, सो जानो मनमाहि॥ ४॥

अथ आठवीं रग-फस्द खोलनेकी विधि।

दोहा-गर्दन मारग होति है, तरक दुहुँनमें जानि।
फस्द खोलिये ताहिमें, याजीको सुखदानि॥ १॥
पीड़ित होइ खारिस्तिते, अरु बर्साती होइ।
ताकी यह रग खोलिये, अती फायदा सोइ॥ २॥

नवमी रग।

दोहा-दूनौ सीननपर अहै, एक एक रग जानि।
खून निकारै ताहिते, आधपाव यह मानि॥ १॥
जाके सीनाबंद जो, बहुत दिननते होइ।
यह रग खोलै ताहिके, ताको गुण अति जोइ॥ २॥

दशवीं रग।

दोहा-दोनों अगिले पॉवमें, होत एक रग आइ।
परकी रग सो जानिये, सोऊ खोली जाइ॥ १॥
सब देहीमें रक्त जो, निकसत तासों जानि।
खून निकारै ताहिते. पक्को सेरहि मानि।

ग्यारहवी रग।

दोहा-तंग तरे रग होति है, फस्द तहॉ ले लेइ।
खून निकारै ताहिते, बहुत फायदा देइ॥ १॥

अथ दूतपरीक्षावर्णन ।

रोगी बोलै वैद्यको, दूत गयो जो होइ ।
करे परीक्षा ताहिकी, वैद्य विचक्षण जोइ ॥ १ ॥
चेष्टा भाषा वेष अरु, पुनि तारागण जानि ।
वेला तिथि मन देहते, दूतपरीक्षा मानि ॥ २ ॥
वैद्य होइ जा थल विषे, सोऊ लेइ विचारि ।
सूचक शुभ अरु अशुभके, लक्षण ये निरधारि ॥ ३ ॥
नारि नपुंसक कन्यका, और असुर आमानि ।
स्यन्दन खर आरूढ़को, किये होइ जो जानि ॥ ४ ॥
वस्त्र इतर है पाडुते, मलिन आइकी होइ ।
की सो जीरण वस्त्र है, की तौ फाटे जोइ ॥ ५ ॥
न्यून अधिक अँग दूतके, उद्धट चितकी होइ ।
विक्रित जाके अंग है, रूप भयंकर जोइ ॥ ६ ॥
निष्ठुर रूक्ष अमगलो, बोलै वाणी आनि ।
कि तौ साथ नग होइँ बहु, निन्दित दूत बखानि ॥ ७ ॥
तिनुका खोटत होइ की, की कुछ काटत होइ ।
की नासा औ स्तन विषे, हाथ लगाये सोइ ॥ ८ ॥
सोरठा–रगरत कपरा होइ, नासा कच अरु रोमपर ।
दूत अमगल सोइ, की तौ पोंछै हाथ निज ॥
दोहा–गोपनी फाँसी हाथमें, मीजत कपरा होइ ।
पहिरे माला अरुणकी, तेल लगाये सोइ ॥ १ ॥
हृदय कपोल-ललाटमें, हाथ-लगाये देखि ।
हाथ धरेको कानपर, दूत निषिद्ध विशेखि ॥ २ ॥

होइ विमारी पीठिमें, औरौ कटिमें जानि ।
सोवतमें बरांत है, ताहि फायदा मानि ॥ २ ॥
सपना देखे बहुत सो, औ उठि ठाढ़ो होइ ।
नींद परति नहि ताहि को, सोऊ नीको जोइ ॥ ३ ॥
याते खून निकारिये, पक्के पाव प्रमान ।
ज्यादा होने देइ नाहिं, नहिं कमती सक जान ॥ ४ ॥

बारहवीं रग ।

दोहा–पछिले दोऊ पाँवमें, गाँठिन ऊपर जानि ।
तहाँ होति है एक रग, पटरग ताहि बखानि ॥ १ ॥
पछिले धरको खून जो, ताते निकसत आहि ।
खून लीजिये सेरभरि, दोनों पावन माहि ॥ २ ॥

तेरहवीं रग ।

दोहा–और एक रग होति है, चारिउ पायन माहि ।
बँधो मुजम्मा जात जहँ, तुरी गामचिनमाहि ॥ १ ॥
सो रग है बारीख अति, जानि लेहु सुखदानि ।
खून निकारै ताहिते, आधपाव यह जानि ॥ २ ॥
जखम होइ सुममाहि जो, रोग पेटमें होइ ।
की गरुहाउट पेटमें, तौ रग खोलै सोइ ॥ ३ ॥
फस्द खोलना ताहिको, बहुत मुनासिब जान ।
शालहोत्र मुनिके मते, सो लीजै पहिचान ॥ ४ ॥
पट्टी बाधै ताहिमें, अति मजबूताहि सोइ ।
वह पट्टी खुलि जाइ जो, तौ न फायदा होइ ॥ ५ ॥
तातें वाजिब है सबै, पट्टीकी अंदाज ।
किये रहै मजबूत तेहि, तीनि रोज लगु साज ॥ ६ ॥

या कोउ फल करमें लिये, चन्दन अरुण खिलार।
वस्तु असारक होइ कर, ऐसो दूत नकार ॥ ३ ॥
कर्दम लाये अंग निज, की कछु फेंकत होइ।
माटी फोरत हाथसों, विकृत रूपहि सोइ ॥ ४ ॥
सोरठा—भूमि लिखत सो होइ, हाथ चरणकी आँगुरिन।
की तौ खोंटत सोइ, नखते नखको जानिये ॥
दोहा—चरण दबाये हाथ निज, की कुम्हड़ा लिये हाथ।
की तौ पीडित रोगसों, दूत दीप यक साथ ॥ १ ॥
किये आचरण दुष्ट तनु, विकृत तैन लखाहि।
दीरघ लेइ उसाँसकी, की तौ रोवत आहि ॥ २ ॥
की तौ दक्षिणमुख खड़ो, की कर जोरे आनि।
एक चरण ठाडो विकल, दूत अमंगलखानि ॥ ३ ॥
दण्ड लिये की हाथमें, शास्त्र होइ की पानि।
मुनिनायक यतने कहे, निन्दित दूत बखानि ॥ ४ ॥

अथ वैद्यस्थानवर्णन।

दोहा—खपरी पाथर भस्म औ, भूति हाड़ अरु आगि।
इनयुत स्थलमें वैद्य ढिग, आवे दूत अभागि ॥

अथ वैद्यदर्शन—चौपय्या छन्द।

दक्षिण दिशि मुख कीन्हें होइ। तैल लगाये अशुची सोइ ॥
अमनीर युक्त अरु विकल अंग। कछु होय पियारी वस्तु भंग ॥
देव पितर कृत कर्म होइ। की क्षौर कर्ममें उदित सोइ ॥
स्थान अशुचिमें वैद्य होइ। क्षिति शयन किये पुनि श्रमित सोइ ॥
की क्षौर करत वरतकसान। भोजन विचरत ये अशुभ जान ॥
उत्पात समय सो प्राप्त होइ। सब केश छुटे जो वैद्य सोइ ॥

जो खुलि जाइ कदाचि वह, जारी होवै रक्त ।
शालहोत्रमत देखिकै, बाँधो ताको सख्त ॥ ७ ॥
सोरठा-तीनि रोज पश्चात, खोलै पट्टी पाँवकी ।
अश्व निरुज है जात, यह गति जानो ताहिकी ॥

अन्य रग ।

दोहा-श्राजीकी ठेरी कहै, अगिले सुममें होइ ।
खून निकारै ताहिते, बहुत फायदा सोइ ॥ १ ॥
नालके भीतर होत है, नालबदको काम ।
कफी वगैरह रोग जे, ते नाशै अभिराम ॥ २ ॥

अन्य रग ।

दोहा-पूँछ माहिं रग होति है, जरते आँगुर चारि ।
तहँपर नस्तर मारिये, शिरामोक्ष निरधार ॥ १ ॥
पूँछ हाथते पकरिकै, नापै आँगुर चारि ।
तहँपर नस्तर मारिकै, काढै खून सुधारि ॥ २ ॥
खून निकारै ताहिते, पक्का आधा सेर ।
रसबंद जो रोग है, ताहि फायदा ढेर ॥ ३ ॥

अथ शिरामोक्षणके मुख्य स्थान ।

दोहा-सीनेकी रग जानिये, और गरेकी मानि ।
तालूकी रग होति जो, अरु नथुनाकी जानि ॥ १ ॥
अगिले पछिले पाँवमें, दोइ रगै जे होइँ ।
अंडकोशकी एक रग, अरु छाले मुहँ जोइ ॥ २ ॥
आठ रगै ये मुख्य है, सो मैं कही बखानि ।
अंडकोशकी होति रग, अंड पिछारी मानि ॥ ३ ॥

दोहा-वैद्य होइ या भाँतिसों, दूत वैद्यढिग जाइ।
रोगी निश्चयकै मरै, नाहिन तासु उपाइ॥

अथ वेला दूषित वर्णन।

दोहा-तीनों सन्ध्या अर्द्धनिशि, दूषित वेला जानि।
इनमें आवै दूत जो, होइ अमंगल खानि॥

अथ तिथिदूषित वर्णन।

दोहा-रिक्तातिथि षष्ठी सहित, और कही संक्रांति।
इनमें आवै दूत जो, नहीं रोगकी शांति॥

अथ नक्षत्रदूषित।

दोहा-भरणी अश्लेषा बहुरि, मघा आर्द्रा मूल।
और पूर्वा कृत्तिका, ये नक्षत्र सम शूल॥

अथ शुभ दूत वर्णन।

छन्द-रूप श्यामरो सुन्दर होई। गौर स्वरूप मनोहर सोई॥
शुक्ल वस्त्र धारे सो आहि। ये कहँ दूत मुनिवर सराहि॥

दोहा-दूत होय निज गोत्रको, की तौ अपनी जाति॥
रोगी छूटै रोगसों, वैद्य होइ यशख्याति॥ १॥
की तौ पैदर दूत हो, कि तौ किये गोजान॥
कि तौ होइ कालज्ञ सो, की तौ हो स्मृतिवान॥२॥
अलंकार तनमें लसै, सुन्दर जाको रूप।
ललित वचन मुखते कहै, ऐसो दूत अनूप॥ ३॥

छप्पय-दूत होइ स्वाधीन शास्त्रमें होइ विचक्षण।
लोकरीतिमें चतुर वचन बोलै शुभ लक्षण॥
निपुण दूत पुनि होइ अलंकार युत वस्त्र वर।
लखिय दूत या भाँति जानिये सब सिद्धिकर॥

अंडकोश सूजै जवै, की चाढि जाय सुजान।
तबै खोलना फरद यह, वहुत मुनासिव मान॥ ४॥
वाजीको बल जानिकै, और समय पहिचानि।
नाड़ीमोक्षण तब करै, होइ रोगकी हानि॥ ५॥

अथ फस्द लेनेका समय।

दोहा–सावन आश्विन चैत्र पुनि, इन महिननको पाइ।
फस्द वाजिके लीजिये, रोग दूरि है जाइ॥ १॥
होइ महीना और जो, रोग वाजितनु होइ।
विना फस्द सो जाइ नहि, ताकी यह विधि जोइ॥ २
गरमीकी ऋतु होइ जो, शरद बसतको पाइ।
नाडीमोक्षण कीजिये, वाजीको सुखदाइ॥ ३॥
वर्षामें जा दिन विषे, वादर नाही होइ।
मोक्षण नाड़ीको करै, तुरतै नीको जोइ॥ ४॥
जिन महिननमें शरदऋतु, अती शीत दरशाइ।
धूप होइ दुपहर विषे, खोली रग तव जाइ॥ ५॥
प्रथमहि हय टहलाइये, गरम कछू जव होइ।
तव तो खोलै फस्दको, तुरतै नीको जोइ॥ ६॥
आश्विनसम कार्तिक अहै, चैत्रै सम वैशाख।
अषाढ सावन एक सम, शालहोत्रमत भाष॥ ७॥
कवि श्रीधर चित चाउ करि, शालहोत्रमत जानि।
नाड़ीमोक्षण-विधि कही, वाजीको सुखदानि॥ ८॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवमिहकृत चिकित्साकाण्ड वाजीशिरामोक्ष-वर्णन नामक तृतीय अध्याय॥ ३॥

मुख पूरब करि बोलै वचन वैद्य होइ अरु स्वस्तिचित।
यह दूतपरीक्षा मुनि कही सो रोगीको होइ हित ॥

अथ वैद्यदर्शन।

दोहा-पूरब दिशिको मुख किये, बैठ वैद्य या भांति ।
अस्थल होइ पवित्र पुनि, रोग होइ सब शांति ॥ १ ॥
श्वेत वसन तांबूल मुख, पंकज करमें होइ।
पूर्व दिशामें स्थित भयो, दूत जानु शुभ सोइ ॥ २ ॥
बोलै गिरा मवीन् अति, कीं तौ वचन रसाल ।
दूत होइ या भांति जो, जाइ रोग ततकाल ॥ ३ ॥
फल अक्षत दधि द्रव्य युत, देख्यो वैद्य विचारि ।
शुभवानी मुख दूतकी, जाइ रोग सब झारि ॥ ४ ॥

अथ दूतमुखवर्णपरीक्षा।

दोहा-दूत कहै मुखवर्णते, दूनौ करौ निशंक।
भाग लेहु पुनि तीनिको, जीवै रहै जु अंक ॥

अथ दूतपरीक्षाचक्रम ।

६	३	२	४	७	६	४	३	१	२०	८
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अ
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह

दोहा-द्वादश रेखा ऊर्ध्वं करि, पट रेखा सम जानि।
ता ऊपरकी पांतिमें, भरो अंक ये आनि ॥ १

अथ चिकित्सावर्णन।

दोहा—धातुकोपते होत है, वाजीतनुमें रोग।
ताको कहत निदान अब, अरु औषधी प्रयोग ॥ १ ॥
वात पित्त कफ रक्त जो, तिनमे कोपे कोइ।
वाजीके तनु माहिमें, रोग सु उत्पति होइ ॥ २ ॥
वात पित्त कफ रक्तके, दोष लेइ पहिचानि।
तबही औषधिको करे, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥
एक धातुको कोप कहुँ, कहूँ दोइको होइ।
कोपे धातुहि तीनि कहुँ, कहँ विषम सब सोइ ॥ ४ ॥

अथ रक्तपित्तके कोपका निदान वर्णन।

दोहा—खजुरी तनुमें होइ कहुँ, अरु धाँसत हय होइ।
मुँहते पानी चलत है, ऐसे लक्षण जोइ ॥ १ ॥
शीतल जल अतिही चहै, चाहे शीतल छाँह।
बहु भोजन पर मन रहै, शीतल वस्तुहि चाह ॥ २ ॥

उसकी दवा।

चौ०—कुटकी एक टका भरि लीजे। लालि मिठाई ता सम कीजे।
प्रातहि उठि नित ताहि खवावै। रोग घटै बहु भूँख बढ़ावै॥
दोहा—कही एक मौताज यह, जानि लेहु मनमाहि।
सात दिवस लगु दीजिये, रोगनाश ह्वै जाहि ॥

अथ पित्तकोपसे असाध्य लक्षण।

दोहा—मैलु कढ़े आँखिन विषे, बार बार हिहनाइ।
आँसू आवत जाहि बहु, लेहु जाहि यहि भाइ ॥ १ ॥

दोहा-वैद्य होइ या भातिसों, दूत वैद्यढिग जाइ।
रोगी निश्चयके मरे, नाहिन तासु उपाइ॥

अथ वेला दूषित वर्णन।

दोहा-तीनों सन्ध्या अर्द्धनिशि, दूषित वेला जानि।
इनमें आवे दूत जो, होइ अमंगल खानि॥

अथ तिथिदूषित वर्णन।

दोहा-रिक्तातिथि षष्ठी सहित, और कही संक्राति।
इनमें आवे दूत जो, नहीं रोगकी शांति॥

अथ नक्षत्रदूषित।

दोहा-भरणी अश्लेषा बहुरि, मघा आर्द्रा मूल।
और पूर्वा कृत्तिका, ये नक्षत्र सम शूल॥

अथ शुभ दूत वर्णन।

छन्द-रूप श्यामरो सुन्दर होई। गौर स्वरूप मनोहर सोई॥
शुक्ल वस्त्र धारे सो आहि। ये कहँ दूत मुनिवर सराहि।

दोहा-दूत होय निज गोत्रको, की तौ अपनी जाति॥
रोगी छूटै रोगसों, वैद्य होइ यशख्याति॥ १॥
की तौ पैदर दूत हो, कि तौ किये गोजान॥
कि तौ होइ कालज्ञ सो, की तौ हो स्मृतिवान॥२॥
अलंकार तनमें लसै, सुन्दर जाको रूप।
ललित वचन सुसते करै, ऐसो दूत अनूप॥ ३॥

छप्पय-दूत होइ स्वाधीन शास्त्रमें होइ विचक्षण।
लोकरीतिमें चतुर वचन बोलै शुभ लक्षण॥
निपुण दूत पुनि होइ अलंकार युत वस्त्र वर।
लखिय दूत या भांति जानिये सब सिद्धिकर॥

होइ बताना स्याह यक, होइ एक अतिपीत ।
ताकी औषधि नहिं करौ, जानि लेहु यह मीत ॥ २

अथ वातरक्तकोपवर्णन ।

दोहा–वात रक्तको कोप जब, वाजीके तनु होइ ।
श्वास चलै अतिजोरसे, दोष वातको सोइ ॥ १ ॥
बार बार बैठै उठै, पौढ़ै पाँव बढ़ाइ ।
अंग मरोरै बार बहु, बार बार जमुहाइ ॥ २ ॥

उसकी दवा ।

चौ०–आध पाव त्रिफलाको लीजै । घीमें सानिकै पिंडी कीजै
सो वाजीको देउ खवाई । सतयें रोज नीक ह्वै जाई ।
दोहा–आध पाव मौताज यक, सात रोज लगु देइ ।
रोग घटै अरु बल बढ़ै, नीको वाजी लेइ ॥ १ ॥
वातरक्तके दोषमें, ये लक्षण दरशायँ ।
काटै अपनी देहको, अति सरोष ह्वै जाइ ॥ २ ॥
एक बताना लाल अति, एक श्वेत दरशाइ ।
जानौ ताहि असाध्य है, जियत नहीं सो आइ ॥ ३ ॥

उसकी दवा ।

चौपाई–मासाभरि अभ्रकरस लेहु । सोरह मासे अदरख देहु ॥
दुवौ मिलैकै देहु खवाई । नीक तीनि दिनमें ह्वै जाई ॥
दोहा–मासाभरि मौताज यक, हयको देहु खवाइ ।
नीको वाजी होइ सो, चंडी जाहि सहाइ ॥

अथ श्लेष्मरक्तकोपवर्णन ।

दोहा–वाजी बैंसै अधोमुख, दाना घास न खाइ ।
जरद चलै नहि राहमें, पावक घाम सुहाइ ॥ १ ॥

जानि परत नहि ताहिको, चाबुक मारे कोइ।
नथुनाते पानी चलै, ऐसे लक्षण जोइ॥ २॥

उसकी दवा।

दोहा—नाड़ीमोक्षण कीजिये, अगिले पॉयन माहि।
तब औषधको दीजिये, तुरी नीक ह्वै जाहि॥
चौ०—चारि टकाभरि सोंठि मँगावै। ता सम गुड़ काले मिलवावै।
पिंडी दीजे ताहि खवाई। सतयें दिन नीको ह्वै जाई॥
दोहा—चारि टका मौताज यक, हयको देहु खवाय।
यहि विधि कीजै सात दिन, जल्द नीक होजाय॥

अथ पित्तश्लेमाका कोप।

दोहा—येई लक्षण होंइ सब, औरौ कछु दरशाइ।
खीसै काढ़ै बार बहु, मुँह नीचे लटकाइ॥

उसकी दवा।

चौ०—यक औषध सब लेहु मँगाई। ताहि बराबरि सौंफ मिलाई॥
पिंडीकरि घोड़ाको दीजै। सात दिवसमें नीको लीजै॥

अन्य दवा।

दोहा—सोंठि मिर्च गुड़ पीपरी, मोथा और मिलाइ।
जेठीमाई हींग लै, समभागहि तौलाइ॥ १॥
दोइ टकाभरि लेइ सब, पिंडी एक बनाइ।
जानौ यह मौताज है, प्रातहि देहु खवाइ॥ २॥
या विधि दीजै सात दिन, शालहोत्रमत जानि।
रोग घटै अरु बल बढ़ै, होइ क्षुधा बहु आनि॥ ३॥

पुन ।

दोहा—पात चँबेली लीजिये, गोघृत कल्क पचाय ।
नासु अश्वको दीजिये, मस्तक शूल विहाय ॥ १ ॥
सो घृत मस्तकमें मलै, मलै कनपटी सोय ।
दवा करौ ततकाल ही, शूल दूरि सो होय ॥ २ ॥

अथ पित्तरक्त-लक्षण ।

दोहा—घर्ष करै कडू वपुष, चाहै जल अरु छाँह ।
चरै न तृण सो जानिये, पित्तरक्त यहि माँह ॥ १ ॥
यह लक्षण लखि तुरँगको, तुरतै लोहू लेय ।
होय अरोगी तनु तबै, कुटकी औ गुड देय ॥ २ ॥

सोरठा—मिश्रीके सँग क्षीर, पियन अश्वको दीजिये ।
निर्मल होइ शरीर, दाह पित्त छूटै तुरत ॥ १ ॥
आधपाव परमान, सुरवारीके बीज लै ।
अरु कुटकी गुड सान, दीजै तुरत अरोगिकर ॥ २ ॥

अथ पित्तरक्तका असाध्य लक्षण ।

चौ०—रुधिर लिये पाछे हय देखो । पांडु वर्ण लोचन युग लेखो ।
तासु मरण निश्चय करि जाना । शालहोत्रके वचन प्रमाना॥

अथ पित्तलक्षणवर्णन ।

दोहा—बार बार करि लीदको, गात गिलदि इति होय ।
लक्षणते पहिचानिये, पित्त जानिये सोय ॥ १ ॥
गोदधि लीजै सेर इक, चीनी शक्कर होय ।
सालिम मिश्री टक दुइ, उज्वल जीरा सोय ॥ २ ॥
अश्वस्थानको दीजिये, पित्तदोष जिहि होय ।
याते जाय विकार सब, जो पहिचानै कोय ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०-सैंधव सोंठि बरोबरि लीजे । कूटि कपरछन ताको कीजे॥
नासु तासुको वाजिहि दीज । नीको होइ रोग सब छीजे॥

अथ वातरक्तका कोप ।

दोहा-डोरा आँखिन माहिके, श्वेत लाल दरशाईं ।
कोखी दोनों ताहिकी, नितप्रति फूलत जाईं ॥ १ ॥
एक तीर ठहराइ नहि, नितप्रति बाढ़े श्वास ।
बार बार हिहिनाइ बहु, ये लक्षण करि खास ॥ २ ॥

उसकी औषध ।

चौ०-जीभ माहिं रग देहु खुलाई । ता पीछे घृत देहु खवाई ॥
घृतकी विधि सब आगे कही । टका दोइ भीताजहि लही॥
दोहा-सात दिवस लगु दीजिये, टका दोइभरि लाइ ।
रोग घटे अरु बल बढ़, क्षुधा बहुत अधिकाइ ॥

अथ वातपित्तका कोप ।

दोहा-लाल बताना एक है, एक श्वेत दरशाइ ।
मुँहमें खजुरी होइ अरु, नितप्रति धोसत जाइ ॥ १ ॥
दाना घासहि खाइ नहि, अरु दापत बहु आइ ।
चौंके बारंबार बहु, सो असाध्य दरशाइ ॥ २ ॥
ताकी औषधि नहि करै, सही वाजि मरिजाहि ।
वातपित्तको कोप यह, जानि लेहु मनमाहि ॥ ३ ॥
मुखमें कंडू होइ नहि, उदर मध्य खजुआइ ।
येई लक्षण होईं सब, वाजीके तनुमाइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

छं० प०–हय पित्तरक्त वाढ शरीर । खजुआय अंग बहु चहै नीर
अति शीनथान सो वासु लहै । अतिशीत न भक्षण भक्ष चहै ॥

दवा ।

छं०प०–तहँ रुधिर अंग हयकरै हीनातब कटुकी औ गुड दे प्रवीन
जो होय अंग वाजी निरोग । यह जानौ जनकहि सर्व लोग॥

असाध्य लक्षण ।

छं०हरि०–हय होय लक्षण प्रथमके पुनि पित्त शोणित सो मिले।
अरु अश्व श्वास विमुच्चई हिहनाय नैन सिलासिलै ॥
अरु रक्त पित्त दिगन्त दीसे साध्य लक्षण है नही।
यह शालहोत्र विचारि भाषत बाजि नाहिं जीवै सही ॥

पित्तकी दवा ।

चौ०–श्वेत इलाची मूसरि श्यामा।काकजंघ मधु घृत अभिरामा॥
शक्कर श्वेत भाग सम कीजै।पीसि दवा गुड़के सँग दीजै॥
पित्त सकल खातै हरि लेई । उनइस टंक खानको देई ॥

अथ कफज्वरलक्षण–वर्णन ।

दोहा–तनु तातो व्याकुल स्रवत, नाक शिथिलता नैन ।
अधर अधर में लीन जल, यहै कफ ज्वर ऐन ॥

पुन ।

दोहा–तप्त शरीर रु पेट गद, शोथ दृगन पर होय ।
कफ डारै कांपै वदन, घास खाय नहि सोय ॥

दवा ।

चौपाई–पिपरी सैधव घी मेलाई । नासु देव घोड़ेको जाई ॥
ता पाछे यह काढ़ा करै । अगपीर घोड़ेकी हरै ॥

कफको जानो दोष तौ, सोउ साध्य नहिं आइ।
ताकी औषध यह करै, सही नीक है जाइ ॥ ५ ॥
गुरुच पीपरी हींग अरु, ककरासिगी आनि।
अरु महुरेठी लीजिये, समकरि सबको सानि ॥ ६ ॥
यहि औषधको कीजिये, दोउ टकाभरि लाइ।
नव दिन कीजे याहि विधि, रोग दूरि है जाइ ॥ ७ ॥

अथ कफ-पित्त-वात-रक्त-कोप।

दोहा-वात पित्त कफ रक्त जहँ, चारिउ कोपे होइँ।
सन्निपात तहँ जानिये, बिरले जीवत कोइ ॥ १ ॥
कहुँ अधिक ह्वै वात यक, दोइ अधिक कहुँ होइ।
कोपी धातुइ तीनि कहुँ, जानि लेउ जिय सोइ ॥ २ ॥

अथ रक्तकोप-अधिक-सन्निपात-लक्षण।

दोहा-नेत्रमाहि आँसू चले, औ हुष्कहि ह्वय होइ।
आँखी मूँदे सो रहै, चौंक लागि बहु जोइ ॥ १ ॥
बोलत नाहिन जोरसों, दाना घास न खाइ।
रक्त-अधिक सनिपातके, ये लक्षण दरशाइ ॥ २ ॥

उसकी दवा।

दोहा-खून निकारै जीभसों, की तौ पाँवन माहि।
दीजे दाना घास नहिं, पानी दीजे ताहि ॥ १ ॥
गरमीकी ऋतु होइ जो, जल शीतल करि देइ।
जाडेकी ऋतु माहिमें, उदक कूपको लेइ ॥ २ ॥
वच अरु कुटकी लीजिये, गाई मूत्र पकाइ।
दोइ टकाभरि दीजिये, वाजि नीक ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

पुन ।

चौ०-बायबिडंग अंडजर लावै। सोंठि कचूर गुरच मिलवावै ॥
अष्ट विशेषी काढ़ा देऊ । सात रोजमहँ नीको लेऊ ॥

पुन ।

दोहा-भारी मायो होय अति, नेत्र चुवै वहु नीर ।
पीरो कफ मुखते झरै, वदन होय तिहि पीर ॥

दवा ।

चौपाई-रेवतचीनी गायक घीऊ । अग्निमध्य परिपक करेऊ ॥
हाथ पॉव घोड़के रगरै । ता पाछे यह औषध करे ॥

पुन ।

चौपाई-सोंठि कटाई बायभिरंगा । पिपरामूल जवाइनि संगा ॥
सैधव सोंचर हींग मिलावै।औषध वजन बराबरि लावै॥
हींग सोहागा खील करावै। मासे चारि वजन मिलवावै॥
टंक तीनि भरि दीजै रोजा । मेटै अंगरोगको खोजा ॥

पुन ।

चौपाई-दंतीजर भारंगी आनै । नागरमोथा कुटकी सानै ॥
नीवछालि असगंध देवदारा।चीत मिर्च लीजो घुँघुआरा॥
अष्टाविशेषी काढ़ा करै । सहत टंकभरि तामें धरै ॥
आठ दिना जो दीजै भाई । सुखी होय अरु रोग विहाई॥

पुन ।

चौपाई-मिर्चं जीरा सैधव लोना। चीत रु चाव सोंठि लै तोना॥
बच अतीस अरु पिपरामूला।मधुसों सानि सबै समतूला॥
वजन तीनि पलकी नित दीनो । जो तुरंग है गुणद मवीनो ॥
कछ दिन याको सेवन कीजै । नित प्रति ताहि कफज्वर छीजै ॥

औषधि लीजै भाग सम, नवदिन देहु खवाइ।
भूँख बढ़ै अति ताहिको, सन्निपात मिटि जाइ॥ ४॥

अन्य सन्निपातलक्षण।

दोहा–कान दुओ ठाढ़े रहै, औ अति कांपत होइ।
वार वार खॉसत रहै, ऑखी मूँदे सोइ॥ १॥
परे रहै झप्पान अरु, लार वहति अतिहोइ।
नाभि निकट सो जानियो, मल ताके है सोइ॥ २॥

उसकी दवा।

दोहा–जीभ माहि रग छेदिये, अरु लंघन करवाइ।
औषध दीजै ताहिको, रोग नीक ह्वै जाइ॥ १॥
पित्तपापरा गुर्च वच, कुटकी और मँगाइ।
इनको कीजै भाग सम, कूपोदकसन खाइ॥ २॥
दुइ पलकी मौताज यक, साँझ सकारे देइ।
नवदिन दीजै याहि विधि, तुरी नीक करि लेइ॥ ३॥
जल देवेकी विधि कही, ताही विधिसे देइ।
शालहोत्र मुनि कहत है, तुरी नीक सो लेइ॥ ४॥

सन्निपातजनित मदाग्निकी दवा।

चौ०–सन्निपात नीको ह्वै जाई। मंदअग्नि ताके रहि जाई॥
ताको यह औषध करवावे। ताहि क्षुधा अतिही सरसावे॥
दोहा–सिरसाकेरे फूल जो, वेत लेउ मँगवाइ।
दोइ टकाभरि भाँग सम, वाजिहि देउ खवाइ॥ १॥
शाम सवेरे दीजिये, या औषधको लाइ।
दीजै ताको सात दिन, भूँख बढति अति जाइ॥ २॥

पुनः।

चौपाई–भौंहनपर जो सोथ दिखावै। नास कटैयाकेर दिखावै॥
पीरो कफ पानी दग ढारै। तो यह ओपधिको अनुसारै॥
सोंठि सोहागा सोंचर लेहू। मिर्च पीपरी तामें देहू॥
वजन बराबरि सबको कीजै। सात रोज घोड़ेको दीजै॥

अथ वातज्वर–लक्षण।

दोहा–स्रवत वारि मुख अंग जड़, ग्रीव मारि ऐंड़ाय।
वातज्वर सो जानिये, लक्षण दिये बताय॥
चौ०–पिपरी सोंठि पीपरामूलै। कूट जवाइनि वच्च सम तूलै॥
रहसनि लेउ अतीस समानै। सेर सेर की है परमानै॥
येक सेर मधुसो लै सानै। वजन कीजिये सुमति प्रमानै॥
नकुलेश्वर यह रीति बखानी। सो करिहै वातज्वरहानी॥

अथ वातसन्निपातलक्षण।

दोहा–रहै जरीसी जीभ व्रण, कंप खेद मुख लार।
तप्त अंग सब अश्वको, वातसन्नि कहि सार॥

दवा।

दोहा–जौ मसुरीको रॉधिकै, तासु कढ़ा हय प्याय।
राखै गृह निर्वातमें, सेंकै अग्नि जराय॥

पुन।

चौ०–पिपरी जीरा पिपलासूल। हीग अतीस वच्च सम तूल॥
लोन और सोनाली लाव। सेर सेर सब हींग जु पाव॥
देहु पिंडकरि घृतसों सानी। यहिविधि हयकी जतन विधानी
नकुलेश्वर ऐसो उच्चरै। याते वातसन्निको हरै॥

सन्निपात संक्षेपसों, दीन्हों इहाँ बताइ ।
लक्षणयुत अरु औषधी, करे अगारी आइ ॥ ३ ॥
धातुकोप वर्णन कियो, शालहोत्र मत देखि ।
अरु औषध श्रीधर कही, वाजिनको हित पेखि ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह कविकेशवदासकृत धातुकोपवर्णन
नामक चतुर्थ अध्याय ॥ ४ ॥

अथ आठो ज्वरोंके स्वरूप-नाम-लक्षण-उत्पत्ति-वर्णन ।

कुण्डलिया–आठौ ज्वर शिवकोपते, प्रगट भये संसार ।
बीभत्स त्रिशिग कपिल, चौथे भस्मप्रहार ॥
चौथे भस्मप्रहार त्रिपद पिंगाक्ष बखानो ।
लंबोदर भैरौ बखानकै ई सब नाम प्रमानो ॥
कहि धन्वंतर अत्रि और अश्वनी सुखेनै ।
सकल जक्तको नाशकार प्राणन दुख देनै ॥

अथ बीभत्सज्वर । देखो चित्र नम्बर १०५

कवित्त–वैद्यशास्त्रमें विधान लिखे रूप रंग जान,
प्रगट शिवकोपमान मानिये विश्वासै ।
रुधिर भीज वसन जाल अतिबल बहु नेत्र लाल,
क्रोधी महा मुंडमाल सबको मद नासै ॥
देहीं कृमी अक्षि तीन और अंग हैं मलीन,
कज्जलसम अंग वरन नग्नरूप भासै ।
नाश जक्त करनहार देहमें दुर्गंधधार,
पृषा द्विज नाशकर बीभत्सज्वर प्रकाशै ॥

पुन।

चौ०-चीत पीपरी मोथा गुरची। परवरजर कुटकी औ मिर्ची॥
पाव तीनि लै घृतसों सानी। याते वात सन्निकी हानी॥

पुन।

चौ०-सोचर हींग सैंधव जीरा। सोंठि पीपरी मिर्चै धीरा॥
प्रतिभांति तीस टंक लै आँवालहसुन लै पल बीस मिलावै॥
तुरतै सो कटुतेल मँगावै। सब औषध त्रय पाव कुटावै॥
कपरछान करि तामें सानी। दीन्हें वातसन्निकी हानी॥

पुन।

दोहा-गजपीपरि पीपरि तगर, सोंठि कूट मंजीठ।
पिपरामूरि कचूर लै, देवदारु करु डीठ॥ १॥
तीनि पाव यह सर्व लै, दीजै घृतसों सानि।
होय अश्वको देत ही, वातसन्निकी हानि॥ २॥

पुनः।

चौ०-मोथा गुरच इन्द्रारुनि लीजै। गोलफटैया सामिल कीजै॥
दोहा-भाग बराबरि पुड़िया, बाँधौ आदा सानि।
वात जाइ अरु वल करै, घोड़े देउ विधानि॥

पुन।

सोरठा-लेहु राजिका जीर, चीता दधिसँग पीसिकै।
निर्मल करै शरीर, अतीसार विष वातरस॥

अथ वातसन्निपात लक्षण।

दोहा-मुखते जो पानी झरै, गंधि करै बहु सोय।
हयको पग तरवा जरै, ज्वर संताप सु होय॥

अथ त्रिशिरज्वररूप। देखो चित्र नम्बर १०६

कवित्त–शंकरजू कोप कीन ज्वरको प्रगट कीन,
आँखी नव चर्ण तीन कासी बड़ भारी है।
जाँघे साखू वृक्ष मानौ लाली लाली आँखी जानौ,
अतिक्रोधी सो वखानौ तीनि शीश धारी है॥
रसना कपोल चाटै वैद्यशास्त्र भाषत है,
नीलवन भासत है हाथ पट कारी है।
अस रूप कीन धारी स्वेदअक्ष अंतकारी,
मुनिवृन्द यों पुकारी त्रिशिर नामधारी है॥

अथ कपिलज्वररूप। देखो चित्र नम्बर १०७।

कवित्त–गौरीपति लोकनाथ भूतनके वृन्द साथ,
कोप करि श्वास साथ या विधि उपजायो है।
ताके मुखते अंगार गिरते है बार बार,
भाषत यों ग्रंथसार वैद्यनहु गायो है॥
कामी बड़ गम्य गात लोचन मद चमचमात,
मेघ सम घुर्घुरात वैद्यकमें गायो है।
तप्त ताँव तुल्य केश राखत ना हर्ष लेश,
भाषे अस देश देश कपिलज्वर छायो है॥

अथ भस्मप्रहारज्वरस्वरूप। देखो चित्र नम्बर १०८.

कवित्त–गिर्जापति कोप कीन श्वासते प्रकट कीन,
ग्रंथमें विधान कीन ऐस रूप धारी है।
दाढ़े विकराल सप्त जीभ लफ लफात भस्म,
अस्त्र करमें विशाल देखो भयकारी है॥
अट्टहास कर्मकाश वार वारजृंभ तास,

चौ०–केलाजरको नीर मँगावै । गूलरकी छाली लै आवै ॥
लेउ बहेरा तुचको खारा । तौल सेर दुइ करु निरधारा ॥
सब इकत्र करि दीजै तुरंगा।मुसकी गंधि हरै ज्वर भंगा॥

अथ दूसरा वातज्वरलक्षण व दवा ।

दोहा–चरत रहै हय घास जो, परै ददोरा गात ।
नकुल कहै लक्षण निरखि, ताहि कहै ज्वरवात ॥
चौ०–बच औ बीज पलाश मँगावै। छालि पलाश कुरैया लावै॥
रेंड-सहीजन-जरकी छाली। अँवरवेलि अरु मुंडी घाली॥
सब समभाग टंक दश लीजै । ताको काढ़ा जलमें कीजै ॥
पानी तौल सेर दुइ देई । प्रात दिये हय नीको लेई ॥

अथ श्लेष्मवातज्वर लक्षण व दवा ।

दोहा–तानै तनु आलस भरो, खाँसै बारंबार ।
वात श्लेष्मज्वर सोई, तासु करौ उपचार ॥
चौ०–पोहकरमूल पीपरामूला । भारंगी पिपरी सम तूला ॥
रेगनि औ औरूसो लेहू । मधुरँग सकल सेर नित देहू ॥

अथ अन्यवातरक्तलक्षण व दवा ।

दोहा–मैथुन पर बहु मन करै, विना तुरंगिनि देखि ।
मास होय दृढ़ कोखिकर, वातरक्त सु विशेखि ॥ १ ॥
श्वास सरस जो जानिये, वातरक्तको कोप ।
रुधिर ताहिको लीजिये, होय रोगको लोप ॥ २ ॥
नींबपात इक पाव घृत, सेर नीरमहँ औटि ।
लोहचन डारि खवाइये, देइ रोगको लौटि ॥ ३ ॥

असाध्य लक्षण ।

दोहा–नैन युगल मेचक बरन, श्वाश कंडु अति तुंड ।
तुरँग जाय यमसदनको, जो उपचारक झुंड ॥

नीलरंग ताहि भास वैद्यकमें गायो है।
तम ताँव वर्न बार दाढ़ि मुच्छ मुडकेर,
नाम ज्वर भस्मप्रहार यज्ञ भंग धायो है ॥

अथ त्रिपादज्वरस्वरूप। देखो चित्र नम्बर १०९

कवित्त-जब सती देह जारी मुनिवृंद यों विचारी,
शिव कोप कीन भारी तब ज्वर जायो है।
स्वर्ण तीन नैन लाल भागे तनु है विशाल,
सब अंग करें ज्वाल दक्षयज्ञ आयो है ॥
दाढ़ी भृगुकी उखारी श्वास लेत बार बार,
ऊर्द्ध कान जाहि केर श्यामरूप गायो है।
है त्रिशूल अस्त्रधारी रणमध्य नृत्य भारी,
त्रिपाद नामकारी जो वैद्य सब गायो है ॥

अथ पिंगाक्षज्वरस्वरूप। देखो चित्र नम्बर ११०

कवित्त-पंचमुख है विशाल काटत जो भर्मजाल,
कीन कोप है कराल श्वास ज्वर जायो है।
क्षीण अंग सूख माँस छोटी छोटी जाँघे जासु,
है कठोर बार तासु अग्निबाण धारी है ॥
है वदन बड़ो भारी दूजे भयानक कारी,
रसना युगलधारी वैद्यकमें गायो है।
है तृषा बहुत वाके दुइ अक्ष पीत ताके,
पिंगअक्ष नाम जाको नरसिंह धायो है ॥

अथ लंबोदरज्वरस्वरूप। देखो चित्र नम्बर १११

कवित्त-है गरल कंठधारी लोक रक्षकारी तिनें,
कोप कीन भारी तब ऐसो ज्वर जायो है।

अथ वातसन्निपातज्वर।

चौपाई—तप्त शरीर अश्वको होई। हींसै टापै चौंकै सोई ॥
श्वास प्रचण्ड चलै तिहि अंगा। सन्निदोषज्वर ताके संगा॥
वायबिडंग घुघुवारी पोस्ता। जरअडा कूठ्ठेकी निस्ता॥
अष्टविशेषी काढ़ा करै। वातसन्निज्वरको तब हरै ॥

अन्य।

चौपाई—गुल्म अंग जो वाके परै। तौ पाछे यह औषध करै ॥
सोंठि पीपरामूरि मँगावै। सहत खाड गुड़संग मिलावै ॥
वजन बराबरि घोड़े देहू। गुल्मव्याधि ताकी हरिलेहू॥

अन्य।

चौपाई—वही वातज्वरकी अनुसारै। सन्निपातज्वर औषधि कारै ॥
सोया पालक लेउ अजीरा। सकरसहद औ किसिमिसिछीरा॥
वजन बराबरि सबको लेहू। गऊदूधमें घोड़े देहू॥
नाशै रोग व्याधि वहि जाई। जो घोड़ेको करी उपाई॥

अथ वातरक्तलक्षण।

छंद—वातरक्त अश्वके सो मानिये सबै प्रमान।
श्वासदीर्घ छोड़ई सो जानिये सबै निदान॥
बारबार पौढि जाय जानुकी पसारि देइ।
अंग अंग कोरि कोरि मोरि जभु लेइ ॥

दोहा—ता वाजीको कहत हौं, बरणि चिकित्सा चारु।
पहिले दै त्रिफलादिको, सैन्धव करौ प्रचारु ॥

सोरठा—रक्तवातको दोष, ता वाजीके जानिये।
छूटै सुतनु सरोष, लाल श्वेत दृग अन्त इमि॥

लंब बड़ो पेठ जाहि बड़े वडे कान ताहि,
रक्तवर्ण नेत्र वाहि वैद्यकमें गायो है ॥
रूप ज्वालरंग भास जमुहाइ और श्वास,
ताको बड़ी है पिआस महाबली आयो है ।
लक्षण असाध्य तिहि अंग अंग पीर वाँचे,
लंबोदर नाम कहो कोविद है धायो है ॥

अथ भैरवज्वरस्वरूप। देखो चित्र नम्बर ११२

कवित्त–नाम ध्यान शिवप्रवीन दक्षै यह नाश कीन,
श्वासते प्रगट कीन ऐसो ज्वर जायो है ।
रूप जैस रंग ज्वाल और खोलि शीश बाल,
चमक भौहकी कराल फाँसी व्याल हाथ है ॥
पट बाग अस्त्र कारी दूजे तिरशूल धारी,
बलवान भारी देह दूबरी बखान्यो है ।
अंग सूख मांस नाहि बड़ा भयकार वाहि,
लक्षण असाध्य ताहि भैरा नाम गायो है ॥११३॥

अथ शांतिविधि ।

कुण्डलिया–जड़ चेतन पशु जीव जग, ज्वर सबको दुख देत
ताकी शांति विधान हित, शिव पूजन करु हेत ॥
शिव पूजन करु हेत दूर्व अक्षत गोक्षीरे ।
परछि सकल विधि नीर सहस घटमें अनुसारे ॥
ग्यारह दिन करु यतन सकल देवनके खंभू ।
तुरत देत वरदान दयाके सागर शंभू ॥

दोहा–ये सब लक्षण मैं कहौ, सो असाध्य हय जान ।
मारो अभ्रक दीजिये, वर्णत सुकवि निधान ॥
छं०व०-शरीर जाके कफ पित्त बाढ़ै।अधोमुखो वाजि चलै सु गाढ़ै।
न खात आहार चलै न नीको।चहै चमक्की अति अश्व जीको॥

अथ असाध्य वातरक्तलक्षण ।

चौ०—लक्षण एक असाध्यक जानौ।हय दृग अंत बिन्दुयुत मानौ
उदरमध्य कष्ट अति होई । सो षटमास जियै नहिं कोई ॥

दवा ।

छंद मालिनी–गुरच सहित सोंठी पीपरी हींग मानौ ।
पुनि सुठि मुडुरेठी काकराशृंगि जानौ ॥
सब सम गहि लावौ भागकै तीनि देई ।
कफ रुधिर विकारौ होत है दूरि तेई ॥
हरि०—कफ वात पित्त त्रिदोप मिलिकै होत है इक संग ही ।
तहँ रक्त कोप करै तबै हय होत है वा तंग ही ॥
अति चलत आँसू नैनते इमि घासको धक लाग ही ।
नहिं खुलत लोचन मंद भूख अनंद पाकरि पाव ही ॥
सोरठा–बोलै अति गंभीर, औ त्रिदोष प्रथमै कहे ।
जानि लेउ मतिधीर, सन्निपातको रूप यह ॥

दवा ।

छंद मालिनी–रुधिर तुरत हीनो सो करै अंगमाही ।
अशन कुछ न दीजै वाजि रोगो नशाही ॥
जिमि जिमि क्रमहीसों रोगकी हानि होई ।
इमि इमि लघु दीजै भोजनं वाहि सोई ॥

पित्त-कफ-वातज्वरवर्णन।

दोहा-पित्त और कफ वात ज्वर, हयके उठै विकार।
औषध लंघन कहत हौं, शालहोत्र मत सार॥

अथ पित्तज्वरलक्षण।

दोहा-अरुणनेत्र धौंकी बजै, ठांपे पानी हेत।
पित्त वक्र तिहि जानियो, ज्वर निदान कहि देत॥

सोरठा-लोचन रसना पीत, पीत मूत्र अरु लीदि लखि।
मुख तन तातो मीत, पित्तज्वर लक्षण निरखि॥

दवा।

चौपाई-नागेश्वर बाँसाको पाता। पाटी गुर्च समान जु खाता॥
कुटकी हर्रे अरु मधु सानी। याको दिये पित्तकी हानी॥

पुन।

चौपाई-काकजघ अरु मिश्री लेहू। एला और शतावरि देहू॥
सानि सहत सँग देउ खवाई। पित्तज्वर सो हयको जाई॥

पुन।

चौपाई-मोथा पिपरी लेउ गिलोई। लौंग मिर्च जैफल पिसवाई॥
अदरख पान सोंठि सम लेहू। सात दिवस यह औषध देहू॥
नीको होइ व्याधि सब हरै। शालहोत्र या विधि उच्चरै॥

पुन।

चौपाई-जौ सेतुआको दाना दीजे। सात दिवसमा नीको लीजै॥

अथ पित्तसन्निपातलक्षण।

सोरठा-अरुण पीत चख होय, रातो पीतो मूत पुनि।
धौंस श्वास सब होय, भ्रमित होय जब होय निशि॥

छंद द्रुपद-गंधारीफल सेर सेर इक मिश्री लीजै।
गोघृतके सँग देइ पित्तकी सन्नि हरीजै॥

दोहा-वात पित्त कफ दोष लखि, जैसे जो अधिकाय।
ऊपर शीतल मीसरी, दीजै छानि पिआय ॥ १ ॥
कैसौ वाजी दोषयुत, होय वहुत की थोर।
बिन जल कबहुँ न राखिये, कहत ग्रंथ शिरमोर ॥ २ ॥
छंद चामर-मूत्र ले मिलाय साथ कूटकी सु लाइये।
पीसिकै बचै समेत अश्वको खवाइये ॥
सन्निपात नाश होइ शालिहोत्र भाष ही।
भूख होय रोग जाय अंग अंग राख ही॥

चिकित्सा।

छं०गी०-छिरकासा कदहि आदि दे त्रिफला सु द्रनहु लीजिये।
पुनि चारु चीतहि डारिकै तिगुनो तहाँ करि दीजिये॥
सब पीसिकै करि भाग तीनहु एक एक खवाइये।
तहँ मन्द अग्नि मिटाय संततिहि सर्व दोष नशाइये ॥

अथ श्लेष्माकमलज्वरलक्षण।

दोहा-जलप्रवाह बह नासिका, युद्ध नीर दरशाय।
सो श्लेष्मा कमलज्वर, याही यतन विहाय ॥
चौ०-देवदारु अरु केरा कंदा। धनियाँ और बिलारुकंदा ॥
लै बकचंड यकत्र करावे। कूटि छानि घोड़मुख नावे ॥
नीक होइ तनु बहु सुख पाई। श्लेष्माकोप कमलज्वर जाँई॥

अथ शेषज्वरलक्षण।

दोहा-अहि कैसी रसना कढै, पूँछ हनै दृग नीर।
जल पैठे मुख कृमि परे, बहु दौरे ज्वर पीर ॥
चौपाई-बेलके गूदक हड्डा लीजै। सेंवरमूल कटैया दीजै ॥
भूमरिकद मिलै करु काढा। शेषज्वर जैहै बहु बाढ़ा ॥

---

१ घोड़ा।

पुन ।

छंद दुपद-मिश्री लीजै पावसेर आँविली पकि आधी ।
नासु देइ तिहिंविर नीर शीतलमें साधी ॥

पुन ।

छंद दुपद-लै पिचुमंद शतावरी तौलिकरि धरौ सेर भरि ।
करि दधि संग यकत्र नासु तिहि देइ नाल भरि ॥

पुन ।

चौपाई-तेजपात नागेश्वर लेहू । बाला वंशलोचनै देहू ॥
चदनरक्त लेउ तालीसा । तौतुल धनियां सोंठी ईसा ॥
दाडिमसार और छड़ जानो । जीरा श्वेत इलाची आनौ ॥
पाव डेढ़ प्रति औषध कही । चौगुन गोघृत लीजै सही ॥
घृतहि संग दीजै पल साता । शालहोत्र मत जानो ताता ॥
औषध बनै तुरेको दीजै । पित्त-सान्नि नाशै सुख लीजै ॥

अथ पित्तदोष नासिकाछिद्र (नथुना) से रक्त चले ।

चौपाई-जो घोड़ेका मूँड पिराई । रुधिर चले नथुनाते आई ॥
पित्तदोष पहिचानौ ताही। औषध कीजै या विधि वाही ॥
औरा औ खसखस मँगवावै। गऊ क्षीर सँग लेप करावै ॥
माथे लेप करै दिन साता। चेतन चन्द कहै अस बाता ॥

पुन ।

चौपाई-नासु देइ त्रिफलाको नीरा । जैहै रोग मूँड़को पीरा ॥

पुन ।

दोहा-जर सिरसई कि आनिकै, गाई दूध बँटाय ।
नासु अश्वको दीजिये, रक्तशूल मिटि जाय ॥

अथ कालज्वरलक्षण ।

दोहा—जासु तुरँगके वदनमें, फुटका परि दरशात ।
कालज्वर पहिचानिये, शालहोत्र विख्यात ॥ १ ॥
कछुक बेर जलमें सुमति, कीजै जलमें ठाढ़ ।
यहिते कालज्वर नशै, कछु दिन करि मतिदाढ़ ॥ २ ॥

अथ रक्तश्लेष्मालक्षण ।

दोहा—चरै न तृण नासा स्रवै, खाँसे मुख अरु राखि ।
मन मलीन आतप चहै, श्लेष्मरक्त तिहि भाखि ॥ १ ॥
शोणित लीजे ताहिको, दीजै हरैं सोंठि ।
होय अरोगी अश्व जो, रुजकी करै अनेठि ॥

इसके असाध्य लक्षण ।

चौ०—खजुली उदर नैन रँग लाला।बीच मास पट तिहिको काला
मिश्री सैधव सोंठि मँगावै।दश दश टंक सकल पिसवावै॥
जलके साथ नासु दै रचै । ईश दयालु होय तौ बचै ॥

अथ प्राणहर सन्निपात ।

दोहा—सूजे अगिला पाँव जिहि, रक्तवर्ण है गात ।
कंप अधिक तनु प्राण हर, सन्निपात सरसात ॥
चौ०—सोंठि पीपरी मिरचै गोली।सौंफ जवाइनि समकरि तौली॥
जलके साथ तुरैको देई । सन्निपातको नाश करेई ॥

दूसरा सन्निपात ।

दोहा—अवशि चलै चौकत तुरय, सूजे आगिल पाउँ ।
सन्निपात यह दूसरो, ताकी जतन बताउँ ॥
चौ०—अजवाइनि अजमोद मँगावै। कुटकी सौफ हीग मिलवावै॥
लहसुनगोली मिर्च भरगी । पित्तपापरा सरसों रँगी ॥

कटसरइयाजर अंक मँगावै।रहसनि सब सम भाग पिसावै॥
गोघृत संग देइ जो तुरंगै । होय अराम करै रुज भगै॥

पुन.।

चौ०-कुटकी मिर्च पीपरी जेती । अनिलतास सोंठी जो लेती ॥
दारुहरद मोथा मँगवावै । टंक पचीस सहत निलवावै ॥
सकल दवा समभाग पिसावै । पिंड बनाय अश्वमुख नावै ॥

अथ रक्त-सन्निपातलक्षण।

दोहा-आलस निद्रा डारि श्रुति, कंप श्वास मुख लार।
सन्नि रक्त बहुवेग जहँ, चरै न नेक अहार ॥

चौ०-लोहू काढि उपास करावै। औटि नीर तब तुरै पियावै ॥
अँबिलबेत सरवन अरु बेलैं। तीनौ मिलै तुरै मुख मेलै ॥

सर्वज्वरका काढ़ा।

चौ०-धनियाँ कुलफा बेला फूल । ऐलाभेंडी लै सम तूल ॥
सूखी लकरी नीब मँगाई। सबका काढ़ा देउ चढ़ाई॥
अष्ट विशेषी काढ़ा देई । सर्वज्वरको नाश करेई ॥

अथ दशमूलतैल सन्निपातज्वराधिकारमें ।

दोहा-बेलछालि त्रयपाव लै, सोना पड़री आनि ।
खंभारी गुखुरा बडा, सरवन पिथवन जानि ॥ १ ॥
बनभाँटा रनि लीजिये, यह दशमूलकि छालि।
तीनि तीनि पौवा वजन, कुचालि कराही घालि ॥ २ ॥
तीस सेर जलमें अवटि, चतुर्थांश करि लेहि।
सेर चारि तिलतेलको, यहि विधि सिद्धि करेहि ॥ ३ ॥
पाव मँजीठ जो भाग सम, लोध हरदि निफलानि ।
तज मोथा वाला सुगँध, वच तोला श्रुति जानि ॥ ४ ॥

अन्य।

दोहा-पीपरि सोंठि पिसाइकै, लेपै बातीमाहि।
वाजी केरे लिंगमें, वाती देहु धराहि॥

अन्य।

दोहा-स्याह मिरच सोंचरु सहित, जलमें लेहु मिलाइ।
हयके दोनों कानमें, दीजे ताहि डराइ॥

अन्य।

दोहा-ककरी बीज पिसाइकै, सूरी लेहु कुटाइ।
अरु ऑंविलीको पीसिकै, जलमें लेहु मिलाइ॥ १॥
डेढ़ पाव ये ओपधी, जलमें लेहु छनाइ।
नारि मध्यकरि ताहिको, हयको देहु पिआइ॥ २॥

अन्य विधि।

चौ०-जो यतनी सब दवा कराही। खुलै पेशाव अश्वकी नाही॥
तौ घोड़ेको देउ गिराई। हाथ पॉइ सब ऊपर कराई॥
ऑंगुर चारि नारिके आगे। सीना तरफ लोहमे दागे॥
पारा चारि यही विधि कीजै। तुरते अश्व नीक सो लीजे॥

अन्य विधि।

दोहा-सब विधि औषध करिचुकै, अरु पेशाव नहि होइ।
जाते होइ पेशाव अब, कहत अही विधि सोइ॥ १॥
गॉठिनली जलमध्यमों, ठाढ़ो कीजै ताहि।
एक घरी परमानमों, मूत्र तासु खुलि जाहि॥ २॥

अथ मस्तकशूललक्षण।

दोहा-ज्वरमें और कनारमें, शिरमें पीड़ा होइ।
तमकी औषध कहत हौ, शालहोत्र मत जोइ॥ १॥

सब यकत्र करि पीसि ले, देउ तेलमें डारि ।
पचि जावै तब छानिकै, भरु भाजनमें धारि ॥ ९ ॥

अन्यमत ज्वरचिकित्सा ।

दोहा–तप है चारि प्रकारका, सफरावी यक जानि ।
शालहोत्र मुनि यों कहो, कफते दूसरि मानि ॥ १ ॥
रक्त दोषते तीसरो, चौथी वादी जानि ।
औषधि अरु पहिचानि जो, सो अब कहौं बखानि ॥२॥

अथ तप सफरावी लक्षण ।

दोहा–मध्य दिवस अधरातको, होत आइ तप जौन ।
शीश झुकाये अरु रहै, सफरावी हय तौन ॥ १ ॥
जरदी मायल ऑखिमों, सुरखी ताके होइ ।
गर्म देह अरु होति है, सफरावी तप सोइ ॥ २ ॥
बौकी जाकी स्वासमें, पानीपै अति चाह ।
भोजन शीतल अति चहै, शीतल छाहँ उमाह ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा–छालि केवरेकी सहित, जर केलाकी लाइ ।
धनियॉ औरो कासनी, औराछालि मँगाइ ॥ १ ॥
चारि चारि तोला सबै, औषधि लेहु पिसाइ ।
पॉच सेर पानी विषे, तिनको देहु मिलाइ ॥ २ ॥
पानीकी मौताज यह, सो पक्की करि मान ।
शालहोत्र मत देखिकै, वरणी तौन सुजान ॥ ३ ॥
ताहि चुरावै अग्नि पर, दोइ सेर रहिजाइ ।
ठाढ़ो करिकै ताहिको, हयको देहु पिआइ ॥ ४ ॥

ज्वरके पाछे जाहिके, शिरमें पीड़ा होइ ।
रुधिर चलत है नाकते, शिरमें पीड़ा सोइ ॥ २ ॥

उसकी दवा ।

दोहा–औरा औ खसखस विषे, कोका फूल मिलाइ ।
शिरपर सो लेपन करौ, तुरत दर्द मिटिजाइ ॥

अन्य ।

दोहा–त्रिफला जलमें पीसिके, लीजे ताको छानि ।
नासु तासुको दीजिये, होइ रोगकी हानि ॥

शिरदर्दका और लक्षण ।

दोहा–मन मारे जो हय रहै, भोहन होइ अमासु ।
सूखिजात कफ ताहिको, औषध कीजे आसु ॥

अथ दवा ।

चौ०–गोलिनदार कटैया लावै । ताको हयको नासु दिवावै ॥

दवा खानेकी ।

चौ०–नासु दियेते जब कफ झरई । ताको तव यह औषध करई
सोंठि मिरच पीपरिकी लावै । तामें सोंचरलोनु मिलावै॥

दोहा–और सोहागा डारियें, वजन बराबरि जानि ।
दीजै दो पल ओपधी, होइ रोगकी हानि ॥

अन्य विधि शिरदर्दकी ।

सोरठा–शिरमें होइ अमासु, गर्दन डारे हय रहै ।
दीजै ताको नासु, सहित कटाई तिर्कुटा ॥

औषध खानेकी विधि ।

दोहा–कुटकी वायबिडंग अरु, पिपरामूरि मँगाइ ।
सोंठि कचूर सोहागा, वजन बराबरि लाइ ॥ १ ॥

तग तरे अरु जीभमें, कीतौ तालू माहि।
फस्द लीजिये ताहिके, रोग नाश हो जाहि ॥ ५ ॥

अन्य दवा।

दोहा–तोला एक मँगाइये, तौन सहतरा आनि।
ताते दूनी लीजिये, मेहदी पात सुजानि ॥ १ ॥
यवके आटा माहिमें, दोऊ पीसि मिलाइ।
पिंडी कीजे ताहिकी, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥

अन्य दवा।

दोहा–मोथा पीपरि गुरच ले, मिर्च लौग मँगवाइ।
अदरख जयफल सोंठि पुनि, लीजे पान मिलाइ ॥ १ ॥
औषध तोले चारि सब, लीजे भाग समान।
सात दिवस लग दीजिये, नित प्रति हय परमान ॥ २ ॥
गरमीके दिन होइ जो, यातौ गरम मिजाज।
प्रथम जो ओषधि कही, सो दीजे सुखसाज ॥ ३ ॥

अथ वलगमीवप लक्षण।

दोहा–जाके होय फनार अरु, देह गर्म है जाय।
काँपै जाको वदन पुनि, ऐसी गति दरशाय ॥ १ ॥
रंग आँखिको सुरख यों, मिलो सफेदी सोइ।
भारी माथो अरु रहे, नेत्र चुवत जल होई ॥ २ ॥

दवा।

दोहा–सोंठि कूठ पीपरि सहित, पिपरामूरि मँगाइ।
अजवाइन अजमोद अरु, मिरचस्यादमिलवाइ ॥ १ ॥
दुइ दुइ तोले ओषधी, सबको लेइ पिसाय।
चारि सेर जलमाहिं करि, लीजे तिन्है पकाय ॥ २ ॥

सबै ओषधी दोइ पल, , भूँजै आटामाहि ।
या विधि दीजै तीनि दिन, व्याधि दूरि ह्वै जाहि ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्र०ज्वराधिकारवर्णन नामक पञ्चम अध्याय ॥ ५ ॥

अथ शूलनिदानचिकित्सावर्णन।

दोहा–शूलहरण औषध कही, अलंकार पहिचान ।
या विधिसों जो देखिये, तैसो रोग निदान ॥

अथ मूत्रशूल । देखो घोडा नंबर ११३

दोहा–भौंरी आवै अश्वको, पुहुमी लेइ सुगंध ।
दोनों पाँजर मारई, मूत्रशूल तिहि बंध ॥

दवा ।

दोहा–सैंधव पैसा चारि भरि, महुआ गुहुलू तेहु ।
पावसेर तिहि दीजिये, रोग दूरि परहेलु ॥

अन्य ।

दोहा–पाँच टकाभरि लीजिये, गजपीपरि अभिराम।
ताही सम मधु डारिये, संकटमोचन नाम ॥
सोरठा–लीजै सेर सवाय, तेल मेलिये तिलनको ।
औषध देउ खवाइ, तुरँग नीक ततकाल ही ॥

अन्य ।

चौ०–जो घोड़ा छिन छिन तनिआवै। बद पेशाब बहुत दुख पावै
-मिर्चा अरुण नाथ जो घालै । करै पेशाब लहै सुखजालै॥
की सोराकी बत्ती मेलै । तुर्त पेशाब अश्वकी खोलै ॥
दोहा–की पीसै काली मिरच, बाती तासु बनाय ।
लिंगमॉह घालै सुघर, तुर्त पेशाब कराय ॥

जल आधो रहिजाय जब, लीजै ताहि उतारि।
बाँस पोर यक लीजिये, ताके मुखहि सुधारि ॥ ३ ॥

बाँसपोरमें ताहि भरि, आधा देइ पिआइ।
आधा दीजै साँझको, औषध विधि यह आइ ॥ ४ ॥

रोजिस जारी होइ जब, शालहोत्र मत जानि।
दीजै ताको नाश तब, सो अब कहौ बखानि ॥ ५ ॥

बीज कटैया आनिकै, और कैफरा जानि।
वजन बरोबरि जानिये, पीसै कपरा छानि ॥ ६ ॥

रेंडाकी चोंगलि विषे, भरै दवाई सोइ।
नथुनामें फूंकै सुई, तुरी नीक तब होइ ॥ ७ ॥
सोंठि कटैया लीजिये, दुइ दुइ तोले जानि।
जलमें घोरै ताहिको, पाव एक गुड़ आनि ॥ ८ ॥
गर्म कीजिये अग्निपर, दीजै ताहि पिआइ।
या विधि दीजै तीनि दिन, रोग नाश ह्वैजाइ ॥ ९ ॥
पीपरि पिपरामूरि लै, सोंचर सैधव आनि।
हींग कटैया सोंठि लै, बायविडंगी जानि ॥ १० ॥
लेहु कटैया भूँजि सो, सब काँटा जरि जाँइ।
टका तीनि भरि तौलि करि, सबै इलाजै लाइ ॥ ११ ॥
हींग सोहागा लीजिये, मासे आठहि जानि।
और ओषधी जो रही, वजन बरोबरि आनि ॥ १२ ॥
सात दिवस यह ओषधी, घोड़े दीजै रोज।
ताके अंगहि रोज जो, रहै नेक नहि खोज ॥ १३ ॥

चौ०–छिकवारीको पात मँगावै। इंद्रजवा इंद्रारुनि लावै ॥
लै कंकोल मिर्च सम तूला। औटो कूपतोय सुखमूला ॥
सात दिवस इमि हयको देवै। करै पेशाव बहुत सुख लेवै॥
दोहा–पूँछ कि डंडी उलटिकै, गरम नीर कर भेइ ।
करि है तुर्त पेशावको, वाजि परम सुख लेइ ॥

अन्य ।

चौ०–घोड़ीके पिशाव थलमाही । एक बतासा धरिये ताहीं ॥
बेरि पात सुख कूचिक धरि है।घोड़ी तुर्त पेशाव सु करि है॥

अन्य ।

चौ०–की साबुन पट भिजै लपेटै । बाती करै रोगको मेटै ॥

अन्य ।

चौ०–आधसेरके तेल मँगावै । नासु देइ तबहूं सुख पावै ॥

अन्य ।

चौ०–जुआँ दोय इक कै श्रुति डारै । करै पेशाव बहुत सुख सारै॥

अन्य ।

चौ०–जो याते नहि नीक दिखावै । तो रोईको लेप बनावै ॥
लेप करै अंडनके ऊपर । तुर्त अश्व उदरको दुखहर ॥

अन्य ।

चौ०–की दुइ लोटा पानी लावै । धार गुदाढिग ऊपर नावै ॥

अन्य ।

चौ०–सोंठी दीजे मुखते चनिकै । करै पेशाव उदरको तनिकै॥

अन्य ।

दोहा–सोंठि बैतरा कूटिकै, गोली बनै सुजान ।
तुरत अश्वको दीजिये, करै पेशाब निदान ॥ १ ॥

अन्य दवा।

सोरठा-दंती जरको आनि, और भरंगी लीजिये।
नागर माथा जानि, नींब छालि कुटकी सहित॥

दोहा-देवदारु चीतो मिरच, असगँध औ घुघुवारि।
टंकटंक सब ओषधी, भाग बरोबरि धारि॥ १॥
सेर चारि जलमाहिं करि, लीजै ताहि चुराइ।
अठवां हीसा जब रहै, लेहु ताहि सेरवाइ॥ २॥
टंक एक भरि ताहिमें, दीजै सहद मिलाइ।
नितमति करि यह ओषधी, घोड़हि देहु पिआइ॥ ३॥
औषध दीजे सात दिन, रोग नीक ह्वै जाइ।
शालहोत्र मत जानिकैं, श्रीधर दियो बताइ॥ ४॥

अथ रक्तज्वरका लक्षण।

दोहा-रंग बतानेको सुरुख, स्याही मायल होइ।
दुहूँ कानके मध्यमें, गरम बहुत है सोइ॥ १॥
शिर डारे हय रहत सो, रक्तज्वरके माहिं।
शालहोत्र मुनिके मते, लक्षण कहे सुआहिं॥ २॥

दवा।

दोहा-तारू नथुना जीभते, फस्द लीजिये ताहि।
ता पाछे औषध करै, शालहोत्रमत याहि॥

अन्य।

दोहा-धनियाँ हरें बहेर कहि, और सहतरा जानि।
दो दो तोले ओषधी, दीजे हयको आनि॥ १॥
घास हरी नहि दीजिये, दाना दीजे नाहि।
देखि बताना आंखिको, औषध दीजे ताहि॥ २॥

याहीमें जो डारिये, हरीं तोला-चारि।
तोला हींग फुलाइके, दीजे तुरै विचारि ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा-तप्त उदक सिरका मिलै, विरिआ चौभरि लेहु।
करै पेशाव रु लीदिको, औषधको फल येहु ॥

अथ मूत्रवर्त्तक शूल। देखो घोडा नम्बर ११४

चौ०-वमन रंग हरदीके करै। मुखते लार अधिक गिरि परै ॥
शीतल बदन हलावै शीशा। मूत्रशूलवर्त्तक अवनीशा ॥
सैंधव पीसि नैनमें डारै। मिरचन सहित नास अनुसारै।
टहलावै अरु कोखी मलै। औषध खान देइ तब खुलै ॥

अन्य।

चौ०-जर स्याती गूगुर सम लीजै। पीसि दूधमों घोड़े दीजै ॥
नीक होइ जो औषध करै। शालहोत्र या विधि उच्चरै ॥

अथ लीदिवदशूल। देखो घोडा नंबर ११५

चौपाई-लीदिवद घोड़ेकी जानौ। एक छटाँक तमाखु आनौ ॥
ताको लै मुख चीरि खवावै। लीदि करै अति ही सुख पावै॥

अन्य।

चौ०-दुइ पैसा भरि सोंठि मँगावै।गुड़ पुरान तिहि दून मिलावै॥
तोला एक भाँगको लीजै। मिलै खवाय फायजा कीजै ॥
जबला लीदि करै नहि घोरा। तबलौं राखु कायजा जोरा॥
यह रंगी उस्ताद बखानै। या विधि हमरी जतन विधानै॥

अन्य।

चौपाई-सेर सवाय क्षीर महिषीको।आधसेर गुड़ लीजै नीको॥
पावसेर घृत तामें कीजै। अग्नि पकाय नालिमें दीजै ॥
वाही समय लीदिको करि है। सकल विकार पेटको हरि है॥

गरमी सरदी होइ जो, लीजे ताहि विचारि ।
औषध दीजै ताहिको, मौसिमको निरधारि ॥ ३ ॥
अश्व मिजाजहि जानिकै, ता अनुसारहि जोय ।
औषध दीजै ताहिको, वाजी नीको होय ॥ ४ ॥

अथ वादीतपलक्षण ।

दोहा–दर्द होति है पेटमें, फूलि पेट जो जानि ।
तनु प्रस्वेद अति ताहिके, रोज अधिक अधिकानि ॥१॥
रातिब पावत होइ जो, मोटो होइ शरीर ।
होत ताहिको आनिकै, वादीतपकी पीर ॥ २ ॥
होइ विछार सुगिरि परै, फिरि उठि ठाढ़ो होइ ।
वार वार गति ताहि यों, लेहु तुरीकी जोइ ॥ ३ ॥
रंग बतानेको सुरुख, स्याही लीन्हें होइ ।
वात पित्तके दोषते, यह तप हयके सोइ ॥ ४ ॥
औषध कीजै जल्दअति, जियत वाजि तौ आइ ।
देर होइ औषधविषे, तुरी वबै मरिजाइ ॥ ५ ॥

उसका धूरा ।

दोहा–औरा फलको पीसिकै, तासम खैरु मिलाइ ।
धूरा कीजै देह सब, सूखि पसीना जाइ ॥ १ ॥
घोड़ेकेरे पेटमें, गाँठि परति है तीन ।
हुकना कीये सो खुलै, जानि लेहु बुधि भौन ॥ २ ॥

तरकीब हुकनाकी ।

दोहा–चाऊ बाँस मँगाइकै, पोर एक कटवाइ ।
दोनों तरफन ताहिको, कमल सदृश करवाइ ॥ १ ॥

अथ वायुशूल। देखो घोड़ा नंबर ११६। ११७.

दोहा–गिरै धरणि बहु दम करै, नेत्र मूँदि रहिजाय।
वायुशूल ताको कहै, वाको करौ उपाय॥

चौ०–जो हय लोटविगलनिज झाँकै।छिनछिनकाँखिकाँखिकै ताँकै

दोहा–यामें लक्षण जो सबै, अरु थोरे ही पाय।
वायुशूल तिहि जानिये, तुतँ करौ उपाय॥

चौ०–खुरासानि वच कूट मँगावै।दंति छालि अरु सैंधव लावै॥
हींग सोहागा समकरि लेहू। पपाणभेद लै तामें देहू॥
सकल पीसि मंदा सो कीजै।माखन सानि अश्वको दीजै॥
देतै सो नीको ह्वै जाई। वायुशूलको नाश कराई॥

अन्य।

चौ०–साँभरि औ सधव लै आवै।पलासबीज अजमोद मँगावै॥
पाँच पाँच तोले सब लीजै। लहसुन दुइ तोला करि दीजै॥
आधपाव गुड़ लेउ पुराना। दो तोला भरि हींग विधाना॥
चारि चारि तोले करवावै। चनाके आटा संग खवावै॥

दोहा–दूनौ पहर खवाइये, शाम सुवह बुधिमान।
वायुशूल सब मेटि है, मुनिके वचन प्रमान॥

अन्य।

चौ०–अरुण मिर्च दो तोले लीजै।पैसाभरि लहसुन करि दीजै॥
पीसि,कूटि घोड़े मुख नावै। वायुशूलको खोजि नशावै॥

अन्य।

चौ०–हाथीका यक लेंड जु लीजै।पीपर छोलि तासु सम कीजै॥
ताहि पीसि पतरो करि छानै।अग्नि चढ़ाय पकाय सुजानै॥
लेइ उतारि सुशीतल करै। नारीसे प्यावै दुख हरै॥

नोक होइ तामें नही, सो जानौ बुधिवान।
नाहीं तौ गड़ि जाइ है, अश्व गुदामें ज्वान॥ २॥
तेल लगावै गुदामें, डारै लीदि कढाइ।
सोंठि पीसि जल तेलमें, पोटरी लेइ वनाइ॥ ३॥
घोड़े केरी गुदामें, पोटरी देइ धराइ।
फूँकि देइ फिरि ताहिको, गाँठिपरी खुलि जाइ॥ ४॥
जब लगु होइ अराम नहि, हुकना कीन्हें जाहि।
गरम दवा अति अश्वको, दीजे कबहूँ नाहि॥ ५॥
फस्त खोलिये ताहिकी, तारु नथुना माहि।
उठिके ठाढ़ो होइ जब, औ अराम दरशाहि॥ ६॥
औषध दीजे ताहिको, लेहु क्षुधाकर जोइ।
दुइ दिन दानो देइ नाहि, तुरी नीकसो होइ॥ ७॥
देखि बताना ताहिको, औषध दीजे तात।
शालहोत्र मुनि यो कहे, तुरी नीक है जात॥ ८॥

अथ श्लेष्मज्वरलक्षण।

दोहा—तप्त होति है देह सब, आँषासे दृग लाल।
काँपत है सब देह अरु, होत अहे यह हाल॥ १॥
कफ मुखते बहुते झरे, विकल वाजि अति होइ।
सफरा बलगम योगते, यह तप हयतनु होइ॥ २॥

इसकी औषध।

दोहा—पीपरि सैंधव घीव लै, समकरि लेव मिलाइ।
नास्य दीजिये अश्वको, रोग कमी है जाइ॥

अथ दुमगरोडशूल। देखो घोड़ा नंबर ११८

चौ०—दुम गिरोरि घोड़ा लोटै महि। सायो डाभ अटकअतरी कहि
सेर एक जो दूध मँगावै। ताको आधा' घृत लै आवै॥
मिलै पिआय अश्वको दीजे। याते शूल हरै जो कीजे॥

अथ वायुभक्ष शूल। देखो घोड़ा नंबर ११९

दोहा—जो घोडेको देखिये, फूलो उदर सेवाय।
पटकि पटकि लोटै धरणि, ताको जतन बताइ॥

चौ०—हवासात्त भूलो तिहि जानै। ताकी दवा तुरतही आनै॥
तालूमें गुड देइ लगाई। ताते रोग नीक हो जाई॥
गलिहै गुड तब बदन डुलावै। तब वहि हवासान सुधि आवै॥

अन्य।

चौ०—मासे पाँच सोहागा भूँजे। पावसेर जलमें तिहि दीजे॥
बहुत खोज करिकै ताही दिन। होइ दै रोग दूरि ताही छिन॥

अन्य।

चौ०—अँगुठा सरिस नीबिकी लकरी। छोटी लै दीजै मुख दुकरी॥
पहर एक दै ठाढो राखै। मुख डुलाय हय सुखको चाखै॥

अथ अँतावरिशूल। देखो घोड़ा नंबर १२०

चौ०-लोटैअश्व अधिक बिन कारन। उठिफिरिगिरिलोटैदुखभारन
तौ तिहि अंडकोश झुकि देखै। जो सूजनि कठोर अवरेखै॥
तौ परदा ओदर ठहराई। परदा फूटि अँतरि बढि आई॥
ताको तुरत आसता कीजे। आँतरि प्रथम उदर भरिलीजै॥

अथ जीमार -शूल। देखो घोड़ा नंबर १२१

चौ०—पैरे उठे अतिहि बेकारे। अँतरी लेंडी अड़ी विचारे॥
बकरीको कल्ला मँगवावै। चारों पाँव सहित पकवावै॥

दवा खानेकी ।

सोरठा–वायविडंग मँगाइ, सोंठि मिरच अरु रंडजर ।
तेल कचूर मिलाइ, औषध दीजै भाग सम ॥

दोहा–टका टका भरि सब दवा, लेहु ताहि बुधिमान ।
एक खुराक दवा कही, सो लीजै मनमान ॥ १ ॥
चारि सेर जलमध्यधरि, औषध लेहु पकाइ ।
अष्ट विशेषी जब रहै, हयको देउ पिआइ ॥ २ ॥

अथ सर्व तपकी दवा ।

चौ० सोंठि चिरैता दोनों लीजै । तोले आठ वजन तिहि कीजै ॥
एला तोला दुइ भरि लेहू । वायविडंग तोला भरि देहू ॥
नींब बुरादा तोला चारी । तासम कुलफा बीज सुडारी ॥
पाँच सेर जलमध्य पकावै । अठवाँ हींसा जब रहि जावै ॥
दोहा–शीतल कीजे ताहि फिरि, औषध लेहु मिलाइ ॥
छानौ कपरा मध्य करि, हयको देहु पिआइ ॥

अथ अन्य तप लक्षण ।

दोहा–मुखमें आवै बासु बहु, कान गरम ह्वै जाइ ।
गुलफी ताकी देहमें, होति सहीते आइ ॥

उसकी दवा ।

चौपाई–रंडाकी जर लेहु मँगाई। तासम खसखस देहु मिलाई॥
अरु झिकबारिक बकला लीजै।जामुनिछालि तासुमें दीजै ॥
दोहा–वजन बराबरि औषधी, चारि टकाभरि जानि ।
दोइ सेर जलमाहिं करि, ताहि चुरावै आनि ॥ १ ॥
सेर एक रहि जाइ जब, हयको देहु पिआइ ।
या विधि दीजे तीनि दिन, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥ २ ॥

सुरुवा गाढ़ पकै दश सेरै । ताहि पिआइ करौ मति देरै॥
की सुजान करमे घृत लीजै।गुदा हाथ डारै तिहि दीजै॥
लेंडी टोय काढ़ि तिहि डारै।हयको दुःख सकल नेवारै॥
ता ह्रयको दीजै नाहि दानो ।है जीनार शूल पहिचानो॥
की कचूर इक पाव मँगावे । ताको कपरछान करवावे ॥
जबलौ साफ लीदि नहिं देखै।तबलौं ही खवाय सुख रेखै

अथ कुलिज -शूल । देखो घोडा नंबर १२२

चौ०–अठयों मर्ज कुलिज कहै है । पोता उतरत चढ़त लखैहै ॥
आध सेर घृत पय दुइ सेरै।मोठ पिसान पाव भरि घोरै॥
साँझ सबेरे हयको दीजै । पेट नं चलै तौ नित ही कीजै॥
जो याते नाहि होवे नीको। चारौ तरफ दागि करि ठीको॥
लखि नेजेके आगे दागै। निरखि हथेली मित सुख पागै॥

अथ वक्रशूल । देखो घोडा नंबर १२३

चो०–बैठे उठै नाभिको टोवै । थोबरी देकरि महिमें सोवै ॥
ताको वक्रशूल अनुमानै । सोंचर अर्कफूल दै भानै ॥
दोहा–स्याहमिर्च अंजीर फल, कारीजीर मँगाय ।
दीजै हयको तुरत ही, आठो शूल नशाय ॥

अथ मूर्त्तिवत शूल । देखो घोडा नंबर १२४

दोहा· आगे पग धरि घूमि महि, गिरै तुरँग दुख पाय ।
मूर्त्तिवंत सो शूल है, ताको जतन बताय ॥
चौपाई–गजपीपरि औ पीपरि लावे।दशदश टंक दुवौ पिसवावै॥
पानी एक सेरमें दीजै । मूर्त्तिशूलको नाश करीजै ॥

अथ अस्तावर्त्तशूल । देखो घोड़ा नम्बर १२५

दोहा--ताकै छिन छिन कुक्षि हय, शोक असो लखि जानु ।
नकुल कहै तिहि शूलको, अस्तावर्त्त बखानु ॥

अथ त्रिदोषज्वर (सन्निपात) लक्षण ।

दोहा-चौंके हाँसै टापई, तस देह अति होइ ।
श्वास चलै अति जोरसे, सन्निपात ज्वर सोइ ॥

उसको दवा ।

दोहा-मोथा अरु अंजीर लै, पालकि मिश्री लाइ ।
दुइ दुइ तोला ओषधी, गाँई दूध मिलाइ ॥ १ ॥
सर्व दवनते चौगुनो, लीजै दूध मिलाइ ।
शालहोत्र मुनिके मते, औषध देइ खवाइ ॥ २ ॥
ओषध दीजै पाँच दिन, रोग सकल मिटि जाइ ।
केशव बरणो चाउ करि, शालहोत्र मत पाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-लीज वायविडग अरु, पोस्ता युत झिकवार ।
जोगिया रंड कि जर सहित, जलमें ताको डार ॥ १ ॥
पांच सेर जलमाहि करि, लीजै ताहि पकाइ ।
अठओं हींसा जब रहे, हयको देहु पिआइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-गुल्म तासुकी देहमें, जो कदाचि परिजाइ ।
ताहि तुरीको दीजिये, या औषधको लाइ ॥ १ ॥
सोंठि पीपरी मूल लै, गुड़के साथ मिलाइ ।
खांड सहदसों सानिकै, हयको देहु खवाइ ॥ २ ॥
टका टका भरि ओषधी, सबै लेइ तौलाइ ।
सन्निपातके लक्षणौ, प्रथमै कहे सुनाइ ॥ ३ ॥

चौपाई—मडुली और गँगेरुवा आनै।सात सात टंकै परमानै ॥
पलाश बीज नौ टंक मँगावै। सोंठि टंक चारिक लै आवै
दोहा—हींग टंक लै तीनि सो, कपरछान करवाय।
गोघृत सेर मिलायकै, नारी मध्य पिआय ॥

अथ वातशूल। देखो घोड़ा नंबर १२६

दोहा—बैठै उठै तुरंग जो, रहै कराहत देखि।
वातशूल वाको कहै, ताहि जतन अवरेखि ॥

अन्य।

दोहा—भूमि गिरै औ दम करै, फिरि फिरि उठै मरोरि।
यह निदान दूजी तरह, लक्षण देखि बहोरि ॥
चौपाई—कूट पषाण भेद लै आवै। दतूनि वृक्षसह मूल मँगावै ॥
सैंधव आध सेर सो लीजै। काँजी ताहि बराबरि कीजै॥
सकल पीसि घोड़ेको दीजै।सात रोजमें नीको लीजै ॥

अन्य।

दोहा—त्रिकुटा हींग रु कैफरा, खाँड बराबरि लेउ।
गंधी मासे चारि सो, मदिराके सँग देउ ॥
सोरठा—करवावै परहेज, दाना पानी वातसों।
औषध है यह तेज, गात देखिकै दीजिये ॥

अन्य।

दोहा-पीपरि सोंठी रेणुका, बड़ी इलाची जानु।
वजन बराबरि दीजियो, लै मदिरामें सानु ॥

अन्य।

दोहा—जो घोड़ा काँपै हफै, होइ चताने लाल।
ताको दीजे नासु यह, रोग नशै ततकाल ॥

वात पित्त कफ पित्तते, ज्वरकी उत्पति होय ।
कफ रु वातते होइ नहि, जानि लेहु यह सोय ॥ ४ ॥

अथ ज्वरके पीछेसे हो या और तरहसे पेशाव वन्द होनेका लक्षण ।

दोहा—बंद होत पेशाव जब, तब यह गति दरशाइ ।
लोटै पाँइ पसारिकै, फेरि खड़ा हो जाइ ॥ १ ॥
क्रियो चहै पेशावको, अरु पेशाव न होइ ।
जानौ बंद पेशाव है, ये लक्षण सब कोइ ॥ २ ॥

उसकी दवा ।

दोहा—दुइ तोले भरि सोंठि लै, तीनि बतासा लाइ ।
नीबूके रसमाहि करि, गोली एक बनाइ ॥ १ ॥
प्रथम तुरीकी गुदामें, रेंडी तेल लगाइ ।
फिरि गोली भीतर करै, अश्व नीक हो जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०—मडुई केर पिसानु मँगावै । ता सम तामें सोंठि मिलावै ।
दोहा—जलमें घोरै ताहिको, लीजै ताहि पकाइ ।
वाजी पोतन माहिमें, दीजै लेप कराइ ॥ १ ॥
माजूफल औ सोंठिको, जलमें लेइ पिसाइ ।
बाती एक बनाइकै, तापर देउ लगाइ ॥ २ ॥
प्रथमे पोतनके उपर, लेप देइ करवाइ ।
फिरि पेशावके छेदमें, बाती देइ धराइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—जो पेशाव खुलै नहीं, तौ डुकना करि देइ ।
ऊपर डुकना विधि कही, सोई विधि करि लेइ ॥

चौपाई--गोघृतको लैके निर्दोषा। वेल पिसाय नासु दे पोषा॥

अन्य मत।

दोहा--दुम झहरावे अंग तनि, जो हय बारंबार।
वातशूल ताको कहे, कीजै यह उपचार॥
चौपाई- लेउ बिजौराकेरि चनूरी।हीग पलास बीज यकठौरी॥
देउ कचूर डारि तिहि माही। सकल दवा सम पीसौ ताही।
गुड़-घृत साथ तुरँगको दीजे। वातशूल तुरतै हरिलीजै॥

अथ शुद्धवातशूल। देखो घोडा नम्बर १२७.

दोहा--पूँछ चलावे अंग तनि, यही परीक्षा देखि।
शुद्धवात तिहि नाम है, कहौ नकुलमत पेखि॥
चौपाई- गुरखुल लेउ समूल मँगाई। गऊदूधसँग देउ पिआई॥
षोडश दिन जो दवा खवावे। शुद्धवात नीको हो जावै॥

अथ कठवातशूल। देखो घोडा नबर १२८

दोहा--जो हयको मुख बोलिये, घँरँ घुघरि घरेरि।
झूक खायकै गिरिपरै,चहूँओर भय हेरि॥
चौपाई--चकचूनीकी जरको लीजै। गोपयसों नित प्रति दीजै॥
वासर पाँच सात तिहि देई। रोग दोष सगरो हरिलेई॥
अथ शिखिवातशूल। देखो घोडा नबर १२९
चौ०--कारुरा जो जरद कराई। नीर न पिये जोर घटि जाई॥
शिखीवात है शूल निदाना। औषध कीजे चतुर सुजाना॥
हरदी राइ गुड़ सम लीजै। छिरकाके सँग हयको दीजै॥
साँझ सकारे दोनों बेरा। नीको होइ सु रुज तिहिकेरा॥

अथ अफरगल । देखो घोडा नम्बर १३०

दोहा—रदसों भूमिहि धरि तड़फि, फिरै रदन सुहालि ।
थोवरी महिमें धरि रहै, शूल दुखित मन घालि ॥
चौ०—गोघृतमें गंधी मिलवाई । अश्व अंग मर्दन करु भाई ॥
जबलग तुरँग नीक नहिं होई । तबलग अंग मलो पुनि सोई ॥

अथ कृमिशूल । देखो घोडा नम्बर १३१

दोहा—नैन बहै कटि उदर, छिनछिन बहु अकुलाय ।
सो कृमिशूल विचारिये, ताको जतन कराय ॥
चौ०—सोंठि कूट पिपरी मँगवावै । पलाशबीज मिरचे मिलवावै ॥
सकल पीसि समभाग मिलावै । गुड़के साथ अश्व मुख नावै ॥
आठ रोजतक घोडे दीजै । कृमीशूलको नाश करीजै ॥

अन्य मत ।

दोहा—चरण गूँथि राखै धरणि, गिरै शोक करि घोर ।
सो कृमिशूल कहावई, करै जतन यहि तौर ॥
चौ०—ईशुआकी जर हींग मँगावै । पलाशछालि भारंगी लावै ॥
अरु अजवाइनि देउ मिलाई । सर्व दवा सम भाग पिसाई ॥
गुड़के साथ अश्वको दीजै । रोग जाइ जो औषध कीजै ॥

अन्य मत ।

दोहा—नैन चुअैं विधि जाहिके, औ काँपे निजदेह ।
पेट कटै औ भुइँपरै, ताहि अलक्षण येह ॥
चौ०—डेढ पाव त्रिकुटा मँगवावे । आधपाव बच ताहि मिलावे ॥
बीज पलाश पाव अध लीजे । कूटि छानि मैदा धरि दीजै ॥
एक छटाँक प्रात नित देहू । सात रोजमें नीको लेहू ॥

गोघृत सेर मिलावे एका। तामें गुटिका करौं विवेका॥
औषध घोड़े देउ खवाई। रामप्रताप नीक ह्वै जाई॥

अथ टाटशूल।

दोहा-झूलि पेट गिरि गिरि परै, रह पेशाब जो बंद।
टाटशूल ताको कहै, यह औषध सुखकंद॥
चौ०-गदहपुरैना दंतीकी जर। पलाशछालि तिलतेल मिलैकर॥
पीसि कूटि घोडाको दीजै। टाटशूलको नाश करीजै॥

अथ पानिशूल।

दोहा-जल पिआय दौरावई, जो हयको असवार।
पानिशूल तिहि ऊपजे, ताको यह उपचार॥ १॥
पानी पिये जु धाइकै, जो दौरावै घोर।
पानिशूल तिहि ऊपजे, सो अति कीन्हें जोर॥ २॥
चौ०-पीपरि सोंठि हींगको लीजे। सैन्धवलोन भाग सम कीजै॥
तीनि रोज घोड़ा जो पावे। पानिशूलको खोज नशावे॥

अन्य।

चौ०-सोंठि मिर्च गजपीपरि ठावे। सैंधव सोंचर लोन मंगावै॥
वजन बराबरि करि पिसवावे। एक छटॉक प्रात मुख नावे॥
आठरोज लग हयको दीजे। पानिशूल सगरो हरि लीजे॥

अथ रसवत शूल।

दोहा-पगे रहै बोलै उदर, कुरकुराय हय जौन।
शूल कही रसवंत सो, करै जतन रुजदौन॥
चौ०-जांघ रुधिरकी फस्द खुलाई। तब औषध कीजै मनलाई॥
अजवायनि ... ावे। वायविडंग हर लै ...

अथ सर्वकृमिशूल । देखो घोडा नं० १३२.

दोहा–काट उदर अरु जीभको, धरि राखै रदमाहि ।
कहो सर्व कृमिशूलको, बैठो रहे सुचाहि ॥
चौ०–रहसनिकी जर खोदि मँगावै।खुरासानि बचको लै आवै॥
अजवाइनि पलाशके बीजा । छोटी कंटकारि जर लीजा ॥
सर्वदवा सम भाग पिसावै । गुडके साथ अश्वमुख नावै ॥
तोला तीनि प्रमाण खवावै । पन्द्रह दिनलौं नकुल बतावै ॥

अथ समवर्त्त–शूल । देखो घोडा नं० १३३

दोहा–लोटै बहु चारौं चरण, राखै हृदय लगाय ।
सो समवर्त्तक शूल है, जतन कियेते जाय ॥
चौ०–सैंधव लहसुन हींग मँगावै । अजमोदा सम भाग पिसावै
गुड़ गोतक्र मिलैकै दीजै । समवर्त्तक शूलै हरिलीजै ॥

अथ वैवर्त्तशूल । देखो घोडा न १३४

दोहा–तानै देह तुरंग जो, बैठे उठै कराहि ।
सो वैवर्त्तकशूल है, जतन करै इमि चाहि ॥
चौ०–कपरा लेउ पुरान मँगाई । वाकी भस्म करो मन लाई॥
हींग मिलै पानीमें घोरै । घोडा ।पिये शूलको हरै ॥

अथ विभ्रमशूल । देखो घोडा न० १३५

दोहा–भूंख जाइ अरु बहु लटै, चितवै चारो ओर ।
चलै मंद अकडो रहै, विभ्रमशूलै जोर ॥
चौ०–दाना खाय न जलते नेहा । नित प्रति दूबरि होवै देहा।
टापै भ्रमै औ गिरि गिरि परै । ताकी औषध याविधि करै

दवा ।

चौ०–प्रथम बदाम एकते देई । दशते आगे कम करि लेई ।

परवरकी जर सम सब कीजै।गोघृत रस कागजीको लीजै॥
निंबु कागजी शक्कर लीजै।सकल मिलाय तुरंगहि दीजै॥

अथ अजीर्णशूल ।

दोहा–माथ पटकि ताने वदन, करहै बहुत तुरंग ।
शूल अजीरणकी परख, दवा किये रुजभंग ॥
चौपाई–सैंधव सोंचर लोन मँगावै । हींग तक्रमें मेलि खवावै ॥
बहुतै कष्ट शूलते होई । खाये दवा अजीरण खोई ॥

अजीर्णलक्षण ।

दोहा–अंग सकल काँपे बहुत, कहै अजीरण दोष ।
नकुल मते तिहि जतन करु, रहै न उरमें रोष ॥
चौ०–हींग सुगंधवाला अरु सोंचरालेउ अतीस भाग सम सुंदर॥
चनाके आटामें तिहि दीजै । ताके पाछे औषध कीजै ॥
गोदधि जीरा मिलै खवावै।सकल अजीरण दोष नशावै॥

अथ रुखवतशूल ।

दोहा–पटकि पटकि पग धरत महि, ताकी यह पहिचान ।
होत शूल रुखवंत सो, कीजै जतन विधान ॥
चौपाई--सोंठि पीपरी बायविडंग।मिर्च स्याह लहसुन सम संगा॥
पीसि छानि गोघृत सँग खावै।रुखवंती सो शूल नशावै॥

अथ गदशूल ।

दोहा–दबै तुरंगम बहुत जो, धरणीमों गिरिजाय ।
गद शूलै तिहि जानियो, तुरतै करौ उपाय ॥
चौपाई–वच औ कूट पषाण मँगावै । अजैपाल सैंधव लै आवै ॥
दोकरा दोकराकी परमाना । चनाके आटा दीजै खाना ॥

अन्य ।

चौ०-बहुरि मसाला या विधि करै । तामें रोग अश्वको हरै ॥
हरदी राई गुड़ सम लेहू । कूटि छानि छिरका सँग लेहू॥
तप्त नीर पीनेको दीजै । सात दिवसमो नीको लीजै ॥

अन्य ।

चौ०-हरदी हींग हर्र वैशाषी । सोंठि सोहागा खील सुभाषी ॥
वजन बराबरि पीसौ भाई । हींग सोहागा थोरा लाई ॥
भूंख बढ़ै भ्रमशूलै नाशै । बल औ वीरज बहुत प्रकाशै ॥

अन्य ।

चौ०-आधसेर विषखपरा लीजै । प्रातकाल घोड़ेको दीजै ॥

अन्य ।

चौ०-मर्दन पाँयनमें कछु दीजै । विभ्रमशूल तुरत हरि लीजै ॥
साँभरि हरदी औ अजवायन। तिलको तेल मिलै मलु पायन॥

अन्य ।

चौ०-घृत अरु तेलको मर्दन कीजै । याहूसों विभ्रम हरि लीजै

अन्य ।

चौ०-हर्रा हरदी सोंठि मँगावै । गुड़ पुरान सम मिलै पिसावै॥
घोड़ाको नित प्राते दीजै । सात रोजमें नीको लीजै ॥

अथ सनदशूल । देखो घोडा न० १३६

दोहा-धरणी गिरै तुरंग जो, सोवै चरण पसारि ।
वासु लेइ निज पेटकी, सनदशूल निरधारि ॥ १ ॥
हींग अधेला एक भरि, लहसुन लै टक दोय ।
सैंधव दमरी आठ भरि, सेर मिठाई होय ॥ २ ॥
गो दधि सँग पिसायकै, औषध देउ खवाय ।
सातरोज तक दीजिये, सनदशूल मिटि जाय ॥ ३ ॥

अथ वदशूल।

दोहा--उदर श्वास जिहिके हवे, वैठे उठे वहोर।
अधिक पीर तिहि जानिये, वदे शूल है जोर॥
चौ०--वच औ कूट पषाण मँगावे। पैसा पैसा भरि लै आवे॥
ताते नीर सु देइ पिआई। सो वदशूल नीक हो जाई॥

अथ दहनशूल।

दोहा--जिहि वार्जीके पेटते, जरद झरत है नीर।
दहनशूल तिहि जानियो, महारोग गंभीर॥
चौ०--असगँध सोंठि मिरचको लावे। गऊदूधमें पीसि पिआवे॥
सात पाँच दिनलौ जो दीजे दहनशूल तुरते हरि लीजै॥

अथ आसनशूल।

दोहा--श्वास लेइ वहु अश्व जो, लोटि धरणिमहँ जाइ।
पाँजर रगरै पीरसों, आसनशूल कहाइ॥
चौ०--आजवाइनि औ सुंडी आनौ। पैसा दुइ दुइ भरि परमानौ॥
कालेश्वर दुइ तोला लावे। पावसेर हरदी पिसवावे॥
गाईको घृत लै पल एका। तामें गुटिका करौ विवेका॥
औषध घोड़े देउ खवाई। आसनशूल दूरि हो जाई॥

अथ ऊर्द्धशूल।

दोहा--वैठै भुँइ लोटै नहीं, अधिक पसीना जानि।
नैन मूंदि झुकि झुकि झुमै, ऊर्द्धशूल सो मानि॥
चौ०--मुख घोडेके पानी गिरै। सव लक्षण विचारि उर धरै॥
सोरठा--पिपरी पिपरामूर, बीज कसौंजी मिर्च लै॥
सोंठि चेतरा मूढ, गऊदूध सँग दीजिये॥

अथ विम्बशूल। देखो घोडा न० १३७

दोहा–उठि बैठे बहु शीघ्र ही, बहुत भाँति अलसाय।
विम्बशूल है नाम तिहि, तुरतै करौ उपाय ॥ १ ॥
हींग अवेला एक भरि, बच ओ बायबिडंग।
भस्म कराके दीजिये, पानी केर संग ॥ २ ॥

अथ झलब शूल। देखो घोडा न० १३८

दोहा–मुँहसे करै अवाज बहु, धरणीमें गिरि जाय।
झलबशूल है नाम तिहि, तुरतै करौ उपाय ॥
चौ०–लटजीराके बीज मँगावै। पिपरी सैंधव आनि पिसावै॥
पैसा पैसा भरि सब लीजै। महुआ तेल आधसेर दीजै॥
एक रोजकी यह मौताजा। करो तीनि दिन शूल सो भाजा

अथ गजशूल। देखो घोडा न० १३९

दोहा–रगरै नाभी तुरग जो, भुइँ लोटै भुइँ जाइ।
सोवै चरण पसारिकै, सो गजशूल कहाइ ॥
चौ०–बच औ कूट दुवौ पिसावै। ताते जलके संग पियावै॥
सात पाँच दिन दीजै भाई। सो गजशूल दूर हो जाई॥

अथ राक्सशूल। देखो घोडा न० १४०.

दोहा–उदरपीर जाके हवै, उठि गिरि पल छिन माहि।
रौसे टापै दृग अरुण, औषध करौ सु ताहि ॥
चौ०–पाको अँरिलीको रस लेहू। सेर तेलु तिलनको देहू ॥
सिरसाको रस तासम करौ। एकत करि नारीमें भरौ ॥
तीनिरोज घोडेको दीजै। हृष्ट पुष्ट तिहि नीको लीजै ॥

परवरकी जर सम सब कीजै। गोघृत रस कागजीको लीजै॥
निंबु कागजी शक्कर लीजै। सकल मिलाय तुरंगहि दीजै॥

अथ अजीर्णशूल ।

दोहा–माथ पटकि तानै वदन, करहै बहुत तुरंग ।
शूल अजीरणकी परख, दवा किये रुजभंग ॥
चौपाई–सैंधव सोंचर लोन मँगावै । हींग तक्रमों मेलि खवावै ॥
बहुतै कष्ट शूलते होई । खाये दवा अजीरण खोई ॥

अजीर्णलक्षण ।

दोहा–अंग सकल काँपै बहुत, कँहै अजीरण दोष ।
नकुल मते तिहि जतन करु, रहै न उरमें रोष ॥
चौ०–हींग सुगंधवाला अरु सोंचर। लेउ अतीस भाग सम सुंदर॥
चनाके आटामें तिहि दीजै । ताके पाछे औषध कीजै ॥
गांदधि जीरा मिलै खवावै। सकल अजीरण दोष नशावै॥

अथ रुखवतशूल ।

दोहा–पटकि पटकि पग धरत महि, ताकी यह पहिचान ।
होत शूल रुखवंत सो, कीजै जतन विधान ॥
चौपाई–सोंठि पीपरी बायबिडंगा। मिर्च स्याह लहसुन सम संगा॥
पीसि छानि गोघृत सँग खावै। रुखवंती सो शूल नशावै॥

अथ गदशूल ।

दोहा–दबै तुरंगम बहुत जो, धरणीमों गिरिजाय ।
गद शूलै तिहि जानियो, तुरतै करौ उपाय ॥
चौपाई–वच औ कूट पषाण मँगावै । अजैपाल सैंधव लै आवै ॥
दोकरा दोकराकी परमाना । चनाके आटा दीजै खाना ॥

अथ शीलप्रवर्ती शूल। देखो घोड़ा नं० १४१

दोहा—सूधी छाती जो गिरै, अश्व धरणि बहुबार।
शीलप्रवर्ती शूल है, ताको यह उपचार॥

चौ०—हीग सोंठि सै समसम लेहू। छिरका सानि दहीमों देहू॥
ताती नीर शूल लखि दीजे। यह विचार नीको सुनि लीजे॥
लंघन करो हानि नहि होई। दाना ताहि न दीजै कोई॥

अथ श्रवतशूल। देखो घोड़ा नम्बर १४२

दोहा—छीके थाँसे बहुत जो, बदन मलीनो होय।
शूलश्रवत सु जानिये, महाकठिन रुज सोय॥

चौ०—स्याह मिरच मधुरेठी लावै। अरु पलाशके बीज मँगावै॥
अजवाइनि लै दूनौ भाई। सकलदवा सम पीसी जाई॥
पावसेर गोदूध मँगावै। हींग लेउ मसतूल बतावै॥
साँझ सकारे दीजै कोइ। जाय श्रवंतकशूल सु खोइ॥

अथ क्षुधावत शूल। देखो घोड़ा नम्बर १४३

दोहा—बैठे उठि लोटै बहुरि, मुख बोलै अकुलाय।
घास न खावे अश्व सो, शूल क्षुधावत आय॥

चौ०—छालीमकरा और पलासा। बीजकरज हींग बहुवासा॥
सैंधव समकरि देउ खवाई। उदरशूलको नाश कराई॥

अथ रांडशूल। देखो घोड़ा नम्बर १४४

दोहा—पेट फूलि काँपै अधिक, अरु गिरि परै सु धाय।
रांडशूल है नाम तिहि, दैवयोगते जाय॥ १॥
चारिउ पाँयन जाँघमें, पछना देइ दिवाय।
यह उपाय प्रथमै करै, पाछे औषध खाय॥ २॥

अथ बदशूल।

दोहा-उदर श्वास जिहिके हवै, बैठे उठै बहोर।
अधिक पीर तिहि जानिये, बदे शूल है जोर॥
चौ०–बच औ कूट पषाण मॅगावै। पैसा पैसा भरि लै आवै॥
ताते नीर सु देइ पिआई। सो बदशूल नीक हो जाई॥

अथ दहनशूल।

दोहा–जिहि बाजीके पेटते, जरद झरत है नीर।
दहनशूल तिहि जानियो, महारोग गंभीर॥
चौ०–असगँध सोंठि मिरचको लावै।गऊदूधमें पीसि पिआवै॥
सात पाँच दिनलौ जो दीजै दहनशूल तुरतै हरि लीजै॥

अथ आसनशूल।

दोहा–श्वास लेइ बहु अश्व जो, लोटि धरणिमहँ जाइ।
पंजर रगरै पीरसों, आसनशूल कहाइ॥
चौ०–आजवाइनि औ मुंडी आनौ।पैसा दुइ दुइ भरि परमानौ॥
कालेश्वर दुइ तोला लावै। पावसेर हरदी पिसवावै॥
गाईको घृत लै पल एका। तामें गुटिका करौ विवेका॥
ओषध घोड़े देउ खवाई। आसनशूल दूरि हो जाई॥

अथ ऊर्ध्वशूल।

दोहा–नैठै भुँइ लोटै नही, अधिक पसीना जानि।
नैन मूँदि झुकि झुकि झुमै, ऊर्ध्वशूल सो मानि॥
चौ०–मुख घोड़ेके पानी गिरै। सब लक्षण विचारि उर धरै॥
सोरठा–पिपरी पिपरामूर, बीज कसौंजी मिर्च लै॥
सोंठि नेतरा मूढ, गऊदूध सँग दीजिये॥

चौ०-पाँच टंक हरैं लै आवै । वायविडंग बराबरि लावै ॥
पैसाभरि ले बीज पवाँरा । रोवनसीर जवायनि डारा ॥
निंबु कागजीको रसु लावै । सकल पीसि औषध सनवावैं
चौदह दिन घोड़को दीजे । खंडशूल तुरतै हरि लीजै ॥

अथ सरात शूल । देखो घोड़ा नम्बर १४५

दोहा-निशि वासर महि परि रहै, बोलै उदर बेहोस ।
श्वास अधिक मुखतें चलै, तिहि यमलोक निवास ॥

चौ०-केलामूल टंक दश लेऊ । पाँच टका केतकिजर देऊ ॥
सेंबरछाली अँवरा आनी । बीस टका दोऊ परमानी ॥
छा पैसाभरि भीतिको खारा । गोपय लीजै तिहि सम भारा
थोरी आँच आगिकी देवै । यहिविधि औटि पाक करि लेवै ॥
मिश्री मेलि जो हयको देहू । शूलसखंत तुरत हरि लेहू ॥

अथ वातोदरशूल । देखो घोड़ा नंबर १४६.

दोहा-बैठि बैठि पुनि पुनि उठै, रहै चरणको तानि ।
छिनमें करै कराहको, सो वातोदर जानि ॥

चौ०-खुरासनि अजवायनि लावै । तामें वचको आनि मिलावै ॥
कुटकी कुरथी लीजे सोवा । सकल पीसि सम करै समोवा
टंक टंक दुइ प्रात खवावै । सात रोजमें नीको पावै ॥

अथ प्रवर्ती शूल । देखो घोड़ा नंबर १४७.

दोहा-हीसै टापे अति झुकै, बोलै बारंबार ।
शूल प्रवर्ती जानिये, ताको यह उपचार ॥

चौ०-वायविडंग हींग सम लेहू । नगदाराख जारि सम देहू ॥
वचे औ सोंठि सोहागा लीजै । रेहूपानीमें सब दीजै ॥
नीको होय व्याधि बहि जाई । जो या विधिसों करै उपाई

चौ०–कुटकी घुड़बच बायबिडंगा।हरदी भाँग करौ यक संगा॥
दुइ दुइ तोलाकी परमाना । आगे दवाके और विधाना ॥
हींग सोहागा खील करावे । छा छा मासे सोंचर लावै ॥
कारीजीर मिरच ले गोली।चारि चारि तोला तिहि मेली॥
कपरछान करि ताहि धरावै।दो तोला नित प्रात खवावै ॥
भूख बढ़ै अरु ताजा होई । उदरकुरकुरीको हरि लेई ॥

अन्य ।

दोहा–त्रिफला राई काँचरी, सोंठि जवायनि लेउ ।
सहिंजन छालि कुटाय सम, कछु जल बहु दधि भेउ १॥
मटुकामें भरि लीदि जहँ, गाड़ि देउ दिन सात ।
काढ़ि पावभरि देइ नित,सर्व कुरकुरी जात ॥ २ ॥
जो सरदीकी ऋतु लखे, तामें दही न डारि ।
छिरका मिलै जु गाड़िये, दिये उदर सुखकारि ॥ ३ ॥

अथ कुरकुरीकी दवा ।

हरिगी०छंद–घुँघुवारि असगँध सेंवरे पुनि मास पिंडहि लेहु ।
अंजीठ इंद्रायनि फलहि सो लाय तामह देहु ॥
भाग सम कंकोल आनहु अग्नि लेहु पचाइ ।
दुइ टकाभरि देहु बाजी उदरशूल नशाइ ॥
दोहा–मिटै कुरकुरी बाजिकी, लघुशंका खुलि जाइ ।
नकुलमतै यह भाषिये, काढ़ा दियो बताइ ॥

अन्य ।

स०–सोंचर टै अजवाइनि चारु भली विधि हर्र विशालै मिलावै
औ मधु वाहि समान करौ फिरि कूपको लै जलमाहि पचावै ॥

अन्य।

दोहा–हींग अधेला एक भरि, लहसुन लै ढक दोय।
सैंधव दमरी आठ भरि, सेर मिठाई होय ॥ १ ॥
दधि गाईके साथ ही, पीसो औषध सोय।
सातरोज लगु दीजिये, तुरँग अरामै होय ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा–हींग अधेला एक भरि, वच औ वायविडंग।
भस्म करायके दीजिये, सीरे जलके संग ॥

अन्य।

चौ०–तिलको तेल पाव यक आनी। ताहि बराबरि गोघृत जानी ॥
यामें बाँधिक देउ खवाई। तुरतै शूल नीक होजाई ॥

अन्य।

चौ०–सोंठि रुहालिम एक पिसाई। गोघृतसंगै गूट बँधाई ॥
पहर सकारे देउ खवाई। खाते रोग नीक है जाई ॥

अथ मृगशूल।

दोहा–चहुँ ओर चितवत रहै, दाना घास न खाइ।
मृगेशूल सो जानियो, औरो बल घटि जाइ ॥ १ ॥
खील सोहागा लीजिये, पैसाभरि मँगवाइ।
ता सम लीजै हींगको, सोऊ खील कराइ ॥ २ ॥
सोंठि हर्र हरदी सहित, टकाटकाभरि लाइ।
सबको लेउ मिलाइ करि, हयको देहु खवाइ ॥ ३ ॥

अथ मुद्रितशूल।

दोहा–घूमति वाजी होइ जो, दमति बहुत पुनि सोइ।
सूँघै भूको बार बहु, मुद्रित कहिये सोइ ॥ १ ॥

अष्टम अंश रहै जबही तबहीं सो तो जाय तुरीको खवावै॥
रोग नशै अरु भूख बढ़ै पुनि ता हय पौन समान चलावै ॥

अथ कुरकुरीका जुलाव।

दोहा–मोथी कीतौ चनाके, बिरवा हरिअर होइ ।
ते सम्भून हय खाइ जो, गूंजा बैठति सोइ ॥ १ ॥
सूखा दाना नाजुकी, वेभौताज जु खाय ।
अश्व विकल हो जात है, पेट फूलि तिहि जाय ॥ २ ॥

चौ०–ताकी दवा जुलाब बतावा। आधसेर घृत लै धरवावा॥
कीतौ रेंडीतेल मँगावै । आध सेर परमान करावै ॥
डेढ़ सेर दूधै लै धरै । आध सेर गुड़ तामें करै ॥
यह सब अग्नि चढ़ाइ पकावै।सीर गरम करि अश्व पिआवै
बचा होइ अश्व जो कोई। कीतौ अंगक छोटा होई ॥
गात देखिकै दवा कराई। दस्त ताहि बहु आवै भाई ॥
पटकै उदर अश्व खुलि जाई। रामकृपाते नीक दिखाई॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत शूलवर्णन नामक षष्ठ अध्याय ॥ ६ ॥

अथ पेटमे काडा, हिरुआ, जोंक वगैरह पडनेकी दवा।

हरि०–फलसा सुखेकी मूल लै पुनि रेणु आनि मिलाइये ।
सहत लै सो कूपजलसों अग्निमध्य पचाइये ॥
क्राथ लै करि अंश अष्टम तुरत बाजिहि प्याइये ।
जोंक आदिक कीट नाशै नकुल मत समुझाइये ॥

अन्य।

चौपाई–बीज विजौरा चंदन लावै। सरसों श्वेत उशीर मँगावै॥
पुनर्नवा ब्रह्मदंडी लावै । क्राथ पकाइ सोंठि मिलवावै ॥

सोंठि लीजिये दोइ पल, महुआतेल मिलाइ ।
शूलव्याधि नाशे तुरत, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥

अथ साकवर्त्त शूल ।

दोहा--घरघराय बोलै तुरँग, गिरि गिरि परै न होस ।
साकवर्त्त सो शूल है, करौ उपाय नरेस ॥
चौ०- छेवटाके जर सोंठि मिलाई । समकरि कपरछान पिसवाई
दूध मिलाय अश्वको दीजे । साकवर्त्त शूलै हरिलीजै ॥

अथ सुखवर्त्त शूल ।

दोहा -बहु दाना खावै तुरँग, रहै पिआसो जौन ।
पीत लार मुरा स्वेद तनु, सुखवर्त्तक है तौन ॥
चौ०--सेँहुड़ाकी जर सोंठि मँगावै । पिपरी तीनौसम पिसवावै
गोपय संग मिलायक दीजै । सुखवर्तक शूलै हरिलीजै ॥

अथ गलतरहीशूल ।

दोहा--उदर जु ऐंठोई करै, तानै देह तुरंग ।
गलतरही सो शूल गनि, यह औषध करि ढंग ॥
चौ० -जीन पुरानेको लैआवै । ताको फूँकि भस्म करवावै ॥
पलाशबीज अरु हींग मँगावै । दानाको पानी धरवावै ॥
दवा पीसि तिहि पानी घोरै । गेरह दिन खावै दुख हरै॥

अथ सनदरतशूल ।

दोहा--श्वास लेय बहु अश्व जो, लोटि धरणिमों जाय ।
पाँजर मारै पीरमों, तिहि सनदरत कहाय ॥
चौ० -अजवायनि औ शुंडी आनै । पैसापैसाभरि परमानै ॥
पैसा पित्तपापरा डारी । कसेरवा इक पाव निहारी ॥

दोहा-सीरो करि कटु तेल जो, तोला चारि मिलाइ।
वाजि पिआवो जो सुघर, सर्व किरिमि बहिजाइ॥

अन्य।

दोहा-सेंहुड़ दूध-कपूर लै, धात्रीपत्रहि आनि।
कूपनीरसों पिंड करि, किरिमि उदरकी हानि॥

अन्य।

दोहा-जो घोड़के पेटमों, बहुत किरिमि है जाइ।
गिरै पेटारू पेटते, दाना घास न खाइ॥

चौपाई-राई हरदी मिलै कैफरा। कूटि छानि बरतनमें धरा॥
इकइस दिन दुइ पहर खवावै। आध पाव परमान बतावै
देइ जुलाव अश्वको कोई। तासों किरिमि नाश सब होई॥

जुलाव।

दोहा--राई खारी तुल्य करि, आध सेर दधिमाहिं।
यह जुलाब हयको करे, उदरव्याधि नशि जाहिं॥

दवा।

दोहा-मधुरेठी सम ताहिके, वायविडंग मँगाइ।
काढ़ा औटिक दीजिये, कीरा उदर नशाइ॥

जुलाब।

दोहा-सज्जी लोध पिसाइकै, भाग बराबरि लेइ।
गऊ तक्र सम दीजिये, दस्त अधिक करि देइ॥

अन्य।

दोहा-राई और बिधार लै, खारी दही मिलाइ।
आध सेर मौताज करि, भाग समान कराइ॥

गोघृत सेर मिलावै एका। तामें गुटिका करौ विवेका॥
औषध घोड़े देउ सवाई। रामप्रताप नीक है जाई॥

अथ टाटशूल।

दोहा-शूलि पेट गिरि गिरि परै, रह पेशाब जो बंद।
टाटशूल ताको कहे, यह औषध सुखकंद॥
चौ०-गदहपुरैना दंतीकी जर। पलाशछालि तिलतेल मिलैकर॥
पीसि कूटि घोडाको दीजै। टाटशूलको नाश करीजै॥

अथ पानिशूल।

दोहा-जल पिआय दौरावई, जो हयको असवार।
पानिशूल तिहि ऊपजे, ताको यह उपचार॥ १॥
पानी पिये जु धाइकै, जो दौरावै घोर।
पानिशूल तिहि ऊपजै, सो अति कीन्हें जोर॥ २॥
चौ०-पीपरि सोंठि हींगको लीजै। सैंधवलोन भाग सम कीजै॥
तीनि रोज घोड़ा जो पावै। पानिशूलको खोज नशावै॥

अन्य।

चौ०-सोंठि मिर्च गजपीपरि लावै। सेंधव सोचर लोन मँगावै॥
वजन बराबरि करि पिसवावै।एक छटाँक प्रात सुरा नावै॥
आठरोज लग हयको दीजै।पानिशूल सगरो हरि लीजै॥

अथ रसवत शूल।

दोहा-पगे रहै बोले उदर, कुरकुराय हय जौन।
शूल वही रसवंत सो, करै जतन रुजदौन॥
चौ०-आध रुधिरकी फस्द खुलाई। तब औषध कीजै मनलाई॥
अजवायनि अरु हींग मँगावै। बायबिडंग हरं लै आवै॥

सोरठा-हयको देउ खवाइ, एकरोज फिरि बीचु दै ।
दीजै फेरि देवाइ, तीनिवार यहि विधि करै ॥ १ ॥
दाना दीजे नाय, नरम घास तिहि दीजिये ।
जब जुलाब ह्वै जाय, तब यह औषध कीजिये ॥ २ ॥
दोहा-ईसबगोलै पाव अध, ता सम दही मिलाइ ।
या विधि दीजै तीनि दिन, उदर व्याधि मिटि जाइ ॥

अन्य जुलाव पित्तरोगपर ।

दोहा-अमिलतास अरु हर्र कहि, लीजै सोंठि मिलाइ ।
बहुरि मिठाई पोटरी, भाग समान कराइ ॥ १ ॥
गर्म नीरसों राति भरि, दीजै ताहि भिजाइ ।
प्रात भये सो मीजिकै, कपरासो छनवाइ ॥ २ ॥
नैनू लीजै एक पल, सोऊ लेउ मिलाइ ।
सेर एक मौताज करि, हयको देहु पिआइ ॥ ३ ॥
एक रोजको बीचु दै, फेरि दीजिये आनि ।
या विधि दीजै तीनि दिन, होइ रोगकी हानि ॥ ४ ॥
गरमी तासु मिजाजमों, अती होइ जो आनि ।
खुश्की ताते होति है, या औषधको जानि ॥ ५ ॥

दवा ।

दोहा-अमिलतास लाभेर अरु, पाकी आँविली आनि ।
बड़ी हर्र अरु लीजिये, सेर एक सब जानि ॥
भिजवै पानी गरममों, ताको मीजि छनाय ।
बिहिदानाको लेहु पुनि, ईसबगोल मँगाय ॥

सोंठि लीजिये दोइ पल, महुआतेल मिलाइ ।
शूलव्याधि नाशै तुरत, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥

अथ साकवर्त्त शूल ।

दोहा--घरघराय बोलै तुरँग, गिरि गिरि परै न होस ।
साकवर्त्त सो शूल है, करौ उपाय नरेस ॥
चौ०- छेवटाके जर सोंठि मिलाई । समकरि कपरछान पिसवाई
दूध मिलाय अश्वको दीजै । साकवर्त्त शूलै हरिलीजै ॥

अथ सुखवर्त्त शूल ।

दोहा -बहु दाना खावै तुरँग, रहै पिआसो जौन ।
पीत लार मुख स्वेद तनु, सुखवर्त्तक है तौन ॥
चौ०--सेँहुड़ाकी जर सोंठि मँगावै । पिपरी तीनौसम पिसवावै
गोपय संग मिलायक दीजै । सुखवर्त्तक शूलै हरिलीजै ॥

अथ गलतरहीशूल ।

दोहा--उदर जु ऐंठोई करै, तानै देह तुरंग ।
गलतरही सो शूल गनि, यह औषध करि ढंग ॥
चौ० -जीन पुरानेको लैआवै । ताको फूँकि भस्म करवावै ॥
पलाशबीज अरु हीग मँगावै । दानाको पानी धरवावै ॥
दवा पीसि तिहि पानी घोरै । गेरह दिन खावै दुख हरै॥

अथ सनदरतशूल ।

दोहा--श्वास लेय बहु अश्व जो, लोटि धरणिमों जाय ।
पाँजर मारै पीरसों, तिहि सनदरत कहाय ॥
चौ० -अजवायनि औ सुंठी आनै । पैसापैसाभरि परमानै ॥
पैसा पित्तपापरा डारी । कसेरुवा इक पाव निहारी ॥

दूनौ लीजै आठ पल, तासु लवाव कढ़ाइ ।
औषधमाहि मिलाइकै, हयको देहु पिआइ ॥ ३ ॥
एक एक दिन वीचु दै, तीनि रोज दै याहि ।
फिरि ठंढाई दीजिये, चारि रोज लगु ताहि ॥ ४ ॥

ठढाई ।

दोहा—रेसा खतमी लाइकै, बिहिदाना मँगवाय ।
तासु लवाव कढ़ाइकै, दुइ दुइ पल धरवाय ॥ १ ॥
खीरा ककरी बीज पुनि, चारि टका भरि लाइ ।
तिनको पीसि छनायकै, लेहु लवाब मिलाइ ॥ २ ॥
सोरठा—दीजै ताहि पिआइ, पित्त दोष मिटि जात है ।
शालहोत्र मत आइ, सो लखिकै हम यहि लिख्यौ ॥

अथ जुलाव कफदोषका ।

दोहा—सौफ कूट पुनि हीग लै, टका टका भरि जानि ।
अमिलतास पुनि बीस पल, खारी दुइ पलआनि ॥ १ ॥
गरम नीरसों प्रथम ही, अमिलतासु भिजवाइ ।
सवै औषधी पीसिकै, तामहँ देउ मिलाइ ॥ २ ॥
हयको देउ पिआइ सो, तीनि रोजलौ ताहि ।
एक एक दिन वीछु दै, दाना दीजै नाहि ॥ ३ ॥
खीरा ककरी बीज पुनि, शक्कर मिलै खवाइ ।
यह औषध दिन तीनि लै, हयको देउ दिवाइ ॥ ४ ॥

अथ पेटमें आव पडनेका जुलाव ।

सोरठा—सिमिटि सिमिटि रहि जाइ, उठै मरोरा पेटमें ।
आँवदोष सो आइ, दाना घासहि खाइ कम ॥ १ ॥

दोहा-लै जमालगोटा दशहि, मीठे तेल जराइ।
भौटा भरता मध्य सो, हयको देउ खवाइ॥
सोरठा-खूब पेट झरि जाय; सेर एक दधि दीजिये।
प्रात भये फिरि नाय, तिसरे दिन फिरि देउ हय॥
दोहा-या विधि दीजे तीनि दिन, पेट साफ ह्वै जाइ।
जौलों रहै जुलाब दिन, दाना नही देवाइ॥

जुलाबमें दाना देनेकी विधि।

सोरठा-मूँग महेला ताय, प्रथमहि थोरो दीजिये।
फेरि बढ़ावति जाय, पावति जेतो होइ हय॥

अथ अजमाया हुआ उत्तम जुलाव।

चौ॰-लेउ सोहागा सज्जी भाई। तामें डारु निसोदर आई॥
तोले तोले सम पिसवावे। आध सेर पक्के जल लावै॥
खुरासानि अजवायन लीजे। आध पाव पक्के तिहि कीजै
चारौं दवा नीरमें डारै। पावक मध्य पकाय सुधारै॥
तीनों दवा जवायनि स्वकि है। तब छाहीमें सूखे धरि है
जौंके आटा मध्य मिलावै। पैसा भरि नित प्रात खवावै
आठरोज घोडाको दीजे। उदर सफाई बहुविधि कीजै॥

दस्त बन्द होनेकी दवा।

चौ॰-सेंवरकी जो रुई मँगावै। गोघृत साथ तुरै खिलवावै॥
देते दस्त बन्द हो जाई। सकल रोगको नाश कराई॥

अन्य।

चौ॰-एक छटोंक भाँग मँगवावै। गोदधि आधपाव लै आवै॥
दोनों मिलै तुरँगको दीजे। दस्तबंद ताही छिन लीजे॥

अन्य।

चौ०-गेहूँकेर पिसान मँगावै। ता सम तामें लोनु मिलावै॥
फिरि ताकी यक रोटी कीजै। जारि तासुको कैला कीजै॥
दोहा-आधो कैला तैल तिल, तीनि रोज लगवाइ।
आधो बाकी जो रहै, जलमें लेहु मिलाइ॥ १॥
ताहि लगावै तीनि दिन, नदीकेर जल लाइ।
ताते धोवै वाजितनु, तुरतै खाजु नशाइ॥ २॥

अन्य।

दोहा-बरगद पाता जारिकै, ताकी भस्म कराइ।
लाल मिठाई दहीयुत, खारी लोनु मँगाइ॥ १॥
सेर सेर सब औषध, जलसों लेइ मिलाइ।
ताहि लगावै तीनि दिन, खाजु दूरि ह्वै जाइ॥ २॥

अन्य।

दोहा-कुटकी सोंठि चिरायता, सैंधव सेंदुर आनि।
मोथा तिल हरदी सहित, और सोहागा जानि॥ १॥
ताहि लगावै तीनि दिन, तिलके तैल मिलाइ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, तहूँ खाजु मिटि जाइ॥ २॥

अन्य दवा खानेकी।

दोहा- सर्व औषधी करिचुकै, खाजु नहीं जो जाइ।
ताकी औषध कहत हौं, दीजै ताहि खवाइ॥
चौ०-सभुलखार धेला भरि लावै। गूगुरु ताके सम मिलवावै॥
तोला चारि भिलावालीजै। पाँच टका भरि अदरस कीजै
दोहा-सबै पिसावै एकमें, खुब मिली ह्वै जाइ।
आठ आठ मासे सबै, गोली लेहु बँधाइ॥ १॥

अन्य ।

चौ०—चावल लेउ पुरान मँगाई । भात पकाइ सिरो करवाई ॥
गोदधि ईसबगोल मँगावै । सकल फेंटि यकसम करवावै
घोड़ेको जो देइ खवाई । तुरतै दस्त बंद ह्वै जाई ॥

अथ उदरव्याधि-नाशन ।

दोहा—कालेसुर औ सोंठि लै, असगँध मिलै पिसाय ।
काढा दीजै भाग सम, उदरव्याधि बहिजाय ॥

अन्य ।

दोहा—राई खारी सम दही, सेर आध जो देहु ।
व्याधि उदरकी गिरि परै, सकल रोग हरि लेहु ॥

अन्य ।

दोहा—भाँटा भरत कराइकै, दधिसों देहु खवाइ ।
तीनि दिनमें अश्वको, सकल रोग बहि जाइ ॥

इति श्रीशालहोत्र० जुलाबवर्णन नामक सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

अथ खारिस्ति रजुलीके लक्षण व दवा ।

दोहा—देह होति रजुवाति जो, अति खारिस्ति जो होइ ।
औषध कीजै ताहि यह, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
पहिले दोनो पगनकी, लीजै रगै खुलाइ ।
ता पाछे औषध करै, रोग ताहि बहि जाइ ॥ २ ॥

औषध ।

दोहा—बकुची तिल हरदी सहित, बीज पवाँरहि आनि ।
गोया और भेलाव लै, तोले तीस बखानि ॥ १ ॥

बँगलापान पचासमें, गोली एक खवाइ।
दीजै दूनो वेरमें, याही विधिसों लाइ॥ २॥

अथ अग्निवायुलक्षण और दवा।

दोहा-चैंट परै जो देहमें, खाल उधिलि तिहि जाहि।
अरु लोहू तिनते चलै, पुनि खाँसी अधिकाहि॥

अन्य।

दोहा-उधिलै खाज जु गातकी, पुट्ठमी रगरै घोर।
गूँथिनते लोहू चलै, अग्निवायु है जोर॥

अन्य।

दोहा-लाखवार जो अश्वके, उधिलि गये दरशाय।
अग्नि वायु याहू कहो, रगोमत सो आय॥ १॥
आध सेर तंडुल पकै, नीवपत्रमें घालि।
आध सेर दधिमें सुई, काढ़ि दीजिये डालि॥ २॥
सीरो करि करसों मसलि, देवै दिन चालीस।
ता ऊपर जल देइ नहि, अग्निवायु करि खीस॥ ३॥

अन्य।

दोहा-गोमाखन यक पाव लै, नितप्रति दिन दे सात।
ता पाछे औषध करै, रोग दूरि होजात॥

अन्य।

चौपाई-अहि कारेकी केंचुलि लावामासे चारि खरिल करवावै॥
गेहूँकी रोटीमें सानै। घीके संग खाय मतिवानै॥
मात सात दिन देउ खवाई। अग्निवायु नीकी ह्वै जाई॥

पीसै सब बारीक करि, दीजै दही मिलाइ।
एक दिवस भरि घाममें, दीजै ताहि धराइ ॥ २ ॥
घाममें हय बाँधिकै, दीजै ताहि मलाइ।
फिरि धोवै जल शीतसों, तीनिरोजनें जाइ ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा-तीनि पाव साबुन सहित, ता सम मिर्चालाल।
सूखि तमाखू ताहि सम, सबको पीसै हाल ॥ १ ॥
लीलाथोथा लीजिये, आध पाउ यह जानि।
सोरा कलमी पाउ यक, सबको पीसै आनि ॥ २ ॥
दालि उरदकी लीजिये, तीनिसेर यह जान।
ताहि चौगुनो डारि जल, खूब पकावै आन ॥ ३ ॥
सबै औषधी डारिकै, लोहे बर्त्तनमाहि।
घोटै लकरी नीबकी, दालिसहित मिलि जाहि ॥ ४ ॥
ताहि लगावै धूपमें, तीन दिवसलौ जानि।
शीतोदकसो धोइये, जाय रोग यह मानि ॥ ५ ॥

अन्य।

दोहा-अरुई दलि खारी मिरच, पानमहेला नाय।
ताहि खवावै जून दुइ, कइड रोग नशि जाय ॥

अन्य दवा लगानेकी।

दोहा-पोस्ता और कसौंवजी, भूँजि अधजरी लेउ।
सेर एक दूनौ पिसै, कटुक तेल मधि देउ ॥ १ ॥
फेंटि लगावै तुरँग तन, मलै घरी दुइ पूरि।
घाम बाँधि दिन सातलौ, होइ खारिस्ती दूरि ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०–अरुण मिरच पैसा भरि लेहू। मधु मथि लै माटीमें देहू ॥
माटी आध पाव मुलतानी। तेल डारि करुएमें सानी ॥
घामें बाँधि अश्वतनु मलै। भेड़महीते धोवै भलै ॥
पोंछि सुखाय अंगको भाई। माष पकाय देइ मलवाई ॥

अन्य ।

चौपाई–कोकाफूल तालके लेहू। गोदधि बरतनमें ले भरहू ॥
सातरोज घूरेमों धरै। अठयें दिन सो बाहर करै ॥
पाव सेर घोड़ेको दीजै। ता पाछे यह औषध कीजै ॥
महिषाको यक सींग जरावै। दूध भेड़को लै मथवावै ॥
तीनि टका भरि मनशिल लेहू। करि मैदा ताहीमें देहू ॥
तिलके तेलमें मथै बनाई। घरी एक घामें धरवाई ॥
घामें बाँधि दवा मलवावै। माटी पोति अश्व अन्हवावै ॥

अन्य ।

चौपाई–काई तालकेरि मँगवावै। सात रोज घोडा मुख नावै ॥

अन्य ।

सोरठा–काले खरको आनि, लौंग तूतिया लीजिये।
नागकेसरिहि जानि, चारि चारि रत्ती सँबै ॥

दोहा–हरदी पैसा भरि बहुरि, हयको देहु खवाइ।
अरु यह औषध कीजिये, अग्निवायु मिटि जाइ॥

अन्य ।

दोहा–नैनू लेकै पाँच पल, नितप्रति देहु खवाइ।
अरु यह औषध कीजिये, अग्निवायु मिटि जाइ ॥ १ ॥

अन्य खानेकी दवा ।

चौ०—गोघृत मैदा लेउ मँगाई । तोला तीनि तीनि तौलाई ॥
दालचीनि पैसा भरि लीजै । चोख बराबरि तामें दीजै ॥
गोली तोला करौ विधाना । दाना साथ दीजिये खाना ॥
सातरोज घोड़ेको दीजै । रोग जाय जो औषध कीजै ॥

दवा लगानेकी ।

दोहा—हरदी गंधक नैनिया, मैनसिला त्रै आनि ।
सरसर दमरी वजन करि, सेर तेल कटु जानि ॥ १ ॥
बूँकि दवाई तेलमें, पकै छानि तेहि लेइ ।
मलै पहर यक अश्वतनु, पांच दिवस करि देइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—पोहकरमूलै सहद लै, अडुअ बकाइनि पात ।
गूगुर स्याह जो वजन करि, सरसर दमरी ख्यात ॥१॥
सवासेर घृतमें सकल, पीसि पकै ले छानि ।
मलै तुरँगके गात नित, चूलुनसों परमानि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—बदरीफलको हाथ मलि, फेन उठै सो लेय ।
खूनै मलै खरिस्तमें, घोड़ा निर्मल होय ॥

अन्य ।

दोहा—मेंडुआचूरन सेर इक, सज्जी आधी आनि ।
फेंटि अनलपर सो पकै, मीजै बलसों जानि ॥

अन्य ।

दोहा—बटदल पीपर छालिको, जारि छार करि लेइ ।
खारी अरु खारीनमक, रस अजीरहि देइ ॥ १ ॥

लाल मिरच अरु सहदको, टका एक भरि जानि ।
पीसै करुये तेलमें, यह विधि लीजे मानि ॥ २ ॥
ताहि लगावै देहमें, जानि लेहु यह चित्त ।
माठा लीजै मेषको, तासों धोवै नित्त ॥ ३ ॥
उरद उसेवै नीरमें, तिनको खूब मिलाइ ।
वा औषधको पोंछिकै, तापर देइ लगाइ ॥ ४ ॥
या विधि कीजै बीस दिन, अग्निवायु नशि जाइ ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हों दवा बताइ ॥ ५ ॥

अथ दाद, छिछिला, अग्निवायु ।

दोहा–चारौ गंधक लीजिये, अरु हरदी हरतार ।
वायबिडंग समान करि, बचुकी दूनी डार ॥ १ ॥
पारा सम अरु चोष तिमि, चौगुन लै कडु तेलु ।
पहर अढ़ाई लोहसे, खलिभाजनमें मेलु ॥ २ ॥
सोइ लगावै अंग मलि, तीनि पहर रखि घाम ।
मलि पिंडोर चौथे पहर, धोय प्रातके याम ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–लै वासी पानी तुरै, धोय देइ दिन सात ।
की हुक्काको जल सरो, धोवै नितप्रति प्रात ॥

अन्य ।

दोहा–गोदधि अरु बारूद लै, फेंटि मलै हय अंग ।
बाँधि तीनि दिन धूपमें, करि खारिस्तिको भंग ॥

अन्य ।

दोहा–की भड़भड़ (हुका) सारोंइको, पानी लै गतिमान ।
मलै अंग दे तीनि दिन, नशै खारिस्त निदान ॥

माठामें सबको मिलै, लावै हयको अंग।
चुली और खरिस्तको, करि है तुरतै भंग ॥ २ ॥

अन्य।

चौ०–बचुकी गंधक मनसिल आनी। वायबिडंग ताहिमें सानी॥
कूटि पीसिकै यक सम कीजै। पानीमें सब निशिभरि भीजै॥
प्रात मथै लै सरष पतेलू। घोड़े अंग सो मर्दन मेलू॥
घटिका तीनि घाममें राखी। माटीमिल धोवै हरसाखी॥
रोग घटै जो घीव पिआवे। फेरि खरिस्ति होन नहिं पावै॥
गंधक मनसिल औ हरतारू। तिलके तेलहि करु निरधारू॥
सोई तेल अश्वके मलै। जाइ खरिस्ति होय अति भलै॥

अन्य।

चौ०–साबुन चँदसुर गुड़ सम लीजै। तीनों वस्तु औट सम कीजै
अश्वअगमें ताहि मलावै। भोर भये घामें अन्हवावै॥
शालहोत्र यह कहै उपाई। रोग खरस्ती दूरि कराई॥

अन्य।

दोहा–मुरदाशंखे तूतिया, रसकपूरको लेउ।
पैसा पैसा भरि करो, कपरछान करि देउ ॥ १ ॥
अजवाइनि त्रय पाव यक, घोड़वच पाव सवाय।
पारा सिगरफ लीजिये, दुइ तोला तौलाय ॥ २ ॥
चौ०–गंधक बचुकीको लै आवै। आधपाव दूनौ तौलावै॥
हरताल संखिया जहर मँगाई। पैसा पैसा भरि तौलाई॥
सकल दवा खलमें पिसवावै। सर्षप तेल ऽ२॥मध्य घोरवावै॥
घामें बाँधि अश्वतनु रगरै। ताके पाछे मृतिका धौरै॥

अन्य ।

दोहा—की साबुन लै आठ भरि, ताको आधो लोन ।
कूटि बाँधि पटमें तिन्है, करै जतन रुज दौन ॥ १ ॥
बासी पानीमें रगरि, धोय तुरय दिन तीन ।
बुद्धिधीर यहि रीतिको, कर खरिस्तिको हीन ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—की पीपरि बारीक लै, पीसि तेल रलि दोय ।
बाँधि धूप सोखै जबै, पोति मृत्तिका सोय ॥

अथ बादखोरा खाज ।

दोहा—बार गिरैं खजुली उठै, खाल चीकनी होय ।
कह्यो बादखोरा नकुल, दुष्ट रक्तते सोय ॥ १ ॥
सवासेर गोमूत्र लै, लोह कराही माहि ।
जरो आध लखिये जबै, पीछे जतन कराहि ॥ २ ॥
मिर्च तृतिया लीजिये, दश भरि चतुर सुजान ।
सुमिलखार सिंदूर सम, पीसि महीन प्रमान ॥ ३ ॥
आध पाव कटुतेलमें, सकल दवा लै घेल ।
वाही लोहड़ीमें सुघर, वस्तु पाँचहू मेल ॥ ४ ॥
सबको फेंटि उतारि ले, यकइस रोज लगाय ।
खाजु बादखोरा प्रगट, देहै तुरत नशाय ॥ ५ ॥

अथ गजचर्मलक्षण और दवा ।

दोहा—रोवाँ जाके गिरि परै, हुचकी आवति होइ ।
जानौ सो गजचर्म है, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
गदहपुरैना सोंठि पुनि, हर्र मिर्चको जानि ।
दुइ दुइ पल सब लीजिये, देवदारु सो आनि ॥ २ ॥

एक पहरके पाछे मले । भोर भये नहलावै भले ॥
ताके भोर दवा मलवावे । याहि कर्मते रोग नशावै ॥
ऊँट श्वान वृष हय पशु भाई । सकल खरिस्ती नाश कराई
सकल चिकित्सा जे खजुलीके।यहि समान नहिं और मतेके

अन्य ।

दोहा–नीचां गुट्ठल तेल लै, एक छटाँक प्रमान ।
जौरोटी सँग दीजिये, यकइस दिवस विधान ॥ १ ॥
कोई होइ खरिस्ति जो, अश्वाके तनु माहि ।
शालहोत्र मत जानियो, यहि सम दूजी नाहि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–गिरई मछरी लाइके, पाँच सेर तौलाइ ।
उतनाई दधि दीजिये, महिषीकेर मिलाइ ॥
चौ०–माटीके बरतन भरि धरिये, मोहराबंद ताहिको करिये ॥
यकइस दिन घूरे गड़वावै । ताहि बइसयें दिन न्किरावै ॥
नित प्रति कच्चे पाव खवावै । रोग खरिस्ती सब मिटि जावै

अन्य लगानेकी दवा ।

चौ०–मछरी भूर पाँचसेर लावै, दशसेर महिषीतक्र मिलावै ॥
माटीके बरतन भरि धरिये । आठरोज लगु घूरे गड़िये ॥
दोहा–नवयें दिनमें देहमें, मालिसि करौ सुजान ।
जाइ खरिस्ती नीक ह्वै, दवा करौ बुधिमान ॥

अन्य ।

चौं०–बेल जंगली तोरि मँगावै । पानी डारि अग्नि पकवावै ॥
ताको गृदा लेउ कढ़ाई । पानी डारि खूब धेपवाई ॥

लाल मिरच अरु सहदको, टका एक भरि जानि ।
पीसै करुये तेलमें, यह विधि लीजै मानि ॥ २ ॥
ताहि लगावे देहमें, जानि लेहु यह चित्त ।
माठा लीजै मेषको, तासों धोवै नित्त ॥ ३ ॥
उरद उसेवै नीरमें, तिनको खूब मिलाइ ।
वा औषधको पोंछिके, तापर देइ लगाइ ॥ ४ ॥
या विधि कीजै बीस दिन, अग्निवायु नशि जाइ ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हों दवा बताइ ॥ ५ ॥

अथ दाद, छिछिला, अग्निवायु ।

दोहा–चारौ गंधक लीजिये, अरु हरदी हरतार ।
बायबिडंग समान करि, बचुकी दूनी डार ॥ १ ॥
पारा सम अरु चोष तिमि, चौगुन लै कटु तेलु ।
पहर अढ़ाई लोहसे, खलिभाजनमें मेलु ॥ २ ॥
सोइ लगावे अंग मलि, तीनि पहर रखि घाम ।
मलि पिंडोर चौथे पहर, धोय प्रातके याम ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–लै बासी पानी तुरै, धोय देइ दिन सात ।
की हुक्काको जल सरो, धोवै नितप्रति प्रात ॥

अन्य ।

दोहा–गोदधि अरु बारूद लै, फेंटि मलै हय अंग ।
बाँधि तीनि दिन धूपमें, करि खरिस्तिको भंग ॥

अन्य ।

दोहा–की भड़भड़ (हुक्का) सारॉइको, पानी लै मतिमान ।
मलै अंग दे तीनि दिन, नशै खरिस्ति निदान ॥

माफिक सीराके करि लीजै। देह भरेमें मालिस कीजै॥
देह सूखि जब जावै भाई। तब पिंडोर माटी पोतवाई॥
तिसरे पहर देइ अन्हवाई। पाँच सात दिन यहै कराई॥

अन्य।

चौ०–दही भैंसिको लेउ मँगाई। पक्के आठ सेर तौलाई॥
भूरे मछरी फेरि मँगाई। तीनि पाव ताको तौलाई॥
तितिली और करहुँआ लीजै। पाव पाव भरि वजन करीजै॥
मिरचा लाल छटाँक मँगावै। धोई दालि पाव भरि लावै॥
तोला एक तूतिया लावे। गंधक तोले तीनि मिलावै॥
आधपाव लै नीबकि पाती। पीसि दवा सब दही मिलाती॥
सो सब बरतनमें भरि लीजे। गोबरमाँहि गाड़ि तिहि दीजे
दोहा–दुइ दिन तामें गाड़िकै, तिसरे दिन खुदवाइ।
दवा अश्वकी देहमें, दुइ घंटा मलवाइ॥
चौ०–धूपमाहिं बाँधौ तेहि भाई। घंटा भरि तक देह सुखाई॥
घोरि पिंडोरु देह लगवावै। कूपके जलसे तेहि अन्हवावै॥
तीनिरोज यहि भाँति करावै। ता पाछे यह दवा खवावै॥
दोहा–दुइदिन आगे ताहिको, दाना बंद कराइ।
सातरोजतक दीजिये, खाजु नाश ह्वै जाइ॥

अन्य खानेकी दवा।

चौ०–दही कि मूरनि लेउ बनाई। पाव एक ताको तौलाई॥
आँबाहरदी तोला तीनी। कूटौ ताको बहुत महीनी॥
गिरई मछरीको लै आवै। एक छटाँक वजन करवावै॥
यवके आटा सानि खवाई। एक खुराक कही यह भाई॥

अन्य ।

दोहा—की साबुन ले आठ भरि, ताको आधो लोन ।
कूटि बाँधि पटमें तिन्हे, करै जतन रुज दौन ॥ १ ॥
बासी पानीमें रगरि, धोय तुरय दिन तीन ।
बुद्धिधीर यहि रीतिको, कर खरिस्तिको हीन ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—की पीपरि बारीक ले, पीसि तेल रलि दोय ।
बाँधि धूप सोखे जबै, पोति मृत्तिका सोय ॥

अथ बादखोरा लाज ।

दोहा—बार गिरै खजुली उठै, खाल चीकनी होय ।
कह्यो बादखोरा नकुल, दुष्ट रक्तते सोय ॥ १ ॥
सवासेर गोमूत्र लै, लोह कराही माहि ।
जरो आध लखिये जबै, पीछे जतन कराहि ॥ २ ॥
मिर्च तूतिया लीजिये, दश भरि चतुर सुजान ।
सुमिलखार सिंदूर सम, पीसि महीन प्रमान ॥ ३ ॥
आध पाव कडुतेलमें, सकल दवा लै थेल ।
वाही लोहड़ीमें सुघर, वस्तु पाँचहू मेल ॥ ४ ॥
सबको फेंटि उतारि ले, यकइस रोज लगाय ।
खाजु बादखोरा प्रगट, देहै तुरत नशाय ॥ ५ ॥

अथ गजचर्मलक्षण और दवा ।

दोहा—रोवाँ जाके गिरि परै, डुबकी आवति होइ ।
जानो सो गजचर्म है, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
गदहपुरेना सोंठि पुनि, हर्र मिर्चको जानि ।
दुइ दुइ पल सब लीजिये, देवदारु सो आनि ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०-नींबीकी पाती लै आवे । कोपल दुइसेर वजन करावे ॥
एकसेर सहतरा मँगाई । दूनों कूटिक देउ धराई ॥
माटीके बरतनमें धरै । ऊपरतक माठा तेहि भरै ॥
आठरोज घामें धरवाई । नवयें दिन ते अश्व खवाई ॥
यव वा चनाके आटा दीजै।आध पाव तेहि वजन करीजै

अन्य लगानेकी दवा ।

चौ०-तोले तीनि तमाखु लीजै । लाल मिर्च ताके सम कीजै ॥
बीज बकैनाके लै आवै । पावसेर तिनको तौलावै ॥
दोहा-दालि उरदकी सेरु भरि, जलमें सबै मिलाइ ।
ताहि चढ़ावै अगिपर, खूब पाकि जब जाइ ॥
सोरठा-लीजे ताहि उतारि, जब ठंढा होजाय बहु ।
डारै तुरत निकारि, मिरच तमाखू ताहिते ॥
दोहा-खूब मलै फिरि हाथसों, लीजै ताहि छनाइ ।
गूदी रेंडा पाव अध, दही सेरु मिलवाइ ॥ १ ॥
एकरोज धरि धूपमें, रोज दूसरेमाँहि ।
मलै अश्वकी देहमें, बाँधे घामें ताहि ॥ २ ॥
फिरि धोवै जल शीतसों, श्रीधर वरणो आनि ।
या विधि कीजे तीनि दिन, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-दूध गाइको सेरु दुइ, पक्की तौल मँगाइ ।
लेहु फिटकरी मिर्च अरु, तोले षट मँगवाइ ॥ १ ॥

चारि सेर जल आनिकै, लीजै ताहि पकाइ ।
सेर एक जल जब रहै, ताको मीजि छनाइ ॥ ३ ॥
बीज कसौजी लीजिये, पैसा भरि तौलाइ ।
तिनको पीसि मिलाइकै, काढ़ा देहु पिआइ ॥ ४ ॥
काढ़ा दीजै तीस दिन, शालहोत्र मत आइ ।
जेती औषध खाजुकी, तिन्है लगावत जाइ ॥ ५ ॥

अथ बरसातीलक्षण व दवा ।

दोहा–पैर गामची तर उपर, नैन नीच दरशात ।
फूटि बहै बरसातमें, बरसाती विख्यात ॥

अन्य ।

दोहा–उधिलै खाल जु अंग कहुँ, लाली बहु दरशाय ।
बारहु मासमें देखिये, सो बरसाती आय ॥
चौ०–बरसाती मोमेसो मलै । मलत मलत जब लोहू चलै ॥
सर्पपतेल मोम लै आवै । अरु बारूदहि आनि मँगावै ॥
सिगरफ सहद सबै मिलवाई । अग्निमध्यमा लेउ पकाई॥
मलहम करै हरै बरसाती । सात दिवस लागै दिन राती॥

अन्य ।

चौ०–छोटी माई आनि पिसावै । तिहिसम मसुरि पिसान मँगावै॥
ताकी टिकिया करौ बनाई। बरसाती ऊपर बँधवाई ॥
तीनि दिना सो बाँधी रहै । चौथे दिवस छोरिकै लहै ॥
निंबु कागजीके रस धोवै । लाली हरै नीक है जोवै ॥
तीनि रोज फिरि टिकिया बाँधै। याही क्रमसे औषध साधै

ताहि मिले सब देहमें, पहर बीति जब जाइ।
धोवै पानी ठंढ करि, सात दिवस करवाइ ॥ २॥

अन्य पुरानी खाजको दवा।

दोहा–सेर एक लै तेल तिल, दीजै ताहि मलाय।
रोज रोज सब देहमें, तेल मलत सो जाय ॥ १॥
यकइस दिनलौं तेलसों, भींजि रहै सब देह।
मिटै खाजु सब वाजिकी, जानौ बिन सदेह ॥ २॥

अन्य।

दोहा–मनुजमूत्र मँगवाइकै, दीजे ताहि लगाय।
औषध कीजै ताहि पर, खाजु दूरि हो जाय॥

चौ०–मडुईकेर पिसानु मँगावे। तीनि पाव ताको तौलावे॥
सात टका भरि लोनु मिलावे। लेई ताकी आनि पकावे॥
सो देहीमें देइ लगाई। भोर भये डारै अन्हवाई॥
सात बार औषध यह करै। खाजु व्याधि घोड़ेकी हरै॥

अन्य।

चौ०–षट मासे तृतिया मँगावे। ताते दूनी मिरच मिलावे॥
दोनोंको यकमाहि पिसाई। गऊमूत्रमें ताहि मिलाई॥

दोहा–वाहि लगावे देहमें, रोज दूसरे माहि।
माटी घोरि लगाइये, सूखि जबै सब जाहि॥

चौ०–शीतोदकसों ताको धोवै। खाजु व्याधि घोडेकी खोवै॥
सातबेर यह औषध कीजे। खाजु व्याधि कबहूँ नहिं लीजै॥

अन्य।

दोहा–पावसेर लै लोनको, तोला भरि हरतारु।
पावसेर घृत माहिमो, दुवौ पीसिकै डारु॥

अन्य।

चौ०—तिल्लीको पीना लै आवै। गऊतक्रमें ताहि घुरावै॥
तीन दिना सो भीजा करै। ता पाछे लेपनको करै॥
साँझ और लागै परभाती। बरहें दिवस जाय बरसाती॥

अन्य।

दोहा—लै सज्जी अरु मैनशिल, सम करि सुमिलक्षार।
खलमें मदिरा युत खले, चौबिस पहर विचार॥ १॥
पैसा भरि नित दीजिये, यकइस दिवस प्रमान।
बरसातीको नाशि है,याही यतन निदान॥ २॥

अन्य।

दोहा—मासा चारि प्रमान दुय, लेउ सोहागा भूनि।
बूकि तासु दुइ भाग करु, डारि श्रवण दुहुं गूनि॥ १॥
ताके ऊपर कागजी, निबू करै दुफाल।
दुहुँ श्रवणमें गारि दे, हरि है रुजको जाल॥ २॥

अन्य।

दोहा—निबूरसमें रगरिकै, देइ सिघारा लाय।
कई बेर लावै सुघर, बरसाती मिटि जाय॥

अन्यमत लक्षण।

दोहा—हाथ पाँव मुहँ माहिमें, चट जाके परि जाँइ।
पाकै उधिलै वे बहुरि, गाठीसी दरशाँइ॥ १॥
बीति जाइ बरसाति जब, सूखि सबै वे जांइ।
फिरि आवै बरसाति जब, वैसे फिरि ह्वै जांइ॥ २॥

दवा।

दोहा—मासा भरि हरतार लै, नीलाथोथा डारि।
इन तीनोंको सम करौ, स्याह लोन निरधारि॥ १॥

सोरठा--अग्नि पकावै ताहि, फेरि लगावै देहमें ।
तीनि रोज लगु वाहि, बाँधो ताको धूपमें ॥
दोहा--ठंढे जलसों धोइये, छिरका और शराब ।
दोऊ मिलै लगाइये, बढ़ै देहकी आब ॥

अन्य ।

चौ०--गोदधि तेरह सेर मँगावै । करुव तेल दुइ सेर मिलावै ॥
पाती नीबकेर लै आवै । सेर एक तेहि अर्क कढ़ावै ॥
दोहा-दालि उरदकी सेर भरि, ताको लेउ पकाइ ।
यक बासनमें ओषधी, दीजै सबै भराइ ॥ १ ॥
सो लै गाड़ै लीदिमें, दशयें दिन कढवाइ ।
धरै ताहि लै धूपमें, रोज खवावति जाइ ॥ २ ॥
आटा भूँजे जवनको, पाउ सेर सो आनि ।
औषध लीजै ताहि सम, दीजै हयको आनि ॥ ३ ॥
चौ०-तीनि रोज या विधिको कीजै।डेढ़ पाव फिरि ओषध दीजै॥
बारह दिनलौ देउ खवाई । बहुत दिननकी खाजु नशाई॥
दोहा-अग्निवायु नाशै तुरत, वरसाती मिटि जाइ ।
शालहोत्र इमि उच्चरै, खाजु पुरानी जाइ ॥

अन्य ।

दोहा-हरदी मोथा कूट अरु, बरुन छालिको आनि ।
बीज कसौंजीको बहुरि, यक यक पलसों जानि ॥
चौ०-करुआतेल सेरुभरि लावै । सबै औषधी पीसि मिलावै ॥
घाभे बाँधि देह लगवाई । तीनि दिवसमें खाजु नशाई ॥

दोहा–डेढ़सेर लै प्याजको, ताको अर्क मिलाइ।
कर्षमात्र गोली करै, फिरि औषध पिसवाइ ॥ १ ॥
गोली एक नहार मुख, हयको दीजे आनि।
दाना दीजै ताहि नाहि, नाहारीको जानि ॥ २ ॥
पानी पहिले देइ करि, मध्य दिवसमें ताहि।
गोली दूसारे दीजिये, शालहोत्र मत याहि ॥ ३ ॥
दोइ घरी कैजा करै, पाछे देइ उनारि।
यहि विधि कीजै तीनि दिन,श्रीधर कह्यो विचारि ॥ ४ ॥
बीस दिवस अरु तीनिते, दिन चालिसलौ जानि।
जल पिआइकै दीजिये, यक यक गोली आनि ॥ ५ ॥
रोग घटै अरु बल बढ़े, क्षुधा तासु अधिकाइ।
औपध याहि समानकी, और नही दरशाइ ॥ ६ ॥

अन्य।

दोहा–बरसाती पर मोमको, मलै देरतक आनि।
मलत मलत लोहू चलै, मलत तहाँ लगु जानि॥

मलहम।

दोहा–करु तेल आगी धरै, थोरा मोम मिलाइ।
बन्दन अरु बारूद लै, दोऊ लेउ मिलाइ ॥ १ ॥
घोंटै ताको देरतक, एकमाहिं मिलि जाइ।
बरसातीके जखमपर, रोज लगावत जाइ ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीखरिस्तवर्णन
नामक अष्टम अध्याय ॥ ८ ॥

अथ नेत्ररोग लक्षण व दवा।

गुज्जारोग।

दोहा–किरिमि होत यक नेत्रमें, कच समान सो मानि।
श्वेत रंग ललिये बहुरि, गुज्जा ताको जानि॥
चौपाई–सो आंखीमें दौरा करै। ताके दौरै माड़ा परै॥
एक खालके नीचे जानो। गुज्जा रोग कठिन अनुमानो॥

दवा।

चौपाई–पीपरि सैंधव सहद मिलाई। पथरचटाके रंग पिसाई॥
वजन बराबरि सबको करै। अंजन दै दृग मूंदा करै॥
सातरोजलौ औषध कीजै। कीरा मरै सफेदी छीजै॥

अन्य।

छंद प्लवङ्गम–अर्क दूध फिटकरी सु या विधि आनिये।
गोहूँ मैदा सानि पिंड यक बाँधिये॥
अग्नि मध्यमें राखि भस्म करि लीजिये।
पीसि नेत्रमें आँजि किरिमिको छीजिये॥

अन्य।

दोहा–मानुपकी खुपरी तनक, अग्नि मध्य दे जारि।
खील फिटकरी मिलै सम, सुरमा करौ विचारि॥ १॥
अजा दूधमें सानिकै, अजन दीजै नेत्र।
फूली गुज्जा काटि है, साँची मानौ मित्र॥ २॥

अन्य।

दोहा–सैंधव कदली फल सुपक, मेलि सु पट्टी देय।
तीनि दिवस या विधि करै, मिटै रोग सुख लेय॥

चौ०–घीउ कपूर खाँड लै सानै। दूध मिलाइ पिंड मुख भानै॥
कफवायु वाजीकी जाई। शालहोत्र यह भाषे भाई॥

अथ मुखवायुलक्षण व दवा।

दोहा–मुख सूजै जेहि अश्वको, रुज मुख ताको नाम।
ताकी औषध कीजिये, जो हय होय अराम॥

चौ०–जवाखार अजवायनि लीजै। हरदी सर्षप सम करि दीजै॥
सैंधव मिले पीसि सब लेहू। अँबिली रसमें गरम करेहू॥
अश्व वदन पर लेप करावै। ताके ऊपर पट बँधवावै॥

अन्य।

चौ०–जो मुख सूज अश्वको देखै। वात विकार तासु अवरेखै॥
जवाखार अजवाइनि राई। सर्षप हरद्री सौंफ मिलाई॥
लहसुन मेलि वजन सम करौ। जलसों पीसि अग्निमें धरौ॥
गरम गरम सेंको मन लाई। औषध करौ रोग बहि जाई॥

सोरठा–होय वदन पर सूज, जा तुरंगको देखिये।
ताको जतन समूझ, लोन वफारा दै प्रथम॥ १॥
राई हरदी सोंठि, जवाखार कुटकी गनौ।
और सोहागा घोटि, सम करि सकल खवाइये॥ २॥

अन्य।

सोरठा–मोथ इलाची आनि, अमिलतासु धनियाँ सुमधु।
सम करिकै तेहि सानु, हयको रुजनाशक भणित॥

अन्य।

चौ०–भुज छाती सूजै जो आनन। दाना घास नहीं मनभावन॥
मिर्च कसौंजा अदरख पानै। चारों करौ एक परमानै॥
दीन्हें जहरवातको हरै। दूजी औषध नाहक करै॥

अन्य ।

दोहा–अर्कक्षीर गोबर महिष, ताको अर्क निचोय ।
पीतरिके खोरवा विषे, पैसासों घसि लेय ॥ १ ॥
अंजन करि दे नैनमें, साँझ भोर यहि रीत ।
ता ऊपर हलुवा बने, मैदा गोघृत मीत ॥ २ ॥
खाँड़ मेलि तामें धरे, नैन उपर सुखदानि । -
फिरि घृत लावे ताहि पर, जो कछु माड़ा जानि ॥
तौ सेंदुर भरि दीजिये, तामें जतन समेत ।
नाशै मुज्जा नैनको, कहै नकुल सुखहेत ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–दूधपिवा शिशुकी सुघर, विष्ठा लेइ मँगाय ।
चारि बेर हगमों भरे, मुज्जा नैन बिहाय ॥

अन्य ।

दोहा–लेंडी लै खरगोशकी, जलमें लेउ पिसाइ ।
सो लै बाँधे आँखिपर, मुज्जा तौ मरिजाइ ।

अथ मुज्जा फूली और माडाकी दवा ।

दोहा–चूरी लीजै काचकी, सेंधव लोन मिला
पीसै अति बारीक करि जब है जा
सो लै डारै आँखिमें होइ ।
मुज्जा अरु फूली नशै लोइ ।

चौपाई—मानुषका जिमि लकवा बाई । ऐसे तुरी रोग हो जाई॥
महाकठिन है रोग विशाला । याकी दवा करो ततकाला
पैसा पैसा भरि पिसवावै । सेंवरछालि टंक दश लावै ॥
लहसुनकी गाँठी सम करौ । पीसि छानि मैदा सम धरौ
गोघृतके सँग दश दिन दीजै। औरौ घृत तनु मर्दन कीजै
ईंटसेंक ऊपरते देहू । पवन बन्द मा राखे वोहू ॥
या विधि दवा करौ मन लाई । रक्तवायुको खोज नशाई॥

अन्य ।

चौपाई—देउ बतीसा चूरण याही ।मानुषकी खोपरी जेहि माही॥
तोला तोलाकी परमाना । शाम सुबह दिन बहुत विधाना॥

अन्य ।

चौपाई—सेर एक गोमूत्र मँगावे । दुइ तोला गूगुर मिलवावै ॥
औटी करिके प्रात पियावे । गेरह दिन याही विधि पावे॥

अन्य ।

चौपाई—वृषभ अस्थिको तैल बनाई । लेउ पतालयंत्र निकराई॥
तीन तेलकी मालिस करै । सकल देहमे सो अनुसरै ॥
तैल लगाइ बफारा दीजै । ताकी दवा सबै लखि लीजै ॥
पात धतूर बकैना लावै । और सँभारू तामें नावै ॥
रहसनि अंबर वेलि मँगावै । रनिकी पाती ताहि मिलावै
जोगिआ अंडके पात मँगाई । सातौ दवा बराबरि लाई॥
माटीके बर्तन उसनावै । सकल अंगमें बाफ देवावै ॥
पाँच सात दिन या विधि कीजै।बहुत दई निशि बासर दीजै
पवन बंदमें राखे भाई । सकल वायुको नाश कराई ॥

दोहा-पिसवावै वारीक करि, धरिकै छूंछी माहि।
फूँकि देइ सो आँखिमो, पाँच रोजमें जाहि॥

अन्य।

दोहा-सिरसा खिन्नी बीजकी, गूदी लेउ कढ़ाइ।
साबुन गेरू लौग पुनि, सैंधव सेंदुरु लाइ॥ १॥
नीबूकेरे अर्कमें, पीसै अति वारीक।
अंजन दीन्हें होत है, फूली वालो नीक॥ २॥

अन्य।

दोहा-पीपरि पीसै सरिलमें, एक दिवस भरि आनि।
अंजन दीन्हें होति है, माड़ा फूली हानि॥

अन्य।

चौ०-समुदफेन अरु सोरा लीजे। फूल गुलाब ताहिमें दीजे॥
सॅगबसरी मिलि सम पिसवावै। खूब महीन सरिल करवावै

दोहा-अंजन दीजै आँखिमो, माँड़ा सो छटि जाइ॥
सात रोज औषध करै, नेत्रज्योति सरसाइ॥

अन्य।

दोहा-सोरा चंदन फिटकरी, सिरसाबीज मँगाइ।
मिर्च कपूरै शर्करा, साबुन देउ मिलाइ॥ १॥
सबको पीसै एकमें, अंजन ताको देइ।
सात दिवस औषध करै, फूलीको हरि लेइ॥ २॥

अन्य।

दोहा-अर्क दूध औ फिटकरी, लेउ धतूर मिलाइ।
सो लै आगीमें धरै, दीजै खूब जराइ॥ १॥

दोहा-सकल वायुको नाशि ... ारा तीन।
शालहोत्र यह म ... रमें जौन॥

अथ ... दवा।

दोहा-पाछिल धड़ ... । बाई होइ।
ताहि कहत ... सयाने लोइ॥

दोहा-रहसनि ... गदहपुरैना जानि।
बचुकी जर सहिजन सहित, दोइ दोइ पल मानि॥ १॥
अजवायनि कनयर जरहि, आठ आठ पल लेइ।
अरसी सर्षप सेर दश, मिले सबनको देइ॥ २॥
सब औषध यक संग करि, लीजै तैल पेराइ।
तैल कराहीमाहि धरि, दीजै आगि चढाइ॥ ३॥
सैधव लीजै पॉच पल, ताको लेउ पिसाइ।
माठा लीजै तैल सम, दोऊ देउ पचाइ॥ ४॥
शुद्ध तैल हो जाय जब, लीजै तबै छनाइ।
ताहि लगावै अश्वके, छाहींमें बॅधवाइ॥ ५॥
दाना दीजै मूँगको, सेर एक यह जानि।
पानी दीजै कूपको, मध्य दिवसमें आनि॥ ६॥
सोरठा-दीजै तैल पिआय, टका एक भरि प्रथम ही।
दीजै फेरि लगाय, तीस रोजमें जानिये॥ १॥
दोहा-आधे धड़की वायु पुनि, और कब्जियत जाय।
जो कोई या विधि करै, सगरी वायु नशाय॥ १॥

सुरमा करिकै ताहिको, दीजै आँखीमाहि ।
दूरि सफेदी होति है, अरु मुज्जा मरि जाहि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—अमिलतासकी छालि लै, चंदन रक्त मिलाइ ।
पीसि ताहि गोली करै, छाहींमाहिं सुखाइ ॥ १ ॥
रगरि पान रसमें वटी, यकइस रोज लगाय ।
तुरँगनैनफूली मिटै, याही यतन बनाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—जेठीमधु चंदन अरुण, घसि अदरखरसमाहिं ।
नैन दिये फूली कटै, कइउ रोग नशि जाहिं ॥

अन्य ।

चौ०—लोधु फिटकरी मुरदाशंक । हरदी जीरा यक यक टंक ॥
अफीम चनाभरि मिरचै चारि।उरद बराबरि थोथा डारि ॥
सिरसछालि रस अंजन कीजै।सकल विकार नैनको छीजै॥
मुज्जा फूली और नखूना । माड़ा धुंध आदि कतहूँ ना ॥

अन्य ।

दोहा—जो फूली दृगमें परै, कीजै जतन उताल ।
कइउ रोज सेंदुर तहाँ, फूँकि देइ भरि नाल ॥ १ ॥
की बरतन चीनी सुघर, पीसि भरै तेहि नैन ।
नशि जैहै फूली तुरत, लहै वाजि बर चैन ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—की रीठी रगरै सुघर, डारै नैन लगाय ।
काहि रंगी वस्ताद यह, फूली नैन विहाय ॥

अथ कहानवायुलक्षण व दवा।

दोहा–बेर बेर बैठे उठै, नितप्रति यह गति होइ।
असवारीमें ताहिके, ऊर्द्धश्वास चलै सोइ ॥ १ ॥
शिलाजीत गुग्गुरु सहित, गोघृत लेउ मँगाइ।
यक यक औषध दोइपल, सबको लेउ मिलाइ ॥ २ ॥
कही एक मौताज यह, दीजै दाना माहि।
औषध दीजै सात दिन, रोग दूरि ह्वै जाहि ॥ ३ ॥

अथ भस्मकवायुलक्षण व दवा।

दोहा–कीतौ बाई कोखिमें, कीतो दहिनी जानि।
अथवा देही सब विषे, सूजनि तामें आनि ॥ १ ॥
देह छुए करकस परै, सूजनि बाढ़ति जाइ।
गुदामाँहि पानी चलै, चूंड़े कान लखाइ ॥ २ ॥
दाना घास हि खाइ बहु, अति जल पीवत होइ।
जानौ ताहि असाध्य है, मरै सही हय सोइ ॥ ३ ॥
कहे भेलावाँ पाँच पल, तिनको लेउ मँगाइ।
दशपल तिलके तेलमों, लीजै खूब जुराइ ॥ ४ ॥
पैसा साढ़े तीनि भरि, ताहि पिसावे आइ।
दाना घास न दीजिये, पांच दिवस ला ताहि ॥ ५ ॥
कूटि चिरैता कैफरा, दोइ दोइ पल लाइ।
गदके मूत्र पिसाइके, लीजै तप्त कराइ ॥ ६ ॥
मर्दन कीजै पीठपर, पांच दिवस लगु जानि।
पानी दीजै स्वल्प तेहि, होइ रोगकी हानि ॥ ७ ॥

अन्य।

हा-की सोरा गेरु मिले, घालि नालमें फूँकि।
कइउ रोज याको करै, उपर तमाखू थूँकि॥

अन्य।

ौ०-काचन चूरन आटा जोड़ी। अर्कदूधमें भिजै समंडी॥
गोला करिकै ताहि सुखावै। अग्नि जारिकै भस्म पिसावै॥
चुटकी चूरण नैनन धैरे। सात रोजमें फूली हैरे॥

अन्य।

ो०-सोनामाखी चंदनु लीजे। रक्त फिटकरी तामें दीजे॥
सिरसबीज अरु चीनी लेई। लेउ कचूर मिर्चको सोई॥
भेदा करि अंजन दृग भैरे। नीक होइ अरु फूली हैरे॥

अन्य।

ो०-रसउत अरुण फिटकरी लीजे। सहद संग घसि अंजन कीजे

अथ नाखून।

हा-जहाँ सफेदी नेत्रमें, तहाँ नखूना होइ।
छूरासे तेहि काटिये, डारि सेराई सोइ॥

ो०-लै अस्तूरा साफ उतारी। गुज्जा फूट बहै नहि वारी॥
हरदी सोंठि सहद घृत सानी। ताहि बाँधु ऊपरते आनी॥
शीत वातते देउ बचाई। नीको होइ नखूना भाई॥

अन्य।

ो०-मिर्च दक्षिणी चंदन लेहू। खील सोहागा तामें देहू॥
गूगुर वजन बराबरि मेलै। सैंधव लोन फिटकरी खीले॥
सर्षपतेलमें खरिल कराई। नाखूनामें देउ लगाई॥

लंघन करिबेकी शकति, जा घोड़ेके होइ।
औषध कीजै ताहिकी, जियत तुरी है सोइ ॥ ८ ॥

अथ कुमकुमवायुरोग लक्षण व दवा।

दोहा—गाँठिनमें गाँठी परे, औ गाँठी फिरि जाइ।
जानौ कुमकुम रोग है, ताको कहौ उपाइ ॥ १ ॥
माजूफल औ कैफरा, धायके फूल मँगाइ।
सबको भाग समान लै, तिनको लेउ पिसाइ ॥ २ ॥
दोइ टकाभरि औषधी, गोघृत लेउ मिलाइ।
औषध दीजै बीस दिन, रोग तासुको जाइ ॥ ३ ॥

अन्य कुमकुमरोगके लक्षण।

दोहा—मोजा जाके फिरि गये, कौ गाठी दरशाइ।
सोऊ कुमकुम रोग है, ताको कहौ उपाइ ॥ १ ॥
प्रथमहि नाल बँधाइके, सुधो सुम करि देइ।
ता पाछे पट्टी कहौ, बाँधि तासुके देइ ॥ २ ॥

पट्टीविधि।

दोहा—प्रथम पात लै रेंडके, दीजै तिन्है बँधाय।
बाँधो राखे तीनि दिन, डारै फेरि खुलाय ॥ १ ॥
भीतर बाहर पाँउके, डारै बार मुँड़ाइ।
पछना देकै ताहिपर, पट्टी देउ बँधाइ ॥ २ ॥
आँबाहरदी दोइ पल, कुचिला दोनों आनि।
यलुआ लीजे एक पल, ताको जलमें सानि ॥ ३ ॥
चौ०—पट्टी ऊपर ताहि लगावै। सो पट्टी ले पगहि बँधावै ॥
तीनि दिवसलौं बाँधो राखै। शालहोत्र मुनि

अन्य ।

दोहा–नीबछालि नरमूत्रमें, रगरि सु अंजन देय ।
कटै नखूना नैनको, वाजि अधिक सुख लेय ॥

अथ नेत्रचोटकी दवा ।

दोहा–वासी पानी लोन लै, दोनों मुखमें डारि ।
कूचि नैनमें फूंकि दे, तुरत चोट दुख हारि ॥

अन्य ।

चौ०–गोघृत मैदा डारि मिठाई । ऑबाहरदी लेउ पिसाई ॥
दोहा–घुँघुवारीके नीरसँग, अग्निमध्य पकवाय ।
हलुवा करि बाँधो सुघर, नैन चोट बहि जाय ॥

अथ नेत्रबँभनी ।

दोहा--पलकरोम गिरिजात सब, बहु किचपिचा दिखाय ।
ऑखिनमें पानी बहै, कछु लाली दरशाय ॥
चौ०--पटसनजरकी राख करावै।साँभरि टका तीनि भरि लावै॥
दोउ शिरमध्य बीच लगवावै।चारि घरी पीछे अन्हवावै॥
सनभव मुर्दाशंख मिलाई।सहद संग मथि देइ लगाई ॥
सात दिना करि है जो कोई। बँभनी वेलि जाय सब खोई

अथ रतौंधीकी दवा ।

दोहा--रंचक मिरच कपूर लै, घृतमें सानै ताहि ।
घिसि अंजन नैनन करै, मिटै रतौंधी वाहि ॥

अन्य ।

दोहा–साबुन मिर्च मँगायकै, लीदि रंगसों सानि ।
घोड़े दृग अजन करै, मिटै रतौंधी आनि ॥

दोहा–खोलै चौथे रोजमें, पाकि गयो जो होइ ।
यह औषध लगवाइकै, बाँधे पट्टी सोइ ॥ १ ॥
समुदखार हरतार अरु, नीलाथोथा आनि ।
लै जमालगोटा बहुरि, और निसोदर जानि ॥२॥
अर्क दूध मँगवाइके, तामें लेउ पिसाइ ।
पछना ऊपर पगविषे, दीजै ताहि लगाइ ॥ ३ ॥
दोइ पहर बाँधो रहै, डारै फेरि खुलाइ ।
जलमों नीव उसेइकै, ऊपर देउ लगाइ ॥ ४ ॥
नीव धरत तौलों रहै, खूब साफ हो जाइ ।
मलहम फेरि लगाइये, जखम नीक हो जाइ ॥५॥
मोजा सूधो होइ अरु, कुमकुम रोग नशाइ ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हों दवा बताइ ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा–यउवा और अफीम लै, रेवतचीनी आनि ।
हरदी मानुषमूत्रमों, ताहि पकावै सानि ॥ १ ॥
पट्टी ऊपर लाइ सो, दीजै ताहि बँधाइ ।
औषध वही सबै करै, प्रथमहि कही जु आइ ॥ २ ॥
थूहर और मदारको, लीजे दूध कढ़ाइ ।
फौहा तासु बनाइकै, दीजै ताहि बँधाइ ॥ ३ ॥
बाँधो राखै तीनि दिन, तासु जतन यह आइ ।
धोवै ताहि शराबते, खूब साफ ह्वै जाइ ॥ ४ ॥
मदिरा चून मिलाइकै, रोज लगावत जाय ।
जखम सूखि जब जाइगो, पग सूधो ह्वै जाय ॥ ५ ॥

अथ आँखिमें ढलका बहनेकी दवा।

चौ०--सरसों पीपरि मूल अरंडा। गोला बाँधि करो जिमि अंडा॥
ताको अर्क निचोड़ सु लीजै। ताहि मध्य औषध यह दीजै॥
हाऊबेर व गेरू लाई। फँदयल कली सहित पिसवाई॥
सबका अर्क पकड़ निकारै। साँझ भोर दृग छींटा मारै॥
नीक होय सब ढलका बंदा। शालहोत्र भाषे सुखकंदा॥

अन्य।

चौपाई--चंदन सौंफ तगर जो लावै। अजापुत्र पेशाब मँगावै॥
रस इनका सब लेइ निकारी। ता मधि सहद घीउ सो डारी॥
भरि नेत्र सो जतन कराई। ढरका रोग नीक है जाई॥

अन्य।

दोहा--बच दवनि गुड़ घृत मिलै, खाय तुरी मतिमान।
बहिवो नैनन नीरको, रोकिहै कहौं प्रमान॥

अथ नेत्रमाड़ाकी दवा।

दोहा--मानुषकी रसेरोइया, अति महीन करि बूँकि।
माँड़ा तुरत नशाइ है, देइ नाल भरि फूँकि॥

नेत्र सफेदीकी दवा।

चौपाई--पिपरी सैंधव सहद मिलाई। विषखोपराके अर्क सनाई॥
अंजन दै मूँदो दृग ताही। जाय सफेदी तुरत वाही॥

अथ लोटरोगलक्षण व दवा।

दोहा--ऊपर सूजहि आँखितर, जख्म होति है आनि।
लोट तासुको नाम है, श्रीधर कहो बखानि॥ १॥

अन्य।

दोहा—अजवाइनि गुड़ चोकरा, गेहूँकेर मँगाय ।
थोरा पानी डारिकै, लीजै गरम कराय ॥ १ ॥
सो लै बाँधे पगविषे, पछना देकरि ताहि ।
या विधि बाँधे चारि दिन, पाकि यहीते जाहि ॥ २ ॥
पाती नीब पिसाइकै, तामें सहद मिलाइ ।
ताहि लगावै जखमपर, साफ तभी है जाइ ॥ ३ ॥
मलहम फेरि लगाइये, जखम नीक जब होइ ।
धरणी परसे शुद्ध हो, कहत सयाने लोइ ॥ ४ ॥
पग कदाचि टेढ़ो रहै, ताको कहौं उपाय ।
ताहि लगावै पगविषे, खपचै बाँधत जाय ॥ ५ ॥
चौ०—मोम मस्तगी तेल कढ़ावै । दोइ घरीलौ ताहि बँधावै ॥
ताके ऊपर देउ लगाई । मास एकमें रोग नशाई ॥
दोहा—नितप्रति याही विधि करै, शालहोत्र कहि ताहि ।
धरणी परशै शुद्ध पग, रोग तहां बहि जाहि ॥

अन्य।

दोहा—दालचिनी अरु जाइफल, मोम मस्तगी आनि ।
मैदा लकरी एलुआ, गर्म कही बखानि ॥ १ ॥
पात सँभारूके सहित, नीबपात अरु आनि ।
पात बकैना रेंडके, अरु अनारके जानि ॥ २ ॥
सेर दोइ तिल तेल लै, दुइ दुइ पल सब पात । -
दीजै अग्नि चढ़ाय सो, होइ खूब जब तात॥३॥

काँचेकी थारी विषे, दीजै पारा डारि ।
पैसा भेरे रगरिये, रस नीबूको गारि ॥ २ ॥
सोरठा–मिलि पारा नहि जाहि, तौलौ रगरत जाइये ।
जब कजरी ह्वै जाइ, लावै हयके जखमपर ॥
चौपाई–एक रोजमें औषध भाई । दफा पाँच अरु सात लगाई॥
जबतक जखम न नीक देखावै।तबतक दवा यही करवावै

इति श्रीशालहोत्रसग्रह केशवसिंहकृत नेत्ररोगचिकित्सावर्णन
नामक नवम अध्याय ॥ ९ ॥

अथ वातव्याधि । झोला अकरय वायु ।

चौ०–मानुष दग्ध होय जहँ भाई।यक हथ माटी डारु खोदाई॥
ता नीचेकी माटी लीजै । घोरि कराह औदनो कीजै ॥
धरै उतारि जु शीतल होई । तेल उपर छहरै जमि सोई॥
वाही तेलको लेउ उतारी । सीसामें करि धरै विचारी ॥
घोड़के तनु मालिस करै । कछुक खवाय रोगको हरै ॥
वातव्याधि सकल मिटि जाई। मानुषतैल मलै जो भाई॥

अन्य ।

चौपाई–सेर चारि भेसीकी गोबरी।सैधव सज्जी और फिटकरी॥
टका टका भरि तीनों मेलै । बॅबउरकी माटी तिहि घेलै॥
एकैमें सब गरम करावै । लेपै अंग बयारि न पावै ॥
तेल मालकाँगनिको लीजै । याहीमें सो शामिल कीजै ॥
गेरह दिन सो कीजे भाई । याहीते झोला मिटि जाई ॥

एक एक पाती सबै, तामें लेइ जराइ ।
फेरि उतारै अगिते, लीजै ताहि छनाइ ॥ ४ ॥
अंडा मुरगीके बहुरि, सो तौ लीजे चारि ।
जरदी तिनकी दूरि करि, दीजै तामे डारि ॥ ५ ॥
एक एक पल औषधी, जलमें लेहु पिसाइ ।
सबै मिलावै तेलमें, दीजै अगि चढाइ ॥ ६ ॥
खूब लाल है जाइ जब, लेउ तबै उतराइ ।
ताहि लगावै पगविषे, खपच्चै दिउ बँधाइ ॥ ७ ॥
मुड़्डा टेढो जासुको, दुवौ पगन है जाइ ।
औषध कीजै एककी, जब नीको दरशाइ ॥ ८ ॥
दुसरे मुड्डा माहिमों, औपधं देउ लगाय ।
शालहोत्र मुनि यों कहै, तुरी नीक है जाय ॥ ९ ॥

अथ फ्कीगवायु लक्षण ।

सोरठा–पाँइ आगिले माँहि, कीतौ पछिले पाँइमें ।
लंग होत है आहि, दुर्बल वाजी होइ अरु ॥ १ ॥
जो तौ वरम लखाहि, रक्त तहाँते काढ़िये ।
तब औषध करु ताहि, वाजी होत अराम है ॥ २ ॥
दोहा–रहमानि गुखुरू गुर्च लें, गदापुरैना जानि ।
लीजै जोगिआरंड जर, ताकी बकली आनि ॥ १ ॥
देवदारु पुनि लीजिये, पाँच पाँच पल आनि ।
अँबिलतास पुनि सोंठि लै, अरु हडजुरी बखानि ॥ २ ॥
वकली झाड़ीकी जरहि, कुटकी वायविडंग ।
सगेवन पियवन बेलकी, लेइ जर यक संग ॥ ३ ॥

अन्य।

चौपाई–अजमोदा अरु कूट मँगावै। नागरमोथा हरदी लावै॥
बारह बारह भरि सब लीजै।गुर्च सोहागा टकाभरीजै॥
टका एक भरि खारी लीजै। बेसनके सँग घोड़े दीजै॥
सात रोज घोड़े मुख धरै। अश्वाको झोला सब हरै॥

अन्य।

चौपाई–सुरमा तासु देउ बुधिमाना। गर्म नीर करवावै पाना॥
चनाके सतुआ सानि खवावे। एक जून पानीको पावे॥
घोड़ा राखु बयारि न लागै। याहूते सब झोला भागै॥

अन्य।

चौपाई–सेर एक गूगुर मँगवावै। पाँच सेर गोदूधे लावै॥
गूगुर दूध मेलि पकावै। कम्मरके छत्रा छनवावै॥
चनाके आटा सेर पिसावै। वही दूध हेलुवा बनवावै॥
हेलुआकी गोली बनवावै। तोला चारि चारि करवावै॥
साँझ सकारे यक यक दीजै।बहुत भाँति टहलावा कीजै॥

अथ प्रबलवायु–लक्षण।

चौपाई–झाऊपत्र तमाल मँगावै। पुहकरमूल लोन लै आधे॥
गुड़ गोदूध मिलाय करीजै। पिंड बनाय अश्वको दीजै॥
याते रोग दूरि हो जाई। प्रबल वायुको करौ उपाई॥

अन्य।

चौ०–हरदी अरु जैफल मँगवावै।सम करि दिये बहुत सुख पावै॥

अथ अग्निवायुलक्षण व दवा।

दोहा–चिनगारी सम छिटिक अँग, निज तनु काटै जौन।
शालहोत्र ऐसी कहै, अग्नि वायु है तौन॥

दुवौ कटैआ लीजिये, अरु बहेर सुख दानि ।
डेढ डेढ पल औषधी, पृथक पृथक जिय जानि ॥४॥
सब औषध यक ठॉव करि, देइभाग करि ताहि ।
ताकी विधि अब कहत हौ, समुझि लेहु जियमाहि ॥५॥
चौ०–सात भाग आधेके कीजै । एक भाग तामेंको लीजै ॥
चारि सेर जल तामें डारै । आगीके ऊपर लै धारै ॥
दोहा–आध सेर बाकी रहै, लीजै तबै उतारि ।
हयको देहु पिआइ सो, अधिर कह्यो विचारि ॥ १ ॥
प्रातसमय यह दीजिये, सात दिवसलौ जानि ।
भाग जौन आधा रहै, ताको कहौ बखानि ॥ २ ॥
चौपाई–सात भाग ताहूके कीजै । मोठ महेला संगहि दीजै ॥
मध्य दिवसमें देहु खवाई । सतयें दिन नीको हो जाई ॥
दोहा–आमवात जाके अहै, रुधिर स्रवंत की जोइ ।
चक्रवात की तौ भई, तीनों नीके होइ ॥

अन्य ।

दोहा–रहसानि मौठी सोंठि लै, असगँध देशी आनि ।
पुनि अमलोनिया जरसहित, दश दश पल सब जानि १
पंद्रह पल अरु लीजिये, गुड़ पुरान मँगवाइ ।
गोघृत लीजै पाच पल, सबको लेउ मिलाइ ॥ २ ॥
दश दिन दोनो वखतमें, दीजै ताहि खवाइ ।
निश्चय जानो बात यह, वाइ छतीसउ जाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौ०-अंडा लेउ टिटिहिरीके पट । देउ अश्व नित जाइ रोग हट॥

अथ कपोतवायुलक्षण व दवा ।

दोहा-खाये सूजै अश्वके, जानौ ताहि कपोत ।
ताकी औषध कीजिये, रोग अरामी होत ॥

चौ०-रंडा बैगन मूल मँगावै । छालि बरेरा जरकी लावै ॥
वच त्रिकुटा अरु लौका लेई । घृतके साथ खानको देई ॥
तिलको तेल कपोत लगावै । महुआ पाता सेंकि बँधावै ॥

अन्य ।

चौ०-काराजीरी गेरू लेहू । सोंठि कचूर ताहिमें देहू ॥
गोबरके रस खरिल करावै । छिरकाके रस अग्नि पकावै॥
गरम होइ तब लेप करावै । मिटै कपोतवायु सुख पावै ॥

अन्य ।

चौ०-सुमन पलाश बफारा देवै । बांधौ ताहि कपोतै खोवै ॥

अन्य ।

चौ०-हाड़ मनुष्य शीशको लावै । पुंगीफल छोटे मँगवावै ॥
कँदयल मूल तुचाको लीजै । सकल पीसिकै लेप करीजै ॥

अन्य ।

दोहा-अमिली औ कचनारको, नीब पत्र सम लेउ ।
वासन मध्य पकायकै, सेंक कपोतै देउ ॥

चौ०-कारीजीर पीसि पानीमें । चुपरि कपोत देइ तेहि गरमें ॥

अथ कंपवायुलक्षण व दवा ।

दोहा-काँपै अंग तुरंगको, दाना घास न खाय ।
कंपवायु तेहि जानिये, जतन कियेते जाय ॥

वकली रुसेकी बहुरि, बीस टका भरि जानि ।
सबको भाग समान लै, आठ सेर जल आनि ॥ २ ॥
चौ०–सब औषध अधकचरा कीजे । जल मिलाइ परिपक्क करीजै
चौथा हींसा जल रहि जावै।तब उतारि मलि छानि धरावै
ताके हींसा तीनि करीजै।तीनि रोज नित प्रातहि दीजै ॥
याविधि चौदह दिन लगु करिये।ता पीछेविधियहअनुसरिये
पाव एक मेथी मँगवावै । मोठि सेर भरि मिलै पकावै ॥
दोहा–काढ़ा प्याइक दीजिये, यही महेला रोज ।
पानी औटा दीजिये, रोगक रहै न खोज ॥

अथ वातगुर्ग लक्षण ।

दोहा–गर्दन कन्धो जासुको, सूखि तुरीको जाइ ।
चमड़ा चपकै हाड़मों, वातगुर्ग सो आइ ॥ १ ॥
सूखति ताकी पीठि फिरि, पीड़ा अति अधिकाइ ।
सूखब ताको होइ कम, यह औषध करवाइ ॥ २ ॥
रंडतेल तिलतेल सम, दोऊ लेय मिलाइ ।
तामें थोड़ा डारिये, मैनशिलहिको लाइ ॥ ३ ॥
सूखेपर मलि देइ सो, रंडपात सेंकवाइ ।
बाँधै ऊपर ताहिके, शालहोत्र मत आइ ॥ ४ ॥
चौपाई–एकजगह जो सूजनि आवै।होइ अराम अश्व सुख पावै॥
जो अराम नहि देइ दिखाई।तौ ताको चीरौ गिरवाई ॥
चारो पाँइ उपर करि बाँधै।ता ऊपर फिरि यह विधि साधै
सूखि खाल जहँ देइ देखाई । ताकै पाँजर देउ चिराई ॥
आँगुर भरि तहँ घाउ करावै। रंडाकी चोंगलि बनवावै॥

तेहि लगाइ फिरि फूँकौ वाही । घाउमें हवा बहुत भरि जाही ॥
खाल पकरि चुटकीसे लेहू । भीतर हवा भरे तेहि देहू ॥
देउ दवाइ हाथते वाही । चमड़ा हड्डी छाँड़े जाही ॥
दफा एक दुइ तीनि करीजै । तेहिके उपर और विधि कीजै ॥
मिला मैनशिल तेल मँगाई । ऊपर लिखा जौन है भाई ॥
जखममाहि सो तेल भरीजै । सूखी जगह दाबि करि दीजै ॥
टाँका घाउमें देव देवाई ॥ फिरि घोड़ेको ठाढ़ कराई ॥
काठ तिपाई यक बनवाई । पेटतरे सो देइ गड़ाई ॥
घोड़ा फिरि बैठै नहि पावै । सोई जतन स्वामि करवावै ॥
जखम पास सूजत है ताके । निकरै पीवु चारियं वाके ॥
फिरि तापर मलहम लगवावै । होइ अराम अश्व सुख पावै
फेरि वताना देखे तेहिको । देइ मसाला वाजिव वहिको ॥

अथ ऊर्ध्ववायुलक्षण व दवा ।

दोहा—अंडकोश यक तरफको, ऊपरको चढ़ि जाइ ।
अंड चढ़ै जेहि तरफको, पाँव तौन लँगराइ ॥ १ ॥
नींब पात उसवायके, देइ बफारा ताहि ।
करै लँगोटा वस्त्रको, बाँधे भरता वाहि ॥ २ ॥

अन्य लक्षण ।

दोहा—यह औषध करि पाँच दिन, जो अराम नहि होइ ।
ताकी औषध कहत हौ, जानि लेहु अब सोइ ॥ १ ॥
अंड एक चढ़ि जाय सब, नहीं देखाई देइ ।
औषध कीजै ताहिकी, ताते नीको होइ ॥ २ ॥

अधिक रोग दरशाहि,फस्त तालुकी खोलिये।
जीभहि तारू माहि, तंग तरेकी रगविषे ॥ ८ ॥

अन्य लक्षण।

दोहा–जहरवात ज्यादा भये, खून जर्द परिजाइ।
जमत पेट तर आइकें, तुरी रोज दुवराइ ॥ १ ॥
कोई हयकी देहमें, छालासे परि जाँय।
कछुक दिननके बाद फिरि,पाकि सही ते जाँय ॥ २ ॥
मोथा हर्दीके सहित, विषखोपरा जर आनि।
जीरा लेउ सफेद पुनि, औ मद्दुरेठी जानि ॥ ३ ॥
डेढ डेढ़ तोले सबै, यवके आटा माहि।
ताहि खवावे सात दिन, जहरवात मिटि जाहि ॥ ४ ॥

अन्य लक्षण।

दोहा–पेडु जासु फूलो रहै, दाना घास न खाय।
शालहोत्र मत जानिकें, ताको कहौ उपाय ॥
सोरठा–दागे ताको आनि, तोंदी आगे जानियो।
आँगुर चारि बखानि, बीच दीजिये नाभिसों।
दोहा–सेंदुर दूध मदारको, तिलको तेल मँगाइ।
एक एक मासे सबै, तापर देउ मलाइ ॥ १ ॥
सूजनि तामें होति है, तीनि रोज लगु जानि।
फिरि वह कमती परति है, ता विधि कहौ बखानि ॥ २ ॥
सोरठा–पछना देउ देवाइ, चारौ तरफन दागके।
मुनिवर दियो बताय, पै नस्तर बारीखसों ॥

कुचिला पैसा एक भरि, तिनको लेउ भुँजाइ ।
गोली चना प्रमाणकी, ताको लेउ वनाइ ॥ २ ॥
दाना पाछे शामको, गोली एक खवाइ ।
यहि विधि दीजै नित्त प्रति,रोगनाश ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

अथ धड़कावायुलक्षण व दवा ।

दोहा–बहुत चलत है बाजि जो,की अति दौरो होइ ।
वात दबावति आनि तब, धड़का कहिये सोइ॥ १ ॥
धड़काकी पहिचानि यह, सुस्त वदन है जाहि ।
दिलमारे हफ्फत बहुत, सीना हालति आहि ॥ २ ॥
औषध कीजै जल्द तेहि,नाहिन यह गति होइ ।
करै सवारी ताहि जब,ऐसिय गति तब सोइ ॥ ३ ॥
ताजा लोहू छागको, सेर एक सो जानि ।
मिर्चै पीसै टका भरि, मिलवै तामें आनि ॥ ४ ॥
पाँच रोज यहि तरहसे, हयको देउ पिआइ ।
लीजे सोंठि छटाँक भरि,दूनो गुड़हि मिलाइ ॥ ५ ॥
हयको देउ खवाइ सो, तुरत नीक ह्वै जाइ ।
खोलै ताके फस्त जो, तुरी सही मरि जाइ ॥ ६ ॥

अथ जहरवात लक्षण व दवा ।

दोहा–हाथ पांव गर्दन सहित, सूजै हयकी आइ ।
चौहर जाकी नहि चलै, खाइ घास ना जाइ ॥ १ ॥
सूजि वियरि पानी बहै, लखि लचावके तौर ।
सो जलके लागे बढ़ै, जहरवात करि गौर ॥ २ ॥

दवा खानेकी ।

दोहा–स्याह जीर पुनि कूट लै, दुइ दुइ तोले जानि ।
एक मास पुनि ताहिको, रोज खवावो आनि ॥ १ ॥
नीव सँभारू पातको, देइ बफारा ताहि ।
मलहम ताहि लगाइये, पीबु जवै बहि जाहि ॥ २ ॥

अन्य लेप ।

चौ०–रेहू हरदी कनिक मँगावै । लोनु आँविली सम पिसवावै॥
पानी घोरि गर्म करवावै । तीनि दई सो लेप लगावै ॥
ताके पाँछे मलहम करै । याते जहरवात सब हरै ॥

अन्य ।

चौ०–नीलाथोथा अरु कामीला । आध पाव लै दूनों तौला ॥
हरदी पीत रार मँगवाई । सेर सेरकी वजन कराई ॥
दुइसेर तिलको तेल मँगावै । ताहि बरावरि साबुन लावै॥
पीसि छानिकै मलहम करै । पावकमध्य पक्कै धरै ॥
घायन ऊपर याको चुपरै । तुरतै जहरवातको हरै ॥

अन्य ।

चौ०–काराजीरी औ बंडारा । लेप करौ रुज जैहै मारा ॥
या सम और लेप नहिं होई । सूजनि वरम जाइ सब खोई ॥

अन्य ।

चौ०–मिर्च कसौजी अदरख पाना । चारौ करौ एक परमाना ॥
सात रोज घोड़े मुख धरै । जहरावत विषवेली हरै ॥

अन्य ।

दोहा–सिंगरफ सोंठी शंखिया, बीरबहूटी आनु ।
जवाखार माजूफलै, समुदखार सो जानु ॥

हरदी-पिपरामूल अरु, कुटकी सोंठि मँगाइ ।
भाँग भेलावां मिर्चयुत, सबै समान कराइ ॥ ३ ॥
औषध तोले पट सबै, सबको लेउ पिसाय ।
दाना पाछे ताहिको, हयको देउ खवाय ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–धँमिरा पात मँगाइये, अमरबेलि मँगाइ ।
लेउ सँभालूपात अरु, पात धतूरा लाइ ॥ १ ॥
लीजै सबको भाग सम, जलमें लेउ पकाइ ।
सहत सहत हय पीठि पर, ताको देउ धराइ ॥ २ ॥
चारि घरी लग सेंकिये, याही विधिसों जानि ।
खुलति देह तब वाजिकी, श्रीधर कहो बखानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–जर लौंकाकी लीजिये, बकली तासु मँगाइ ।
निरगुंडी औ हींग लै, बच अरु सोंठि मिलाय ॥ १ ॥
लै पलाश पीपरि सहित, सैंधव वाइविडंग ।
चारि चारि मासे सबै, जानो सहित उमंग ॥ २ ॥
सेर एक लै गाइ घिउ, औषध सबै मिलाय ।
हयको दीजै तीनि दिन, रोग दूरि ह्वै जाय ॥ ३ ॥
सेंकनकी विधि जो कही, सेंक वही विधि देइ ।
शालहोत्र मुनि यों कहै, वाजी नीको लेइ ॥ ४ ॥

अन्य जहरवात लक्षण ।

दोहा–बलगमते जो होत है, जहरवात तनु आइ ।
तासु बताने माहि सो, रंग श्वेत दरशाइ ॥ १ ॥

चौ०-लेउ करनफल देउ मिलाई। अदरखरसमें पीसि बनाई ॥
तीनि तीनि मासे सब लीजै। गोली मासे यक यक कीजै॥
यक गोली नित प्रात खवावै। जहरबातको खोज नशावै॥

अथ जहररोगलक्षण व दवा।

दोहा-मुखते बहु लारै गिरै, दृगन नीर अधिकार।
जहर रोग सो जानियो, शालहोत्र मत सार॥
सोरठा-पिपरी राई सोंठि, हरदी मिरच मिलाय सम।
रोग डारि है खोंटि, पिंडी करि दीजै तुरय॥

बफारा।

दल अंडाको आनि, और खिरहरीको लियो।
अरु अहरा परमानि, याहीते सेंकौ सुघर॥

अन्य।

चौ०-सुमिलखार सिंगरफ लै आवै। अकरकरा औ मिर्च मँगावै
मुर्दाशख पापरी खारा। तोला चारि चारि सब डारा॥
दुइ तोला तूतिया प्रमाना। पीसि छानि अदरखरस साना
ताकी गोली करौ विधाना। रत्ती चारि भारि है परमाना॥
याते रोग जहरको खोइ। बुधजन जतन करै जो कोई॥

अन्य।

चौ०-तोला भारि पारा मँगवावै। गुड़ पुरान दुइ तोला लावै॥
रहसनि अजवाइनिको लीजै। दुइ दुइ तोला वजन करीजै॥
पीसि छानि गोली षट करै। तीनि रोज मुखमें सो धरै॥

अन्य।

चौ०-रेंडी स्याह मिर्च पिसवावै। बाती करि इंद्री चल्वावै॥

सोंठि पीपरामुल ले, कर्ष कर्ष भरि लेउ ।
छालि सहीजन कूटिके, ताहूको रस देउ ॥ ३ ॥
लघु अँवरा परमानकी, गोली लेउ बनाय ।
प्रात साँझ यक यक वही, हयको देउ खवाय ॥ ४ ॥
जहरवात नाशै सही, मंद अग्नि मिटि जाइ ।
भोजनपर अति रुचि बढ़ै, शालहोत्र मत आइ ॥ ५ ॥

अन्य लक्षण व दवा ।

दोहा–शोथ होइ जो देहमें, औ गर्दनमें जानि ।
जकरि जाय जो वाजिकी, जहरवात सो मानि ॥ १ ॥
हीग सोंठि अजमोद ले, कारजिरी आनि ।
भाग बरोबरि कीजिये, अजवायनि अरु जानि ॥ २ ॥
जलसों पीसै औषधी, लीजै तप्त कराइ ।
शोथ होय जहँ अंगमें, दीजै लेप कराइ ॥ ३ ॥
शोथ सकल मिटि जाइ जब, तबकी यह विधि आहि ।
रुधिर काढ़िये ताहिको, छातीकी रगमाहि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–वातरोग है जाहि तनु, जहरवात अरु होइ ।
औषध ताकी कहत हौं, शालहोत्र मत जोइ ॥ १
मेथी लीजे सेर यक, ता सम हर्र बखानि ।
पात बकेना लेउ पुनि, सेर अढ़ाई आनि
सज्जी लीजे सेर भरि, सबको लेउ
भेड़ीमूत्र मिलायके, दीजै तेहि

अन्य ।

चौ०—जवाखार अरु रेवतचीनी । धेला धेलाभरि करि लीनी ॥
चीनी आध पावमें घोरै । हयको देय सकल दुख छोरै॥

अन्य ।

चौ०—चागोरीको साग मँगावे । चीनी मिले अश्व मुख नावे ॥
खुलै पेशाब रोगको हरै । शालहोत्र या विधि उच्चरै ॥

अन्य ।

चौ०—नागोरी असगंध ले आवै । दुकरा भारि घृतमाहिं सनावै ॥
याके दिये जहर हरि जावै । शालहोत्र यह वचन सुनावै॥

अथ जहरदौरा रोग लक्षण व दवा ।

दोहा—मुख मूजै गिलटी परै, देहभरमें जानु ।
कोई कोई तुरँगके, छाला परै सो मानु ॥
चौ०—बहुत कठिन रुज याको जानौ । दवा करौ जलदी बुधिमानौ
सेर एक दल तूत मँगावैं । एक छटांक मिरच मिलवावे॥
दोहा—चनाके आटामें मिलै, पिंड बनाय खवाय ।
तीनि चारि दिन दीजिये, तुरी नीक ह्वै जाय ॥
चौ०—जो तोरई बंडार कहावै । मुख सूजनि पर पीसि लगावै॥
दोहा—जौन बतीसा है लिखा, मानुष खुपरी बाल ।
तौल मसाला दीजिये, तुरी नीक ह्वै हाल ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत अनेक वातव्याधिवर्णन नामक दशम अध्याय ॥ १० ॥

गाड़ै ताको सात दिन, लीजे फिरि निकसाइ ।
पैसा भरि तेहि अश्वको, दीजे ताहि खवाइ ॥ ४ ॥
मंद आगि अरु वाइ पुनि, जहरवात हरि जाइ ।
औषधि दीजे सात दिन, हरिवल देत बढाइ ॥ ५ ॥

अन्य लक्षण व दवा ।

दो०—बरम पेटतर होइ जो, जहरवात सो आइ ।
सवक कहत है ताहिको, सो हयको दुखदाइ ॥ १ ॥
छाती अरु गर्दन विषे, तहाँ बरम जो होइ ।
सबकी औषधि एक है, शालहोत्र मत सोइ ॥ २ ॥
जौलौं थोरी बरम है, वाजिके तनु माहि ।
तौलौं यह औषध करै, शालहोत्र मत आहि ॥ ३ ॥
गोवर लीजे महिषको, महिषीमूत्र मिलाइ ।
डारे खारी लोन अरु, लीजे ताहि पकाइ ॥ ४ ॥
लेप कीजिये ताहिको, बरम दूरि है जाइ ।
बरम नहीं यासों मिटै, अरु इजादि दरशाइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

दो०—कारीजीरी पीसि जल, लीजे तप्त कराइ ।
लेप कीजिये ताहिको, बरम दूरि है जाइ ॥

अन्य ।

दो०—भरता बाँधै नीवको, बरम नरम है जाय ।
पछना दैके ताहि पर, दीजे जहर गिराइ ॥ १ ॥
भरता बाँधत जाइ फिरि, जखम साफ दरशाइ ।
तब तापर मल्हम धरै, जखम नीक है जाय ॥ २ ॥



अथ चाँदनी मारनेकी विधि।

दोहा-करते हयकै माथलौं, हनै चपेटा जानि ।
आँखि पलटि जावै जवै, करै मर्ज पहिचानि ॥

चौ०-रोग चाँदनी लक्षण भाखौ।जो निदान मनमें गुणि राखौ॥
मारै हयको आकसमातै । देर न लागै दाना खातै ॥
घाव अंगमें जाके होई । हनै चाँदनी ताका सोइ ॥
प्रथम रोग मस्तकमें आवै।अग अंगमें फिरि घुसि जावै॥
हाथ पाँव नहि झुकै झुकाई । और पूँछ लकुटी हो जाई॥
उदर कठोर बहुत ह्वै जावै । अँगुरी नाहीं गड़ै गड़ावै ॥
ठाढ रहै महिमें नाहँ परै । दाना घास सबै परिहरै ॥
पाच सात दिन ठाढ़ो रहै । ता पाछे हय मृत्युइ गहै ॥

दवा।

चौ०-महिषी गोबर लै टक एका। गुड़ पुरान लै लून विवेका॥
चनाके आटा संग खवाई । रोग चांदनी दूरि कराई ॥

अन्य।

चौ०-मेथी तीनि टका भरि लीजे। सम करि लहसुन तामें दीजे॥
पिपरी मिरच सोंठि अरु पाना।छालि सहींजनकी सम आना
कंज मैनफर सन यक करौ । पैसा भरि गोली अनुसरौ ॥
प्रात सांझ घोड़ेको दीजै । रोग घटै जो औषध कीजै ॥

अन्य।

चौ०-श्याम चर्म अजयाको लावै । घोड़ाके मुख टाप बँधावै ॥

दोहा–खुसियारी यक होति है, तृण ऊपर सो जानि ।
सहित चिरैता लीजिये, श्रीधर कह्यो वखानि ॥ १ ॥
पैसा पैसा भरि सबै, औषध लेउ मँगाय ।
पॉच टका भरि पीपरी, तामें देउ मिलाय ॥ २ ॥
लेउ धतूरे फल बहुरि, टका चारि भरि आनि ।
पाँच पसेरी लीजिये, मेषमूत्र यह जानि ॥ ३ ॥
यक बरतनमें सो भरौ, औषध सबै मिलाइ ।
सो चढ़वावै अग्निपर, लीजै ताहि चुराइ ॥ ४ ॥
मूत्र सबै जरिजाइ जब, दीजै अग्नि बुझाइ ।
औषध ठंढी होइ जब, लीजै ताहि पिसाइ ॥ ५ ॥
दुइ दुइ पलकी बाँधिये, यक यक गोली जानि ।
साँझ सकारे दीजिये, यक यक गोली आनि ॥ ६ ॥
रोग घटै अरु बल बढ़ै, क्षुधा तासु अधिकाइ ।
औषध दीजै सात दिन, जहरवात मिटि जाइ ॥ ७ ॥

अन्य लक्षण व दवा ।

दोहा–कर्णमूलके भीतरै, जाके सूजनि होइ ।
जहरवात तेहि जानिये शालहोत्र मत सोइ ॥
चौ०–तोला एक मुसब्बर लीजै । पोस्तासुत मासे भरि दीजै ॥
आँबाहरादि रजनि पुनि लेहू । छा छा मासे दोऊ देहू ॥
दोहा–जलमें ताको पीसिकै, सीर गरम करवाइ ।
सो लै हयके कानपर, दीजे ताहि लगाइ ॥

अन्य ।

दोहा–सैंधव साबुन लीजिये, छिरका काटि मँगाइ ।
ताकी पोटरी बाँधिकै, दीजै कान सेंकाइ ॥ १

अन्य।

चौ०—लहसुन हींग सोहागा आनी। कारीजीरी औ अजवानी॥
पिपरी मिर्चं सोंठि भरंगी। सज्जी सोंचर सेंधव संगी॥
सिघजराव भस्म करि लेहु। तब औषधके माहीं देहु॥

अन्य।

चौपाई—मूल जवासा औ ले रूसा। पात कटैया और अतीसा॥
विषखपरा औ अदरख पाना।गोली करु औरा परमाना॥
भुने चनाके आटा देहू। यक दुइ पहर बंद करि लेहू॥
पानी तस अधिक करवाई। शीतल करिकै देउ पिआई॥

अन्य।

चौपाई—अर्क धतूर सेंहुड़ा जारी। अजवाइन हरदी ले डारी॥
घोड़ेको यह देउ खवाई। जाइ चाँदनी रोग नशाई॥

अन्य।

चौपाई—अर्क धतूर सेंहुड़ा जारी। आँवाराख छानिकै धारी॥
सब एकत्र करि अंग मलावै। बंद जगहमें ताहि बँधावै॥

अन्य।

दोहा—जबलौ मुख बगरो रहै, तब यह दवा बनाय।
एक मुर्ग लै मारिये, बनचै यही उपाय॥ १॥
चोंच चरण तिहि काटिकै, धुरवै जलमें तासु।
काढ़ि तिन्है कूटै बहुत, सहित आस्थि अरु मासु॥ २॥
मिलै महेला सेर दो, या सब लै यक सेर।
आध पाव काली मिरच, मिलै तुरँग मुख गेर॥ ३॥
दिन चालिस शामो सुबह, देइ गरम जल प्याय।
लै तुरंग बाँधै तहाँ, जहँ कहुँ पवन न जाय॥ ४॥

पाकि जाइ आमास जो, दीजै ताको फारि।
होत बिमारी कठिन सो, औषध करैं विचारि॥ ३ ॥

अथ सरदी व गरमी दोनोंके जहरवातोंकी दवा।

दोहा-ईसबंद पीपरि मिरच, हर्दी बायबिडंग।
अजवायनि घोड़बच बहुरि, कारीजीरी संग॥ १ ॥
सज्जी कुटकी सोंठि पुनि, राई गूगुर आन।
खील सोहागाकी बहुरि, पिपरामूल बखान॥ २ ॥

सोरठा-साँभरि सोंचर आनि, चारि चारि तोठे सबै।
सेर सेर पै जानि, लहसुन और पिआजु पुनि॥

दोहा-नींब बकैना सहिजना, और कसौजी जानि।
पाती लीजे सबनकी, चारि चारि पल आनि॥ १ ॥
सबको कूटै एकमों, जलमें लेइ पकाइ।
गोली ताकी बाँधिये, फेरि शराब मिलाय॥ २ ॥
तीनि तीनि पलकी सबै, गोली बाँधै ताहि।
ताहि खवावै नित्यप्रति, दाना दीजै नाहि॥ ३ ॥
लेइ पिसान मसूरको, सेर एक कहि ताहि।
ताहि शराब मिलाइये, रोज खवावत जाहि॥ ४ ॥

अन्य लक्षण व दवा।

दोहा-जाकी सब देहीविषे, गूँथी सी परिजाय।
गूँथिनते लोहू चलै, जहरवात सो आय॥

सोरठा-नीबूके रसमाहिं, लजहि मिलावै आनिके।
ताको लेप कराय, औषध दीजै खानको॥

अन्य।

दोहा-कीतौ मारे कागको, चरण चोंच लै लेइ।
गोहूँमें की मापमें, पकै तुरँगको देइ॥

अन्य।

दोहा-जारि खोपरी मनुजकी, ले छटाँक परमान।
और कमीला आठ भरि, इता मिलावौ मान॥ १॥
आधपाव गूगुल मिलै, काले तिल यकपाव।
डारि सोहागा टंक पट, सब लै बटी बनाव॥ २॥
वजन अश्वको दीजिये, एक छटाँक प्रमान।
पवन न लागै अंगमें, बचै तु भाग्य अमान॥ ३॥

अन्य।

दोहा-जो रद बैठावे तुरँग, ताको यही उपाय।
तौ त्रियको ऋतुवसन जो, लीजै बहुत मँगाय॥ १॥
नीर सेर दशमें चुरै, पट वाहीमें डारि।
आधो जरि जावै तबै, लीजै ताहि उतारि॥ २॥
नाख़ु दीजिये अश्वको, पांच दिवस यहि रीति।
दाना पानी बंद करि, बचि है अश्व प्रतीति॥ ३॥

अन्य।

चौपाई-पल्ली एक पकरि लै आवै। पूंछ मूँड़ ताको कटवावै॥
देह समूची आटा सानी। घोड़ा खाय नीक सो जानी॥
दोहा-औषध कीजै जो कही, लाग न आवै कोय।
दधिसुत रविसुतको हनै, बहुरि नवीनो होय॥

दोहा–सैंधव अजवाइनि सहित, बायविडंग मँगाय ।
पाँच पाँच तोले सबै, तिनको लेउ पिसाय ॥ १ ॥
गोघृत पैसा पाँच भरि, तामें देउ मिलाइ ।
यह औषध दिन सातमें, दीजे सकल खवाइ ॥ २ ॥

अन्य लक्षण व दवा ।

दोहा–सूजनि ह्वैके प्रथम ही, फूटि फेर जो जाइ ।
जखम नीक सो होइ नहिं, बाजी अति दुबराइ ॥ १ ॥
कारी जीरी मिर्च पुनि, अरु बंडार मँगाय ।
जीरा लेउ सफेद पुनि, कुटकी सौंफ मिलाय ॥ २ ॥
अरु घोड़बचको लीजिये, भाग बरोबरि आन ।
तीनि सेर साढ़े सबै, एती औषधि जान ॥ ३ ॥
खुरासान अजवाइनी, सज्जी बायविडंग ।
पाव पाव सब लीजिये, औरौ कूट प्रसंग ॥ ४ ॥
सबको पीसि मिलाइकै, शालहोत्र मत जानि ।
साँझ सकारे दीजिये, एक एक पल आनि ॥ ५ ॥

अन्य लक्षण व दवा ।

दोहा–चौंहै जाकी नाहि चलै, जहरवात सो आहि ।
या करु सूजनि होति है, जानि लेहु मनमाहि ॥ १ ॥
हर्रे चिरता सोंठि लै, कुटकी पीपरि आनि ।
रेवतचीनी लेउ पुनि, नागरमोथा जानि ॥ २ ॥
गूदी लीजै बेलकी, अरु अजमोद मँगाइ ।
सेर एक जल डारिकै, सबको लेउ पकाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौ०–लहसुन हींग सोहागा आनी। कारीजीरी औ अजवानी॥
पिपरी मिर्चें सोंठि भरंगी। सज्जी सोंचर सैंधव संगी॥
सिंघजराव भस्म करि लेहू। तव औषधके माहीं देहू॥

अन्य ।

चौपाई–मूल जवासा औ ले रूसा। पात कटैया और अतीसा
विषखपरा औ अदरख पाना। गोली करु औरा परमाना॥
भुने चनाके आटा देहू। यक दुइ पहर बंद करि लेहू॥
पानी तप्त अधिक करवाई। शीतल करिकै देउ पिआई॥

अन्य ।

चौपाई–अर्क धतूर सेंहुड़ा जारी। अजवाइन हरदी ले डारी॥
घोड़ेको यह देउ खवाई। जाइ चाँदनी रोग नशाई॥

अन्य ।

चौपाई–अर्क धतूर सेंहुड़ा जारी। आँवाराख छानिकै धारी॥
सब एकत्र करि अंग मलावै। बंद जगहमें ताहि बँधावै॥

अन्य ।

दोहा–जबलौ मुख बगरो रहै, तब यह दवा बनाय।
एक मुर्ग लै मारिये, बनवै यही उपाय॥ १॥
चोंच चरण तिहि काटिकै, चुरवै जलमें तासु।
काढ़ि तिन्है कूटै बहुत, सहित आस्थि अरु मासु॥ २॥
मिलै महेला सेर दो, या सब लै यक सेर।
आध पाव काली मिरच, मिलै तुरँग मुख गेर॥ ३॥
दिन चालिस शामौ सुबह, देइ गरम जल प्याय।
लै तुरंग बाँधै तहाँ, जहँ कहुँ पवन न जाय॥ ४॥

सोरठा–आधा जल जरि जाय, ताहि उतारि मिलाइये।
ताको लेहु छनाय, कवि श्रीधर यह जानिये ॥ १ ॥
वंशलोचनहि लाइ, टका एक भरि तौलिकै।
तामें देउ मिलाइ, ताहि पिआवे वाजिको ॥ २ ॥
लीजै चना भुँजाइ, दाना दीजै ताहिको।
फेरत नितप्रति जाइ, दुहूँ बखतमों दीजिये ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा–भूँजे चना पिसातु लै, ता सम मिर्च मिलाय।
दीजै हयको पाउ भरि, तहूँ चौह खुलि जाय ॥

अन्य खूनी जहरवातके लक्षण।

चौपाई–असवारी हयको बहु परै। की अति बोझा ता पर धरै॥
की गरमीका मौसम होई। जहरवात वाजीके जोई ॥
दोहा–खूनहि सूजनि खाति है, होशु रहै नहिं ताहि।
हफ्फै अरु गिरि गिरि परै, जहरवात सो आहि ॥ १ ॥
खाली ताको फेरिये, जब ठंढो है जाय।
शीतोदकसों धोइकै, शीतल नीर पिआय ॥ २ ॥
साँभरि लोनु मिलाइकै, यवके आटामाहि।
आध पाव मौताज करि, हयको दीजै ताहि ॥ ३ ॥
फिरि ताको कैजा करै, जलसों छिरकत जाइ।
शालहोत्र मुनि कहत है, याही जतन कराइ ॥ ४ ॥
सोरठा–बीति घरी भरि जाइ, कैजा खोलै ताहिकी।
हरी दूबको लाइ, ताहि खवावै वाजिको ॥ १ ॥

अन्य।

दोह-कीतौ मारै कागको, चरण चोंच लै लेइ।
गोहूँमें की मापमें, पकै तुरँगको देइ ॥

अन्य।

दोहा-जारि खोपरी मनुजकी, ले छटाँक परमान।
और कमीला आठ भरि, इता भिलावाँ मान ॥ १ ॥
आधपाव गूगुरु मिलै, काले तिल यकपाव।
डारि सोहागा टंक पट, सब लै बटी बनाव ॥ २ ॥
वजन अश्वको दीजिये, एक छटाँक प्रमान।
पवन न लागै अंगमें, बचै तु भाग्य अमान ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा-जो रद बैठावे तुरँग, ताको यही उपाय।
तौ त्रियको ऋतुवसन जो, लीजै बहुत मँगाय ॥ १ ॥
नीर सेर दशमें चुरै, पट वाहीमें डारि।
आधो जरि जावै तबै, लीजै ताहि उतारि ॥ २ ॥
नाह्नु दीजिये अश्वको, पांच दिवस यहि रीति।
दाना पानी बंद करि, बचि है अश्व प्रतीति ॥ ३ ॥

अन्य।

चौपाई-पल्ली एक पकरि ले आवै। पूंछ मूँड़ ताको कटवावै ॥
देह समूची आटा सानी। घोड़ा खाय नीक सो जानी ॥
दोहा-औषध कीजै जो कही, लाग न आवै कोय।
दधिसुत रविसुतको हनै, बहुरि नवीनो होय ॥

तुरी मिजाजहि माहि, जानै गर्मी बहुत है।
रंग बतावै काहि, सुर्ख होइ अति तासुको ॥ २ ॥
दोहा–होइ नितैमति सुस्त सो, भूँख रहै नहिं ताहि।
यहि विधि ताकी औषधी, शालहोत्रमत आहि ॥

अन्य।

दोहा–ताकी तारू जीभमों, दीजै फस्त खुलाइ।
ताहि तुरीको दीजिये, या औषधको लाइ ॥

दवा।

दोहा–हर्र बहेरा आँवरा, और सहतरा आनि।
सौंफ सहित सब लीजिये, दुइ दुइ तोले जानि ॥
सोरठा–यवको आटा लाइ, सबको पीसि मिलाइकै।
हयको देउ खवाय, पानीके सम जानिये ॥

अन्य लक्षण।

सोरठा–खून सूखतो जाइ, खबरि तासुकी लेइ नहिं।
खून तासु है जाइ, पानीके सम जानिये ॥
दोहा–बरम होति है ताहिते, वाजीके तनुमाहि।
जो तौ सूजनि होइ नहिं, तौ यह गति है जाहि ॥ १ ॥
पेडु तासु फूला रहै, सुस्ती अति सरसाइ।
औरौ मन मारे रहै, भूँख तासु घटि जाइ ॥ २ ॥
जीरा काला सहतरा, अरु अजमोद मँगाइ।
पात कसौजी सौंफ पुनि, एक एक पल लाइ ॥ ३ ॥
सोरठा–सबको पीसि मिलाय, दाना पाछे साँझको।
हयको देउ खवाय, दाना आधो दीजिये ॥ १ ॥

मंत्र—चंडी चडी तू परचंडी आवत चोट करै उवखंडी
[य राखु ॥ दिया राखु थून्हि बडेरा राखु दोहाई हनुमत वीर
[की अगस्त्य मुनिकी फट् स्वाहा ॥
[चौ]पाई—यहि मंत्र दिन तीनि जुझारै । होइ अलप तबहूं ना मारै ॥

अन्य मत लक्षण व दवा ।

दोहा—हवा एक है वात सर, हयको पकरत आइ ।
ताके दोइ प्रकार है, सो अब देत बताइ ॥ १ ॥
अगिले धड़में होइ जो, ताहि चाँदनी जानि ।
पछिले धड़में होइ सो, वात कैसरा मानि ॥ २ ॥
होति आइ है बाइ वह, हयकी देहीं–माहिं ।
अंग शिथिल ह्वै जात है, ये लक्षण दरशाहिं ॥ ३ ॥
चाँदनि मारे जाहिको, बंद तासु मुख होइ ।
दाना घास न खाइ सो, ऐसे लक्षण जोइ ॥ ४ ॥
रंग बतानेको जरद, स्याही लीन्हे होइ ।
दूनों बाइन माँझमें, लेइ बताना जोइ ॥ ५ ॥
दूनौंकी ये औषधें, है जानौ सो ताहि ।
ह असाध्य यह जानियो, दवा तुरत करु वाहि ॥ ६ ॥
बाँधे बन्द मकानमें, हवा जहाँ नहि जाय ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हीं जतन बताय ॥ ७ ॥

खुलन आँखि नहिं पावई,अस पोषित करि देइ।
ता पीछे यह औषधी, सो वहि हयको देइ॥ २ ॥

दवा खानेकी।

दोहा—तैल रेंडको लीजिये, पाव एक मँगवाइ।
तातें दूनों तैल तिल, दोऊ देइ पिआइ॥

अन्य।

चौ०—अजवाइनि अजमोद मँगावै। सोंठि पीपरामूल मिलावै॥
कुटकी हरदि भेलावाँ लेई। और कैफरा तामें देई॥
खुरासानि अजवाइनि लीजै। अरु धुरसारी तामें दीजै॥
कालेश्वर घोड़वच लै आवे। औरौ हरदी दारु मिलावै॥

दोहा—देवदारु गुग्गुल सहित, कारीजीरी आनि।
असगँध अरु पीपरि कही, आँबाहरदी जानि॥ १ ॥
रेंडतेलमें सानिये, अरु कमरा छनवाय।
आध पाव मौताज यक, हयको देउ खवाय॥ २ ॥
याहि विधि दीजै सात दिन, रोग दूरि हो जाइ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हों दवा बताइ॥ ३ ॥

चौ०—मेथी पक्के दुइ सेर लावै। ताहि महेला खूब पकावै॥
पानी लेउ गरम करवाई। ठंढा करिकै देउ पिआई॥

अन्य।

दोहा—नागौरी असगँध सहित, अरु अजवानी जानि।
ईसबंद अजमोद लै, कुटकी सोंठि बखानि॥ १ ॥
मेथी सोवा बीज लै, हरदी गूगुर आनि।
कारीजीरी लै भाग बरोबरि जानि॥ २ ॥

की बैठे की फूटि बहाई। या विधि दवा करो मन लाई ॥
जब फूटै विधि यहै करावै। याही पानीमें धुलवावै ॥
जब लग घाव साफ नहि पावै। तबलग दवा यहै करवावै॥
पीछेते मलहमको चुपरै। फीहा धरै पीर सब हरै ॥

अन्य।

चौ०-खाँसी आगे कुब्बक निकसै। ताहि बफारा दै सुख दरसै॥
नीब बकायन मुंडी बाँसा। याहि बफारा ते रुज नासा॥

अन्य।

दोहा-रेंडीतेल मँगाइकै, थोरेमें चुपराय।
की बैठी की फूटि बहि, करौ जतन यह आय॥

अथ कनारका मसाला।

चौ०-मेथी साँभरि नमक मँगावै। टका टका भरि लै तौलावै ॥
राई जौन बनरसी भाई। आँबाहरदी ताहि मिलाई ॥
अजवाइनि करु तोला तोला। एक छटांक पिआजहि मेला॥
लेउ कटैया गोल फलनकी। आध पाउ तोलाइ वजनकी॥
सकल पीसि यक पिंड बनावै। चनाके आटा सानि खवावै॥
एक खुराक लिखी यह जानौ। पाच सात दिनलौ करि मानौ

अथ चपकी बीमारीका लक्षण व दवा।

दोहा-बाजी गलफर माहिमें, वक्ष जहां पर आइ।
लगत दहाना आहि जो, फूलि कछु सो जाइ॥ १ ॥
लीजै साँभरि लोनकी, दो पुटरी करवाइ।
कर्छोनें घिउ डारिकै, दीजै आगि धराइ ॥ २ ॥

सबै औपधी लीजिये, अध अध पाव कराइ ।
भूँजो आटा मोठको, तामें लेउ मिलाइ ॥ ३ ॥
औपधि पैसा पाँच भरि, हयको देउ खवाइ ।
देउ दवाई अश्वको, साँझ समयमें लाइ ॥ ४ ॥
दाना दीजै ताहिको, अग्निमाहिं पंकवाय ।
पानी दीजे गर्म करि, शालहोत्र मत आय ॥ ५ ॥
चौ०-नकछिकनी तोला भरि लीजै।दमरी भरि हरदी तिहि दीजै॥
अंडा मुरगीकेर मँगावै । तामें औषध दुओ मिलावै ॥
दोहा-भूँजे आटा मोटको, तामें देइ मिलाइ ।
पानी पीछे अश्वको, याको देउ खवाइ ॥ १ ॥
जबतक नीको होइ नहिं, दिये औषधी जाइ ।
वात कैसरा कठिन है, मृत्यु समान लखाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-मेथी लहसुन पीपरी, मिरच सोंठि अरु पान ।
छालि सहीजनकी कही, कंज मैनफल आन ॥ १ ॥
लीजै सबको भाग सम, कूटै कपरा छानि ।
सात टका भरि औषधी, गोली चौदह जानि ॥२॥
साँझ सवेरे दीजिये, यक यक गोली आनि ।
भूख बढ़ै अति ताहिकी, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-अजवाइनि पीपरि मिरच, कारा जीरा आनि ।
सैंधव सोंचरु हींग पुनि, सोंठि सोहागा जानि ॥१॥

तामें पोटरि गरम करि, सेंकि वक्षको देइ।
या विधि सेंकै पाच दिन, नीको वाजी लेइ ॥ ३ ॥
घरी तीनि अरु चारितक. सेंकि खूब तिहि देइ।
शालहोत्र मत जानिकै, वक्ष नीक तिहि लेइ ॥ ४ ॥

अन्य।

दोहा–गुड़ अरु चून मिलाइकै, दीजै ताहि लगाइ।
सात दिनाके भीतरैं, वक्ष नीक ह्वै जाइ॥

अन्य।

दोहा–हरदी पीसिक लीजिये, और मुसब्बर लाइ।
दुवौ बरोबरि लीजिये, देहु अफीम मिलाइ ॥ १ ॥
मानुष मूत्र पकाइकै, लेप वक्ष करवाय।
सात दिवस तक कीजिये, रोग नीक ह्वै जाय ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा–बाँसक डंडा लाइकै, बाँधै नुक्ता माहि।
घोड़ाकी पेशाबसे, वक्ष धुवावै ताहि ॥ १ ॥
समुदखार हरतार लै, और निसादर लाइ।
सूखा पीसै ताहिको, चप पर देइ लगाइ ॥ २ ॥
ताहि लगावै दुहु बखत, दुइ दिन लग यह जानि।
लेप लगावै ताहि पर, सो अब देत बखानि ॥ ३ ॥
भातमाहिं घिउ डारिकै, मलिकै देइ लगाइ।
चपके ऊपर वाछमो, दीजै ताहि लगाइ ॥ ४ ॥
छूरा तेज मँगाइकै, दीजै ताहि चिराइ।
फेरि लगावै यह दवा, जाते रोग नशाइ ॥ ५ ॥

अदरख पान जवास जर, विपखोपरा मँगवाय।
महिषी शृंग जरायके, दीजे ताहि मिलाय ॥ २ ॥
कूटै अति वारीक करि, गोली लेइ बँधाइ।
अँवरा सम गोली करै, भाग समान कराइ ॥ ३ ॥
चौ०-भूँजो आटा यवको लावै। गोली तामें एक मिलावै ॥
शाम सवेरे देइ खवाई। यक यक गोली ताहि बताई॥
दोहा-जहाँ वायु नहिं लागई, बाँधे हयको लाय।
गर्म नीर करवाइकै, तिहि सो देउ पिआय ॥

अन्य।

दोहा-टाट कि चमड़ा मुर्गको, बाँधै आँखिन माहिं।
कीतौ जंबू खाल लै, करु अँधियारी ताहि ॥

अथ जोलाम कनारैके लक्षण व दवा।

दोहा-नाक वहै हर्फै अधिक, दाना घास न खाय।
सो तुरंगको जानिये, रोग कनार बताय ॥
चौ०-जाहि कनार होइ अति बिगरो।दुख देवै अश्वाको सगरो ॥
याहीते कुम्भक अनुसारै।या विधि औषध ताहि विचारै॥

नस्य।

चौ०-भटकटाय फलको लै आवै। अजैदूधमें मलि छनवावै ॥
वाही दूधक दीजे नासू। साँझ सकारे दुइ दिन तासू ॥
श्लेष्मा जब सब झरि झरि परै।तब खानेकी औषध करै ॥

दवा खानेकी।

चौ०-हरदी सैंधव साँभरि आनै। टका टका भरि तीनों जानै॥
चारि टका भरि अदरख लावै।पाव सेर गुड़ आनि मिलावै

अथ मुख आवनेकी दवा।

दोहा–जा बाजीकी जीभमें, छालेसे परिजाय।
ताकी औषध यह करै, रोग दूरि ह्वै जाय ॥ १ ॥
तारूकी रग खोलिये, और जीभ रग जानि।
ता पीछे यह औषधी, कीजै ताकी आनि ॥ २ ॥
चौ०–बड़ी इलाची लेउ मँगाई। ता सम दुधिआ खैरु मिलाई।
ताको पीसि मिही अति कीजै। कहौं तासु विधि सो सुनि लीजै
दोहा–डारै बाजी जीभपर, मुख भीतरमों जानि।
घरी एकके बाद फिरि, जूड़ो पानी आनि ॥ १ ॥
ताको छींटा मारिये, जीभ और मुख माहि।
या विधि कीज तीनि दिन, रोग दूरि ह्वै जाहि ॥ २ ॥

दवा खानेकी।

चौ०–मेंहदी पात लेउ मँगवाई। धनिया हरेहि देइ मिलाई ॥
दुइ दुइ तोले औषध लीजै। प्रातसमय घोड़ेको दीजै ॥
तीनि दिवस तिहि देउ खवाई। राम कृपाते नीक देखाई

अथ जीभपर मढकी होनेके लक्षण व दवा।

दोहा–जो मेढ़की हय ऊपजे, जीभ मध्य सो जानु।
दाना चारा खाय कम, लक्षण तन अनुमान ॥
चौ०–चनाकी भूसी भस्म करावै। छानीकर फरुहुआँ लावै ॥
मिर्च गोल हरदी सम लीजै। सकल पीसि मेढ़की मलि दीजै॥
तीनि रोज औषध जो करै। मेढ़की रोग अश्वको हरै ॥

अन्य।

चौ०–माँजारि माँस व्यालको लावै। जो बरजातिया सर्प कहावै
मासे तीनि तीनि नित दीजै। सात दिनामों नीको लीजै

सकल पीसि बासन औटावै।काथ बनाय अश्वमुख नावै॥
सात रोज लग देउ खवाई ।सकल कनार दूरि हो जाई॥
अजमाई यह औषध जानौ।याते अधिक और नहिं मानौ॥

अन्य ।

छंद तोमर–सैंधव सु पीपरि सारु । वंडार गुरच विचारु ।
चारोंकि गोली बाँधु । हय रोग ऊपर साधु ॥
जब मिटै अंगनि रोग । तब दीजिये यहि भोग ।
पुनि देउ भात विचारि । मुनि यौं कहैं निरधारि ॥

दोहा–मोरशिखा है औषधी, कै सैंधवके योग ।
नासु देइ भातै समय, मिटै कनारी रोग ॥

अन्य ।

छंद नाराच–पटोलमूल पीसिकै सो खांड़में मिलाइये ।
भहूष मेलिकै प्रमाण नार बार लाइये ॥
सवै टका प्रमाण लै सो नासु आजि दीजिये ।
समै सरद पाइकै कनार ताहि छीजिये ॥

अन्य ।

सोरठा–गुरच हरद औ तार, गूदी वेल मँगाइये ।
करौ नासु निरधार, हयको दीजै शिशिर ऋतु ॥

अन्य ।

दोहा–तेल मिलै गोमूत्रसों, दीजै अग्नि पचाय ।
अर्ध भाग बाकी रहै, नास देउ सुख पाय ॥

अन्य ।

छंद चंचरी–भाँति भाँतिन वाजिके जब पाइये मुखरोगको ।
चिरचिरा गोमूत्रको लै अजै मूत्र सँयोगको ॥

अथ कालबन्द रोग जीभ सूखे ।

दोहा–जेहि घोड़की जीभपर, खुश्की बहुत देखाय ।
तुचा जीभ सूखी रहै, कालबंद सो आय ॥
चौ०–सैंधव मिर्च दोउ सम लीजे । कुकुरौंध रस खरिल करीजे
गोली करि मेलै मुख तासू । ताके पीछे लेप प्रकासू ॥

अन्य ।

सोरठा–पिपरी पिपरामूरि, सोंठि कुलीजन बचहि लै ।
सबको कीजै चूर, कटुक तेलमें खरिक करि ॥
चौ०–मलहम करि सो ताको लीजै । लेपन करि कपरामें दीजै
बाँधै गरे अश्वके कोई । जो सेंकै सो नीको होई ॥

अन्य मत ।

दोहा–लीजै सैंधव लोनु सम, श्याह मिर्च मिलवाइ ।
कुकुरौंधा रस ताहिमें, देहु खरिल करवाइ ॥ १ ॥
गोली बाँधे ताहिकी, दिना तीनि लगु देइ ।
यक यक गोली दीजिये, तुरी नीक करि लेइ ॥ २ ॥
टका टकाभरि वजनकी, गोली लेइ बनाय ।
शालहोत्र मुनिके मते, हयको देइ खवाय ॥ ३ ॥

अथ तालुकी बीमारी ।

दोहा–जाके तारु माहिमो, वर्म होइ कछु आइ ।
दाना खायो जाइ नहि, कीतो थोरा खाइ ॥ १ ॥
तारूमें नस होति हैं, ताको देइ छेदाय ।
खून निकारै ताहितें, अश्व नीक ह्वै जाय ॥ २ ॥

तीनि वस्तु मिलाइकै सुठि नासु दीजै वाजिको।
मतो ग्रंथ विचारि मुनिवर कही तुरकी ताजिको॥

पिंड।

छंद चंचरी-सौंफ मिर्च मिलायइकै चकचूनि है सुखदानिकै।
सहद सहित शतावरी समसजौ पिंड मिलाइकै॥
पिंडयुक्त सु होय वाजी देहु ताहि पिआइकै।
अंग अग सब रोग नाशै कहत मुनि चित लाइकै॥

अन्य।

छंद-कंकोल केतकी मिलाय दाख खांड लै समान।
महेंदि पीपरी मिलाय पिंडिका करौ प्रमान॥
देहु वाजिको सो खाय पुष्ट होय चारु अंग।
शालहोत्र देखिकै विचारि देत व्याधि भंग॥

छंद पद्धरी।

करि भाग युक्तहु त्रै मिलाय।पुनि डारि घिउ वाजी खवाय।
अति अबल वाजिकेबलनिधान।मुनिमत बिलोकि भाषै सुजान॥

अन्य।

छंद पद्धरी।

दधिवस्त्र बाँधि महतौ मिलाय। सो पिंड देहु वाजी खवाय॥
अति वृद्ध होय सो तुरी ज्वान। कबहूँ न होय सो सदनितान॥

अन्य।

छंद भुजंगप्रयात।

भली कूटकी मध्य सौंफै मिलावै।बिडंगैहि लै शुद्ध चीतो मगावै॥
नशै आलसै वाजि वेगै चढावै।कहो चारु मो पिंड याको खवावै॥

अन्य।

दोहा-तारू आवै जाहिके, ताको देइ दगाय।
हरदी नमक बुकाइकै, दे तापर चुपराय॥

अन्य विधि तालुरोग।

दोहा-दोऊ ओंठन भीतरे, फीतो तारू माहि।
छाला जाके परत है, दाना घास न खाहि॥ १॥
सब छालन पर लाइकै, नस्तर देइ लगाय।
साँभरि लोन मलाइ फिरि, जलसे देइ धुवाय॥ २॥

अन्य तालुमे दाँत जमनेकी दवा।

चौ०-तारू मध्य दाँत जो होई। काम नाम भाषै सब कोई॥
दाँत तोरिक औषध कीजै। घोड़े घास खाइ ना दीजै॥
कडुआ हरदी सेंधव लीजै।गोघृत मिरच सहत सम कीजै
रदन तोरिकै अश्व खवावै। यह औषध तापर मलवावै॥

अथ मुँहमें छाला पडनकी दवा।

दोहा-मुखमें जो छाला परै, लार न आवति होइ।
श्याम होइ मुख माहिं अरु, जानि लेहु जिय सोइ॥ १॥
सैंधव साँभरि लोन अरु, सोंचर लेउ मँगाइ।
औषध कीजै तीनि दिन, छाला सब मिटि जाइ॥ २॥
छाला जो मुखमें परै, लार बहति अति होय।
घास न खाई जाय जो, यही दवा करु सोय॥ ३॥

अथ मुख पकने व छाला पडनेकी दवा।

चौ०-छाला परै पकै मुख जासू। लार बहै बहु आवै वासू॥
श्याम रंग कफ गिरै बनाई। थोंसे बहुत अश्व ३

अन्य।

छंदहरिगीतिका–वात कफ बाजी कनारै ताहि यह औषध करौ।
लेउ लहसुन नागकेसरि मूल पीपरि सम धरौ॥
गुर्च लैके सम मिलावहु पीसि करुवे तेलसों।
नासु याको देहु बाजिहि मिटै रोगन जेलसों॥

अन्य।

दोहा–की कैफराको पीसिकै, नासु नाल भरि देय।
सकल बुखार निकारि है, यहि विधि करि सुख लेय॥

अन्य।

दोहा–की अतीस इक भरि अवटि, पैमें धूप सुखाय।
ता आधो सैंधव मिलै, जैफल आधो नाय॥ १॥
पीसि छानि सब एक करि, धरि राखे बनवाय।
साँझ सकारे दो रती, नासु दिये सुख पाय॥ २॥

अन्य।

दोहा–श्रुति तोला घृत सम सहद, कछु कैफर तिहि डारि।
आधो आधो दुहुँन पुट, नासु दिये दुख हारि॥
चौपाई–कुटकी कैफर पिपरामूरी। सोंठि जवायनिके सम चूरी॥
बाइविडंग मैनफल हरदी। कंटकारि फल एकै भरदी॥
अकरकरा गुड़ चौगुन करै। खांसी शीत कनारै हरै॥

अन्यमत कनारकी दवा।

दोहा–रेजिस होइ दिमागमें, आवत नथुना माहि।
नथुनाते पानी झरैं, की गाढो कफ आहि॥ १॥

रस कुकुरौंध निचो करि लीजै। सैंधव साँभरि मिरचै दीजै।
सकल पीसि छाला पर मलै। नीको होय तुरँग मुख खुलै॥

अथ सब मुख सूझि जानेकी दवा ।

दोहा—जवाखार हरदी सहित, सरसों सौंफ मँगाय ।
कूपोदकसों पीसिकै, देउ अग्नि धरवाय ॥ १ ॥
जाय दवाई पाकि जब, तब बफारा देइ ।
वही दवाई काढ़िकै, लेप ताहि करि लेइ ॥ २ ॥
पाँच सात दिन याहि विधि, करै, दवा जो कोय ।
घोड़ा होय अराम तिहि, जाइ रोग सब खोय ॥ ३ ॥

अथ अस्तीककी बीमारी ।

दोहा—जाहि तुरी मुख माहिंमें, खून जु जारी होइ ।
तिहि अस्तीका कहति हैं, सकल सयाने लोइ ॥ १ ॥
प्रथमहि तारू माहिंमें, रगको देउ खुलाइ ।
पाछेते औषध करो, तुरी नीक है जाइ ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा—औरा हर्र बहेर लै, तिनको लेउ कुटाइ ।
यवके आटा मध्य करि, दीजै ताहि खवाइ ॥ ३ ॥

अन्य विधि ।

दोहा—फूटै नथुना बाजिको, लोहू जारी होइ ।
तेहि अस्तीका कहत हैं, जानत हैं जे कोइ ॥ १ ॥
केलाकी जर काटिकै, पानी लै निकराइ ।
गऊदूध मिलवाइकै, नथुना देउ धराइ ॥ २ ॥

श्वेत होइ की तौन कफ, केवल सरदी आइ ।
देखि बताना लीजिये, सोउ श्वेत दरशाइ ॥ २ ॥
वाजि कनारी होइ जो, बिगर औषधी जाइ ।
ताते रोग अनेक जेहि, होत बाजि तनु आइ ॥ ३ ॥
होइ कनारो अश्व जो, देखि बताना लेइ ।
रंग जानिकै ताहिको, तब औषधिको देइ ॥ ४ ॥
होइ बताने माहि जो, सफराको रँग आइ ।
गरम औषधी जे अहै, वजन कभी करवाइ ॥ ५ ॥
रँग बताना देखिये, वात पित्त कफ रक्त ।
खुला देखाई देइ जो, करौ हिफाजति सक्त ॥ ६ ॥

अन्य मसाला ।

दोहा-पीपरि पिपरामूल अरु, स्याह मिर्च मँगवाइ ।
और लेइ अजमोदको, सोंठि सहित मिलवाइ ॥ १ ॥
अजवाइनि लीजै दुवौ, वजन बरोबरि आनि ।
चारि चारि तोले सबै, औषध लीजै जानि ॥ २ ॥
लेउ भेलावाँ टका भारे, ते सब लेहु कुटाइ ।
बीज धतूरे लीजिये, तोला एक मँगाइ ॥ ३ ॥
तेऊ लीजै कूटि करि, कपछान करवाय ।
सब औषध यकठा करै, ताकी विधि यह आय ॥ ४ ॥
दीजै ताको साँझको, दाना पीछे लाय ।
औषध तोले चारि सो, हयको देउ खवाय ॥ ५ ॥
या विधि कीजै आठ दिन, हयको औषध आनि ।
क्षुधा बढ़ै अति तासुकी, होइ रोगकी हानि ॥ ६ ॥

अरु औराको पीसिकै, शिरपर देउ धराइ ।
खीरा ककरी बीज लै, पीसिके देउ सुँघाइ ॥ ३ ॥
दोनों विधि अस्तीककी, जो वरणी अभिराम ।
यही दवा करवाइये, दोनों होइ अराम ॥ ४ ॥

अथ अन्य निधि मुखरोग।

चौ०-कल्ला उपर वरम जो होई। की मुख ऊपर सूजै सोई॥
आँखि तरेकी हड्डी जोई। फूलि जाति वाजीकी सोइ॥
दोहा-आँखितरे जो रग अहै, अरु शिर पाछे जोय ।
तिनमें खोलै एक रग, तुरतै नीको होय ॥

अन्य मुखरोग।

दोहा-नथुना वाँसा जासुको, सूजि कछू सो जाइ ।
साँस लेत अति जोरसों, शीश उठाइ उठाइ ॥ १ ॥
अर्द्धमान है भूमिमें, अरु पिआस अधिकाइ ।
औरो हर्र बहेरकी, बकली लेउ मँगाइ ॥ २ ॥
जौ नारी जीरा सहित, स्याह मिर्च अरु जानि ।
टका टका भरि औषधी, वजन बरोबरि आनि॥ ३ ॥
पट पल लीजे खाँड अरु, कूपोदक पल चारि ।
सबै औषधी पीसिकै, मिलवै तिन्है सुधारि ॥ ४ ॥
यक दिनकी मौताज यह, कही म लीजे जान ।
सात रोजतक कीजिये, याही तरह विधान ॥ ५ ॥

अथ घिनीरोग।

दोहा-लीदि वासु मुखते कढै, कीरा परै जु लीदि ।
तृण न चरै अतिदुख भरो, घिनी रोग सो निदि ॥ १ ॥

अन्य नस्य विधि ।

दोहा–सखि तमाखू छानिकै, और कैफरा छानि ।
ये दोनों यकठा करै, भाग बराबरि आनि ॥ १ ॥
रंडकि छूछी माहि धरि, हयके नथुना माहि ।
फूँकि देइ अति जोरसों, सब रेजिसिं झरि जाहि ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०–लाले मिर्च पाव भरि लीजै।ता सम लहसुन तामें कीजै ॥
तीनि पाउ तिल लेउ मँगाई। हीग टका भरि खील कराई
दोहा–बाँधौ गोली पंचदश, अदरखके रस सानि ।
साँझ सबेरे दीजिये, यक यक गोली आनि ॥ १ ॥
मोठके आटा साथमें, हयको देउ खवाय ।
शालहोत्र मुनि यों कहै, अश्व नीक ह्वै जाय ॥ २ ॥

अन्य थोडी सरदीकी दवा ।

दोहा–हालिम हरदी सोंठि लै, स्याह मिर्च अरु लाइ ।
तीनि टका भरि तौलि कर, गुड़के साथ मिलाइ॥ १ ॥
बाजिहि दीजै तीनि दिन, रोग दूरि ह्वै जाय ।
थोरी सरदी होइ जो, ताकी औषध आय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–जाहि कनारेमाहिमों, सफरा अति अधिकाइ ।
ताके बलगम गिरत है, जरदी मायल आइ ॥ १ ॥
साँस लेतमें ताहिके, नथुना ब्रोलत आहि ।
तौ गरमी अति जानियो, शालहोत्र–मतमाहिं ॥ २ ॥

हरदी सैंधव नींबदल, सुरस मूत्र अज-केर ।
सानि अश्वको दीजिये, रोग हरत नहिं देर ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-त्रिफला त्रिकुटा सैंधवै, मात्रा सम करि लेहु ।
काढ़ा मदिरा संग करु, रुज नाशक इमि देहु ॥

अथ सतपुरा रोग ।

दोहा-दाढ़ीपर बढ़ि जात है, हाड़ गुल्मके तौर ।
सतपूरा ताको कहैं, दवा करौ करि गौर ॥ १ ॥
मछरी हरदी भातको, उसिने सबन मिलाय ।
तीनि दिवस बाँधे गरम, जब कोमल परि जाय ॥ २ ॥
तब सेंदुर भरि दीजिये, फूटि बहै अवरेषि ।
तासों हाड़ निकासिके, मल दीजै सुविशेषि ॥ ३ ॥

अथ नाकड़ा (रोग नाकका)।

दोहा-रोग नाकड़ा होत है, बाँसा अंदर छेद ।
पीव चले तामें अधिक, जानि लेउ यह भेद ॥
चौ०-पक्षी नाम महोष कहावै। ताको चरण दुऔ कटवावै ॥
पानी डारि शिलापर रगरै। ताको लै कपरापर चुपरै ॥
बाकी बाती लेउ बनाई। छेद भीतरै मों धरवाई ॥
कइउ रोज लगु या विधि करै। छेद बंद तब ऊपर चुपरै॥

अथ खामुसे आनेके लक्षण ।

दोहा-नथुनाके दोनों तरफ, हड्डी कीलै जौन ।
ताहि खमूस बखानिये, जानि लेउ बुध तौन ॥ १ ॥

चरम होति है नाकपर, ता हयके कछु आइ।
गर्मी है अति ताहिके, खाइ घास नहि जाइ ॥ ३ ॥
तासु बताना देखिये, जो सफरा दरशाइ।
दीजै औषध गरम नहिं, ता वाजीको लाइ ॥ ४ ॥
शिरमें निकसत खुनु है, जौन सिराते आइ।
ताही रगको खोलिये, नीको हय है जाइ ॥ ५ ॥
चौ०-डेढ पा भटकटैआ लेहू। कुचिला तासम तामहँ देहू ॥
मूजाको रस लेउ कढ़ाई। तामहँ औषध देउ भिजाई ॥
दोहा-कपरामें करि ताहिको, रसको लेहु निकारि।
ताके हीसा कीजिये, तीनि तीनि निरधारि ॥ १ ॥
घोड़ाको गिरवाइके, नथुना उपर कराइ।
औषध हीसा एक लै, तामें देउ डराइ ॥ २ ॥
एक घरीके बाद सों, करौ खरहरा ताहि।
याही विधि करवाइये, तीनि दिवस लग वाहि ॥ ३ ॥
वरम होइ नथुना विषे, ताको देउ दगाइ।
वरम भरेपर कीजिये, लंबा दाग बनाइ ॥ ४ ॥

अन्य।

दोहा-अदरख पैसा पाँच भरि, लीजे ताहि भुँजाइ।
अरु पैसा भरि हींगको, लेउ खील करवाइ ॥ १ ॥
तिनकी पिंडी एक करि, हयको देउ खवाइ।
या विधि कीजे सात दिन, रोग दूरि है जाइ ॥ २ ॥

अथ नथुनेका रोग।

दोहा-वाजी नथुना माहिंमों, बढ़ि आवत है मासु।
देत देखाई बाहरे, ओरौ होत अमासु ॥ १ ॥

बाढ़े फैलै सूज जो, रोग समूस बखानि।
ताहि चिकित्सा कीजिये, रोग मिटै सुखदानि॥ २॥

दवा कालादि तैलविधिवर्णन।

दोहा–पल गीदर ले सेर भर, मन यक वारि चढ़ाय।
आँच-खून करिकै पचै, पाँच सेर रहिजाय॥ १॥
तब उतारि लीजै सुघर, चारि सेर तिल तेल।
भरि कराह धरु आँचपर, चारि सेर दधि मेल॥ २॥
जब दधि पचि जावै लखे, काढ़ा पलै पचाय।
सेर एक दशमूल लै, चारि सेर जल नाय॥ ३॥
भिन्न कढ़ा यक सेर करि, तेलमाहिं दे पाचि।
छानि धरै यहि तेलको, लै कलकइ सो जाँचि॥ ४॥
काँजीमें तिहि पीसिकै, अपर औषधी आनि।
चीत सोंठि अजवाइनी, विषमारा सो जानि॥ ५॥

सोरठा–मेथी बाम्रविडंग, कूट कैफरा लीजिये।
वन अजवाइनिसंग, वनमेथी सम वजन करि॥

दोहा–लै मँजीठ यक पाव तज, आध पाव मित लाय।
तब फिरि तेल चढाइकै, कंजी बाँटि भुँजाय॥ १॥
दधिमें बाँटि मँजीठ लै, पाछे तासु पचाय।
सिद्ध तेल तब जानिये, ताको गुण यहि भाय॥ २॥
झोला पच्छाघात अरु, अकडवाय दुखदाय।
झनकवाय कमरी सहित, मरदन करत बिहाय॥ ३॥

छालाके सम होत है, सो जानो तुम मीत ।
श्वास बंद करि देत है, याकी है यह रीत ॥ २ ॥
पैसाभरि जंगाल अरु, हींग फिटकरी लाइ ।
कूपोदकसों पीसिकै, दीजै ताहि लगाइ ॥ ३ ॥
तीनों औषध भाग सम, कहों आइ सुख पाइ ।
ताको कीजै तीन दिन, रोग दूरि ह्वै जाइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–नीलाथोथा फिटकरी, अरु हरताल मँगाय ।
और निसादर लीजिये, सम भागहि करवाय ॥ १ ॥
खुश्की औषध पीसि सब, दीजै ताहि लगाय ।
मासु बढ़ो जो नाकमों, दूरि तीन ह्वै जाय ॥ २ ॥

अथ कुब्बकके लक्षण, व दवा ।

दोहा–जा हयके रुकि जात है, रोग कनार गँभीर ।
तासों कुब्बक होत है, दवा करौ मतिधीर ।

नस्य विधि ।

चौ०–जा वाजीके कुब्बक होई । अदरख सोंठि मिलावै सोई ॥
सैंधव लाय सकल सम कीजै । गऊ मूत्रमें नासु करीजै ॥

अन्य ।

चौ०-जो निकसै कुब्बकको जोरा । ताकी औषध करौ निवेरा ॥
लेउ सरगवाँ निबिके पाता । डारु सँभारू तामें भ्राता ॥
रेंड बकायन दाडिम लीजै । सबके दल सम भाग करीजै
हाँडा मध्य मेलि औटावै । ताहि बफारा कुब्बक लावै ॥
सेंक देयकै पाछे बाँधै । तीनि वखत याही विधि साधै ॥

अन्य ।

सोरठा–चारि सेर तिल तेल, उतनोई काँजी पचै ।
तापर सज्जी मेल, सोंठि बनस्तर मूल कुट ॥ १ ॥
लाही हरदि मँजीठ, लै प्रतिवस्तु पलेक मित ।
जलमें बाँटि जुईठ, भूँजि तेलमें सिद्ध करि ॥ २ ॥
ताको लीजै छानि, भरि भाजन धरु जतन करि ।
गुण पूर्ववत बखानि, शालहोत्र मुनि प्रमित मित॥ ३ ॥

अथ वृषास्थितैल बहुत रोगों पर ।

दोहा–तेल कहो वृष अस्थिमें, ताको सुनौ सुजान ।
कइउ रोग यहिते नशैं, ताको करो बखान ॥ १ ॥
अग्निवायु अरु शूलहर, छाती बंद सितंग ।
सन्निपात सब वातहर, सुखी होय बहु अंग ॥ २ ॥
चौ०–वृषभ अस्थि मन एक कुटावे। तेल पताल यंत्र निकरावै॥
अश्वअंग दिन सात मलावै। इते रोग सब दूरि करावै ॥

अथ कर्णपीडाकी दवा ।

सोरठा–सरवनि सोंठि मिलाय, ब्रह्मदंडि बुकुरौंध गुल ।
हरदी दारु जो लाय, हरदि सुपारी मैनशिल ॥ १ ॥
दुइ दुइ मासा लेइ, कूप नीरसों औटि सब ।
अष्टभाग करि देइ, तीनि दिवस खावै सुघर ॥ २ ॥

अन्य ।

सोरठा–मसुरी कमल मगाय, केसरि पात लजारुको ।
हर्रा तुचा मिलाय, भेला चौमासा सकल ॥ १ ॥
सेर एक जलमाहिं, अष्टभाग करि दीजिये ।
कर्णपीर नशि जाहिं,जो बुध जन यह रीति करि ॥ २॥

अन्य।

सोरठा–ले फिटकरी मँगाय, बूँकि कानमें डारि दे।
तापै देहि गिराय, अर्क कागजी निबुको॥

अन्य कान पकनेकी दवा।

दोहा–कर्ण पकै जेहि अश्वको, पीव बहै श्रुतिमाह।
ताकी औषध कहत हो, युद्धवीर निरवाह॥

चौपाई–जवाखार सैंधव अरु सोंचरासज्जी वच समभाग परस्पर
बेचपत्र मिलि सकल पकावै। सेंकै वाहिं अर्क डरावै॥

अन्य मत।

दोहा–जाके दोनों कानते, खून स्रवत जो होइ।
जानो वायु प्रसंग है, शिर झारत है सोइ॥ १॥
काँपे बदन जु अश्वको, ताकी यह विधि साधि।
तिल औ हरदी कानसों, सेंकै पोटरी बाँधि॥ २॥

अन्य।

चौपाई–लहसुन हरदी पीसै भाई। सेंके कान नीक ह्वै जाई।

अन्य।

दोहा–अर्कपात मँगवाइकै, ओदे बसन बँधाइ।
अग्निमध्य धरि दीजिये, खूब पाकि जब जाइ॥ १॥
काढि ताको आंतिते, अर्क लेइ निकराइ।
तुरी कानमें डारिये, गोघृत ताहि मिलाइ॥ २॥

अथ पछुईकी बीमारी।

दोहा–कर्णमूलके पासमें, गर्दन ऊपर जानि।
तहँ सूजनि जो होति है, पछुई ताको मानि॥

पुनि मुलतानी मृत्तिका, जलसों देइ लगाय।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्ही जतन बताय॥ ३॥
सोरठा–जौलौं चरम न जाय, तौलौं रोज लगाइये।
नीकी विधि यह आय, धोवत नित जलसों रहे॥

अन्य।

दोहा–रूपामाखी आनिये, सोनामाखी जानि।
नीबूके रस माहिमों, दोऊ फूंके आनि॥ १॥
अर्क दूधमें सानि सो, चना बरोबरि लेइ।
पछना देके ताहि पर, बाँधि तासुको देइ॥ २॥
अजयामूत्र भिगोइके, सात दिवस यह जानि।
सतयें दिन फिरि खोलिये, शालहोत्र मत मानि॥ ३॥
मलहम फेरि लगाइये, जौलौं नीक न होइ।
श्रीधर यह वर्णन कियो, शालहोत्र मत जोइ॥ ४॥

अन्य मोतरालक्षण।

दोहा–पछिलो पग यक जासुको, जो मोटा है जाय।
मोतरा जानहु ताहिको, कठिन रोग यह आय॥ १॥
बाढति सूजनि जात है, होत वहे गभीर।
बाजी लगरा होत है, करत अधिक है पीर॥ २॥
अगिले पगमें होइ जो, फीलपाँउ सो आहि।
एक औषधी दुहुँनकी, शालहोत्र मत माहि॥ ३॥

दवा।

दोहा–रगै मूसरा माहि जों, तिनको खूब कढाइ।
भरता बाँधै नींबको, तहू रोग मिटि जाय॥

चौ०–दोनों तर्फन सूजनि होई। की तौ एकै तरफ सुजोई
ताको कछुई नाम बखानौ। शालहोत्र मत है यह जानौ

दवा।

दोहा–शिर गर्दनके जोरपर, कहीं कनगुदी माहि।
जहाँ शिरा जो होति है, प्रथमहि खोलै ताहि॥ १
गर्दभ लीदि मँगाइकै, खारी लोनु मँगाइ।
मानुषमूत्र मिलाइकै, लीजै ताहि पकाइ॥ २॥
लेपन कीजै ताहिको, कछुई ऊपर आनि।
रेंडपातको बाँधिये, ऊपरते यह जानि॥ ३॥

अन्य।

चौ०–जो अराम नहिं याते होई। लोह तप्त करि दागै सोई।

अन्य।

दोहा–प्रथमहि दागै ताहिको, परी तेलकी आनि।
औषध दीजै ताहिको, सो फिरि कहौं बखानि॥ १॥
लीजै जर करवीरकी, हरदी लहसुन आनि।
काराजीरी मिर्च लै, वजन बराबरि जानि॥ २॥
सब औषध दश टंक लै, कूटि सहदमें सानि।
छा गोली तेहि बाँधियो, प्रात खवावै आनि॥ ३॥
दाना पीछे दीजिये, गोली एक खवाय।
गऊमूत्र लै पाव भरि, ऊपर देइ पिआय॥ ४॥

अन्य।

दोहा–जाइ कदाचित पाकि जो, तौ यह औषध आहि।
कहत अहौ अब ताहिको, समुझि लेउ मनमाहि॥

सोरठा–नरके केश मँगाइ, तौलौ तोले चारि भरि ।
तिनको देउ जराय, शारँगधर मुनि यों कही ॥ १ ॥
हरदी कुटकी मिर्च पुनि, खील सोहागा आनि ।
चारि चारि तोले सबै, पाव सेर गुड़ जानि ॥ २ ॥
चौ०–टका टका भरि गोली कीजै । सांझ सवेरे यकयक दीजै ॥
घटिका दुइ कैजा फिरि करई । सकल पीर बाजीकी हरई ॥

अन्य ।

सोरठा–जो नहिं नीको होइ, दीजै ताको दागि फिरि ।
शालहोत्र कहि सोइ, या सम औषध और नहि ॥

अन्य ।

चौ०–सुमिलखार दुइ मासे लावै । ता सम सीपी चूंन मिलावै ॥
फिरि पछना गँभीर पर दीजै । याको मलि औरौ कछु कीजै ॥
दोहा–फिरि तेजाब लगाइये, दीजै ताहि बँधाइ ।
बाँधो राखै एक दिन, डौरे फेरि खुलाइ ॥ १ ॥
अंबरबेलि पटोल जर, सम करि दोनों लेइ ।
भर्ता करिकै तासुको, बाँधि रोज सो देइ ॥ २ ॥
सोरठा–पाकि खूब जब जाइ, मलहम फेरि लगाइये ।
जौलौ सूखि न जाइ, दूरि होत गंभीर है ॥

अथ बैजा मोतराके लक्षण व दवा । देखो घोड़ा नंबर १५०

दोहा–पाछिऌ पदकी नलिनमें, बैजा रोग बखानि ।
मुरगीके अंडान सम, जानौ रोग प्रमानि ॥ १ ॥
मेढा कोहनी लीजिये, दिल गुरदा दोउ काढ़ि ।
ताहि चीरि ताता करै, गरम धरै रुज डाढ़ि ॥ २ ॥

जब प्रस्वेद वामें कढ़े, वेजा बाँधौ ताहि।
दश दिनलों यहि कीजिये, मिटे रोग सुख चाहि ॥३॥
चौ०-अंडा पुहकरमूल मँगावै। ककरीबीज जवासा लावै ॥
धनियां वच अरु सेवंति फूला। मिरच गोल अरु ले कंकोला
घृतसँग तुरँगै देउ खवाई। वेजा सूख सकल मिटिजाई॥
याहीको लेपन करवावै। रोग जाय सब दुःख मिटावै ॥

अथ गजपैर (फीलपाँव)के लक्षण व दवा। देखो घोड़ा नवर १५१

दोहा-गजपद रुज लक्षण कहौं, दिन दिन मोटो होइ।
सूजि जाइ यक चरण तिहि, जानि लेउ बुध सोइ॥१॥
प्रथम कुसुमको फूल लै, पीसि गरम करवाय।
तीनि दिवस धरि नरम लखि, जाँय नीक ह्वै पाँय ॥२॥

अन्य।

दोहा-पलाशबीज गोमूत्र सँग, पीसि गरम करवाय।
सात रोज लगु बाँधिये, गजपद सो मिटि जाय॥
सोरठा-जो उतरै सुममाहि, सुमिलखार भरि चीरिकै।
पाकि जु रुज वहि जाय, ताजा अंबर लेपि घसि ॥

मलहम।

सोरठा-मोम जु तोला चारि, पाव एक घृत लीजिये ।
श्रुति तोला मितकारि, पीसि निंब टिकरी बनै ॥ १ ॥
घृत अरु मोम मिलाइ, नींव टीकरी घेलि कलि।
लीजै ताहि कढ़ाय, तोला सेंदुर मेलि फिरि ॥ २ ॥
सिद्ध भये तेहि जानि, बनै तासु फीहा सुघर।
लाय करै छत हानि, सुद्ध धीर यहि विधि करै॥ ३ ॥

पानी पीवत नाहि अरु, दाना घास न खाइ ।
जा वाजीके कंठमें, होत बोगमा आइ ॥ ३ ॥
चौ०–कुव्वकमें कनार हो जाई । पानी नाहीं छोड़त भाई ॥
बोगमा रोग फूटि जब जावै।हलकके भीतर छेद देखावै

दवा ।

दोहा–कारीजीरी सोंठि लै, कुचिला मिर्च मँगाइ ।
कालेश्वर अरु तज सहित, सम करिलेउ पिसाइ ॥१॥
थोरी रेहू डारिकै, जलसो लेइ मिलाइ ।
तप्त कीजिये अग्निपर, दीजै लेप कराइ ॥ २ ॥
चौ०–लेप किथेते रोग न जाई । तौ पाकैकी दवा कराई ॥

दवा ।

चौ०–अजवाइनि अरु राई लावै । कारीजीरी ताहि मिलावै
सोंठि सहित अजमोद मँगावै । जलसों पीसै लेप करावै
दोहा–तातो कीजै अग्नि पर, दीजै ताहि लगाइ ।
भर्त्ता कीजै नींबका, देउ ताहि बँधवाइ ॥ १ ॥
रेंडपात बहु सेंकिकै, तिनसों देहु बँधाइ ।
सात दिवसमें सेंकिकै, फूटि वेगि सो जाइ ॥ २ ॥
नींब कि पाती लोनु लै, पीसिक देइ लगाय ।
जखम साफ है जाइ जब, तव मलहम चुपराय ॥३॥

अन्य ।

दोहा–जव.खार अरु सोंठि लै, तिन सों देइ बँधाइ ।
सात रोजमें पाकिकै, फूटि बोगमा जाइ ॥ १ ॥

अथ जानुआरोगलक्षण व दवा । देखो घोडा नंबर १५२.

दोहा–आगिल पदके मध्यमें, गाँठि सूजि जो जाय ।
ताहि जानुआ कहत है, याको करौ उपाय ॥

चौ०–पहिले पछना जनुआ देई । ता पीछे औषध करु सोई ॥
सुमिलखार सैंधव मँगवावे । नीलाथोथा सज्जी लावे ॥
सकल पीसि लेपन करवावै । अर्कपातको सेंकि बँधावै ॥

अन्य ।

चौ०–रसकपूर आफीम मँगावै । तोला तोला भरि लै आवै ॥
नौ मासे हरताार तावकी । चूनाके पानीमें खलकी ॥
घुटनाके कच सब मुँडवावे । नस्तरमें पछना दिलवावे ॥
मलिके दवा रेंडदल बाँधो । सात रोज लगु याही नाधौ

अन्य ।

चौ०–घुघुवारी दल लेउ चीरिकै । सैंधव हरदी डारु पीसिकै ॥
गरम कराय रोगपर बाँधे । यकइस दिनलौ औषध साधे॥

अन्य दवा खानेकी ।

चौ०–मालुप खुपरी वायबिडंगा । तोला चारि चारि यक संगा॥
सील सोहागा कुटकी लीजै । दुइ दुइ तोला वजन करीजै
खुरासान कुचिला मँगवावे । तोला पाँच पाँच मेलवावे ॥
गुड़ पुरान कालेश्वर लीजै । लीलातंत भेलावाँ दीजै ॥
आठ आठ तोले लै करौ । पीसि छानि गोली करि धरौ ॥

अन्य मत ।

दोहा–अगिली गाँठिन जोर तर, होत जानुआ आइ ।
गूँथी दारि समानकी, प्रथमहि सो दरशाइ ॥

नीच कसौजी पात लै, औ अजवाइनि लाइ।
भाग बरोबरि कीजिये, सबै औषधी आइ॥ २॥
औषधि तोले चारि भरि, मोठ महेलामाहि।
हयको दीजै साँझको, रोग नीक हो जाँहि॥ ३॥
यह बीमारी कठिन है, जानि लेउ मन लाइ।
शालहोत्र मत जानिकै, दवा करौ हरुगाइ॥ ४॥

अथ मुँहसे लार बहुत गिरा करे उसकी दवा।

दोहा–स्याह धतूरे माहिकी, बोड़ी यक मँगवाइ।
दानामें करि साँझको, हयको देउ खवाइ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत मुखरोगवर्णन नामक
एकादश अध्याय॥ ११॥

अथ पैररोगलक्षण व दवा।

छप्पय–पैर पाछिले मध्य गिरह भीतर हड्डा कहि।
अस्थि नुकीली होत लखौ चपठा चपठा लहि॥
वही ठौर रगमाँह गुल्म कोमल सुतरा भनि।
सूजनि अगिले मध्य गिरह जानुआं रोग अनि॥
पद आगिले नाली बढ़ै बैर हड्डि कहि बेरसारि।
लखि सूजि आगिले सुम उपर सोइ चकावरि पकत भारि

पुन।

छप्पय–पैर पाछिले भौंहे भूजि पाकै पुस्तक भित।
वैसे पुस्तक ऊर्द्ध होय गाना कहिये हित॥
क्षरत पतरि माह रसा कछुहि जु विकाशित।
वैजा पछिली नली मुरुग अंडन सम भाषित।

सोरठा-गूँथी वाढति जाइ, सो वह अस्थि समानकी ।
तब वाजी लँगराइ, औषध कीजै प्रथमही ॥ १ ॥
दीजै वार बनाइ, ग्रथी ऊपर जे अहै ।
पछना देउ दिवाइ, ता ऊपर श्रीधर कहो ॥ २ ॥
चौ०-फेरि कागजी निबू लावै । हरै रोग सब सुख उपजावै ॥
दोहा-रोटी कीजै उरदकी, सेंकि तरफ यक लेइ ।
जौन तरफ काची अहै, बाँधि ताहि पर देइ ।
सोरठा-खोलै तिसरे रोज, तीनि बार यहि विधि करै ।
रहै न रोगहि खोज, कवि श्रीधर यों कहत है ॥

अन्य ।

चौ०-मासा एक शखिया लावै । ताहि खूब बारीख पिसावै ॥
रेंडी गूदी दोइ टका भरि । ताको पीसै खूब मिही करि
दोहा-दुवौ मिलावे एकमें, पोटरी दोइ बनाइ ।
रेंडतेल धरि अग्नि पर, ताको गरम कराइ ॥ १ ॥
फेरि जानुवा सेंकिये, दोइ घरी लगु जानि ।
अर्कपात फिरि गरम करि, तिनको बाँधै आनि ॥ २ ॥
नमदा धरिकै ताहि पर, कपरा देउ बँधाइ ।
बाँधो राखे तीनि दिन, दीजै फेरि खुलाइ ॥ ३ ॥
सोरठा-ग्रंथि बैठि जब जाइ, मलहम फेरि लगाइये ।
नीकी विधि यह आइ, होइ जानुआ दूरि तब ॥

अन्य ।

दोहा-मानुष खपरी जारिकै, हींग सोहागा लाइ ।
खील कीजिये दुहुँनको, तीनिहु लेट मिलाइ ॥ १ ॥

कहि छाला सुम भीतर प्रगट पीलपॉव सूजन भनै ।
मसवृद्धि गनै पल बाढ़तो पैररोग ग्यारह गने ॥

अथ हड्डारोगलक्षण । देखो घोडा न० १४८

दोहा–पैर पाछिले गॉठिमें, भितरी ऊँचो जौन ।
ताहीमें हड्डा प्रगट, जानौ रुजको भौन ॥
चौ०–अस्थि नुकीलो देखो भाई । चपठा चपठा सो दरशाई ॥
हड्डा कहो रोगको नामा । दवा कियेते होइ अरामा ॥
दोहा–हरिअरि लकरी नीबकी, हड्डा सेंकै जाहि ।
शोणित गिरै विकारते, पछना दीजै ताहि ॥ १ ॥
दंती गोटा निंबुरस, और निसोदर लेइ ।
सैंधव मिलि लेपन करै, अस्थि बढ़ै नहि सोइ ॥ २ ॥
ऊपर कपरा बाँधिकै, लकरी नीब सेंकाय ।
दिना सात उठि प्रात करि, रोग नीक ह्वै जाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौ०–सोवा सागुनि सादर लावै । नकछिकनी सैंधव पिसवावै ॥
नीबूके रस मध्य सनावै । हड्डा ऊपर ताहि बँधावै ॥
दिन ग्यारह लग औषध करै । हड्डारोग अश्वको हरै ॥

अन्य ।

सोरठा–चारौ पद दे दागि, जो जानौ यह रोग है ।
चेतन चंद प्रमान, औषध कीजै मास षट ॥
चौ०–मानुषकी खुपरी लै आवै । तप्त अग्निमें ताहि जरावै ॥
महिषा मेष शृंग जरवाई । सकल दवा सम भाग पिसाई ॥

औषध मासे चारि यह, गुड़में लेउ मिलाइ।
एक मास लगु दीजिये, रोज रोज यह लाइ॥ १॥

अन्य।

दोहा--चीटा माटी आनिकै, सेंदुर ताहि मिलाइ।
सुमिलखार सज्जी सहित, और तूतिया लाइ॥ १॥
जवाखार पुनि लीजिये, सबको पीसि मिलाइ।
मलहम करिके ताहिको, रुजपर देइ लगाइ॥ २॥
चौपाई–औषध मासे पट लै आवै। पछना दैकै ताहि लगावै॥
बाँधे अर्कपात सेंकवाई। चौथे वासर देउ खुलाई॥
दोहा–मलहम फेरि लगाइये, जखम नीक ह्वै जाइ।
शालहोत्र मुनि कहत है, कीजै यही उपाइ॥

अन्य।

दोहा–सुमिलखार अरु सिंगिया, मासे डेढ़ मँगाइ।
ता सम सेंदुर ताहिमें, दीजै आनि मिलाइ॥ १॥
पछना दैकै ताहिपर, औषध देइ लगाइ।
याको वासर तीनि लौं, रोज लगावत जाइ॥ २॥
चौ०–फिरि सीपीका चूना लावै। तिलके तेलहि ताहि मिलावै॥
रोजरोज फिरि ताहि लगावै। जखम तासुको जब भरिआवै॥
दोहा–खुरकी फेरि लगाइये, जखम सूखि जब जाइ।
शालहोत्र मुनि यों कहै, रोग नाश ह्वै जाइ॥

अथ वेरहड्डो। देखो घोड़ा न० १५३

दोहा–आगिल करनाली विषे, अस्थि वेरसम होइ।
ताहीसों लँगराइ है, वेरहड्डि कहि सोइ॥ १॥

त्रिकुटा त्रिफला सज्जी राई। भूँजि सोहागा खील कराई॥
कालेश्वर अरु कारीजीरी । अजवाइन हरदी बहु पीरी॥
गुड़सँग गोली या विधि बाँधै। टंक टंक भरि सो अवराधै॥
उपजत रोग औषधै करै। अस्थि रोग घोड़ेको हरै ॥

अन्य ।

चौ०-चूना कली भँडामें भरै। कपरौटी करि पावक धरै ॥
जब परिपक्क होइ लखि लेई। पीसि लेप हड्डा करु सोई॥

अन्य ।

चौ०-बड़का मूराको ले आवै । भेंड़कि लेंड़ी बहु सुलगावै ॥
तामें मूरा भरत करावै। गरम बाँधि दुइ घरी रखावै ॥
जब लगु हड्डा गलै न भाई। तब लगु दवा करौ मन लाई

अन्य ।

चौ०-मेषकेर गुरदा दोउ लावै। चीरि तवापर गरम करावै ॥
हड्डा ऊपर जो बँधवावै। नीक होइ सब शोक नशावै ॥

दोहा-हड्डा मोतरा जानुवा, वैजा पुस्तक जाय ।
इते रोग नाशक दवा, करौ सुधर मन लाय ॥

अन्य दवा खानेकी।

चौ०-गोलमिरच अरु पिपरामूला।नीलातत लीजियो कुचिला॥
कालेश्वर मँरेठी लावै । इंद्रजवा भेलावँ मँगावै ॥
समुद्रफेन पालाशपापरा। ढाई ढाई भरि सम धरा ॥
मालकाँगनी मेथी लीजै । डेढ़ डेढ़ भरि वजन करीजै ॥
कारीजीरी हालिम हरदी। जहर तेलिया मुंडी मरदी ॥
जंगीहर्र कुलीजन लीजै । सवा सवा तोला सब कीजै ॥

नीलाथोथा पीसिके, निबूरसहि मिलाय ।
ऊपर वाके लेपिये, हड्डी सो बहि जाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–अजापुत्रके अस्थिको, गूदा लेइ निकारि ।
हड्डी ऊपर बाँधिये, औषध कहो विचारि ॥

अन्य ।

चौ०–माटीको खपटा ले आवे । ताही मध्य अफीम लगावे ॥
अग्नि सेंकिकै हड्डी बाँधे । सात दिनालौ सो आरावे ॥
निश्चय सो तुरतै बहि जाई। जो या विधिसों करै उपाई ॥

अन्य ।

चौ०–मासे एक अफीम मँगावे। ताको दून बतासा लावै ॥
दूनों मिल इक टिकिआ करै। माटीके ठिकरा पर धरै ॥
ठिकरा गरम लेउ करवाई। मरजके ऊपर देउ बँधाई ॥
जबलग हड्डी नीकि न होई। तबलग ठिकरा बाँधो सोई ॥

अन्य ।

चौ०–खाली मिश्री कूटि बँधावे। आडूसों अच्छा है जावे ॥

अन्य ।

चौ०–बकरी गुरदा गरम बँधावै । वे हड्डिको नाश करावै ॥

अन्य ।

चौ०–नमक घोरि पानीमे खुपरै । हड्डी बैठि जाय द्रय सुधरै ॥

अन्य ।

चौ०–थूहर भूँजिक साबुन डारै। गेरह प्रहर बाँधिकै छोरै ॥

राई लेउ वनरसी भाई । गेरह तोले भरि तौलाई ॥
मोथा अद्रख हीग मँगावै । मानुष्की खुपरी लै आवे ॥
कारे तिल वै आदा लीजे । और कलौंगी तामें दीजे ॥
सातौ दवा बरावरि लाई । पैसा नौ नौ भरि तौलाई ॥
छालि अंकजरकी मँगवावै । रंड फूलतिहि माहि पिसावै॥
गुड़ पुरान लै गुरच नीवकी । वजन सवाये सेर सेरकी॥
सजी सोहागा गागर साबुनातोले सात सात तेहि लावन
गेरह सेर नीवके पाता।सकल पीसि करु यकतक भ्राता॥
ताकी गोली करौ विधाना।दश दश दमरी भरि परमाना॥
चौदह रोज खवावै कोई । रोग जाय सुख तुरगै होई ॥

अन्य ।

दोहा–सज्जि सोहागा तूतिया, जवाखार सम लेहु ।
पीसि निसोदर मोम युत, टिकरी तासु करेहु ॥ १ ॥
निंबूरसते धोयकै, गरम तनकु करवाय ।
तीनि दिवस तिहि राखिकै, डारहु ताहि छुड़ाय ॥ २ ॥
पंद्रह दिन यहि विधि करै, नीवपत्र फिरि लाय ।
हड़ा चकावरि मोतरा, कछुही घाव पुजाय ॥ ३ ॥
हड्डाके थलमें लखै, चपटा हाड उभार ।
तासु दवा नहिं कीजिये, सो नहिं अवगुण कार ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–सज्जी मुर्दाशंख पुनि, और निसोदर आनि ।
गुंजा गुंजा भरि सबै, औ हरतारु बखानि ।

चौ०-रुज ऊपरके बार मुँडावे । नस्तरमे पछना दिलवावै ॥
रुधिर बहुत तिहि डारु निकारी।पीछे दवा करौ रुजहारी
अर्कमूलकी लीजै छाली । मानुषमूत्र मेलु तिहि घाली ॥
सात रोज लगु याही बाँधे । सूजै पाँउ और विधि नाधै॥

अन्य ।

चौ०-खील फिटकरीकी ले आवे । मरका मोम मिलाय लगावै॥
कई रोज लगु याको कीजै।रोग चकावरि पुस्तक छीजै॥

अन्य ।

चौ०-मोट फड़ा सीसेको डारै । ताके बाँध सूध पग धारै ॥

अन्य ।

चौ०-समुदफेन वचको मँगवावे । नीलाथोथा कुचिला लावे॥
लौंग निसोदर और अफीमा।समकरि पीसिपकाइ अनलमा
पछना दै औषध बँधवावे । रोग चकावरि दूरि करावै ॥

अन्य मतें ।

दोहा-अगिले पगकी गामचीं, होत ताहिके माहि ।
हाड़ फोरि गूंथी कढ़े, कहै चकावरि ताहि ॥ १ ॥
जलदी औषध कीजिये, नाहित लँगरा होइ ।
फुरियाके सम होइ जब, नीक होइ नहिं सोइ ॥२॥
रुधिर हथेरी माहिमों, ताको देइ कढ़ाइ ।
फिरि यह औषध लाइकै, रोज बँधावति जाइ ॥३॥
रेवाचीनी एलुआ, तोले आठ बखानि ।
मासे चारि अफीम पुनि, हरदी दूनी जानि ॥ ४ ॥
सबकों पीसै एकमें, थोरी औषध लेइ ।
चुरवै मानुषमूत्रमें, लेप तासु करि देइ ॥ ५ ॥

लावे हड्डा नोकपर, दूध मदार मिलाइ।
नमदा धरिकै ताहिपर, कपरा देहु बँधाइ ॥ २ ॥
ऊपर सुतरी बाँधिये, सो मजबूत कराइ।
बीते बारह पहरके, दीजै आनि खुलाइ ॥ ३ ॥
पाती नीव पिसाइके, रोज लगावति जाइ।
रहै बचाए चोटको, ता हड्डा मिटि जाइ ॥ ४ ॥
शालहोत्र मुनि यों कहै, नीकी विधि यह आइ।
औषध करिये चावसों, अश्व सुखी है जाइ ॥ ५ ॥

अन्य।

चौ०–ताजी जीभ हुडार कि लावै। तारूपर हरतारु लगावै ॥
सो हड्डापर देइ बँधाई। चौथे दिवस देउ खुलवाई ॥
दोहा–खुश्की फेरि लगाइये, जौलौ नीक न होइ।
औषध याहि समानकी, और नहीं है कोइ ॥

अथ मोतरा रोग। देखो घोड़ा नंबर १४९

दोहा–हड्डाके ढिग जौनि रग, तामें गुल्म जु होय।
कोमल नरम निहारिये, मोतरा जानौ सोय ॥
चौ०–कुचिला दुकराभरि पिसवावै।सम हरताल तावकी लावै॥
अर्कदूधमें दोनों रगरे। मोतरा पर पछना दै चुपरे ॥
ऊपर रेंड पात सो बाँधे। सात रोज याही विधि साधै॥

बफारा।

दोहा–रडक कोइला पाव यक, गोघृत अर्ध मिलाय।
चालिस दिन नित दीजिये, रोग दूरि हो जाय॥

वटके पाता आनिकै, तापर घीउ लगाइ।
फिरि आगीपर सेंकिये, तापर देहु बँधाइ॥ ६॥
पुस्तक और चकावरी, सात रोजमें जाय।
यासों नीको होइ नहिं, ताको कहौ उपाय॥ ७॥

अन्य।

दोहा-चार चकावरि ऊपरे, तिनको देउ मुँड़ाइ।
दूध अर्कको तीनि दिन, रोज लगावति जाइ॥ १॥
सूजनि तामें होइ जब, दही तोरको लाइ।
अथवा गुड़के सरबतहि, दीजै ताहि छड़ाइ॥ २॥
सोरठा-दीजै फेरि दगाइ, पुस्तक और चकावरी।
और मूसली जाइ, शालहोत्र भण करि कहै॥

अथ पुस्तकरोगलक्षण व दवा। देखो घोडा नबर १५६

दोहा-सुमके ऊपर जहँ त्वचा,पाकि पिलपिला होय।
फूटि बहै सूजै बहुत, है पुस्तक रुज सोय।
चौ०-अगिले पाँय चकावरि जानौ। पछिले पद पुस्तक अनुमानौ

अन्य मत।

दोहा-पछिले पगकी गामची, पुस्तक तहँपर होइ।
जैसि चकावरि होति है, ता सम जानौ सोइ॥ १॥
कुचिला लीजै चारि पल, तिनको लेउ पिसाइ।
आँबाहरदी दोइ पल, तामें देहु मिलाइ॥ २॥
मासे सात अफीम लै, सोऊ लेउ मिलाइ।
अदरखके रस माहिसों, लीजै ताहि पकाइ॥ ३॥

औपध पैसा एक भरि, साठि दिवस लगु देइ ।
दुपहरको जलके प्रथम, वाजी नीको लेइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई-पाँच सेर थूहर लै आवे । जारि तासुको राख करावै ॥
खील सोहागा कुटकी लीजै । आध पाव दोनोंको कीजै॥
दोहा-कुचिला तोला दोइ पुनि, सबको पीसि मिलाइ ।
औपध पैसा दोइ भरि, ता सम घीउ मिलाइ ॥ १ ॥
या विधि दीजै चारि दिन,शालहोत्र मत मानि ।
फिरि पैसा भरि ओषधी, पैसा भरि घिउ जानि॥ २ ॥
दानै प्रथमहि साँझको, या औपधको देइ ।
दूरि होत है मोतरा, क्षुधा अधिक पुनि लेइ ॥ ३ ॥

अन्य लक्षण ।

दोहा-केवल कफके जोरते, जौन मोतारा होइ ।
मोटी रग अतिही परै, अरु झलकति कछु सोइ ॥ १ ॥
लोधु दोइ पल पीसिकै, पोटरी बाँधै दोइ ।
गाइ घीवको गर्म करि, सेंकति नीको होइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई-दश जमालगोटा लै आवै । वकली तिनकी दूरि करावै॥
निबु कागजी रसहि कढ़ाई । तामें तिनको देइ भिजाई॥
दोहा-चालिस दिन भीजति रहै, लीजै फेरि सुखाइ ।
चना दालि भरि काढ़िकै, दीजै ताहि खवाइ ॥ १ ॥
बाँधौ राखै तीनि दिन, दीजे फेरि खवाइ ।
वरम होति है ताहिपर, सही बात यह आइ ॥ २ ॥

सोरठा—लेप तासु करि देइ, सूखि फिटकरी बाँधिये ।
पुस्तक नाके सोइ, मिटत मूसली है सही ॥

अथ गानारोगलक्षण व दवा । देखो घोड़ा नम्बर १५७

दोहा—पुस्तकके ऊपर लखै, गाना ताहि बखानि ।
दवा न कछु ताकी कहौं, दुखद न कछु तेहि जानि ॥

सुमफटेके लक्षण व दवा । देखो घोड़ा नंबर १५८

सोरठा-हयको सुम फटि जाइ,जो तौ दोइ प्रकारसों ।
खड़ी लीक परिजाइ,लीक बेंडिकी परति है ॥

दोहा—सुम जाको है फटि गयो, सो लँगरा हो जाहि ।
औषध ताकी कहत हौं, शालहोत्र मत माहि ॥ १ ॥
मोमु गरम कै लीजिये,तोला भरि यह जानि ।
सिंदुरु मासे चारि भरि, ताहि मिलावै आनि ॥ २ ॥
फटो जहाँ पर सुम अहै, तामें देउ भराय ।
लोह तप्त करि ताहिमें, दीजै गुलन देवाइ ॥ ३ ॥
बाँधो राखै थानपर, दिन नवयें लगु जानि ।
सुम नीको ह्वै जात है, होइ पीरकी हानि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—कुचिला मासे चारि भरि, ताको लेउ पिसाइ ।
ता सम गृदी रेंडकी, सोऊ लेहु मिलाइ ॥ १ ॥
मासे एक अफीम पुनि, भँगरा रासु मँगाइ ।
सबको करिये एकमें, लीजै ताहि पकाइ ॥ २ ॥

सोरठा—सुम फाटो जहँ होइ, भरि ताको तहँ दीजिये ।
जौंलौ नीक न होइ,ताहि भरत नितमति रहै ॥

अथ सुमके भीतर छाला पडनेके लक्षण व दवा ।
देखो घोडा नंबर १५९

दोहा-नीबपातको आनिकै, देइ वफारा ताहि ।
वहे फूटि छाला चरण, मिटै रोग सुख चाहि ।
चौ०-जो याहूते नीक न होई । अष्टादली वफारा देई ॥
ताहि वफाराको कसि बाँधै । कई रोज लगु तेहि अवराधै ॥

अथ छाँवालरोग लक्षण व दवा । देखो घोडा नंबर १६०

दोहा-होत अहै मोजा विषे, गज समान देखाइ ।
निकसत ताते पीवु है, तुरी वहुत लँगराइ ॥
सोरठा-दालि उरदकी लाइ,नीवपात पुनि ताहि सम।
दोऊ लेउ मँगाइ, सो बाँधौ लै ताहिपर ॥
दोहा-बीते बारह पहरके, दीजै ताहि खुलाइ ।
फिरि यह औषध बाँधिये, ताहि तूतिया लाइ ॥ १ ॥
खोले बारह पहरमो, पाति धुरहुरा लाइ ।
छीवा ऊपर बाँधिये, थोरा लोनु मिलाइ ॥ २ ॥
तीनि दिवस यह ओषधी,रोज लगावत जाइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, रोग नाश ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

अथ मासवृद्धिरोगलक्षण व दवा । देखो घोडा नंबर १६१

दोहा-मांस बढै अति पैरमें, नकिआ बहुत देखाय ।
शालहोत्र मुनिके मते, रोग कठिन यह आय ॥ १ ॥
आनि सँभारू पातको, और बकायन पात ।
आँवपात सम पीसिकै, ताहि पिंआवे प्रात ॥ २ ॥

सुम नाकिस जो है गयो, दीजे ताहि भराइ ।
गद्दी कपराकी करै, तापर देइ बँधाइ ॥ २ ॥
आठ पहरके बाद सो, दीजे ताहि खुलाइ ।
नितप्रति बाँधे ओषधी, जौलौं सूखि न जाइ ॥ ३ ॥
सोरठा-सुम जाको फटि जाय, चुवे आनि रस ताहिते ।
ताको यहै उपाय, कवि श्रीधर यह जानियो ॥

सर्वरस दूर करनेकी दवा।

चौ०-हरदी चौंतिस पल भरि लीजे। कारीजीरी ता सम कीजै॥
आठ कर्ष कुटकी लै आवे। सोऊ तामें आनि मिलावे॥
दोहा-दिन इकइस लौं बाजिको, ताहि खवावे आनि ।
साँझ सवेरे दीजिये, दो दो पल सो जानि ॥

अथ परसगौथ लक्षण।

दोहा-प्रथमहि तौ रस उतरिकै, सुम भीतर गलि जाइ ।
परसगौथ सो जानियो, दोष रसहिको आइ ॥

दवा।

चौपाई-पहुँचा सेंहुड़को लै आवे। सोरह अंगुर ताहि नपावै॥
भीतर ताको खाली करै। खाली लोनु ताहिमों भरै॥
दोहा-तापर गोबरु लेसिकै, डौर ताहि सुखाय ।
अग्निमाहि सो डारिकै, ताको देउ जराय ॥
सोरठा-खूब राख है जाइ, लीजै ताको काढि सब ।
तामें देउ मिलाइ, बायबिडंगी तीस पल ॥
दोहा-चौदह गोली तासुकी, जलसों लेहु बँधाइ ।
धूपमाहि धरि ताहिको, डारे खूब सुखाइ॥ १ ॥

कई रोज लँगु दीजिये, याते जो न बिहाय ।
तौ दागे करि सुँघरई, पलकी वृद्धि नशाय ॥ ३ ॥

चौ०–मांसवृद्धि घोड़ाके देखे । अमिप बहुत बाढत औरेखे ॥
कीरा परै नीक नहि जाने । लक्षण ताहि निदान बखानै॥
अजैपाल अरु नीलाथोथा । सुमिलखार औ सज्जी मोथा ॥
नीबपातकी टिकिया करै । करुये तेल मध्य सो बुरै ॥
टिकिया काढ़ि औषधी नाई । नीबीके सोंटा घुटवाई ॥
लेपन करै खोलि रग दीजै । हरै रोग नीको करि लीजे ॥

अन्य ।

चौ०–दुधिया कत्था और फिटकरी । पैसा पैसा भरि सम करी॥
जहर शंखिया तोला लीजै । तोला दुइक निसोदर दीजै ॥
एकैमाँ सब खरिल करावै । मांसवृद्ध जल सँग चुपरावै ॥
जबलग मांस वृद्धि ना गिरै । तबलग यही औषधी करै ॥

अथ कफगीरारोगलक्षण व दवा । देखो घोडा नंबर १६२.

दोहा–जो पल बाढ़ि आवै लखै, पुतरीमांह तुरंग ।
कफगीरा ताको कहै, करै दवा लखि ढंग ॥ १ ॥
चूना अरु हरुतारको, पीसि लेप करि देहि ।
बाँधि टाटसों दुइ बखत, मिटै रोग सुख लेहि ॥२ ॥

अन्य मत ।

दोहा–मांस पुतरीको बढ़ै, नरम बहुत सरि जाय ।
नीक होय फिरि ऊछरै, कफगीरा सो आय ॥

चौ०–कुटकी मिर्च सोंठि औ पिपरी।सोंचर नमक,पीसि सब धरी
पाव पाव सब ले तोलाई । दैः तोला भरि हींग मिलाई ॥
बारह दिवस अश्वको दीजै । कफगीरा ताको हरि लीजै ॥

आधी गोली साँझको, आधी भोरहि आनि ।
दीजै चौदह रोज लगि, शालहोत्र मत मानि ॥ २ ॥
कही लगावन औषधी, जेती रसमों आइ ।
तिन्है लगावै नित्यप्रति, और बँधावति जाइ ॥ ३ ॥

अथ पावोंका गम्भीर रोग ।

दोहा–पाकै अरु फूटै बहै, अमिष कढो सो जानु ।
पीव चलै बहु छिद्र है, ताहि गँभीर बखानु ॥
चौपाई–सुमिलखार सज्जी औ चूना । जवाखार सबते लै दूना ॥
रेंडके पाता संग बँधावै । रोग गँभीर दूरि ह्वै जावै ॥

अन्य ।

दोहा--पान एकसै लीजिये, आधा पल सिंदूर ।
ग्यारह दिनलौ खान दे, जाय रोग गंभीर ॥

अथ सुम एडी खुश्कीसे फाटे उसकी दवा ।

दोहा–जा तुरंगके सुम बहुत, खुश्कीते फटि जाय ।
ताकी औषध कीजिये, रोग दूरि ह्वै जाय ॥
चौपाई–अरसी अरु गोदूध मँगावै । चमराकी थैली बनवावै ।
खीर पका इक थैली भरै । ताके भीतर सुमको धरै ।
साँझ सकारे या विधि कीजै। रोग हरै सुख बहुत करीजै।

अन्य ।

चौपाई–गूगुर खार मोम गुड़ लेहू । लोध लाख सैंधव सम देहू ।
पिपरी डारि सकल पिसवावै। गोघृत अरु तिलतेल मिलावै ।
अग्नि पकाय टापमें भरै। नीको होय रोग सब हरै ।

अन्य ।

चौ०–नैनू खार ऽरु सिंगरफ आनै।लोध मिलै मलहम सो ठानै।
तरवा लेप ताहि करवावै । रेंडके पाता सेंकि बँधावै ।

अन्य ।

दोहा-सुमके भीतर जासुके, अती नर्म हो जाइ ।
कीतौ मांस समान सो, सुमके भीतर आइ ॥ १ ॥
फेरि बरोबरि होइ करि, बैठि जाइ सुम आइ ।
आवत ताते पीबु है, हयते चलो न जाय ॥ २ ॥
छाती जाकी बन्द है, ताहि रोग यह होइ ।
कसरि तासुकी नो मिटे, दवा करै किन कोइ ॥ ३ ॥
असवारी लायक तुरी, औषध कीन्हें होइ ।
यासा औषध कीजिये, शालहोत्र मत जोइ ॥ ४ ॥

दवा ।

दोहा-तोलै एक अफीम लै, ता सम हींग मिलाइ ।
लेहु सोहागा डुहुंनसम, तासम गूगुर लाइ ॥ १ ॥
छा तोले भरि फिटकरी, हालिम तोले सात ।
पाव एक भरि लीजिये, साबुन हरदी तात ॥ २ ॥
आधपाव कुटकी बहुरि, सोऊ लेउ मिलाइ ।
नर शिरके पुनि बार लै, तोल चारि जराइ ॥ ३ ॥
कारीजीरी लीजिये, तोले चारि पिसाइ ।
यवको लेहु पिसान पुनि, सेर एक मँगवाइ ॥ ४ ॥
प्रथमहि हींग अफीमको, जलमें लेहु घुराइ ।
सबै औषधी पीसिके, तामें देहु मिलाइ ॥ ५ ॥
गोली बाधौ पंचदश, ताहि पिसानु मिलाइ ।
एक एक दोनों बखत, ताहि खवावत जाय ॥ ६ ॥

अथ पैरमें मोच जाय उसकी दवा।

दोहा—जो घोड़ाके हाथ पद, मोच जाय तिहि हेरि।
तो लेंड़ी भेड़ीनकी, अरु पिशाब तहँ गेरि॥ १ ॥
पतरी करि धरि अग्निपर, पके सो बाती भेइ।
धूप खड़ीकरि चुपरि तिहि, तीनि दिवस सुखलेइ॥२॥

अन्य।

दोहा—सर्षप तेल अफीमको, गेरू पीसि मिलाय।
पदपर सेंक जु दीजिये, तुरंत मोच विहाय॥

अन्य।

चौ०—लेउ सहोर चिटकुआ छाली। खारी नमक ताहिमें घाली॥
अग्नि पकाय बफारा दीजै। ताहि धोय मालिस करि दीजै॥
सात पाँच दिन औषध कीजै। मोच जाय तुरँगे सुख लीजै

अन्य।

दोहा—जो घोड़ाके सुममें, चढ़िकर मेष लगाय।
की ककरकी टीकरी, गड़े लंग है जाय॥ १ ॥
तापर हयको पद धरै, तका नमक डराय।
गर्म करै यक ईटको, पट गद्दी बनवाय॥ २ ॥
थोरो थोरो छोड़िये, जाहिं बफारा होय।
सकल मोच मिटि जाइ है, नकुल कहै मत सोय॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा—मैदालकरी लोधु पुनि, हालिम हर्दी आनि।
नरकचूर अरु तज सहित, पुहकरमूल बखानि॥ १ ॥
सबै औषधी भाग सम, सबके सम गुरु लाइ।
जलमो सबको पीसिकै, लीजे गरम कराइ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–चारि टकाभरि मोमको, लेउ ताहि पिघलाइ ।
सेंदुर पैसा दोइ भरि, तामें लेउ मिलाइ ॥ १ ॥
बांधे हयके पाइमें, टिकिया तासु कराइ ।
चारिउ पॉवन होइ जो, चौगुन लेउ मॅगाइ ॥ २ ॥

सोरठा–जौलौ नीक न होय, तौलौ नितप्रति बॉधिये ।
शालहोत्र कहि सोइ, बाजी नीको होत है ॥

अन्य ।

दोहा–चर्बी तोले एक भरि, बकरा दिलकी लाइ ।
एक एक तोले बहुरि, रार मोंम मॅगवाइ ॥ १ ॥
लेउ भेलावॉ पाउ भरि, गरीं दो पल आनि ।
पिस्ता और ककूॅदनी, दुइ दुइ तोले जानि ॥ २ ॥
ताको तेल कढ़ाइये, यन्त्र पतालहि माहि ।
ताहि लगावै वाजि सुम, तुरी नीक ह्वै जाहि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–ॲविली पाती स्याह तिल, पाउ एक सो आनि ।
लेउ विरोजा डेढ़ पल, ताके सम गुरु जानि ॥ १ ॥
तोले भरि जंगाल पुनि, सबको पीसि पकाइ ।
बॉधे हयके सुम विषे, टिकिया तासु बनाइ ॥ २ ॥

सोरठा–खोलै तिसरे रोज, तीनि दफा औषध करै ।
रहै न गदको खोज, कवि श्रीधर यह जानियो ॥

सोरठा–मोच जहांपर होइ, दीजे लेप लगाय तहँ ।
बारह दिनलों सोइ, बाजी नीको होत है ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–सज्जी हालिम सोंठि पुनि, मैदा लकरी आनि ।
एक एक तोले सबै, येती औषध जानि ॥ १ ॥
बीज कटाईके बहुरि, तोले पाँच मँगाइ ।
गऊमूतमों पीसिकै, सबको लेउ पकाइ ॥ २ ॥

सोरठा–मोच जहापर होइ, होति अहै सुजानि तहाँ ।
लेप लगावै जोइ, बारह दिनलौ ताहि पर ॥

अन्य ।

दोहा–राई अजवाइनि सहित, मैदालकरी आनि ।
सबको भाग समान लै, शालहोत्र मत जानि ॥ १ ॥
आवाहरदी सबनते, दूनी लेउ मँगाइ ।
औषध पैसा चारि भरि, दूध–माहि पकवाइ ॥ २ ॥
छाती जाकी बद है, मोच गईकी आइ ।
लेप लगावै सात दिन, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

अथ पैर भरि जायँ उसकी दवा ।

दोहा–जो रग है कर चरणकी, नली माँहपै सोय ।
अति मोटी पारि जात है, तुरँग लग तब होय ॥

चौपाई–यक हाँडीमे जलको भरै । पात पलाश ताहिमें धरै ॥
आधपाव खारी तिहि डारै। अग्नि पकाय अरध जल जारै॥
दल निकारि रुजपै कसि साधै । ताके ऊपर कपरा बाँधै॥
मूँज रसीमे दृग कसवावै । तिहि ऊपर सो पानी नावै ॥
तीनि दिवसमों नीको लेई । यह औषध जानो बुध सोई॥

अथ मधु पंकजरस रोग लक्षण व दवा। देखो घोडा न १६३

दोहा–बन्द बन्द जेहि अश्वके, गाठी परि परि जाइ।
मधुपंकज है नाम रस, आतुर करौ उपाइ ॥
चौ०–रसकी गिरहै सब चिरवावै। तेहिके ऊपर औषध लावै॥
बॉबीकेरि मृत्तिका आनै। और सँभारू पाती जानै॥
असगंध पानी लेपन करै। मधुपंकज रस तुरतै हरै॥

अन्य।

चौ०–राईपात मिठाई लावै। घोडेको उठि प्रात खवावै॥

अन्य मत।

दोहा–जाके सब गाँठिन विषे, बरम होति है आनि।
बरम नरम सो होति है, मधुपंकज रस जानि ॥ १ ॥
प्रथमे ताको चीरिकै, पानी देइ बहाइ।
ता पाछे औषध कही, ताको काजमें लाइ ॥ २ ॥
पात सँभारूके सहित, अरु असगँधके पात।
माटी बाँबीकी बहुरि, पाकी अँबिली तात ॥ ३ ॥
जलमें सबै पकाइये, तासों देइ धुवाय।
वही औषधी भीजिकै, तापर देउ बँधाय ॥ ४ ॥
सोरठा–जखम साफ जब होय, मलहम फेरि लगाइये।
सूखि जाय जब सोय, बाजी नीको होत है ॥ ५ ॥

अन्य।

सोरठा–हरे रडके पात, तोला एक सु लीजिये।
सो दीजै दिन सात, ता सम गुड़हि मिलाइकै ॥

दोहा-त्रय विंशति रुज चरणके, वरणे चेतनचंद।
लखि निदान औषध करे, कटै दुःखके फंद॥

अथ चोटसे कहींका मास फट जाय अथवा सम भीतर फट जाय उसकी दवा।

दोहा-मांसु जासु भीतर फटा, दरद दबाये होइ।
दरद दबाये होइ नहि, मोच जानियो सोइ॥
सोरठा-मैदालकरी आनि, हालिम हर्दी लेउ अरु।
दुइ दुइ तोले जानि, दुइ पैसा भरि तेल तिल॥
दोहा-स्याह तिलनकी पुनि खरी, पावसेरसो लाइ।
मुर्गी अंडा तीनि लै, तामें देउ मिलाइ॥ १॥
सबको पीसि पकाइ जल, दीजै ताहि लगाइ।
रेंडपात धरि ताहिपर, दीजै ताहि बँधाइ॥ २॥
औषध कीजै सात दिन, फटो मांस जुरि जाइ।
नितप्रति नई बँधाइकै, रोज लगावत जाइ॥ ३॥

अथ नस फट गयी हो उसकी दवा।

दोहा-सेंदुर तिलके तेलमों, लीजै खूब मिलाइ।
फटी जहाँपर नस अहै, दीजै खूब मलाइ॥ १॥
पात सँभारू आनिकै, की कमरखके पात।
गरम कराइ बँधाइये, सात रोजलौ तात॥ २॥

अथ नसफार व मोच दोनोकी दवा।

दोहा-भेड़ीके घी माहिमों, खारी लोनु मिलाइ।
ताहि मलै दिन सातलौ, नसकी पीर नशाइ॥

पकजपानरस ।

दोहा-गूँथीसी जाके परै, चारिउ पाँवन आनि ।
तिन गूँथिनते रस बहै, पंकजरस सो जानि ॥ १ ॥
जवाखार सज्जी सहित, दुइ दुइ तोले आनि ।
अमिलीजलमो घोरिकै, ताहि मिलावै जानि ॥ २ ॥
गूँथिनपर ताको मलै, तीनि रोज यह मानि ।
ता पाछे औषध कहौ, ताहि खवावो आनि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-अजवाइन सैंधव सहित, लहसुन सोंठि बखानि ।
बाघिनि हर्रौ दूध पुनि, बायबिडंगहि जानि ॥ १ ॥
तीनि तीनि तोले सबे, औषध लेउ मँगाइ ।
पल बतीस गुड़ ताहिमें, दीजे आनि मिलाइ ॥ २ ॥
यह औषध दिन सातलों, दीजै सबै खवाइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, पंकजरस मिटि जाय ॥ ३ ॥

अन्य मत ।

दोहा-कर अरु चरण तुरंगके, रस उतरै लँगराय ।
गुलफी पाँयनमा ह्नै, पंकज पात कहाय ॥ १ ॥
गुलफिनते लोहू चलै, कछुक सूज पुनि होय ।
ग्रंथिनमा कीरा परै, यह लक्षण लख सोइ ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा-रसकी गिरहै फोरिकै, करै सफेदी दूरि ।
जवाखारसज्जी मिलि, अँबिली भरै भरिपूरि ॥

लक्षण ।

सोरठा-वाजी गोजामाहिं, मोच गई सब नसनमो ।
कहत अहै पै ताहि, असवारी मो होत सो ॥ १ ॥
ऊँचे नीचे माहि, दौरत वाजी जोरसों ।
पै तबही है जाहि, वाजीके पुट्ठन विषे ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा-बकरी गुरदा माहिकी, चर्बी लेहु मँगाइ ।
आबाहरदी तिल सहित, तोले तोले लाइ ॥ १ ॥
मुर्गी अंडा माहिकी, जरदी लेउ कढ़ाइ ।
यलुआ मासे पट सहित, सबको पीसि मिलाइ ॥ २ ॥
चरबी करछा माहि करि, दीजै अग्नि चढ़ाइ ।
सो दुइ पोटरी बाँधिकै, तामें गरम कराइ ॥ ३ ॥
दोइ घरी ला ताहिको, दीजै खूब सेंकाइ ।
ताको लेप बनाइकै, दीजै ताहि लगाइ ॥ ४ ॥
बरगदपाता गरम करि, तापै देउ बँधाइ ।
या विधि कीजै सात दिन, हयकी पीर नशाइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा-सेंडुड़ पहुँचा आनिकै, तिहिको लेउ पकाइ ।
ताकी गूदी काढ़िकै, हरदी देउ मिलाइ ॥
सोरठा-बरम जहांपर होय, बारह दिन बाँधै तहाँ ।
नितप्रति औषध सोय, वाजी नीको होत है ॥

अन्य ।

दोहा-यलुआ चून अफीमको, तोला तोला आनि ।
लाल मिठाई तज सहित, दुइ दुइ तोला जानि ॥१॥

अन्य ।

दोहा–दूध लसोढ़े आनिकै, सैंध जवायनि लेय ।
लहसुन सोंठि भरंगि गुड़, संग खाइको देय ॥

चौ०–रसकी गिरहै साफ करावै । ता पाछे औषध लगवावै ॥
बाँबीकेरि मृत्तिका आनै । और सभालूपाती जानै ॥
असगँध पानी लेपन करै । पकजपान अश्वकी हरै ॥

दोहा–वाजीकेरे चरणकी, दीजे फरत खुलाय ।
पाछे करै इलाजको, रोग नीक हो जाय ॥

दवा ।

दोहा–पाती नीव पवाँर जर, दूध लसोढ़े लेइ ।
चँदसुर सुरभी घीउ सँग, खान तुरीको देइ ॥

चौ०–ऊसरकेरि मृत्तिका लावै । निबूरसमा सो घुरवावै ॥
लेपन करै गातमें जोई । तुरत नीक हय याते होई ॥

अन्य ।

चौ०–सैंधव बायबिडंग मँगावे । अजवाइनि हालिम पिसवावै ॥
गोघृत दूध लसोहर सानै । ग्यारह दिन खावै परमानै ॥
पछना ग्रंथि विचारिक देई । पान पिसाइ गरम करि लेई ॥
ग्रथिन ऊपर ताहि बँधावै । सात दिवसमा नीको पावै ॥

अन्य ।

चौ०–कफई पातीको रस लीजै । गुड़ घृतके सँग खानहि दीजै

अन्य ।

चौ०–हरदी सोंठि सोहागा लीजै । अक्षसुमत पर लेपन कीजै ॥
सर्षप तेल मीसिके खावै । सो रस रोग वेग ही हरै ॥

विष्ठ कबूतरको सहित, मैदा लकरी सोड़।
दोनों तोले आठ भरि, गेरु तोले दोड़॥ २॥
औषध पैसा दोइ भरि, नरके मूत पकाइ।
हयके ऊपर ताहिको, दीजै आनि लगाइ॥ ३॥
ढांक पात फिरि जोस करि, तापर टेउ बँधाइ।
बाँधा राखै तीनि दिन, दीजै फेरि खुलाइ॥ ४॥
तीनि दफा यहि विधि करै, पै नीको है जाइ।
शालहोत्र मत जानियो, श्रीधर बरणो आइ॥ ५॥

अन्य।

दोहा–कत्था नरके मूतमें, लीजै गरम कराइ।
पैके ऊपर ताहिको, दीजै लेप कराइ॥ १॥
मूत्र ताहि पर डारिकै, ताहि भिजावत जाइ।
औषध चौदह दिन करै, मोच ताहि मिटि जाइ॥ २॥

अन्य।

दोहा–तिल अरु साबुन मेलिकै, सज्जी ताहि मिलाइ।
जलमें सबको पीसिकै, लीजे गरम कराइ॥ १॥
लेप कीजिये सात दिन, ऊपर बरगद पात।
सोतो बाँधे गरम करि, तुरी नीक है जात॥ २॥

बहुत दिनकी पै हो उसकी दवा।

दोहा–सबै ओषधी करि चुकै, पेको घाउ न जाइ।
शालहोत्र मत जानिकै, ताको करै उपाइ॥ १॥
पावसेर हालिम विषे, यव पिसान मँगवाइ।
रोटी तासु बनाइये, एक तरफ पकवाइ॥ २॥

दोहा–रम उतरै है पूतरी, दवा न करु दिन बीस ।
छिरकि नमक खारी तहाँ, आधिक वहै सुख दीस ॥ १
हरदी चून मिलाइ सम, खतमें खूब लगाय ।
तीनि दिवस लावे सुघर, रुकै रसा सुख पाय ॥ २

अथ थामरतिलै रस ।

दो०–सुम पाकै जिहि अश्वके, आमिष गलि गलि जाय ॥
तातो पानी चलत है, थामरतिलै कहाय ॥
चौ०–चँदसुर लोहचन लेउ पिसाई ।तिलके तेल मोलि मलु भाई
घायके ऊपर लेपन करै । रँडके पाता गरमें धरै
टापू सेंकै पात बँधावै । आतुर घाव नीक ह्वै जावै

अन्य ।

चौ०–दूध लसोहर सैंधव लीजै । गुड़के संग खानको दीजै

अन्य ।

चौ०–छोटी हर्रे सैरु औ लुहचन । लेउ टंक सत्ताइस बुधजन
अरुण रंडके पात मँगावै।सकल पीसि रुजपर बँधवावै
ईंट ताति करि सेंकै जबही । सात रोजमें नीको लेही

अथ तलथमरस लक्षण व दवा ।

दोहा–सुमके भीतर जाहिके, दधिके सम ह्वै जाय ।
जरद नीर तासों चलै, तलथमरस सो आय ॥ १ ।
चँदसुर लोहचन लीजिये, पट तोले मँगवाइ ।
तिलको तेल मँगाइये, लीजै खरिल कराइ ॥ २ ॥
सोरठा–ताको लेप कराइ, ईंट गरम करि सेंकिये ।
रंडपात बँधवाइ, या विधि कीजै तीनि दिन ॥

लक्षण ।

सोरठा–वाजी मोजामाहि, मोच गई सव नमनमो ।
कहत अहैं पै ताहि, असवारी मो होत सो ॥ १ ॥
ऊँचे नीचे माहि, दौरत वाजी जोरसों ।
पै तबही ह्वै जाहि, वाजीके पुट्ठन विषे ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा–बकरी गुरदा माहिकी, चर्बी लेहु मँगाइ ।
आवाहरदी तिल सहित, तोले तोले लाइ ॥ १ ॥
मुर्गी अंडा माहिकी, जरदी लेउ कढ़ाइ ।
यलुआ मासे पट सहित, सबको पीसि मिलाइ ॥ २ ॥
चरबी करछा माहि करि, दीजै अग्नि चढ़ाइ ।
सो दुइ पोटरी बाँधिकै, तामें गरम कराइ ॥ ३ ॥
दोइ घरी, ला ताहिको, दीजै खूब सेंकाइ ।
ताको लेप बनाइकै, दीजै ताहि लगाइ ॥ ४ ॥
वरगदपाता गरम करि, तापै देउ बँधाइ ।
या विधि कीजै सात दिन, हयकी पीर नशाइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा–सेंहुड़ पहुँचा आनिकै, तिहिको लेउ पकाइ ।
ताकी गूदी काढ़िकै, हरदी देउ मिलाइ ॥
सोरठा–वरम जहांपर होय, वारह दिन बाँधै तहाँ ।
नितप्रति औषध सोय, वाजी नीको होत है ॥

अन्य ।

दोहा–यलुआ चून अफीमको, तोला तोला आनि ।
लाल मिठाई तज सहित, दुइ दुइ तोला जानि ॥१॥

अथ गतिभगीरस-लक्षण व दवा।

दोहा--कर औ चरण सुजि बहु, चले न पावै घोर।
गति भंगी तिहि नाम रस, बडो रोग है जोर॥ १॥
अधपॉय चौवंदिकर, दीजै रगै खुलाय।
पाछे करै इलाजको, रोग नीक ह्वै जाय॥ २॥
लीजे पात पवॉर जर, दूध लसोंहर लेइ।
चॅदसुर गोघृत सग लै, खान तुरीको देइ॥ ३॥

अन्य।

सोरठा--आंव नींबकी छाल, पानी लीजे हर्रको।
बीस टंक सो घाल, लहसुन लीजे टंक पट॥
चौ०-ज्वंडीकी जर आनो भाई। पाच टंक लीजे तौलाई॥
पीसि छानि गोघृत सँग दीजै।गतिभंगीरसको हरि लीजै
मुनि वासर तिहि दीजै खाना।ओपध दीजे चतुर सुजाना

अथ कचरस-लक्षण व दवा।

दोहा-अंग हलावे जो तुरँग, करै फरहरी देखि।
यह लक्षण भाषे नकुल, कचरस सो अवरेखि॥
चौ०-असगँध सोंठि बराबरिलीजै। कचरस रोग तुरँगको छीजै॥

अन्य।

चौ०-पित्तपापरा हींगजु पिपरी। मिरचै स्याह करो यक ठौरी॥
आठ आठ टंकै परमाना। कपरछान करि गोघृत साना॥
घोड़ेको जो देइ खवाई। कचरस हरै विथा सब जाई॥

२०

खुब माफ ह्वै जाय, नीव लगावो ताहिपर ।
मलहम देउ लगाइ, जखम सूरि तव जात है ॥ ३ ॥

अन्य लेप सर्व चोटका ।

दोहा—लेउ कँटयाके फलन, मोथा ताहि मिलाइ ।
यवके आटा सगमो, लीजै ताहि पिसाइ ॥
सोरठा—लेउ तासु पकवाइ, ताहि लगावे वाजिके ।
तुरी नीक ह्वै जाइ, लेप कीजिये याहि विधि ॥
दोहा—जाके अगिले धड़ विषे, चोट कहूँपर होइ ।
मदकते अरु पग विषे, लेप लगावे सोइ ॥
हयको बाँधे धूपमें, दीजै लेप सुखाय ।
या विधि कीजै पाँच दिन, टहलावत नित जाय॥

अन्य मोजा व गाठमें चोट हो उसकी विधि ।

सोरठा—थोरे तिल पिसवाइ, बकरा चरवी माहिमों ।
लीजे ताहि पकाइ, खूब सुरुस ह्वै जाइ जब ॥
दोहा—गाढे कपरा माहिमों, दीजे ताहि लगाइ ।
सो वाजीकी गाठिमें, दीजे आनि बँधाइ ॥ १ ॥
सुतरीसों मजबूतपै, ताहि बँधावे आनि ।
नितप्रति यह औषध करे, सात रोज लग जानि॥ २ ॥

अन्य पासोरा परकी लग ।

दोहा—रेंडतेल लै पाउ भरि, खूब निखालिस होइ ।
सेर एक तिल तैल पुनि, ताहि मिलावै सोइ ॥ १ ॥
ताहि कराहीमाहि करि, दीजै अग्नि चढ़ाइ ।
वीज हुरहुराके सहित, मालकाँगनी लाइ ॥ २

अथ अन्य मत कईतरहके रस लक्षण व दवा ।

दोहा–रस उतरे जिहिं सुमनमों, प्रगट वहत नाहिं होइ ।
तप्त रहै सुम रैनि दिन, गुप्त रहै रस सोइ ॥

दवा ।

सोरठा–सीपी चून मँगाइ, आँटामों भरि दीजिये ।
फिरि कपरा लपटाइ, माटी तापर लाइये ॥
दोहा–गाड़ि देइ सो अगिमों, पाकि खूब जब जाइ ।
चून निकारे ताहिते, ताकी यह विधि आइ ॥ १ ॥
सुमके भीतर ताहिको, भरत रोज सो जाइ ।
सही जानियो बात यह, रस ताको वहि जाइ ॥ २ ॥

प्रगट रस ।

सोरठा–सुमकी पुतरी माहिं, वहै आनि रस जाहिको ।
प्रगट जानियो ताहि, प्रथम देह बहिजान सो ॥
दोहा–औषध खुश्कीकी अहै, तिनको देउ भराइ ।
तासों नीको होइ नहि, ताको कहो उपाइ ॥ १ ॥
नीलाथोथा खदिर पुनि, सूखै पीसे आनि ।
सुमके भीतर लाइकै, भरै ताहिको जानि ॥ २ ॥
नहि असवारीको करै, जलसों देइ बचाय ।
शालहोत्र मुनि कहत है, कीजे यही उपाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

सोरठा–बहत होइ रसु जाहि, बीते जाके बहुत दिन ।
सुम नाकिस ह्वैजाइ, तरफ भीतरी जानियो ॥
दोहा–कुचिला गूदी रंडकी, मासे आठ प्रमान ।
मासे चारि अफीम पुनि, तामें देउ सुजान ॥ १ ॥

नास पाल सज्जी सहित, आँवाहर्दी आनि ।
बहुरि सोहागा लीजिये, दुइ दुइ तोले जानि ॥ ३ ॥
पुनि जमालगोटा बहुरि, गूदी तासु कढाइ ।
छा मासे सो तौलिके, दीजे ताहि मिलाइ ॥ ४ ॥
सबको पीसै एकमो, अति बारीक कराइ ।
रोटी काचीकी तरफ, दीजे ताहि लगाइ ॥ ५ ॥
बाँधे पै ऊपर यही, कपरासों यह जानि ।
तीनि रोजके बाद फिरि, खोलै ताको आनि ॥ ६ ॥
सोरठा–पाकि खूब जब जाइ फिरि याही विधिसों करे ।
शालहोत्र मत पाइ, कीजे औषध ताहिकी ॥
दोहा–धोवै ताहि पेशाबसों, खूब पाकि जब जाइ ।
यह औषध मँगवाइकै, ता पर देहु लगाइ ॥

दवा ।

सोरठा–हर्दी सिहजराइ, माईं औरो फिटकरी ।
दुइ दुइ तोले लाउ, सबको पीसि मिलाइये ॥
दोहा–रोज लगावै ताहिको, जौलौ सरि न जाइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥

अन्य पुरानी पैकी दवा ।

दोहा–बहुत दिननकी होइ पै, जखम ताहि परिजाइ ।
निकसत जाते पीव है, ताको कहौ उपाइ ॥
सोरठा–सज्जी लेइ मँगाइ, बहुरि सोहागा लीजिये ।
और निसोदर लाइ, भाग बराबरि सबनको ॥ १ ॥
जलमें लेइ पिसाइ, ताहि लगावो जखम पर ।
नीबपात उमवाइ, ताके ऊपर बाँधिये ॥ २ ॥

खूब साफ ह्वै जाय, नीव लगावो ताहिपर ।
मलहम देउ लगाइ, जखम सूखि तब जात है ॥ ३ ॥

अन्य लेप सर्व चोटका ।

दोहा-लेउ कँटयाके फलन, मोथा ताहि मिलाइ ।
यवके आटा सगमो, लीजै ताहि पिसाइ ॥
सोरठा-लेउ तासु पकवाइ, ताहि लगावै वाजिके ।
तुरी नीक ह्वै जाइ, लेप कीजिये याहि विधि ॥
दोहा-जाके अगिले धड़ विषे, चोट कहूँपर होइ ।
मदऊते अरु पग विषे, लेप लगावै सोइ ॥
हयको बाँधै धूपमें, लीजै लेप सुखाय ।
या विधि कीजै पाँच दिन, टहलावत नित जाय॥

अन्य मोजा व गाठमें चोट हो उसकी विधि ।

सोरठा-थोरे तिल पिसवाइ, बकरा चरबी माहिमों ।
लीजै ताहि पकाइ, खूब सुरुख ह्वै जाइ जब ॥
दोहा-गाढे कपरा माहिमों, दीजै ताहि लगाइ ।
सो वाजीकी गाँठिमें, दीजै आनि बँधाइ ॥ १ ॥
सुतरीसों मजबूतसों, ताहि बँधावै आनि ।
नितप्रति यह औषध करै, सात रोज लग जानि॥ २ ॥

अन्य पासोरा परकी रग ।

दोहा-रेंडतेल लै पाउ भरि, खूब निखालिस होइ ।
सेर एक तिल तैल पुनि, ताहि मिलावै सोइ ॥ १ ॥
ताहि कराहीमाहिं करि, दीजै अग्नि चढ़ाइ ।
बीज दुरदुराके सहित, मालकाँगनी लाइ ॥ २

दूध मदार मँगाइके, दीजै तामें डारि।
फिरि सुखवावै छाँहमें, श्रीधर कह्यो विचारि ॥ २ ॥
ता सम तामें स्याह तिल, तिन्है मिलावै आनि।
कूटै अति वारीक करि, शालहोत्र मत जानि ॥ ३ ॥
नितप्रति दीजै वाजिको, दोइ टका भरि ताहि।
औषध दीजै सात दिन, रोग नाश है जाहि ॥ ४ ॥

अन्य।

चौ०–तोले चारि चिन्हारू लावै। दुइ मासे गधी मिलवावै ॥
यह औषध ले हयको दीजै। सात दिवसमहँ नीको लीजै॥

अन्य।

दोहा–तोला भरि ले मोचरस, सात दिवस लगु जानि।
आध शेर शक्कर सहित, हयको दीजै आनि ॥ १ ॥
देखि बताना तासुको, औ मौसम पहिचानि।
जौन मुनासिब औषधी, हयको दीजै आनि ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा–टका चारि भरि लीजिये, त्रिफला ताहि कुटाय।
सेर एक शक्कर सहित, हयको देउ खवाय॥

अथ जरिआन रोग।

दोहा–मनी मूत्रके सँग गिरै, फर्क तासुके होइ।
होत दूबरो जाइ अरु, जरिआनो है सोइ ॥ १ ॥
भूँजो आटा मोटको, और चनेको जानि।
पाव पाव पके दुओ, तिनको लीजै छानि ॥ २ ॥

पाव सेर लै ट्ठुनको, जलसों लेउ पिसाइ ।
तैलमाहि सो डारिकै, दीजे ताहि पचाइ ॥ ३ ॥
ऑवाहरदी लेउ पुनि, गेरु सैंधव आनि ।
लीजै खरी अफीम अरु, दुइ दुइ तोले जानि ॥ ४ ॥
इनको जलमें पीसिकै, देउ तैल्मो डारि ।
ऑच खाइ थोरी जबै, लीजे ताहि उतारि ॥ ५ ॥
सोरठा–जब ठंढो है जाइ, फेरि चढ़ावै अग्निपर ।
लीजै खूब पकाइ, धरि राखै तब ताहिको ॥ १ ॥
लंग जहाँपर होइ, तहाँ लगावै ताहिको ।
कंडा आगी लाइ, नितप्रति सेंकै वह जगह ॥ २ ॥
दोहा–नव दिन कीजै याहि विधि, वरम तहाँ है जात ।
बाँबी माटी गरम करि, तहाँ लगावै तात ॥ १ ॥
फिरि टहलावै बाजिको, लंग तहाँ मिटि जाहि ।
शालहोत्र मत जानिकै, श्रीधर वरणो याहि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–बकरा गुर्दा माहिकी, चर्बी लेउ मँगाइ ।
मरे वरदको हाड़ लै, लीजे गूद कढ़ाइ ॥ १ ॥
आँबाहर्दी येलुआ, गरी लेउ पुरानि ।
चँदसुर लोधु मँगाइकै, छा छा तोले जानि ॥ २ ॥
चौबिस तोले तिल वहुरि, सबको पीसि मिलाइ।
पोटरी कीजे तासुकी, दुइ मजबूत बनाइ ॥ ३ ॥
नित पोटरिनते सेंकिये, चोट जहाँ पर होइ ।
तीनि रोज या विधि करै, चर्बी रोज मिलाइ ॥ ४ ॥

गूदी कड़ुवा बीजकी, पक्के पाव मँगाइ ।
गोंद बबूरहि तज सहित, बीजबंद अरु लाइ ॥ ३ ॥
केलाकी जर लेउ पुनि, इनको भाग समान ।
चारि चारि तोले करो, इनको जानु प्रमान ॥ ४ ॥
आध सेर शक्कर कही, पक्की तौल प्रमानि ।
पाँच सेर गोदूध लै, तौल सुपक्की जानि ॥ ५ ॥
खोवा करिकै दूधको, लीजै ताहि भुँजाइ ।
औषध सब शक्कर सहित, तामें देउ मिलाइ ॥ ६ ॥
दीजै हयको आठ पल, प्रात साँझको आनि ।
शालहोत्र मुनि यों कहो, होइ रोगकी हानि ॥ ७ ॥

अन्य ।

दोहा–केलाकी जर एक पल, मौसम गर्मी माहि ।
हयको दीजै तीनि दिन, रोग दूरि ह्वै जाहि ॥

अन्य ।

दोहा–रार लीजिये सेरु भरि, ता सम खाँड़ मिलाइ ।
हयको दीजै सात दिन, बीज बंद ह्वै जाइ ॥

अथ सुजाकरोगके लक्षण व दवा ।

दोहा–लिंग अगारी अश्वके, तहँ सुरखी कछु होइ ।
तुरी करै पेशाब जब, जरनि दरद तब होइ ॥ १ ॥
करै पेशाब रसेरसे, सूखत बाजो जाइ ।
ऐसे लक्षण जब मिलै, तब प्रमेह दरशाइ ॥ २ ॥
चौ०–खीरा ककरी बीज मँगावै । गुग्गुरु और ताहि मिलवावै॥
बहुरि कतीरा लेउ मँगाई । दश तोले सबको तौलाई ॥

सेंकि चुके जब तीनि दिन, ताको लेप बनाइ ।
लग होइ जिहि अगमो, दीजै तहाँ लगाइ ॥ ९ ॥

अथ अन्यमत सरदी गर्मीसे भर जाय, देह ऐंठे,
भूँख न लगे उसका उपचार ।

चौ०-लहसुन काराजीरी लीजै।मिरचा अरुण भागसम कीजै॥
दुइ तोला भरि गोली करै। सात रोज घोड़े मुख धरै ॥
तीनि दिवस फिरि ताहि न दीजै।इकइस दिन यहि क्रमते कीजै

अन्य भरनेकी व वलास चोटकी दवा।

दोहा-आपामार्ग बकायना, मुंडीपत्र कचूर ।
अमरलता सम लै भरै, घटमें जल करि पूर ॥ १ ॥
औटि तासु जल अँग तुरै, मलै खूब करि जान ।
सरदी गरमी श्रम भरो, मिटै तुरतही मान ॥ २ ॥

दोहा-लहसुन हरदी हेंसि तुच, मेथी सोवा कूटि ।
अरु भँगरैला मेलि दे, हरत वात सब छूटि ॥

अथ छिटका, चोट, मोच, गुखुरु डोलने और फूल उतरनेकी दवा।

चौ०-छिटका चोट मोच जिहि लागे।वाकी दवा करी दुख भागै
षोडश मुर्गी अंड मँगावै। तोला एक अफीम मिलावै ॥
आध सेर सक्कर वस लीजै।सर्षप तेल आध सेर कीजै॥
आध पाव लै आँबाहरदी।पीसि महीन करो यह गरदी॥
गेरु एक छटाक पिसावै। सकल मिलाय घेपि धरवावै॥
मालिस खूब करै बहु रगरै। कंडा भेड़ सेंक फिरि करै॥
साँझ भोर दुई बेर लगावै। सजै चोट नीक तिहि भावै॥
पंद्रह दिन याही विधि करै।तनुकी चोट सकल विधि हरै

दोहा-औषध तोले दश सबै, भाग समाने तासु।
हयको देउ नहार मुख, होइ रोगको नासु ॥ १ ॥
औषध दीजै सात दिन, श्रीधर कहो बखानि।
अथवा दीजै तीनि दिन, होइ रोगकी हानि ॥ २ ॥

अथ बदपेशाबकी दवा।

दोहा-सोरा कलमी लीजिये, टका तीनि भरि जानि।
गोदधिमें करि दीजिये, होइ रोगकी हानि ॥

अन्य।

दोहा-माठाके जलमाहिमें, लेउ कपर मिलाइ।
कपराकी बाती करै, तापर देउ लगाइ ॥ १ ॥
सोई बाती लिंगके, छेद माहि धरि देइ।
होय मूत्र तिहि अश्वको, रोग सकल हरि लेइ ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा-पाकी अँबिली पाउ भरि, जलमें लेइ मिलाइ।
कपरामें सो छानिकै, हयको देउ पिआइ ॥

अन्य।

दोहा-हयको लै ठाढो करै, धाम गडरिया-माहि।
सूंघै ताकी भूमिको, मूत्र तुरत खुलि जाहि ॥

अन्य।

दोहा-साबुन मिरचैं स्याह लै, विष्ट गरगवा आनि।
लै बाती ऊपर धरै, कूपोदकसों सानि ॥ १ ॥
छिद्र पेशाबहि माहिमें, बाती देइ धराइ।
शालहोत्र मुनि यों कहै, तुरत मूत्र खुलि जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई–कामूनी अरु गेरू लावै। तोले पाँच पाँच तौलावै ॥
तोला एक अफीमै लीजै। सर्षपतेल आध सेर कीजै ॥
कपरछान सब दवा करावै। तेल मिलाइ ताहि धरवावै॥
घामें बाँधिकै मालिस करै। अश्वरोग सगरे परिहरै ॥

अन्य ।

चौपाई–रेंड़ी गूदी सोंठि मँगावै। साँभरि नमक और लै आवै॥
टका टका भरि सब तौलावै। भैंसी दही सेर इक लावै॥
पीसि दवा सब दही मिलावै। दश दिन घूरेमें गड़वावै ॥
फिरि घूरेते लेइ निकारी। मालिस करै अश्व रुजहारी॥

अन्य बफारा।

चौ०–नीब सँभारू आँविली लावै। सन सहिजन सब पात मँगावै
बिरवा भटकटाइको लावै। कोदौ केर पयार मँगावै ॥
छालि सहोरेकी मँगवावै। बांबी दिमक कि माटी लावै॥
रेहू खारी नमक मँगावै। तैलयंत्रकी माटी लावै ॥
पाव पाव सब ले तौलाई। हाडीमें फिरि ताहि भराई ॥
पानी भरि मोहरा मुँदवावै। अग्नि चढ़ाइ ताहि पकवावै॥
देइ बफारा ताको भाई। वाही जलसे खूब धुवाई ॥
वाही दवा फेरि सब बाधै। आठ रोज याही विधि साधै

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत पादरोगचिकित्सावर्णन नामक
द्वादश अध्याय ॥ १२ ॥

अन्य ।

चौ०--ककरी खीरा बीज मँगावै । पीसि नीरमें ताहि पिआवै ॥
धाम गड़रियाके लै जाई । सूँघत मूत्र वाइ खुलि जाई ॥

अन्य ।

चौ०--मिर्च दक्षिणी सावुन लोनू । गरगौआकी विष्ठा तौनू ॥
बाती भिजे नरामें कीजे । छूटै मूत्र रोग हरि लीजै ॥

अन्य ।

चौ०--पिपरी सोंठि दुवौ पिसवावै । लिंगमध्य वाती चलवावै ॥
छूटै मूत्रधार अधिकारा । मेटै वाको सकल विकारा ॥

अन्य ।

चौ०--मिर्च कपूर सावुनै आनी । खरिल करौ पानीमें सानी ॥
वाती करो लिंगमें कोई । बहुत पेशाब करै हय सोई ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहे केशवसिंहकृत अश्वमूत्राधिकारवर्णन नामक त्रयोदश अध्याय ॥ १३ ॥

अथ घावकी दवा ।

दोहा- कुचिला और भेलावँको, लहसुन सेंदुर धूप ।
एकै एक छटाँक लै, मिर्चा अरुणै रूप ॥ १ ॥
लेउ तूतिआ पीसिकै, दुइ तोला परमान ।
तेल लीजिये सेर यक, मलहम करौ विधान ॥२॥

चौ०--तेल कराही तप्त करावै । नीवपात रस पाव मिलावै ॥
कुचिला लहसुन मिर्च भेलावा । डारु समूचे तेल बनावा ॥
पकि जावै पर देखो जबै । पीसि दवा मिलवावै सबै ॥

अन्य ।

चौ०-साँभरि गुड़ तोला वसुदीजै। अधिकमूत्रपर साधन कीजै
गेरह दिन सो देय खवाई। रोग नीक होई सुख पाई॥

अन्य ।

चौ०-पोस्ता साँभरि वबुरकि पाती।दुइ दुइ टंक लेउ यहि भाँती॥
यवके आटा भात खवाई। मूत्रधारको बंद कराई॥
पैसा भरि दतूनिको तेला। गदहपुरन वाकी जर मेला॥
दुइ पैसा भरि दीजै माता। मूत्रबंद ह्वै औषध खाता॥

अथ घोटा बहुत मूते उसकी दवा।

दोहा-मेथी अरु सोवाहि ले, आध पाव परमान।
दाना साथ खिलाइये, मूते कम यह जान॥

अथ लोहू मूते उसकी दवा।

दोहा-लोहू मूते जो तुरँग, ताको यह पहिचान।
पतरा गरमी सो लखै, गाढ़ जु बादी जान॥ १॥
पाँच दिवस ताकी दवा, करै न जिय घबराय।
छठयें दिन यह जतन करु, रोग दूरि ह्वै जाय॥ २॥
शक्कर भूर जु दोइ भरि, मैदा दुगुन मिलाय।
जलमें घोरि पिआइये, तुरत तुरै सुख पाय॥ ३॥

अन्य ।

दोहा-जो गाढ़ा हय खून लखु, तोला मिरच मँगाय।
ता आधी मिश्री मिलै, आटा सानि खवाय॥ १॥
याको दै जल दीजिये, जबलौं नीक न होय।
नित ही नित हय सुख लहै, करै जतन जो कोय॥२॥

देखै दवा तेलमें जली । ताहि कराहीमें तच खली ॥
या मलहमको नित्त लगावै । सबै घाव नीक हो जावै ॥

अन्य दवा खानेकी।

दोहा-जवाखार सैंधव जु मध, वायविडंग मिलाय ।
टुकरा टुकरा भरि सबै, पीसि दिये सुख पाय ॥

अथ घाव धोनेकी विधि ।

दोहा-जो धोवा छतको चहै, तौ दल नींब मँगाय ।
सो जलमें परिपक करि, धोय यही सो जाय ॥ १ ॥
की धोवै गोमूत्रसों, कृमि न तहाँ परि जॉय ।
जो कदापि कृमि देखिये, तौ करि यही उपाय ॥ २ ॥

अथ कीडानाशन दवा ।

दोहा-सुरती और मुलीमको, कूटि लीजिये छानि ।
भरि माटीसो लेपि दे, मरि झरि है कीरानि ॥

अथ घावमें लोहू बन्द न हो उसका उपाय ।

दोहा-मकरीको जारा तहाँ, बाँधि देइ मतिमान ।
की कचनरिपु फूँकि तहँ,डारि रुधिर रुकि जान॥
चौपाई-लै आवै दबुल अखबेना । कुंदुर संग जराय तलैना ॥
लै रूमी मस्तगी मिलावै । सकल दवा समभाग पिसावै॥
छतके ऊपर देउ लगाई । शोणित बन्द होइ सो भाई ॥

अन्य घाव सुखानेकी दवा ।

दोहा-जो जलदीमें घावको, चहै सुखाय प्रवीन ।
तौ गदहाकी लीदिको, सुखै पिसाय महीन ॥ १ ॥

अथ रक्तप्रमेहके लक्षण व दवा ।

दोहा–रक्त चलै पेशाब संग, रोग कठिन है ताहि ।
रक्तप्रमेह बखानिये, दवा न देर कराहि ॥ १ ॥
गऊ दूध दुइ सेर लै, सुरवौली जर आनि ।
तीनि टका भरि दीजिये, रोग हरै तिहि जानि ॥ २ ॥

अथ कामातुर रहनेके लक्षण व दवा ।

चौ०–निशि वासर अरु आठौ यामा। हयकी प्रीति तुरीके कामा॥
दोहा–मन्मथ जाग्यो प्रीतिते, अश्वाके उर आय ।
निशि वासर आठौ पहर, घोड़ीसों मन लाय ॥
चौपाई–समुदफेन औ पिपरी आनै । दश टक दूनौं परमानै ॥
हीग टका भरि तामें सानो। तीनों औषध पीसि बखानो॥
टक पाँच शक्कर सो लीजै । सकल सानि गोघृतमें दीजै॥
घोड़े सात दिवस दे प्राता। मन्मथ तुरत रहै तिहि गाता॥

अथ मूत्रकृच्छ्र(रक्तप्रमेह)की दवा ।

दोहा–साँचर हरदी पीपरै, इंद्रायणफल लेउ ।
मूत्रकृच्छ्र हयको हरै, पिंड परम विधि देउ ॥

अथ ।

सोरठा–सैंधव युत जंभीर, पिंड मिलायक दीजिये ।
मूतै रक्त अधीर, होत दिये है परमसुख ॥

अथ मूत्रप्रमेह(बार बार मूतने)की दवा ।

चौपाई–मूत्र अधिक घोड़ाके गिरै। ताकी औषध या विधि करै॥
वरुआ तोंबी टका चारि भरि। हीग अधेला एक ताहि धरि॥
गौके दूधहि संग मिलाई । धारा मूत्र बंद है जाई ॥

लाय दीजिये घावपर, जैहै सखि तुरन्त ।
की पुरान जूताहिको, पीसि भरै गुणवन्त ॥ २ ॥
की सबजीको पीसि भरि, देहै यहौ सुखाय ।
की पसुरी लै ऊँटकी, भरिये ताहि जलाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–लेउ फिटकरी खील करि, और सुफेदा मानि ।
लीजे सिघजराव पुनि, तीनोंको सम जानि ॥ १ ॥
सबको सूखो पीसिकै, दीजै आनि लगाइ ।
भरि आयो जो साफ है, जखम सूखि सो जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–वस्त्र पुरानो स्याह जो, ताको देउ जराइ ।
ताहि लगावे घावपर, जलदी जखम सुखाइ ॥

अथ जखममें मास बढ आवे उसकी दवा ।

दोहा–एलुवा लेउ निसोदरहि, पटमासे मँगवाइ ।
सेंदुर मासे पाँच भरि, तीनों लेउ पिसाइ ॥
सोरठा–ताको लेउ मँगाइ, मांस बढ़ि गयो होइ जहँ ॥
बीरा एक पिसाइ, तापर दीजै बाँधि सो ॥
दोहा–सीपचून सज्जी सहित, नीलाथोथा आनि ।
पुनि हर्दीकी राख लै, चारोंको सम जानि ॥ १ ॥
सूखो याको पीसिकै, दीजे जहां लगाय ।
मांस फटत मुरदा रहै, जखम अधिक परिजाइ ॥ २ ॥

अन्य मलहम ।

दोहा–तिलका तेल छटाक भरि, डारि कराही माहि ।
लेउ बिरोजा दोइ पल, डारि तेलमें ताहि ॥ १ ॥

अन्य।

चौ०–साँभरि गुड़ तोला वसुदीजे। अधिकमूत्रपर साधन कीजे
गेरह दिन सो देय खवाई। रोग नीक होई सुख पाई॥

अन्य।

चौ०–पोस्ता साँभरि बबुरकि पाती।दुइ दुइ टंक लेउ यहि भाँती॥
यवके आटा प्रात खवाई। मूत्रधारको बंद कराई॥
पैसा भरि दतूनिको तेला। गदहपुरन ताकी जर मेला॥
दुइ पैसा भरि दीजै प्राता। मूत्रबंद ह्वै औषध खाता॥

अथ घोड़ा बहुत मूते उसकी दवा।

दोहा–मेथी अरु सोवाहि लै, आध पाव परमान।
दाना साथ खिलाइये, मूते कम यह जान॥

अथ लोहू मूते उसकी दवा।

दोहा–लोहू मूतै जो तुरँग, ताकी यह पहिचान।
पतरा गरमी सो लखै, गाढ़ जु बादी जान॥ १॥
पाँच दिवस ताकी दवा, करै न जिय घबराय।
छठये दिन यह जतन करु, रोग दूरि ह्वै जाय॥ २॥
शक्कर भूर जु दोइ भरि, मैदा दुगुन मिलाय।
जलमें घोरि पिआइये, तुरत तुरै सुख पाय॥ ३॥

अन्य।

दोहा–जो गाढ़ा हय खून लखु, तोला मिरच मँगाय।
ता आधी मिश्री मिलै, आटा सानि खवाय॥ १॥
याको दै जल दीजिये, जबलौं नीक न होय।
नित ही नित हय सुख लहै, करै जतन जो कोय॥२॥

तप्त कीजिये अग्निपर, देउ बिरोजा जारि ।
काढि बिरोजा डारिये, लीजै तेल उतारि ॥ २ ॥
एक कर्ष जगाल लै, ताको लेउ पिसाइ ।
ताते आधा मोम लै, तामें लेउ मिलाइ ॥ ३ ॥
फेरि गरम थोरा करहु, राखो ताहि धराइ ।
फीहा तासु बनाइकै, दीजै रोज लगाइ ॥ ४ ॥
कटत माँसु मुरदा रहै, पूरि जखम सो जाइ ।
जखम जौन बिगरो अहै, ताको मलहम आइ ॥ ५ ॥

अन्य मलहम चर्मका ।

दोहा—बकरा मुर्दा माहिकी, चर्बी लेउ मँगाइ ।
सो तोले भरि तौलिकै, मोम तासु सम लाइ ॥ १ ॥
लेउ सफेदा डेढ पल, पुनि सेंदुर पल चारि ।
फूल गुलाबहि फिटकरी, नौ नौ मासे डारि ॥ २ ॥
चदन लीजै श्वेत पुनि, दुइ तोले मँगवाइ ।
पृथक पृथक सब ओषधी, जलमें लेउ पिसाइ ॥ ३ ॥
दोइ सेर तिल तेलमें, चर्बी मोम मिलाइ ।
मन्द आँच पर ताहिको, दीजै आनि धराइ ॥ ४
चर्बीमोम दुओ जबै, तेलमाहि मिलि जाइ ।
एक एक कारि ओषधी, लीजै सबै पचाइ ॥ ५ ॥
स्याही पकरै तेल जब, लीजै तबै उतारि ।
ताहि लगावै चर्मपर, सात रोज लगु टारि ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा—जा बाजीकी जानुमें, चर्म होइ जो आइ ।
बफला छोलि पिआजको, तापर देउ बँधाइ ॥

अन्य ।

दोहा-जमुनी छाली सेर यक, वतनै गूलरि छालि ।
काढ़ा करि दानाहि सँग, आव पाव मित घालि ॥१॥
तीनि दिवस यहि रीतिसों, दीजे जतन बनाय ।
युद्धधीर भाष्यो प्रमित, रक्त मूत्र नशि जाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-जेठीमधु जवचोकरा, असगँध अरु अँवराहि ।
पीसि पिआवै नीरसों, रुधिर मूत्र नशि जाहि ॥

अन्य बहुत मूतै उसकी दवा ।

दोहा-घोड़ा जो मूतै बहुत, ताको यही उपाय ।
पस माघके मासमें, तिल गुड देइ खवाय ॥

अन्य मत-रक्त मूतनेकी दवा ।

दोहा-लेउ पिसानु सिघारको, आध पाव यह जानि ।
शक्कर लीजै पाव भरि, दोनों लीजै सानि ॥ १ ॥
सैंधव तोला एक भरि, दोऊ लेउ मिलाइ ।
ताहि खवावै वाजिको, दीजै नीर पिआइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-जो गर्मीतें वाजिको, मूत्र रक्तको होइ ।
औषध ताकी कहत हौं, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
लेउ कतीरा एक पल, शक्कर दूनि मिलाइ ।
सो घोड़ेको दीजिये, रक्तमूत्र नशि जाइ ॥ २ ॥

अन्य गर्मी व वादीकी पहिचान ।

दोहा-क़ोखी मारे हटि रहै, अरु कोखी चढ़ि जाय ।
वादी ताको जानिये, शालहोत्र मत आय ॥ १ ॥

अन्य बर्मकी दवा ।

दोहा--ऑबाहर्दी तिल सहित, तोला आठ बखानि ।
अजवाइनि मेथी सहित, मैदालकरी जानि ॥
सोरठा--तज अरु साबुन लाइ, तीनि तीनि मासे सबै ।
सबको लेउ पिसाइ, तोला भरि तिल तेल लै ॥
दोहा- सबै औषधी तेलमो, हेलुवा लेउ पकाइ ।
याही औषधते बरम, बहुत बार सैंकवाइ ॥ १ ॥
फिरि थोरा जल डारिकै, हेलुआ लेउ पकाइ ।
लेप कीजिये बरम पर, तुरत नीके ह्वै जाइ ॥ २ ॥

अथ तगसे छातीमें जख्म हो उसकी दवा ।

दोहा--जाकी हड्डी फटि गई, लीलवरी सो लाइ ।
छाती जाकी अति कटी, मलहम देउ लगाइ ॥ १ ॥
थैली कपराकी सिँये, अजया चरबी लाइ ।
थैली तामें बोरिकै, तंग-माहि पहिराइ ॥ २ ॥
जीन कसे ता तंगते, कवि श्रीधर यह जानि ।
छाती पोढ़ी परत है, फेरि कटति नहि आनि ॥ ३ ॥

अथ पीठ फूलनेकी दवा ।

दोहा-जो सूजनि हयपीठि लखि, चिकनी माटी आन ।
सानि ताहि वापर धरै, मिटि है सूजि प्रमान ॥

अन्य ।

दोहा-इसबगोलको पीसिकै, तापर देइ लगाय ।
याहूसों मिटि जायगो, पीठि सोथ सुख पाय ॥

खून जासु पेशावमें, स्याही लीन्हें होय।
अरु कछु गाढ़ा सो गिरे, केवल गर्मी होय॥ २॥
बिलखो खून पेशावसों, अरु लक्षासों होइ।
जानों वात विकार सो, और चताना जोइ॥ ३॥
बूंदन होइ पेशाव जो, अतिहि दरद तिहि होय।
करत पेशावहि विकल ह्वै, पथरी जानो सोइ॥ ४॥

दवा।

दोहा-सुरवारी मूरी बहुरि, दोनों बीज मँगाइ।
दोनों तोले चारि भरि, जलमें लेउ पिसाइ॥ १॥
दिन यकइसलौं ताहिको, रोज पिआवत जाइ।
पथरी हयकी गिरिपरे, जो यह करे उपाइ॥ २॥

अन्य मत-खून मूतनेकी दवा।

दोहा-जाहि करे जेहि माहिमो, पहुँचत गरमी आइ।
मूतत वाजी खून जो, शालहोत्र कहि ताइ॥ १॥
औरा तोले चारि लै, जलमें लेउ भिजाइ।
चारि टका भरि लीजिये, भूँजे जव पिसवाइ॥ २
औरा लीजे जल सहित, आटामाहि सनाइ।
हयको देइ नहार मुख, रोग सबै बहि जाइ॥
गर्मीके महिना विषे, यहि औषधको देइ।
औषध दीजे सात दिन, रोग वाजि हरि लेइ

अन्य।

दोहा-सोरट मासे फिटकरी, जलसों देइ
औषध कीजे सात दिन, रोग नाश ह्वै

अन्य।

दोहा-की साबुन पानी गरम, धोय ताहिसों देय ।
याहूसों मिटि जात है, पीठिसुज सुख लेय ॥

अन्य।

दोहा-की कटु तेल लगायकै, बासी जलसे धोय ।
याहूसों मिटि है सुघर, धरै जीन नहि कोय ॥

अन्य।

दोहा-पानी खूब गरम करै, तिहि पट बोरि निचोइ ।
यही सेंक जो देउ नृप, पीठि-सोथ हरि लेइ ॥

अथ पीठ लगनेकी दवा।

दोहा-नीलाथोथा फिटकरी, खैर पापरी रार ।
करु तेल सम लीजिये, मलहम करु निरधार ॥ १ ॥
कांसे बासन राखिकै, पीठि लगावै कोय ।
या विधि औषध कीजिये, घाव नीक सो होय ॥ २ ॥
चौ०-साबुन औ लिल्बरी मँगावै। करुये तेल मध्य औटावै ॥
पीठीपर लावै जो कोई। घाव नीक सो याते होई ॥

अन्य।

दोहा-चून पुराना आठ भरि, पाव एक कटुतेल ।
डारि चून जलमें प्रथम, फिरि कटु तेल जु धेल ॥ १ ॥
खूब फेंटि दीजो मिलै, लै उठाइ जल त्यागि ।
लकरीमें फीहा बनै, याही विधि तहँ लागि ॥ २ ॥
कई रोज नित बार द्वय, लावै छतपर जानु ।
माखी तहाँ न बैठि है, सूखै जल्दी मानु ॥ ३ ॥

अन्य ।

सोरठा–गदापात मँगवाइ, जानौ तोले चारि भरि ।
शीतलचीनी लाइ, तोला भरि मौताज करि ॥

दोहा–पत्थर सिंहजराउको, तोला डेढ़ मँगाइ ।
सोरा मासे षट सहित, सबको लेउ पिसाइ ॥

सोरठा–औषध देउ खवाइ, पाछे पानी दीजिये ।
रोग नाश ह्वै जाय, सात रोजके मध्यमें ॥

अन्य ।

दोहा–स्याह मिर्च मँगवाइये, षट तोला भरि जानि ।
पीसि सिंघारे लीजिये, पाव एक यह मानि ॥ १ ॥
दुइ दुइ तोले लीजिये, सौंफ करारिको डारि ।
सोंचरु तोले एक भरि, मिश्री तोले चारि ॥ २ ॥
सबको पीसि मिलाइये, जवके आटामाँहि ।
हयको दीजै सात दिन, रोग नाश ह्वै जाहि ॥ ३ ॥

अथ सलसल बोलिया रोगकी दवा व लक्षण ।

दोहा–खुलिकै होइ पेशाब नहि, अरु बूँदनते होइ ।
मानौ सलसल बोलिया, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
अंडा लीजै मुर्गका, छिलका ताहि छिलाइ ।
पैसा भरि तादाद करि, घीमें लेउ भुँजाइ ॥ २ ॥
दाना पीछे साँझको, दीजै ताहि खवाइ ।
या विधि कीजै सात दिन, रोग नाश ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

अन्य

दोहा–जवपिसान लै सेरु भरि, अजयामृत मिलाइ ।
ताहि भिजावो एक दिन, लीजै छाँह सुखाइ ॥ १ ॥

अन्य ।

दोहा-आधसेर लै तेल तिल, कली चून इन्द्रान ।
पानी पाव प्रमान करि, फाट लगाव विधान ॥

अन्यमत मदऊमें रगड़ लगै या पाठ कटि जाय उसकी दवा ।

दोहा-रगर लगै मदऊविषे, की थोरा कटि जाइ ।
लीलबरी जल घोरिकै, तामें देउ लगाइ ॥

अन्य ।

सोरठा-नीबपात मँगवाइ, पीसै लोन मिलाइकै ।
रोज लगावत जाइ, साफ होइ जौलौं नहीं ॥

अन्य ।

दोहा-आँबाहलदी पीसिकै, तापर देउ लगाइ ।
पाँच सात दिन माहिमें, सूखि जखम सब जाइ ॥

अन्य मदऊ फलि जाय उसकी दवा ।

दोहा-औषध कीन्हें जासुकी, सूजनि उतरै नाइ ।
माटी लेउ पकाइकै, तापर देउ लगाइ ॥ १ ॥
पाकि जाइ मदऊ तबै, फूटि फेरि बहि जाइ ।
नींबपात अरु लोनको, तापर देउ लगाइ ॥ २ ॥

सोरठा-पीव साफ ह्वै जाइ, मलहम फेरि लगाइयो ।
जखम नीक ह्वै जाइ,कवि श्रीधर यह जानियो ॥

अथ पीन लुवानसे सम निग्ले उसकी दवा ।

दोहा-जो दधिको जल डेढ़ पल, ताको लेउ छनाइ ।
पैसा भरि पुनि चूनको, तामें देउ मिलाइ ॥

सोरठा-चाती ऊपर लाइ, सो चाती धरि जखमपर ।
फीहा देउ बनाइ, ता ऊपर सो लाइकै ॥

अन्य मलहम ।

दोहा-पाउ एक तिल तेल लै, दीजै आँच चढ़ाइ ।
घुँघुचिलु लाट सफेद पुनि, नरके नहँ मँगवाइ ॥
सोरठा-जारि तेलके माहि, रगैरे लकरी नीबमों ।
एकमाहि मिलि जाहि, तब धरि राखै ताहिको॥
दोहा-फीहा ऊपर ताहिको, रोज लगावत जाइ ।
जखम होइ मदऊ बिषे, जलदी नीक दिखाइ ॥ १ ॥
यह मलहम नासूरमें, जो कोइ देय लगाय ।
चंगा होवे अश्व अति, जखम नीक हो जाय ॥ २ ॥

मुर्दार मास दूर करनेकी दवा ।

दोहा-दुइ पल लैके तेलतिल, दीजे अग्नि चढ़ाइ ।
मोम बिरोजा दुहुँनको, तोले चारि मँगाइ ॥ १ ॥
तेलमाहि सो डारिये, पाकि खूब जब जाइ ।
तब उतारै अग्नितें, लीजे ताहि छनाइ ॥ २ ॥
तोला भरि जंगाल लै, दीजै तामें डारि ।
थोरा ताहि पकाइके, लीजै तुरत उतारि ॥ ३ ॥
जखम ऊपरै ताहिको, फीहा देउ लगाइ ।
मांस फटत मुर्दार है, जखम साफ ह्वै जाइ ॥ ४ ॥

अथ जखममें खुरूरी आनेकी दवा ।

दोहा-रेवतचीनी तज सहित, पैदा-लकरी आनि ।
और हिरमिजी लीजिये, यक यक तोले जानि ॥ १ ॥
सबको पीसै एकमें, राखे ताहि धराइ ।
नीरमाहि सो सानिकै, थोरा देइ लगाइ ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा-साँभरि लहसुन लीजिये, टका पचीस मँगाय।
सो दीजै दिन तीसलौं, अंग सकल खुलि जाय॥

अन्यमत।

दोहा-जो जकड़ो घोड़ा तुरत, हनि कोड़ा दौराय।
खूब पसीना गलित लखि, पट दे खूब उढ़ाय॥ १॥
टहलावै अतिही तुरँग, जावे अरक सुखाय।
बंद मकानहि बाँधिये, कबहूँ पवन न जाय॥ २॥
फिरि कंमरते पोंछिके, परै न लखि यक रोम।
सेर शराब पिआइये, अरष बढ़े तन तोम॥ ३॥
लखै फायदा करत नित, उतनी ही ले प्याइ।
यह है अजमाइस कियो, जकड़ पैर खुलि जाइ॥ ४॥
की जलमें पैरावई, लै तुरग नित जाय।
तबहूँ खुलि जैहै जकड़, सो अति ही सुख पाय॥ ५॥

अन्य।

दोहा-की मदारको पात लै, देउ अढाई आनि।
मलि पाती मुख लाइ घृत, दिवस एक दै जानि॥

अन्य।

दोहा-आध पाव इसबदसम, नागौरी असगंध।
अजवाइनि उतनीहि लै, खुरासानि लखि बंध॥ १॥
आँबाहरदी सम करौ, गूगुर महिष समान।
पाव मालकाँगनि मिलै, लहसुन पाव प्रमान॥ २॥
लै फिटकरी छटाँक यक, सज्जी लोट छटाँक।
डारि सोहागा खील सम, सुधा फिटकरी पाक॥ ३॥

अथ नासूरकी दवा ।

दोहा-सेर एक तिल तेल लै, दीजै अग्नि चढ़ाइ ।
मालकाँगनी एक पल, तामें देउ जराइ ॥ १ ॥
नीब पात लै एक पल, टिकिया तासु बनाइ ।
तेलमाहि सो जारिकै, डारै तिहि निकराइ ॥ २ ॥
मोम रार इन दुहुँनको, लीजै तोला चारि ।
ताहि मिलाइ पकाइकै, लीजै फेरि उतारि ॥ ३ ॥
सेंदुर मासे चारि सम, नीलाथोथा लाइ ॥
ताहि मिलाइ पकाइये, जब शीतल है जाइ ॥ ४ ॥
ताहि मिलावे जखमपर, अरु नासूरहि माहि ।
भरि आवत नासूर है, जखम नीक है जाहि ॥ ५ ॥

नासूरकी अन्य दवा ।

दोहा-नीलाथोथा मधु खादिर, फेंटि जु बाती भेइ ।
देइ नसूरहि छेदमें, मिटै रोग सुख लेइ ॥

अन्य ।

दोहा-लेउ कमीला अतिखरो, नौ मासे भरि जानि ।
कत्था मासे तीनि भरि, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
नीलाथोथा लेउ पुनि, मासे दोइ मँगाइ ।
विना बुझाये चूनको, यक मासे भरि लाइ ॥ २ ॥
गोघृत तोले तीनि भरि, इन्हें मिलावै आनि ।
रगरै ताको जोरसों, पहर एक सो जानि ॥ ३ ॥

पीसि छानि सम लीजिये,गुड़ पुरान यक सेर ।
सोरह गोली करि धरौ, साँझ भोर मुख गेर ॥ ४ ॥
दाना नीर न दीजिये, जबलौ गोली खाय ।
जो पानी दीन्हों चहै, दीजै लोह बुझाय ॥ ५ ॥
कई बेर याको सुघर, राखो है अजमाय ।
जकड़ो सब खुलिजाइ है, दवा करौ मन लाय ॥ ६ ॥

अन्य ।

चौ०–लेउ अकरकरहा मँगवाई । एक छटॉक वजन करवाई ॥
कालि मिर्च असगँध नागौरी । आध आध पावै लै धरी ॥
एक जायफर देउ मिलाई । सहद सानि गोली बनवाई ॥
चनाके आटा साथ खवावै । जकड़ा खुलै अश्व सुख पावै ॥

अथ सीनाशोथकी दवा ।

चौ०–जो घोड़ेको सूजे सीना । ताकी औषध सुनौ प्रवीना ॥
अहि केसरि अँबरा दुइ लीजै । गुरचसत्त जातीफल दीजै ॥
दाडिमफल शक्कर औलोधा । दश२ दमरी भरि सब शोधा ॥
चौथाई घृत डारि खवावै । हरै शोथ वाजी सुख पावै ॥

अन्य ।

चौ०–कांजी खुरासानि बच आनै । गोरोचन अरु मोम विधानै
पाँच पाँच दमरी मित कीजै । सेर एक घृतमें औटीजै ॥
नितही नित वाजीको दीजै । कई रोज इमि जतन करीजै

अन्य ।

दोहा–औरा नागेश्वर गुरच, बरैं सोरा आनि ।
फल अनार अरु जायफल, सैंधव सम करि जानि ॥१॥

मल्हम सवतरहके जखम जल्द पूरे ।

दोहा—मोम सफेदा लीजिये, खैर पपरिया लाइ ।
दो दो तोले ये सबै, तिनको लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
गाजर सलगम बीज पुनि, यक यक तोले आनि ।
लीजै मुर्दाशंख पुनि, दश मासे सो जानि ॥ २ ॥
आध पाव तिल तेलमें, दजि अग्नि चढ़ाइ ।
नीबपात पल एक लै, टिकिया तासु बनाइ ॥ ३ ॥
जारै ताको तेलमें, डारै फेरि निकारि ।
सबै दवाई पीसिकै, दीजै तामें डारि ॥ ४ ॥
षट मासे सेंदुर बहुरि, तामें देउ मिलाइ ।
रगरै लकरी नीबसों, एक रूप ह्वै जाइ ॥ ५ ॥
ताहि लगावै बाजिके, जखम जहाँ पर होइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, जल्दी नीको सोइ ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा—कत्था एक छटाँक भरि, दूनी रार मिलाइ ।
आध पाव तिल तेलमें, तीनों देउ डराइ ॥ १ ॥
नीलाथोथा फिटकरी, दूनों खील कराइ ।
दुइ दुइ मासे तौलिकै, तेऊ लेउ मिलाइ ॥ २ ॥
फूलकि थारीमाहि धरि, कवि श्रीधर यह जानि ।
धोवै ताको बार शत, एक बार अस जानि ॥ ३ ॥
फीहा ऊपर ताहिको, दीजै खूब लगाइ ।
पीब छुटति है जखमते, पूरि जल्द सो जाइ ॥ ४ ॥

सवा सवा भारि पीसि जल, चौथाई घृत नाय।
अवशि जानियो ताहिको, दीन्हे दुःख नशाय॥ २॥
जो घोड़ेके तॅग लगे, छूटै यही उपाय।
जलमें कागज भेइ तहँ, लाय तग कसि जाय॥ ३॥

अथ सर्वांग शोथ।

चौ०-जो घोड़ाके शोथा पकरै। ग्रीवा जिहि औरौ तनु जकरै॥
ताको प्रथम सेंक यह करै। घुघुवारी सेवव करि धरै॥

अन्य।

चौ०-ता पाछे यह लेपन करै। अंगरोग घोड़ेको हरै॥
दोहा-अजवाइनि अजमोद लै,हीग सोंठि सम लेउ।
कारीजीरी मिर्च सों, लेपन तिहि करि देउ॥
सोरठा-जवै शोथ मिटि जाय, सूधी गर्दन होइ तब।
कीजै यही उपाय, रग छातीकी खोलिये॥

अन्य।

चौ०-तूत वकायन रेंड सँभारू। अमरवेलि धतूरा डारू॥
दाडिम लै दल और मकोई। लेउ बुद्धि जन सम करि सोई॥
जलमें चुरै बफारा दीजै। सकल शोथ हयको हरि लीजै॥

अथ मिपरोगलक्षण व दवा।

दोहा-हयके सीना माहिमें, होत वर्म जो आइ।
दर्द होत है ताहिमें, औरौ यह दरशाइ॥ १॥
गर्भ लगै करके छुए, तौन वर्म यह जानि।
दाना घास न खात है, रहत सुस्त यह मानि॥ २॥
राई सरसों जरद लै, अरु अजवायनि लाइ।
जवाखार अरु सोंठि लै, हरदी सहित पिसाइ॥ ३॥

अथ जखमपर बार जामनेकी दवा ।

दोहा–बार जमायो घाव पर, चैहै सु तेल मँगाय ।
कछुवा बार थुकसो घसे, दीजै तहाँ लगाय ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत अश्वघाववर्णन
नामक चतुर्दश अध्याय ॥ १४ ॥

अथ सीनाबन्दके लक्षण ।

दोहा–हयते मेहनति लीजिये, अरु ठाढ़ो करि देय ।
ताते सीना भरत है, जानि विचक्षण लेइ ॥

गर्मीके दिनोंकी दवा ।

दोहा–खील सोहागा फिटकरी, रेवतचीनी पाइ ।
गूगुरघुत सब ओषधी, सोरह तोले लाइ ॥ १ ॥
सज्जीसाबुन लीजिये, तोले दश मँगवाइ ।
दो तोले हलदी सबै, पीसै गुड़हि मिलाइ ॥ २ ॥
पीड़ा बाँधे ताहिके, वज़न छटाँक सुजानि ।
हयको दीजै एक नित, प्रातकाल सो आनि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–छा मासे ले फिटकरी, लावा लेइ कराय ।
पीसि मिलावे नीरमें, वाही रोज पिआय ॥

अन्य ।

दोहा–तेलीके कोल्हू विषे, बरद फिरत जहँ आनि ।
माटी लीजै ताहिकी, अरु बाँबीकी जानि ॥ १ ॥

अरु अँबिलीके पात ले, तेऊ लेट पिसाइ ।
जेती है सब ओषधी, तिनको देइ मिलाइ ॥ ४ ॥
सोरठा—लीजै गर्म कराइ, ताहि लगावै बर्मपर ।
रेंडपात सेंकवाइ, ता ऊपरते बाँधिये ॥
चौ०—ऊपर कपरा देइ बँधाई । बहु मजबूत ताहि करवाई ॥
वर्म बैठि ताहीसे जावे । नहि बैठै तो फोरि बहावे ॥
पीव निकासि जब जावै ताको । नीब उसेइ धुवावै वाको॥
फिरि तापर मलहम लगवाई । होइ अराम अश्व सुख पाई॥

अन्य खानेकी दवा ।

दोहा—अजवायिनि अजमोद ले, पिपरामूल मँगाय ।
चीता हरदी दारु लै, और केफरा लाय ॥ १ ॥
स्याह मिर्च सम भाग सब, कूटै सबको आनि ।
पैसा साढे तीनि भरि, सबै औषधी जानि ॥ २ ॥
रेंडतेलको लीजिये, तोले चारि मँगाइ ।
ताहीमें सब ओषधी, दीजै आनि मिलाइ ॥ ३ ॥
दाना पीछे साँझको, औषध देउ खवाय ।
पानी पीजै गर्म करि, जब ठंढा ह्वै जाय ॥ ४ ॥
एक खुराक दवा कही, जानि लेउ मनमाहि ।
जबतक होइ अराम नाहि, देत दवा नित जाहि ॥५॥

अथ बलगीरारोगलक्षण व दवा ।

दोहा—छाती भारी होइ जो, नैको चला न जाइ ।
दम भरि आवै ताहिके, बलगीरा सो आइ ॥ १ ॥

भैंसाके गोबर सहित, रेहू माटी आनि ।
भेड़ीकी लेंड़ी बहुरि, अरु सेंहुड़को जानि ॥ २ ॥
भटकटाइ औरौ कही, पाव पाव सब आनि ।
लीजै सज्जी लोनको, आध पाव सो मानि ॥३॥
सबै ओपधी डारिये, यक बर्त्तनमें लाइ ।
अरु पानीको डारिकै, लीजै ताहि पकाइ ॥ ४ ॥
लीजै ताहि उतारि फिरि, जब गुनगुन ह्वै जाइ ।
ठाढ़ कीजिये अश्वको, धूपमाँहि बँधवाइ ॥५॥
काँधेते सीना तलक, छोप करै तिहि लाइ ।
एक रोजमें छा दफे, लेप किये रुज जाइ ॥ ६ ॥

अन्य ।

चौ०—तोला एक मुसब्बर लीजै । तासम और कैफरा कीजै ॥
अंडा मुरगीको यक लावै । झिकवारीको अर्क कढ़ावै ॥
दोहा—नरके लीजै केश अरु, एक हजामति जानि ।
सबै ओपधी कूटिकै, लेउ एकमो सानि ॥ १ ॥
एक अहै मौताज यह, हयको देउ खवाइ ।
पानी दीजै गर्म करि, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥२॥
तीनि रोज यह दवा करि, दाना आधा देइ ।
शालहोत्र मुनि कहत है, तुरी नीक करि लेइ॥३॥

अन्य गर्मीके दिनकी दवा ।

दोहा—गुड़ पुरान हरदी सहित, सेर एक मँगवाइ ।
साँभरि लीजै पाव भरि, सवको लेउ पिसाइ॥१॥

हालिम हरदी सोंठि लै, सज्जी साबुन लाइ ।
लेउ सोहागा वजन सम, गुड़के साथ मिलाइ ॥ २ ॥
दोइ टका भरि ओषधी, हयको देउ खवाय ।
याको दीजै आठ दिन, तौ छाती खुलि जाय ॥ ३ ॥
कही एक मौताज यह, टका चारि भरि जानि ।
भरो सही खुलि जायगो, सात रोजमें आनि ॥ ४ ॥

अन्य बद बद जकड़नेकी दवा।

चौ०-बलगीराकी औषध कही। बद बंद जो जकड़ो सही॥
गूगुर दुइ पैसा भरि लीजै। गऊमूत्रमे औटि करीजै ॥
प्राते घोड़े देव खवाई। बन्द बन्द जकड़ो खुलि जाई॥

अन्य ।

दोहा-साँभरि लहसुन भाग सम, दीजै नित्त खवाय ।
जकरो सो खुलि जाइ है, लंघन ताहि कराय ॥ १ ॥
तप्त नीर नित दीजिये, दाना देउ न ताहि ।
औषध दीजे नेमसों, नीको लीजो चाहि ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०-गूगुर टका एक भरि लेहू। हीग सोहागा खील करेहू ॥
अजवाइन साँचर मिलवाई। घोड़ेको दे प्रात खवाई ॥

अन्य ।

चौ०-हींग सोहागा मासे बीसा। औषध वजन बराबरि पीसा॥
दाना मेटि मसाला दीजै। सात रोजमां नीको लीजै ॥

बोड़ी लीजै पोस्तकी, आध पाव यह जानि ।
गूगुर तोले दोइ भरि, लीजे गुड़में सानि ॥ २ ॥
याकी गोली आठ करि, प्रातहि एक खवाइ ।
फिरि टहलावै अश्वको, आइ पसीना जाइ ॥३॥
हत्थीते छाती मलै, सूखि पसीना ताहि ।
या विधि कीजै आठ दिन, छाती तब खुलि जाहि४
दाना ताहि न दीजिये, सो जानी मनमाहि ।
शालहोत्र मुनिके मतं, तुरी नीक है जाहि ॥५॥

अन्य।

दोहा-हरदी तोले चारि लै, महुआ छालि मँगाई ।
हरदीके सम छालि करि, दोऊ लेउ कुटाइ ॥ १ ॥
गोली बाँधै एक फिरि, हयको देउ खवाइ ।
या विधि कीजै तीनि दिन, तो सीना खुलि जाइ २॥

अन्य।

दोहा-सज्जी लीजै सोंठि पुनि, मैदालकरी आनि ।
तोला तोला लीजिये, श्रीधर कहो बखानि ॥१॥
हालिम तोले पाँच लै, सबको लेउ कुटाइ ।
नरके मूत्रहि माहिमों, सबको लेउ पकाइ ॥ २ ॥
लेप कीजिये ताहिको, हयकी छाती-माहि ।
बाँधै घामें ताहिको, तब छाती खुलि जाहि॥३॥

अन्य।

दोहा-खील सोहागा फिटकरी, मूसब्बरको लाइ ।
दुइ दुइ तोले ओषधी, लेउ सबै पिसवाइ ॥१॥

अन्य ।

चौ०-प्रथम छोहारा खाली करै । लै अफीम ताहीमें धरै ।
कारि कपरौटी दीजै ताही । आधा रोज खवावै वाही ॥
अश्व अंग खुलि जाय तुरंता। दाना मति दीजै बुधिमंता॥

अन्य ।

चौ०-सज्जी सॉभरि बोड़ी पोस्ता। हालिम गुड़ साबुन लै दोस्ता
टंक टंक भरि औषध लेहू । पाव सेर गुड़ तामें देहू ॥

अन्य ।

चौ०-हालिम हरदी गुड़ सम लेहू । प्रात समय घोड़ेको देहू ॥
चारि घरी कैजा करि राखै। नीको होय अश्व ऋषि भाषै॥

अन्य ।

चौ०-अश्वाकी छाती हो भारी । हिलै नही जो दीजै टारी ॥
हफतम दाम फस्त खुलवावै।नाशै सकल रोग वहि जावै
जो छातीको लोहू लीजै । तौ विचार या विधिसों कीजै
प्रथम घरी यक राह चलावै। ता पाछे रगसीर खुलावै॥
गर्ममसाला दीजै ताही । क्रमते दाना दीजै वाही ॥
गर्म नीर अचवनको दीजै । छाती खुलै मानि यह लीजै॥

अन्य ।

चौ०-हालिम हरदी सोंठि सोहागा । सोंचर साबुन सज्जी पागा
गुड़सों मिलै वजन सम लेहू । टंक सोहागा तामें देहू ॥
सातरोजलौं घोड़े दीजै । छाती भरी नीक सो लीजै ॥

अथ जौगीरालक्षण व दवा ।

चौ०-दाना वाजी खायो होई । तुरतै पानी पीवै सोई ॥
ताते होत रोग तनु आई । छाती फूलि ताहिकी जाई ॥

ग्यारह तोले गुड़ सहित, गोली एक कराइ ।
हयको साँझी बेरमें, दीजै ताहि खवाइ ॥ २ ॥
चौ०-दाना ताको नाहिं खवावै। राति दिवस कैजा करवावै ॥
भोर भये कैजा उतराई। चना सेरु भरि देइ खवाई ॥
फेरि गर्दनी ताहि बढ़ावै। होइ सवार खूब फिरवावै ॥
खूब पसीना ताको आवै। छातीमा कमरी बँधवावै ॥
रसे रसे ताको टहलाई। सूखि पसीना जब सब जाई ॥
तबै थानपर बाँधो भाई। हत्थीते छाती मलवाई ॥
एक रोजमें नीक न होई। तौ दुसरे दिन कीजै सोई ॥

अन्य ।

दोहा-लीजे गूगुर टका भरि, गोमूत्रहिमें सानि ।
तप्त कीजिये अग्नि पर, हयको दीजै आनि ॥ १ ॥
या विधि कीजै सात दिन, अंग सकल खुलि जाहि ।
शालहोत्र मत जानि करि, श्रीधर कहो सराहि ॥२॥

अन्य मत ।

दोहा-शिरदै हाथ हटावई, हटै तुरत नहि बंद ।
जोर कियेते नहि हटै, कहिये छाती-बंद॥
चौ०-ताकी तुरत दवा करवावै। नीक होय छाती खुलि जावै ॥
देर भयेते नीक न होई। कितनौ दवा करौ बुध कोई ॥
गूगुर लेव छटाँक मँगाई। हरदी पाव एक पिसवाई ॥
पिपरामूल भरंगी पीपरि। डेढ पाव तीनों लै सम करि॥
लेउ मैनफल पट करि गंती। रनकी छाली औ लै पत्ती॥
मुंडी लेउ समूल मँगाई। कूटि छानि एकत्र कराई ॥
एक छटाँक वजन तिहि कीजै। साँझ सकारे घोड़ेदीजै ॥

दोहा-लीजै रेहू सोंठि अरु, वजन बरोबरि आनि ।
गरम करै जल सानिकै, ऊपर लेवै जानि ॥

खानेकी दवा ।

दोहा--लेउ सोहागा फिटकरी, कारी जीरी आनि ।
अरु कुटकीको लीजिये, भाग बरोबरि जानि ॥ १ ॥
ये सब लीजै कूटिकै, सोरह तोले आनि ।
गूगुर हरदी हींग लै, अरु हालिमको मानि ॥ २ ॥
दुइ दुइ तोले लेहु ये, सोऊ लेउ कुटाइ ।
अरु अजवाइनि लीजिये, साबुन सहित मिलाइ ॥ ३ ॥
दोऊ लीजै पाव यक, भाग बरोबरि जानि ।
तोले एक अफीम लै, सो लीजै जल सानि ॥ ४ ॥
फिरि मानुषके बार लै, तिनको लेउ जराइ ।
यवको आटा सेर भरि, सोऊ लेउ मँगाइ ॥ ५ ॥
गोली बाँधी बीस सब, यवके आटा सानि ।
साँझ सबेरे दीजिये, यक यक गोली आनि ॥ ६ ॥

अथ ।

दोहा--सोंठि मिरच अरु पीपरी, हींग फिटकरी लाइ ।
अजवाइनि सोंचर सहित, सबको लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
दश दश मासे औषधी, सबको लेउ मँगाइ ।
दाना दीजै नाहिं तिहि, देत ओषधी जाइ ॥ २ ॥
कही एक मौताज यह, सात रोज लगु देइ ।
रोग हरै अरु बल बढै, वाजी नीको लेइ ॥ ३ ॥

अन्य।

चौ०–बेगन मिलै देउ दानाको। पानी गरम पिलावो नितको॥

अन्य।

चौ०–हालिम हरदी साबुन लावे। ढाई ढाई सेर मॅगावै।
आध सेर ले पिपरामूरी। कूटि छानि मैदा करि भूरी॥
पॉच सेर घृत शक्कर लीजे। यकइस दिन हेलुआ करि दीजै
आध सेर नित देउ खवाई। छातीबंद रोग मिटिजाई॥
यक दिन प्रथम नीर नहिं दीजै। रोग हरै जो औषध कीजै

अन्य सर्दी गर्मीसे छाती भर जाय उसकी दवा।

चौ०–पिपरी पिपरामूल रु सॉचर। यकयक तोला तीनि वजन कर
हर्रा पाव एक मॅगवावै। पीसि छानि छिरका सनवावै॥
तीनि रोज घोड़ेको दीज। दाना पानी बंद करीजै॥

अन्य।

चौ०–कंचनरिपु फिटकरी मॅगावै। खील बनाय वजन करवावै॥
कालेश्वर औ वायबिडंगा। मेलि अफीम ताहिके संगा॥
मासे पॉच पॉच करु पॉचौ। हीग एक मासे लै सॉचौ॥
अजवाइनि अजमोद मॅगावै। दश दश मासे सो करवावै॥
साबुन भैसा गूगुर लीजे। तोला तोला वजन करीजै॥
तोला तीनि पुरानि मिठाई। पीसि छानि गोली बनवाई॥
प्रथम दिवस दे शीतल नीरा। फेरि गर्म करि दे मतिधीरा॥
थानै खुले न दाना देई। आठरोजमें नीको लेई॥

अन्य।

दोहा–की अकड़ा होवै तुरॅग, छातीबंद कि होय।
वायु भरे होवै किधौं, ताकी औषध जोय॥ १॥

अन्यमत जौगीरालक्षण व दवा ।

दोहा–बहु दिन थाने बँधि रहै, करै न लीद पेशाव ।
नथुना मारि जु दम करै, रहै जकड़ि बेताब ॥

चौ०–सेंहुड़को पोढ़ा लै आवै । बित्ता बित्ता ताहि कटावै ॥
ताके बीचम लोन भराई । ऊपरते माटी थुपवाई ॥
पावकमें पकाइ सो लीजै । सूखि जाय तब बाहर कीजै ॥
ताकी माटी सकल छुटावै । पीसि कूटि कपरा छनवावै ॥
एक मास घोड़ेको दीजै । जौगीरा याहीसों छीजै ॥
पिपरी सहद खवावै कोई । जौगीरा ताके नहिं होई ॥

अन्य ।

चौ०–सोंठि बैतरा हींग मँगावै । पिपरी मिर्च श्याम लै आवै ॥
लहसुन लेउ जौन इक पुतिया। तामें डारौ अदरख बतिया ॥
जवाखार अरु लोटासज्जी । आध पाव दोनौ करि लेजी ॥
लेउ फिटकरी एक छटाँका । गनती चारि मैनफल पाका ॥
मदिरा एक सेर मँगवावै । दवा पीसि तामें सनवावै ॥
गोली करौ छटाँक प्रमाना । प्रात एक नित दीजै खाना ॥
या विधि दवा करै जो कोई । जौगीराको नाश करोई ॥

इति श्रीशालहोत्रसग्रह केशवसिंहकृत सीनाशोथवर्णन
नामक पञ्चदश अध्याय ॥ १५ ॥

अथ लीदकी पहचान ।

चौ०–देखो लीदि करै जो पतरी। अति बदबोहि करै तिहि अँतरी ।
जेहु दाना तिहि हजम न होवै । कई रोज दाना नहिं देवै ॥

रंडचौर खारी नमक, पाव पाव सब लेइ ।
तीनि दिवस लगि दीजिये, जल अरु अशन न देइ ॥ २ ॥
जो गर्मीते बंद लखि, पानी गर्म पिआय ।
चारि घड़ा जल एक भरि, अजवाइनिहि चुराय ॥ ३ ॥
की मँगाय जर अर्ककी, एक भवरमें भूँजि ।
उतनो ही गूगुरु मिलै, गुड़ मिलाइ दे गूँजि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा-की अफीम लै एक भरि, जलमें घोरि मिलाय ।
आटा तामें सानिकै, गोला एक बनाय ॥ १ ॥
आँवाहरदी टका भरि, सज्जी उतनी आनि ।
दुओ कूटि उतनोहि लै, महिपागूगुर सानि ॥ २ ॥
गोलेके मधि राखिकै, गाड़ि भँवरमें देय ।
पकि जावे तब काढिकै, पट गोली करि लेय ॥ ३ ॥
साँझ भोर नित दीजिये, शुद्धधीर करि नेम ।
खुलि जैहै सीना तुरत, रहै सदा तनु क्षेम ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा-छाती जाकी बंद है, सरदीते यह जानि ।
यह औषध ताको करै, शालहोत्र मत मानि ॥ १ ॥
समुदखारको लीजिये, तोला भरि यह जानि ।
लीजै पिपरी सेरकी, ताते चौगुन आनि ॥ २ ॥
ताहीके रस-माहिमें, लीजै खरिल कराइ ।
गोली बाँधे ताहिकी, उर्द समान बनाइ ॥ ३ ॥

गेरह रोज जु देय मसाला । मिलै टका भरि भाँग सुआला ॥
शुद्ध उदरते लीदि करावै । अश्व अराम होइ सुख पावै ॥
पेट चलै पिचकाकी सरसै । ताको भाँग देइ सुख बरसै ॥
लुगदी बनै छटांक प्रमाना । दीजै तीनि दिवस सुख माना ॥

अन्य ।

चौ०-की छटाँक मेंहदी लै आवै । टका प्रमाण कतीरा नावै ॥
जीरा मासा एक जु लीजै । गूदा बेल टका भरि कीजै ॥
सबको पीसि नान्ह करि छानौ । ताको लै पानीमें सानौ ॥
आधी प्रात साँझ दे आधे । बहुतै उदर तुरैको बाँधे ॥

अथ बहुत दस्त आवै उसकी दवा ।

चौ०-दस्त बहुत आँवे जिहि तुरगा । ताकी दवा करौं संसर्गा ॥
घोड़ा जो बेताब दिखावे । अरु दम बहुत करै दुख पावै ॥
करि पुरान चावरको भाता । ईसबगोल मिलाइ सुखाता ॥
दधि गाईको देउ मिलाई । तामें दस्त बंद ह्वै जाई ॥

अथ अतीसार ।

दोहा-अरसीपात रु नीबको, पात फूल युत लेहि ।
सरसर दमरी सकल जल, साथ पीसिके देहि ॥

अथ आनू नाम मर्ज ।

चौपाई-लीदिमाँह चिकनाई दरसै । आनू नाम मर्जको सरसै ॥
सो तुरंगको दीजै राई । याते आनू रोग नशाई ॥

अथ लीदिमें छोटू आवै उसकी दवा ।

दोहा-देवदारु जर मुरहरी, अरु अँगेथु असगंध ।
पारा शर मासे सकल, पीसि दिये सुख संघ ॥

गोली एक खवाइये, प्रातकाल तिहि लाइ ।
चारि घरीके बादसो, देइ नहारी आइ ॥ ४
चौदह दिन यहि विधि करै, अश्व तुरत खुलि जाइ ।
शालहोत्र मत जानिकै, कीजै यही उपाइ ॥ ५

अन्य ।

दोहा–सबै औषधी करि चुकै, अश्व खुलै जो नाहि ।
फस्त लीजिये ताहिके, तुरी तुरत खुलि जाहि ॥ १
याहूते जो ना खुलै, कीजै और उपाय ।
दोनों तरफन आनिकै, दीजै ताहि दगाय ॥ २

अथ सब देह जकड जाय उसकी दवा ।

दोहा–एक छुहारे–माहिमें, देउ अफीम भराइ ।
कपरौटी तापर करो, लीजै अग्नि भुँजाइ ॥ १
चारि छुहारे आनिकै, या विधि लेइ बनाइ ।
आधा आधा अश्वको, देत नितै प्रति जाइ ॥ २
पानी दीजै तप्त करि, दाना दीजै नाहि ।
या विधि दीजै आठ दिन, रोग दूरि ह्वै जाहि ॥ ३

अन्य ।

दोहा–सज्जी साबुन पोस्त लै, हालिम हर्दी लाइ ।
टका टका भरि ओपधी, लीजै सबै पिसाइ ॥ १
पाव सेर गुड़ ताहिमों, लीजै सबै मिलाइ ।
भूँजै आटा ताहिमों, गोली लेउ बँधाइ ॥ २
साँझ सबेरे अश्वको, यक यक गोली देइ ।
या विधि कीजै सात दिन, अश्व नीक करि लेइ ॥ ३

अन्य।

दोहा–अँवरा परवर मूलसम, कुकुरौंधा बुध आनि।
चाउर सोंठी मुरहरी, नित दै दशमा सानि॥ १॥
अश्वजतन या विधि करै, शालहोत्र मत देखि।
रहै अरोगी सर्वदा, नित सवार सुख पेखि॥ २॥

अन्य।

चौ०–हरी असिल सबुज लै आवै। देवदारु अरु पीपरि नावै॥
महुरेठी जर असगॅध आनै। पाँच पाँच दमरी सब ठानै॥
पानी साथ पिसाय सु लीजै। शालहोत्र मुनि वचन करीजै
नित ही नित्त तुरग यह पावै। लीदि बेकार रुधिर नहिं आवै

अन्य।

दोहा–लीदि करै जो रक्तयुत, ता वाजीको देहु।
तुरत रोग ताको हरै, नकुल मतो सुनि लेहु॥
छंद–हरैं महुरेठी विचारु। लै पीपरी अरु देवदारु।
घृत साथ सानि मोथा मिलाउ। लै तुरत ताहि बाजी खवाउ॥

अथ रक्तविहीन अतीसार।

छंदतोमर–लीजिये जो सोगकंद। महुरेठी औ आनंद॥
मोथे बहेरे चारु। गिरि करनिका निरधारु।
हय होत रक्त विहीन। तिहि पिंड देउ नवीन॥
सब मिटै रोगनिदान। यह कहत सुकवि विधान।

अन्य।

चौपाई–दोनों हरैं गंधक लीजै। करुये तेल सानिकै दीजै॥
रक्तविहीन दोष सब हरै। शालहोत्र वाणी उच्चरै॥

अन्य।

चोपाई-अरसी पत्र नीवके लेहू। पीपरकली भलीविधि देहू॥
पिंड वनाय वाजिमुख धरै। अतीसार सब याते हरै॥

अन्यमत सग्रहणी।

दोहा-शिशिर और हेमत ऋतु, पेट्ट झरै जो आइ।
और वताने माहिमों, शरदी कछु दरशाइ॥ १॥
औरागूदी बेलकी, नागरमोथा लाइ।
सौंफ फिटकरी पोस्ता, कली अनार मँगाइ॥ २॥
टका टका भरि वजन सम,सबको लेउ भुँजाइ।
आधा दीजै अश्वको, आधा देउ धराइ॥ ३॥
पानी दीजै गर्म करि, दाना दीजै नाँहि।
शालहोत्र मुनि यों कहे, पेट बंद है जाहि॥ ४॥

अथ गर्मी ऋतुमे पेट झरे उसकी दवा।

दोहा-गरमीकी ऋतु माहिमें, पेट झरत जो होइ।
होइ वताना सुरख जो, शरदी मायल सोइ॥ १॥
औरा जीरा फिटकरी, कली अनार मँगाइ।
लेउ वरोवरि सवनको, तोले पट मँगवाइ॥ २॥
पृथक पृथक भूँजे सबै, सबको कूटि मँगाइ।
कही एक मौताज यह, हयको देउ खवाइ॥ ३॥
औषध दीजे तीनि दिन, साँझ सबेरे लाइ।
शालहोत्र मुनि यों कहे, दस्त वंद है जाइ॥ ४॥

वदहजमीसे पेट झरे उसकी दवा।

दोहा-होत हाजमा जाहिते, कही ओषधी आइ।
दीजै ताहि मिलाइकै, यही दवामें लाइ॥ १॥

अन्य मत-साँप काटनेके लक्षण व दवा।

चौ०-ऐसी घरी साँप जिहि डसै। सो अवश्य यमपुरमें बसै॥
पशु मनुष्यको डसै भुजंगा। सो विचारि लीजै सब अंगा

कवित्त-मूल मघा कृत्तिका विशाखा औ भरणी शिव,
नखत फनिंदको कहत बुधिमान है॥
छठि आठै पंचमी चतुरदशि और नौमी,
भौम शनि वार कहैं वेदन कथान है॥
रवि और चंद्रमाके ग्रहण समय काटै,
एते अहिकाटनका कछू ना जतन है॥
गरुड़ जो राखै चाहै अमृत दै अभिलाषै,
यतनै तौ जात प्राणी यमके निकेत हैं॥

दोहा-ओठ चिबुक गल जठर शिशु, उरु बाहू औ काँध।
इंद्रि काँखमें जो डसै, परै सो नर यम बाँध॥

चौ०-देवालय पुराने फुलवाई। औ मशानकी भूमि जनाई॥
साँप धौरहरमें जो डसै। यमनिकेत निश्चय सो बसै॥
मौन होइ की भौरी आवै। दाह स्वेद तनु पीर जनावै॥
शूल होइ की ग्रीव पिराई। हिचुके चलै जीभ ठिठुराई॥
ऊरध श्वास चलै अकुलाई। पीर होइ पेडुरिनमों आई॥
डसे उरग ये लक्षण देखै। निश्चय तासु मरन अवरेखै॥
अगतरी घोड़ा जो गिरै। दाना घास सबै परिहरै॥
सीक करै छुलके बहुवारा। ताको काटो भुजँग विचारा॥

दोहा-जा घोड़ेको सर्पने, काटो होय सुजान।
जीभ देखि स्याही लखै, दवा करौ बुधिमान॥ १॥

दाना जाको नाहि पचै, बदहजमी दरशाइ ।
पेट झरन ताते लगै, या बिधि करि उपाइ ॥ २ ॥
हलदी तामें नहि करै, दोइ पहर लगु जानि ।
बदहजमीकी ओषधी, दीजै नाहि न आनि ॥ ३ ॥
दाना जौलौं लीदिमें, देत देखाई ताहि ।
चारि पहर लगु ताहिको, औषध दीजै नाहिं ॥ ४ ॥
बोड़ी लेउ अनारकी, सौंफ सहित भुँजवाइ ।
मिरच स्याह अरु पीपरी, देउ बहेर मिलाइ ॥ ५ ॥
लीजै सोचर लोनु पुनि,अजवाइनि अरु जानि।
औषध तोले दश सबै, भाग बरोबरि आनि ॥ ६ ॥
ओषधि देउ खवाय यह, अरु कैजा करि देइ ।
याहि बिधि कीजै तीनि दिन,बाजी नीको लेइ ॥ ७ ॥
पेट झरत है जाहिको, दाना दीजै नाहि ।
कोइ होइ बिकार जो, कौन्यो महिनामाहि ॥ ८ ॥
अतीसार संग्रहणी, की साधारण माहि ।
आवै जाको दस्त सो, यही ओषधी ताहि ॥ ९ ॥

अथ कोरा चढ़ जाय उसकी दवा ।

दोहा–कुटकी एक छटॉक लै, दूनी मिरचै गोल ।
मदिरा बोतल एक लै, कूटि पिलावै घोल ॥

लेप ।

दोहा–राई खारी निमक लै, पीसि लेप कर कोखि ।
शालहोत्र मुनिके मते, लेहै रजको सोखि ॥

गरुडमंत्र पढ़वायके, निर्विप कीजे ताहि।
औषध तासु खवाइये, दिना सात लगु वाहि॥ २॥

दवा।

चौ०—पानपाठिकी मूल मँगावे। एक छटाँक ताहि पिसवावे॥
स्याह मिर्च तिहि आधी लीजै। जलके संग अश्वको दीजै॥

अन्य।

दोहा—लाजी कलुही मांसमें, मूल बिजौरा नाय।
गूलरिफल सम घृत मिले, नासु दिये विप जाय॥

अन्य।

दोहा—गूलरिदुद्धी लै सुघर, नागकेसरी नाय।
गुंजाफल अरु मधु गुरुच, नासु दिये विष जाय॥

अन्य।

दोहा—चीत मूल अरु मालती, रस धतूरको आनि।
पीसि नासु दे अश्वको, करि है विपकी हानि॥

अन्य।

चौ०—काली मिर्च नीबकी पाती। जितनै तुरँग खाय दिन राती॥
तासों जहर शांति ह्वै जावै। औषध किये सुखी तनु पावै॥

अथ कृत्रिमविपहरण।

दोहा—विप जे होवें योगते, कृत्रिम कहिये ताहि।
सहद घीउके योग ज्यों, कृत्रिम विप त्यों आहि॥

दवा।

दोहा—फनि केसरि पुनि कुसुम मधु, और केतकी लाइ।
सो घोड़ेको दीजिये, कृत्रिमविप मिटि जाइ॥

अधिक दौडानेसे जो रोग पैदा हो उसकी दवा।

दोहा-अति दौराये ते तुरै, श्वास अधिक उपजात।
ताकी श्री हरि जाति है, नकुलमते विख्यात॥

चौ०-चाउरको चूरण करि लीजे। गौके दूध मिलाइके दीजै॥

अथ उदरवायुबद, पेट फूलनेकी दवा।

दोहा-उदर वायु जो बन्द हो, पेट फूलि तेंहि जांहि।
दवा किये खुलि जाति है, यामें विस्मय नांहि॥

चौ०-उदर होइ घोड़ेको बंदा। औषध कीजे चेतनचंदा॥
राई भॉटा तक्र मिलाई। तुरत दीजिये ताहि खवाई॥
देते पवन लीदिको करि है। उदर विकार अश्वकी हरिहै॥

अन्य।

चौ०-प्रथम सोंठि आजवाइनि लावे। भेदा करि घटमें औटावे।
मलै उदर औ कोखि लगाई। ता पाछे यह करौ उपाई॥

अन्य।

चौ०-सोंठि सोहागा सोंचर गंधी। सहिजनके रस गोली बंधी॥
उदर व्याधि चौरासी बाई। हरै शूल सब अश्व जु खाई॥
एक टकाकी वजन प्रमाना। पवन रोगको हरै निदान॥

अथ लीदबदकी दवा।

चौ०-सोंठि मिर्चकी गोली बाँधौ। मूलद्वार मध्य सो साधौ।
टहलावे फेरै चित लाई। लीदि करै जो करौ उपाई॥

अन्य।

चौ०-कारीजीरी मिर्च मँगावे। खील सोहागाकी करवावे॥
सज्जी राई कुटकी लेहू। हींग टका भरि तामें देहू॥

वाघने पकड़ा हो उसकी दवा ।

दोहा–दाँत लगे जहँ बाघके, फूलि तहाँ फिरि जाइ ।
पाकत फूटत फिरि भरत, नाही नीक देखाइ॥ १ ॥
मछरी लैकै तीस पल, तिनको लेउ पकाइ ।
जीरा पीसै पाँच पल, तामें देइ मिलाइ ॥ २ ॥
ताहि लगावै जखम पर, विष ताको मिटि जाइ ।
नीक होइ जबलौं नही, रोज लगावत जाइ ॥ ३ ॥

अथ कुत्ताके काटनेकी दवा ।

सोरठा–लघु विरवा यक होइ, निकट तालकी भीटपर ।
है मंजरियुत सोइ, पाती तुलसीसम अहै ॥
दोहा–श्वेतफूल ताते कहैं, नही गन्धको लेश ।
श्वान डसे तेहि वाजिको, औषधि जानौ वेश ॥ १ ॥
मिर्चें पैसा एक भरि, औषधि पाती टंक ।
याको दीजै सात दिन, विष नाशे निरशंक ॥ २ ॥

चाडालकी गोलीसे मरनवाले घोड़ेकी दवा ।

०–ले गिरगिट दुइ चारि मँगाई।जलसँग पावकमध्य पकाई।
नारि भराय अश्वमुख नावै । सो गोलीसे मरै न पावै ॥

अथ माहुरकी गोली ।

–जहर शंखिया तेलिया, समुदखार हरतारु ।
स्याह धतूरे बीज लै, कुचिला तामें डारु ॥ १ ॥
पारा लेउ अफीम पुनि, और हर्दिया लाइ ।
खुरासानि अजवाइनी, अरु अजमोद मँगाइ ॥ २ ॥
अकरकरहा पीपरी, सील सुहागा आनि ।
लेश्वर अरु मिर्च ले, सज्जी स्याह वखानि ॥ ३ ॥

जवाखार औ बायबिडंगा। खारी सोंचर सोंठि प्रसंगा॥
अजवाइनि लै सब सम कीजै।अदरखरसमा गोली कीजै॥
एक छटांक अश्वको दीजै।वायु दोष अरु गुल्म हरीजै॥

अन्य।

दोहा-सोंठि घीवमें सानिकै, गुदा मध्य दे मोलि।
लीदि करै क्षण एकमें, देइ रोगको ठेलि॥
चौ०-ककरी भांटा भरत करावै। राई पीसि तक्र मिलवावै॥
खारी डारि अश्वको दीजै। उदरव्याधि याते हरि लीजै॥

अन्य।

दोहा-हींग टका भरि लायकै, पिउ कच्चे दुइ सेर।
दूवा करिकै दीजिये, लीदि करै बहुतेर॥

अथ वातोदर रोग।

सोरठा-बाढ़ि पेट बहु जाय, वातोदर सो जानिये।
ताको कहौ उपाय, शालहोत्र मत जानिकै॥

दवा।

दोहा-हरदी तिल औ फिटकरी, काली मिरच मँगाइ।
टका टका भरि ओषधी, चूरण लेउ कराइ॥ १॥
कुम्हड़ाकेरे फूल पुनि, अरु सेंहुड़के पात।
राख दुहुँनकी लीजिये, एक टका भरि तात॥ २॥
गाइ दहीको तोरु पुनि, टका चारि भरि लाइ।
टका एक भरि ओषधी, ताके संग खवाइ॥ ३॥
दशदिन औषध दीजिये, नितप्रति हयको आनि।
चारि घरी दिनके चढ़े, होइ रोगकी हानि॥ ४॥

नागौड़ी असगँध सहित, बहुरि लौंगको आनि ।
एक एक तोले सबै, येती ओषधि जानि ॥ ४ ॥
अर्कदूध पुनि लीजिये, तोले पाँच मँगाइ ।
खैरु पपरिया लेउ पुनि, छा तोले तौलाइ ॥ ५ ॥
मरी गाइको पित्त पुनि, तीनि अदति सो जानि ।
खरिल कीजिये तीनि दिन, अदरखकेरस सानि ॥ ६ ॥
गोली ताकी बाँधिये, छोटे चना प्रमान ।
बलगम वायु नशात है, सत्य बात यह जान ॥ ७ ॥
दाना दैकै साँझको, गोली एक खवाइ ।
यवके आटा–संगमें, अदरखरसहि मिलाइ ॥ ८ ॥
चारि घरी कैजा करै, जहरबात मिटि जाइ ।
नाशै बलगम रोग सब, सकल वायु नशि जाइ ॥ ९ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत विषवर्णन नामक सप्तदश अध्याय ॥ १७ ॥

अथ कुलिजनरोगवर्णन ।

दोहा–तीनि प्रकार कुलिंज है, कहत सबै गुण खानि ।
ताको वर्णन करत हौ, शालहोत्र मत जानि ॥ १ ॥
आँत एक कूलन है, नाभि पिछारी जानि ।
वायु भराति है ताहिमें, करत दोष बहु आनि ॥ २ ॥
करत नहीं है लीदिको, अरु पेशाब नाहि होइ ।
फिरि ताकति नाहिं रहति है, ये लक्षण सब जोइ ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा–सोंठि चीत अजमोद लै, दुइ दुइ तोला लाइ ।
घोड़बच लौंगे दुहुँनको, दुइ तोले मँगवाइ ॥ १ ॥

अथ जलोदररोग ल० और दवा ।

सोरठा-पेट बढ़त नित जाइ, झलझलाइ ताकी नसैं ।
ये लक्षण दरशाइँ, ढबढबाइ डोलति विषे ॥

दोहा-जवाखार सैंधव सहित, सोंचर सांभरि आनि ।
दशदश पल ये लीजिये, सज्जी सहित बखानि ॥ १ ॥
दुइसै पल अरु लीजिये, गायमूत्र मँगवाइ ।
तामें इनको डारिकै, दीजै अग्नि चढ़ाइ ॥ २ ॥
चौथे हीसा जब रहै, लीजै ताहि उतारि ।
गेहूँ लीजै सात पल, दीजै तामें डारि ॥ ३ ॥
भीजि जाइँ गेहूँ जबै, तिनको लेउ सुखाइ ।
तिनको फेरि पिसाइकै, दूधमाहिं चुरवाइ ॥ ४ ॥
फेरि सुखावै धूपमें, दोइ टका भरि लेइ ।
टका एक भरि गुड़ मिलै, मेथीके सँग देइ ॥ ५ ॥
औषध दीजै तीस दिन, दुहूँ पहर यह जानि ।
क्षुधा बढै अति तासुकी, होइ रोगकी हानि ॥ ६ ॥

अथ उदरदाहकी दवा ।

चौ०-दूधमाहि पत्रजै पकावहु । मिश्री और इलाची लावहु ॥
दाह होय जिहिके हियमाही। सो हय शीतल होत सदाही॥

अन्य ।

चौ०-यवजीराको मिलै सबेरे । दीजै पिंड कहत हौ टेरे ॥
ग्रीषमऋतुकी ओषधि जानौ।तुरँग सुखी तनु बहु सुखमानौ

अन्य ।

दोहा-लहसुन तेल मिलाइकैं, जल संयुत करि देहु ।
दाह मिटै हयकी सकल, वर्षाऋतुकी येहु ॥

आधसेर गुड़ डारिकै, पांचसेर जल माहि ।
तप्त कीजिये अग्निपर, जब आधा जरि जाहि ॥ २ ॥
ताहि उतारो अग्नितें, लीजै ताको छानि ।
फेरि पिआवे वाजिको, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥
फिरि हुकना हयको करै, औ कैजा करि देइ ।
सीताराम प्रसादतें, वाजी नीको लेइ ॥ ४ ॥

अथ बेलिरोगलक्षण ।

दोहा-बेलि कहत हैं ताहिको, दोनों रानन माहि ।
अगिले दोनों पाँइमें, निकसति है वह आहि ॥ १ ॥
पहिले सूजनि होति है, दुइ दुइ राँदै जानि ।
बढ़िकै सूजनि फिरि वहै, पाकि जाति यह मानि ॥ २ ॥
पाकति फूटति फिरि भरति, यह गति ताकी होइ ।
मलहम कितनो जो धरौ, नीक नहीं वह सोइ ॥ ३ ॥
जो कदाचि कैहुँ जतनतें, नीक कहूँ ह्वै जाइ ।
तौ निश्चय यह जानियो, निकसति है फिरि आइ ॥ ४ ॥

बेलिरोगकी दवा ।

दोहा-पहुँचा आँगुर आठको, सेँहुड़को यक लेउ ।
तामें एक भेलावँ धरि, लेपि मृत्तिका देउ ॥ १ ॥
गाड़ै ताको आगिमें, सूब पाकि जब जाइ ।
लीजै ताहि निकारि तब, माठा देउ छड़ाइ ॥ २ ॥
आटा लीजै मोठको, तामें देउ मिलाइ ।
दाना पाछे साँझको, हयको देउ खवाइ ॥ ३ ॥
एक भेलावँ बढाइये, रोज दूसरे माहि ।
और यही सब विधि करै, शालहोत्र मत आहि ॥ ४ ॥

अथ उदरज्वालाकी दवा ।

दोहा–आदी भीमकपूर लै, टुकरा भरि परमान ।
सोंठि इलाची लीजिये, दश दश मासे जान ॥ १ ॥
ता आधो पत्रज मिलै, धूपकाल अनुमान ।
माठा मिलै सु दीजिये, उदरज्वाल हर जान ॥ २ ॥

अथ अजीर्णकी दवा ।

दोहा–सोंठि वेतरा पीपरी, मिर्च हर्रकी छालि ।
अजवायन बिरिया नमक, दश दश मासे डालि ॥ १ ॥
गोदधि मिलै सु दीजिये, दाना नही खिलाय ।
दिवस आठयें नमक दै, तुरत अजीरण जाय ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसग्रह केशवसिंहकृत उदरव्याधिकथन नामक
षोडश अध्याय ॥ १६ ॥

अथ विषहरण विधि ।

दोहा–तीनि भांतिके विष सबै, थावर जंगम आनि ।
कृत्रिम जानौ तीसरो, इनमें सब विष जानि ॥ १ ॥
अरुण आँखि आँसु चलै, कोवा फाटो होइ ।
गिरै परै उठि बल करै, ऐसे लक्षण जोइ ॥ २ ॥
कंद मूल फल आदि दै, थावर विष पहिचानि ।
तिनकी ओपधि कहत हौं, लक्षण सहित बखानि ॥ ३ ॥

स्थावर–विषहरण दवा ।

दोहा–नागफली रसउत सहित, औ नारीको आनि ।
बदरीफल केसरि सहित, भाग समान बखानि ॥ १ ॥

नागौड़ी असगँध सहित, बहुरि लौंगको आनि ।
एक एक तोले सबै, येती ओषधि जानि ॥ ४
अर्कदूध पुनि लीजिये, तोले पाँच मँगाइ ।
खैरु पपरिया लेउ पुनि, छा तोले तौलाइ ॥ ५
मरी गाइको पित्त पुनि, तीनि अरति सो जानि ।
खरिल कीजिये तीनि दिन, अदरखके रस सानि ॥ ६
गोली ताकी बाँधिये, छोटे चना प्रमान ।
बलगम वायु नशात है, सत्य बात यह जान ॥ ७
दाना देके साँझको, गोली एक खवाइ ।
यवके आटा-संगमें, अदरखरसहि मिलाइ ॥ ८
चारि घरी केजा करै, जहरवात मिटि जाइ ।
नाशै बलगम रोग सब, सकल वायु नशि जाइ ॥ ९

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत विषवर्णन नामक सप्तदश अध्याय ॥ १७ ॥

अथ कुलिजनरोगवर्णन ।

दोहा–तीनि प्रकार कुलिंज है, कहत सबै गुण खानि ।
ताको वर्णन करत हौ, शालहोत्र मत जानि ॥ १ ॥
आँत एक कूलन है, नाभि पिछारी जानि ।
वायु भरति है ताहिमें, करत दोष बहु आनि ॥ २ ॥
करत नहीं है लीदिको, अरु पेशाब नाहिं होइ ।
फिरि ताकति नाहिं रहति है, ये लक्षण सब जोइ ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा–सोंठि चीत अजमोद लै, दुइ दुइ तोला लाइ ।
घोड़बच लेगे दुहुँनको, दुइ तोले मँगवाइ ॥ १ ॥

तक्रमाहि सो घोरिकै, हयको देहु पिआइ ।
शालहोत्र मुनि सो कहै, थावर विष मिटि जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–असगँध मधु लै आठपल, दशफल घृतहि मिलाइ ।
सो वाजीको दीजिये, थावर विष मिटि जाइ ॥

अन्य भेद ।

दोहा–घास होत इक शरद ऋतु,ताहि वाजि जो खाय ।
प्रथमहि सूखै देह सब, फिरि पाछे मरिजाय ॥ १ ॥
मुंडी मृसरि सहित मधु, और विजौरा लाइ ।
दोइ दोइ पल लाइ करि, लीजै क्वाथ बनाइ ॥ २ ॥
हयको दीजै तीनि दिन,उतरि तासु विष जाय ।
शालहोत्रमें यह कहो, नाहिन और उपाय ॥ ३ ॥

जंगमविषहरण दवा ।

दोहा–जंगम विष सर्पादि है, ते जो काटै आनि ।
ताके लक्षण कहत हौ, शालहोत्र मत जानि ॥

सर्प काटनेका लक्षण व दवा ।

दोहा–अंग तोरि गिरि गिरि परै, दाना घास न खाय ।
अरुण नेत्र कोवा फटै, सर्प डसा सो आय ॥ १ ॥
लीदि बंद नहि होति है, छलकै बारंबार ।
लार बहुत मुखते गिरै, जानौ सर्पविकार ॥ २ ॥
जटामांसि रसउत सहित, बचहि कुलिंजन लाइ ।
दोइ दोइ पल तौलिकै, हयको देउ खवाइ ॥ ३ ॥

आधसेर गुड़ डारिकै, पांचसेर जल माहि ।
तप्त कीजिये अगिपर, जब आधा जरि जाहि ॥ २ ॥
ताहि उतारो अगिते, लीजै ताको छानि ।
फेरि पिआवै वाजिको, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥
फिरि हुकना हयको करै, औ फैजा करि देइ ।
सीताराम प्रसादते, वाजी नीको लेइ ॥ ४ ॥

अथ बेलिरोगलक्षण ।

दोहा-बेलि कहत हैं ताहिको, दोनों रानन माहि ।
अगिले दोनों पाँइमें, निकसति है वह आहि ॥ १ ॥
पहिले सूजनि होति है, दुइ दुइ राहैं जानि ।
बढ़िके सूजनि फिरि बहै, पाकि जाति यह मानि ॥ २ ॥
पाकति फूटति फिरि भरति, यह गति ताकी होइ ।
मलहम कितनो जो धरौ, नीक नहीं वह सोइ ॥ ३ ॥
जो कदाचि कैहुँ जतनते, नीक कहूँ ह्वै जाइ ।
तौ निश्चय यह जानियो, निकसति है फिरि आइ ॥ ४ ॥

बेलिरोगकी दवा ।

दोहा-पहुँचा आँगुर आठको, सेंहुडको यक लेउ ।
तामें एक भेलावँ धरि, लेपि मृत्तिका देउ ॥ १ ॥
गाड़े ताको आगिमें, खूब पाकि जब जाइ ।
लीजै ताहि निकारि तब, माठा देउ छड़ाइ ॥ २ ॥
आटा लीजै मोठको, तामें देउ मिलाइ ।
दाना पाछे साँझको, हयको देउ खवाइ ॥ ३ ॥
एक भेलावँ बढाइये, रोज दूसरे माहि ।
और यही सब विधि करै, शालहोत्र मत आहि ॥ ४ ॥

अथ उदरज्वालाकी दवा।

दोहा–आदी भीमकपूर लै, टुकरा भरि परमान।
सोंठि इलाची लीजिये, दश दश मासे जान॥ १॥
ता आधो पत्रज मिलै, धूपकाल अनुमान।
माठा मिलै सु दीजिये, उदरज्वाल हर जान॥ २॥

अथ अजीर्णकी दवा।

दोहा–सोंठि बैतरा पीपरी, मिर्च हर्रकी छालि।
अजवायन बिरिया नमक, दश दश मासे डालि॥ १॥
गोदधि मिलै सु दीजिये, दाना नहीं खिलाय।
दिवस आठयें नमक दे, तुरत अजीरण जाय॥ २॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत उदरव्याधिकथन नामक षोडश अध्याय॥ १६॥

अथ विषहरण विधि।

दोहा–तीनि भाँतिके विष सबै, थावर जंगम मानि।
कृत्रिम जानौ तीसरो, इनमें सब विष जानि॥ १॥
अरुण आँखि आँसू चलैं, कोवा फाटो होइ।
गिरै परै उठि बल करै, ऐसे लक्षण जोइ॥ २॥
कंद मूल फल आदि दै, थावर विष पहिचानि।
तिनकी ओषधि कहत हौ, लक्षण सहित बखानि॥ ३॥

स्थावर–विषहरण दवा।

दोहा–नागफली रसउत सहित, औ नारीको आनि।
बदरीफल केसरि सहित, भाग समान बखानि॥ १॥

चौ०-नित प्रति एक भेलावँ बढ़ावै। याविधि चौदह रोज ख
एक एक घटवत फिरि जाई। शालहोत्र यह दियो ब
दोहा-तीनि दफा यहि विधि करै, रोज बयालिसमाहि।
दाना दीजै मोठको, सेर एक सो ताहि ॥

अन्य।

दोहा-मिरचै तोले दोइ लै, मोठ महेला-माहि।
दाना पाछे साँझको, हयको दीजै ताहि ॥ १
दुइ तोले भरि मिर्चको, रोज बढ़ावत जाइ।
आधपाव पहुँचै जबै, तब फिरि नहीं बढ़ाइ ॥ २
चालिस रोज खवाइकै, क्रमते देउ छुड़ाइ।
शालहोत्र मुनि यों सबै, रोग नाश ह्वै जाइ ॥ ३

अन्य।

चौ०-खुरासानि अजवाइनि लेहू। गुड़ पुरान सो तामें देहू
दोनों तोले दश भरि लीजै। पारा तहँ तोले भरि कीजै
दोहा-सबको मिलवै एकमें, काँसे थारी-माहि।
लेइ कटोरी काँसकी, तासों घोटति जाहि ॥ १
तबलगु ताको घोटिये, जब पारा मिलि जाइ।
साढ़े ग्यारह तासुकी, गोली लेउ बँधाइ ॥ २
गोली दीजै रोज यक, बखत शामकै आनि।
दाना पहिले देइ करि, श्रीधर कहो बखानि ॥ ३
भूँजो आटा मोठको, सूखौ देउ खवाइ।
दीजै सूखी घास तेहि, रोग नाश ह्वै जाइ ॥ ४

तक्रमाहि सो घोरिकै, हयको देहु पिआइ ।
शालहोत्र मुनि सो कहै, थावर विष मिटि जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–असगँध मधु लै आठपल, दशफल घृतहि मिलाइ ।
सो वाजीको दीजिये, थावर विष मिटि जाइ ॥

अन्य भेद ।

दोहा–घास होत इक शरद ऋतु,ताहि वाजि जो खाय।
प्रथमहि सूत्रै देह सब, फिरि पाछे मरिजाय॥ १ ॥
मुडी मूसरि सहित मधु, और बिजौरा लाइ ।
दोइ दोइ पल लाइ करि, लीजे काथ बनाइ॥ २ ॥
हयको दीजे तीनि दिन,उतरि तासु विष जाय।
शालहोत्रमें यह कहो, नाहिन और उपाय ॥ ३ ॥

जंगमविषहरण दवा ।

दोहा–जंगम विष सर्पादि है, ते जो काटै आनि ।
ताके लक्षण कहत हौ, शालहोत्र मत जानि ॥

सर्प काटनेका लक्षण व दवा ।

दोहा–अंग तोरि गिरि गिरि परै, दाना घास न खाय।
अरुण नेत्र कोवा फटै, सर्प डसा सो आय ॥ १ ॥
लीदि वंद नहि होति है, छलकै वारंवार ।
लार बहुत मुखते गिरै, जानौ सर्पविकार॥ २ ॥
जटामासि रसउत सहित, बचहि कुलिंजन लाइ।
दोइ दोइ पल तौलिकै, हयको देउ खवाइ॥ ३ ॥

अथ सूखी खासीकी दवा।

दोहा-दिये मसाला बहुत विधि, मिटत नहीं वह आहि।
आवति सूखी धाँस है, गरमी जानौ ताहि ॥१॥
दूध निखालिस गायको, तीनि सेर मँगवाइ।
डारै चावर तासुमें, आध सेर पुनि लाइ ॥ २ ॥
खीर बनावे तासुकी, प्रातहि देइ खवाइ।
ओषधि दीजै सातदिन, सूखी धाँस नशाइ ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा-छुदवेदस्तरके सहित, सौंफ कलोजी आनि।
तीनि तीनि तोले सबै, औषध कही बखानि ॥ १ ॥
तिल अरु लाही तैलको, सत्तरि तोले लाइ।
तीनों ओषधि पीसिकै, तामें देइ मिलाइ ॥ २ ॥
तीनि रोजमें देउ सब, औषध गर्म कराइ।
सूखी धाँसनि जाइ मिटि, बड़े सवेरे खाइ ॥ ३ ॥
ओषध यतनी लेइ फिरि, तीनि रोजलौ देहि।
वाजी मोटो होइ अरु, शालहोत्र मत येहि ॥ ४ ॥

अन्य।

दोहा-अदरख पिपरी लीजिये, तोले चारि मँगाइ।
सैंधव तोले एक भरि, तामें देउ मिलाइ ॥ १ ॥
औषध दीजै सात दिन, मोठ महेलामाहि।
धाँसत वाजी होइ जो, तासु रोग मिटि जाहि ॥ २ ॥

अथ खासीलक्षण।

दोहा-घास संग काँटा कहूँ, खाइ वाजि जो जाइ।
अटकि नरीके भीतरै, दैवयोग यह आइ ॥ १ ॥

अन्य ।

दोहा–चंदन अरु लै उर्दको, आठ टका भरि आनि ।
हयको दीजे नीरमों, शालहोत्र मत जानि ॥

अन्य ।

दोहा–हुद्दी रसउत रूसको, बारह पल मँगवाइ ।
तासम मदिरा मेलिकै, हयको देउ खवाइ ॥ १ ॥
गरवारिया ले बोलि सो, गरुडमंत्र पढ़वाइ ।
निर्विष कीजै बाजिको, दिये ओषधी जाइ ॥ २ ॥
निर्विष होवै बाजि जव,तव यह औषध देइ ।
साँझ सकारे सात दिन, तुरी नीक करि लेइ ॥ ३ ॥
कानोटरी अर्कजर, मिर्चै सम करि लेइ ।
संग नीरमों पीसिकै, प्रात साँझ नित देइ ॥ ४ ॥

अन्य भेद ।

दोहा–छोट सँपोला घासमें, धोखे लै हय खाय ।
बारि बहुत मुखते गिरै,फूलि ग्रीव अरु जाय ॥
सोरठा–अंग फूलि सब जाइ, मन मलीन बाजी रहै ।
औषध दीजे ताहि, शालहोत्र मत जानिकै ॥
दोहा–कैंचुआ लीजै पाँच पल, मिर्चै लेउ मिलाइ ।
सेरु घीउमें बाँटिकै, हयको देउ खवाइ ॥

सर्वजंगमविषहरण दवा ।

दोहा–चौराई अरु अर्कजर, लीजै अदरख पान ।
मिर्च कसौजी अंडजर, सबको एक प्रमान ॥ १ ॥
दूनो घीउ मिलाइकै, हयको देउ पिआइ ।
शालहोत्रमें यह कही, विषधरको विष जाइ ॥ २ ॥

तातें खाँसत वाजि है, और दूवरो होइ ।
घूँटि घूँटि जलको पिये, खात घास कम सोइ ॥ २ ॥
की फुंसी परिजाति है, की कछु और विकार ।
की सूखो बलगम जमै, कीन्हों यह निरधार ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा–लकरी लावै नीवकी, थोरी टेढ़ी होइ ।
ना अति मोटी लीजिये, ना अति पातरि सोइ ॥ १ ॥
लंबी लीजै एक गज, ताको साफ कराइ ।
एक छोरमें ताहिके, कपरा देउ बँधाइ ॥ २ ॥
लकरीयुत घियमाहिमो, दीजै ताहि भिजाइ ।
लीजै माटी चूल्हकी, तोले डेढ़ मँगाइ ॥ ३ ॥
चौ०–स्याह मिर्च पटमासे लीजै। दोनो मिलिकै पीसि धरीजै ॥
लकरी कपरा बँधी जौन है । तापर दवा लगाउ तौन है ॥
अश्वगरे सो लकरी बाँधे । तीनिरोज याही विधि साधै॥
जब लकरीको लेइ निकारी । तब कपराते सेंकै भारी ॥
पानी फेरि देरको प्यावै । होइ अराम अश्व सुख पावै ॥

अथ रक्तखासीकी दवा ।

दोहा–आवत खाँसी वाजिको, रक्त गिरत ता माँहि ।
खाँसी सो है रक्त युत, जानि लेउ सो ताहि ॥ १ ॥
मिश्री लीजै एक पल, ता सम सौंफ पिसाइ ।
सेर एक गोदूधसँग, प्रातहि देउ पिआइ ॥ २ ॥
घास खानको दीजिये, हरी दूब मँगवाइ ।
बाँधे शीतल छाँहमें, हरी घास बिछवाइ ॥ ३ ॥

जल पीवनको दीजिये, कूपोदक यह जानि ।
औषध दीजे सात दिन, होइ रोगकी हानि ॥ ४ ॥

अन्यमत खासी व धाँसनेकी दवा ।

दोहा-मधु बच गुरच इंदारुनी, सकल पीसि छनवाय ।
लै दश मासे दीजिये, शीत धाँस मिटि जाय ॥

अन्य ।

चौ०-ककरासिंगी हर्र मँगावै । अँवरा सैंधव सज्जी लावै ॥
सेंहुड़ा दमरी पाँच मँगाई।सम करि पीसि अश्वमुख नाई॥

अन्य ।

चौ०-लोध बहेरा सज्जी लीजे । मालकांगनी सम सब कीजै ॥
चालिसटंक दवा पिसवावै । पाँच सेर गुड़ तामें नावै ॥
पिंड बनाय सात दिन दीजै।खाँसी जाय व्यथा हरि लीजै

अन्य ।

चौ०-सेर एक बाहेरा लावै । अजवाइनि दुइ सेर मँगावै ॥
रूसेके पाता यक सेरा । तीनों लै हाँड़ीमें भरा ॥
प्रथम पात हाँडीमें धरै । उपर बहेर जवाइनि भरै ॥
आधे पात ऊपर धरवावै । काथ बनाय उपरते नावै ॥
लेउ समूल कटैया गोली।ताहि क्वाथ करु विधिवत सोली
जोहि हाँड़ीमें है अजवानी । तामें काढ़ा डारो छानी ॥
सो हाँड़ी चूल्हेपर धरिकै । काढा पचै जवाइनि चुरिकै ॥
लेउ जवाइनि छाँह सुखाई।एक छटाँक वजन नित खाई
यकइस दिन घोड़ेको दीजै।खाँसी जाय दुःख सब छीजै॥

अन्य।

चौ०-बिनुआँ कंडा भस्म करावै। आँवाँ राख ताहि मिलवावै॥
दोनों भस्मकि मालिसि करै। अंग पसीना हयको हरै॥
सिगरफ गुटिका मुनिवर भाषो।सर्वरोगपर सो पुनि राखो
गोली चनाप्रमान खवावै। अश्वरोग सब दूरि करावै॥

अन्य।

चौ०-निबुकागजीको रस लाई। लेउ पिआज अर्क निकराई॥
और पुदीनाको पिसवावै। तीनों तीनि छटाँक मिलावै॥
चनाके आटा साथ खवाई। रोग अश्वको सकल बिहाई
दोहा-एक प्रथमें जानिये, बोगमा नाम बखानि।
दूसर मत अब कहत हौ, अरप नाम सो जानि॥

अथ कमरी घोडाके लक्षण।

दोहा-नीचेते ऊँचे सुघर, चाबुक मारि चढाय।
साफ चढै नहि कमर कज,अड़ि कमरी लखि जाय॥१॥
निशिमें थाने बैठियो, साफ उठै कज नाहिं।
ठहर उठै कमरी लसै, तजै तुरत लखि ताहि॥ २॥

दवा।

दोहा-पांच महीनेको सुमति, पुष्ट बराह मँगाय।
तीनि भाग करि एक लै, राधि मसाला नाय॥ १॥
सेर एक गेहूँ मिलै, पाकि सीरो ह्वै जाय।
तो हालिम मैदा बनै, आध सेर तहँ नाय॥ २॥

अन्य (छन्द पद्धरी) ।

अदरख सुचारि भरि ले मँगाय।तिहि कोरिछ मासे हींग नाय
तिहि भूँजि कुचिलि दीजे खवाय।दानाके बाद खांसी नशाय॥

अन्य ।

प०—की दै पियाज पानी पियाय।करि तौल पाँचभरि दुखविहाय

अन्य ।

प०—की बाँसपात उतनेहि मान । ताको खवाय है सुखद जान॥

अन्य ।

प०—की आध पाव ल कंटकारि । दे भुलभुलाय है धाँस हारि॥

अन्य ।

प०—की सेर जवाइनि ले पिसाय ।तिहि कपरामें लीजै छनाय ॥
वह राख तीनिदिन सोखिलाय।करिवजनचारिभरिदुखविहाय
दानाके बाद जव अस्त भान । तवही हयको दे यह विधान॥

अन्य ।

प०—की देइ मलाई पाव एक । पानीके बाद पुनि दिन अनेक ।
जबलौं न मिटै हय धाँस जान।तवलौं यह दीजै बुधिनिधान।
जो खश्क धाँस धाँसे तुरंग । दे ताहि नमक राई औ भंग ।

अन्य ।

प०—कचरीकि चारि भरि रलि पिसान।दानाखवायदेयह विधान

अन्य ।

दोहा—देउ बहेरे शोधिके, लोन सु कुटकी संग ।
अजवाइनि सम पीसि दै, जैहै धांस तुरंग ॥

अथ शिरदमके लक्षण व दवा ।

दोहा—करै अधिक दम अश्व जो, जानौ शिरदम तासु ।
ताहि दपटिवो जहर है, रंडीभणित प्रकासु ॥ १ ॥

अन्य ।

चौ०–गूलरिफल जो लावै आछे । सूकरमांस मिलावै पाछे ॥
औ महिषीदधि मधुहि मिलावै।शीत मिटै हय पेलि खवावै

अथ घोडीके गर्भ न रहता हो उसकी दवा ।

दोहा–रोहू मछरी साठि पल, थोरी लेउ पकाइ ।
ताके सुरुआ माहिमों, रोटी देउ सनाइ ॥ १ ॥
अरथी घोड़ी होइ जो, ताको देउ खवाइ ।
औषध कैके तीनि दिन, घोड़ी देइ छँड़ाइ ॥ २ ॥
गर्भ रहत है ताहिके, बच्चा नीको होइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, शालहोत्रमत सोइ ॥ ३ ॥

अथ बच्चाको देनेकी दवा ।

चौ०–गोघृत तोले तीनि मँगावै । चौबिस रत्ती हींग मिलावै ॥
सो बच्चाको देउ पिआई । दूध हजम ताको ह्वै जाई ॥

अन्य ।

दोहा–निंबूके रस माहिमों, गर्म नीर मिलवाइ ।
सोरह मासे तौलिकै, दीजै ताहि पिआइ ॥

अथ घोडीके दूध न हो उसकी दवा ।

चौ०–मैदा गोहूँकी लै आवै । ता सम शक्कर ताहि मिलावै ॥
ताहीके सम गोघृत लीजै । तामें मिलै एलुआ दीजै ॥
दोहा–डेढ़ पहर दिनके चढे, यलुआ देउ खवाइ ।
दिन एकइस लै तासुको, दूध अधिक सरसाइ ॥

अन्यमत घोडेके नवसगमवार ।

दोहा–रवि गुरु औ बुधवार लखि, घोड़ीको हय देहि ।
साँझ सकार न दीजिये, सरा होत अच्छेहि ॥ १ ॥

दुइ सेर प्याज मँगायके, कतरि पाव भरि लेय ।
नमक डारि तोला दुइक, आशु तुरीको देय ॥ २ ॥
याम अवधि जल देइके, तबहीं तुरी खवाय ।
आठ दिवस यहि रीति दे, नहिं गरमी डरुलाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–मधु वच गुर्च इँदारुनी, ता फल लेउ मँगाय ।
मासा दश सम पीसि दै, शीत श्वास मिटि जाय ॥

अन्य ।

दोहा–प्रातै खसै भिजाय नित, कइउ रोज सुखकारि ।
दाना बाद खवाइये, होय अश्व सुखकारि ॥

अथ गर्मीसे दम आवै उसकी दवा ।

दोहा–दूध सेर लै आठ भरि, चीनी अरु करपूर ।
मासा भरि तिहि घोरि दै, तीनि दिवस सुखमूर ॥

अन्य ।

सोरठा–त्रिफला सेर भिजाय, तासु जोस लै आठ भरि ।
घोरि सिता उतनाहि, तीनि दिवस प्यावो गुणद ॥

अथ शून्यकपाली (मगजहीन) लक्षण ।

दोहा–जो मगमें काँपत चलै, सुधि न रहै जिहि गात ।
शून कपाली तुरँग सो, अति पीड़ै मगजात ॥

दवा ।

दोहा–सेतू लीजै मातही, आधी सहजर लेय ।
गोपयसों सम भाग करि, वासर मुनि तिहि देय ॥ १ ॥
गोघृत मिर्चे पिसाइके, सो तुरंगको देइ ।
महाबली सो होत है, शूनकपाली खोइ ॥ २ ॥

छघु न्याजा जिहिं अश्वको, असिल कौम तिहिं जानि ।
लघुयोनी घोड़ी लखै, सुभग जनै बखानि ॥ २ ॥

अथ घोडी अलग करनेकी विधि ।

दोहा–भाँटा और मसूरको, सम करि ताहि पकाय ।
तीनि दिवस घोड़ी दिये, अतिमस्ती करि आय ॥

अन्य ।

दोहा–की बासी रोटी दिये, ताहि अलंग जनाय ।
आखिर होत अलंग लखि, तौ घोड़ा दै जाय ॥ १ ॥
दोप तीनि दिन ताहिको, दाना नहिं दे जात ।
शुरू अलंग भराय जो, घोड़ी नहिं ठहरात ॥ २ ॥
जो गाभिनि है जाय लखि, कम कम अंश घटाय ।
अधिक अशनते दबि गिरै, की शिशु लघु प्रगटाय ॥ ३ ॥
एक दाँय जो प्रगट शिशु, तौ अलग नहिं काज ।
जने बादि षटदिवसपै, फिरि भराय करि साज ॥ ४ ॥
जो नजीक जनिबो लखै, घृत दे दिन चालीस ।
पाव वजन बलवान शिशु, जनिबो सुगम सुदीस ॥ ५ ॥

घोडेकी मस्ती और घोडीकी अलग शाव करनेकी विधि ।

दोहा–बासी जल दश दिवस लै, पोतापर छिरकाय ।
है अजमायो तुरंगकी, मस्ती कम है जाय ॥

अन्य ।

दोहा–कई रोज बासी जलहिं, छिरकि
करि है दफा अलंगको, कही ९

अथ घोडा मस्त करनेकी विधि

दोहा–घोड़ीकी मुत्तालिका, निजकरमें
नथुनामें फिरि चाहिके, दे लगाय

अथ गर्म मिजाजकी दवा ।

दोहा–शक्कर ईसबगोल ले, यवपिसान सँग देय ।
शालहोत्रके वचन यह, गर्मीको हरि लेय ॥

अन्य ।

दोहा–दधि गाईको लायकै, कपरा बाँधि झुलाय ।
पानी वाको झरि गिरै, दाना साथ खवाय ॥

अन्य प्रकार रोगलक्षण व दवा ।

दोहा–मुँह बाये वाजी रहै, मंद अग्नि अरु होइ ।
भूमि खनै अरु पाँय सों, ऐसे लक्षण सोइ ॥ १ ॥
गजपीपरि सैंधव सहित, हींग भरंगी आनि ।
कुटकी और अतीस पुनि, टका टकाभरि जानि॥ २ ॥
सबै ओषधी पीसिके, छानै कपरा–माहि ।
धेनुदूध लै पाँच पल, कवि श्रीधर चित चाहि॥ ३ ॥
ओषधि लीनै एक पल, दूधमाहि मिलवाइ ।
डेढ़ पहर दिनके चढ़े, औषध देउ पिआइ ॥ ४ ॥
पंचमूल लै बीसपल, आठसेर जल माहि ।
ताहि चढ़ावै अग्नि पर, सात सेर जरिजाहि ॥ ५ ॥
ताहि पिआवै साँझको, कपरामाहि छनाइ ।
रहै ओषधी शेष जो, तिलके तेल–जराइ ॥ ६ ॥
तैल लगावै देहमें, श्रीधर कहो वखानि ।
या विधि कीजे पाँच दिन, होइ रोगकी हानि ॥ ७ ॥

अथ राजरोगलक्षण ।

दोहा–पित्त हृदयमें बहु बढ़े, नेत्र अरुण अरु होइ ।
करै पेशाव रक्तकी, अरु मल सूखो सोइ ॥

तीनि दिवस यहि विधि करे, काम बढ़े हयगात ।
परखि योनिनेजा सुघर, घोड़े करिकै घात ॥ २ ॥

अथ घोड़ा झरता हो उसकी दवा ।

चौ०—जीरा श्वेत कतीरा लीजै । धनियां वजन बराबरि कीजै॥
पीसि छानि बुकुनू करवावै । चारि टका भरि साँझ भिजावै
भोर भये घोड़ेको दीजै । सात दिवसमों नीको लीजै॥

अन्य ।

चौ०—धनियां जीरा श्वेत मँगावै । बीजा मेंहदीकेर मिलावै ॥
टका टका भरि साँझ भिजाई । सात रोज उठि प्रात खवाई
दोहा—यवको आटा पाव यक, दवा पीसि सब लेइ ।
सानि अश्वको दीजिये, रोग दूरि करि देइ ॥

अथ आसक्तता करनेकी विधि ।

दोहा—बच्चा पैदा होय जब, मलि पोता घृत लाय ।
घोड़ी देखि न मन करे, मध्य जवानी आय ॥

अन्यमत मदन अधिक करनेकी विधि ।

दोहा—बल केवल है वीर्यको, क्षीण वीर्य जब होइ ।
बल ताको तव ना रहै, सुस्त रहै हय सोइ ॥

दवा ।

चौ०—लै कंकोल केतकी आनै । दाख खांड जेठी मधु सानै ॥
घृतसों इनको पिंड बनाई । घोड़हि देउ पुष्ट परि जाई॥
दोहा—पीपरि मिर्चै सोंठि पुनि, टका टका भरि लेइ ।
मीनमांस पकवाइ घृत, दोइ सेर सो देइ ॥
चौ०—मदिरा दधि मधुमाखी आनै । बरियारा सम भाग बखानै॥
यह घोड़ेको देउ खवाई । छीनो धातु पुष्ट परिजाई ॥

सोरठा–आवे खाँसी सूखि, शीश लचाये अरु रहै।
देत भूँखको दूखि, दाना घास न खाइ कछु॥ १॥
सूजे पाछिल पाँइ, दुओं कोखि मारे रहै।
गूँथी सी परि जाँइ, ता हयकी सब देहमें॥ २॥
पानी बहुत सुहाय, थानविषे अति सुख रहै।
ये लक्षण दरशाइँ, राजरोग सो जानिये॥ ३॥

दवा।

दोहा–पीपरि लौग कपूर अरु, बड़ी इलाची आनि।
स्याह श्वेत जीरा दुवौ, केसरिनाग बखानि॥ १॥
ज्यानोरी जैफर सहित, चंदन कहो उशीर।
बंशलोचनहि लीजिये, सकल हरत हैं पीर॥ २॥
लेउ मिर्च कँकोल अरु, अगरु तगरुको आनि।
कमलगटा पुनि लीजिये, येती औषध जानि॥ ३॥
चारि चारि तोले सबै, औषध लेउ मँगाइ।
मिश्री लीजै एक पल, सबको पीसि मिलाइ॥ ४॥
पट तोले यह ओषधी, जलमें पीसि मिलाइ।
चारि घरी दिनके चढे, हयको देउ पिआइ॥ ५॥
दिन यकइसलौं अश्वको, या ओषधिको देउ।
सीतारामप्रतापते, बाजी नीको लेउ॥ ६॥

अथ पीनसरोग लक्षण व दवा।

दोहा–कीड़ा परत दिमागमें, गिरत नाकते आइ।
बहुत गंधि नासा करै, विकल अश्व दरशाइ॥

दोहा–कपरामें दधि बाँधिकै, सेतुआ ताहि मिलाइ।
आध सेर नित दीजिये, वृद्ध तरुण ह्वै जाइ॥ १॥
औषध दीजै पुष्टिकी, दिन एकइसलौ जानि।
दीजे ताहि प्रमाण करि,फद मोसम पहिचानि॥ २॥

अथ मदहरणविधि।

दोहा–तालमाहि गहदी विषे, सुर्ख कीट वह होइ।
जीवत लावे तुरतही, टका दोइ भरि सोइ॥ १॥
लीजे सिहजराव पुनि,खदिर भॉग अरु आनि।
हयको दीजै पाँच दिन, दोइ दोइ पल जानि॥ २॥

अन्य।

दोहा–लेउ फिटकरी दोइ पल, तासम सिहजराउ।
मासे चारि कपूर पुनि, तामें आनि मिलाउ॥ १॥
हयको दीजै सात दिन,उतरि तासु मद जाय।
दीजै चौदह रोज सो, अति सीधा ह्वै जाइ॥ २॥
सोरठा–नील दोइ पल लेइ, तासम लावै फिटकरी।
सात रोज लग देइ, मद बाजीके नहि रहै॥

अन्य।

दोहा–नीलाथोथा फिटकरी, ताहि कपूर मिलाइ।
दीजै पैसा एक भरि, तीनि दिवस लगु लाइ॥ १॥
दूबर बाजी जो रहै, करत बदी जो होइ।
गुड़ दैके मोटा करै, होत सीध तब सोइ॥ २॥

अन्य।

दोहा–झल्लापन बाजी करै, अरु बोलत जो होइ।
ताकी औषध कहत हौं, शालहोत्रमत जोइ॥ १॥

तोले तीनि मिलाइकै, दुऔ कान डरवाइ ।
पांच रोजके भीतरे, अंडवृद्धि मिटि जाइ ॥ ३ ॥

अन्य प्रकाररराजरोग ।

दोहा—अंग होइ दुर्बल सबै, फाटि जीभ गइ होइ ।
बाई होइ शरीरमें, भूँख प्यास नहि सोइ ॥

अन्य ।

चौ०—देत लगाम सदा दुख पावै । छाहीं ताको बहुत सुहावै ॥
भौहन ऊपर गड़वा होई । तरुण होइ तौ जीवै सोई ॥

दोहा—कष्टसाध्य सो जानिये, तरुण तुरी जो होइ ।
जानौ वृद्ध असाध्य है, ऐसे लक्षण सोइ ॥

दवा ।

दोहा—तीनि टका त्रिफला वजन,चीत टकाभरि आनि ।
रेंडी गूदी लीजिये, चारि टका भरि जानि ॥ १ ॥
टका एक भरि ओपधी,पोडशगुण जल जानि ।
काढ़ा कीजै तासुको, श्रीधर कहो बखानि ॥ २ ॥
दोइ टका भरि जल रहै, लीजै ताहि छनाइ ।
मदिरा डारै एक पल, हयको देउ पिलाइ ॥ ३ ॥
वा अदरखरस डारिकै, ओपध दीजै प्रात ।
दश पल आमिप सुअरको,की स्याहीको तात ॥ ४ ॥
खूखो ताहि भुँजाइकै, मध्यदिवसको देइ ।
दाना दीजै तीस पल, बाजी नीको लेइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा—सरवनि पिथवनि हर्र पुनि, पित्तपापरा आनि ।
लीजै वायविडंग पुनि, भाग समान बखानि ॥ १ ॥

आध सेर परमान करि, गोहूँ मैदा लाइ ।
रोटी तासु पकाइ करि, बासी देउ धराइ ॥ २ ॥
मसका लीजै गाइको, पाव सेर सो जानि ।
हयको दीजै सात दिन, सो रोटीमें सानि ॥ ३ ॥
सहित कतीरा खादिर पुनि, धनिआँ ताहि मिलाइ ।
हयको दीजै सात दिन, झल्लापन मिटि जाइ ॥ ४ ॥

अथ रंग बदलनेकी विधि ।

दोहा—ऐब रहै नहिं जाहितें, पलटि रंग अरु जाइ ।
शालहोत्र मुनि जो कहो, ताको कहौं उपाइ ॥ १ ॥
प्रथमहि बार मुड़ाइकै, साबुन देइ लगाइ ।
धोवै कुम्हड़ा-नीरसों, रोज रोज सो लाइ ॥ २ ॥
लीजै साबुन फिटकरी, कुम्हड़ा-नीर मिलाइ ।
खरिल करै सो पहर भरि, ताकी विधि यह आइ ॥ ३ ॥
धरि राखै सो छाँहमें, रोज लगावै ताहि ।
एक मास यहि विधि करै, रंग श्वेत ह्वै जाहि ॥ ४ ॥

अन्य श्वेतरंग करनेकी विधि ।

दोहा—बीरबहूटी लीजिये, एक टका भरि सोइ ।
लेउ निसोदर ताहि सम, बहुत खरा सो होइ ॥ १ ॥
और लेउ हरतारको, जौन तावकी आनि ।
पीसै तीनों एकमें, ताकी यह विधि जानि ॥ २ ॥
खचहा कुम्हड़ा पेड़में, लाग जहाँपर होइ ।
ताहि छेद करि भरि दवा, बंद कीजिये सोइ ॥ ३ ॥

गोघृत ताहि मिलाइकै, दीजे ताको नासु।
यह औषध करु रातिको, रोग नाश अति आसु ॥२॥

अन्य।

चौ०–दश पल रक्त छागको लीजै। चारि टका भरि पानी कीजै
दोइ टका भरि गोघृत लेऊ। सैंधव पैसा यक भरि देऊ ॥
दोहा–सबको मिलवै एकमें, हयको देउ पिआइ।
चौदह दिन या विधि करै, रोग दूरि ह्वै जाइ ॥

अथ कान बाहिरा हो उसकी दवा।

दोहा–टका एक भरि लीजिये, लाही तैल मँगाइ।
रंडपातको अर्क पुनि, ता सम लेउ मिलाइ ॥ १ ॥
हींग सोंठि मूरीबिया, नौ नौ मासे लाइ।
रंडपातके अर्कमों, टिकिआ तासु कराइ ॥ २ ॥
अर्क सहित जो तेल है, दीजै अग्नि चढ़ाइ।
गर्म खूब जब होइ वह, टिकिया देउ डराइ ॥ ३ ॥
सोरठा–टिकिया देउ जराइ, काढि डारिये ताहि फिरि।
राखै तैल धराइ, नितप्रति डारै कानमों ॥
दोहा–तीनि रोजके भीतरे, बधिर कान खुलि जाइ।
शालहोत्र मत देखिये, अधिर वर्णों आइ ॥

अथ तिल्ली बढ जानेपर दवा।

सोरठा–हय असवारीमाहिं, कमर लगावत चलत है।
चढ़ो न ताते जाहिं, ऊँचि भूमि पर वाजिसों ॥
दोहा–ताकी दोनों कोखिमें, खड़ो दाग दगवाइ।
फिरि वाजीको दीजिये, या औषधको लाइ ॥ १ ॥

ताको वौड़ा माहिंमों, लगा रहै सो देइ ।
पाकि खूब जब जाइ वह, तोरि तासुको लेइ ॥ ४ ॥
जहाँ श्वेत कीन्हों चहै, डारै बार मुँडाय ।
फेरि फिटकरी पीसिके, तापर देउ मलाय ॥ ५ ॥
वाही कुम्हड़ा नीरसों, धोवै ताको आनि ।
कवि श्रीधर यह जानियो,शालहोत्रमत जानि ॥ ६ ॥

अन्य नीलरंग करनेकी विधि।

दोहा–खवहा कुम्हड़ा एक लै, पाकि गयो जो होइ।
भरे ताहि वासन विषे, फाँकी करिकै सोइ ॥ १ ॥
गंधक लीजे सेर भरि, तामें देउ डराइ।
आगि बरत जहँ नित रहैं, दीजै तहाँ गड़ाइ ॥ २ ॥
गाड़ो राखे सात दिन, लीजै फेरि निकारि ।
वाही बासन माहिं करि, धरिये तासु सुधारि ॥ ३ ॥
सोरठा–श्वेतरंग जहँ आइ, किये चहै तहँ श्यामको।
दीजै तहाँ लगाइ, सात रोज दोनों बखत ॥
दोहा–धोवै अठयें रोज फिरि, नील रंग ह्वै जाइ ।
शालहोत्र मत देखिकै, केशव दियो बताइ ॥

अन्य माथेकी सफेद चित्ती मिटानेकी विधि।

दोहा–सोंठि वैतरा रगरिकै, अरु हरतार पिसाय ।
कइउ रोज रगरौ सुघर, चित्ती श्वेत मिटाय॥

अन्य।

दोहा–यक भाँटाको काटिकै, पानीमें दे डारि ।
मींजि तासु वापर मलै, मिटै सफेदी झारि।

सोंठि मिरच पीपरि सहित, और सोहागा आनि ।
सज्जी चीता नमक पुनि,भाग बरोबरि जानि ॥ २ ॥
षट तोले यह ओषधी, तामें सहद मिलाइ ।
सात रोज लगु वाजिको, रोज खवावत जाइ ॥

अथ पैरके नस्तररोगका लक्षण व दवा ।

चौ०–चला न जाय उताने गिरै । धरती पाउ देत नहिं परै ॥
धीरा पॉव धरत अति गाढ़ो । चलतै गहवर रहिगा ठाढ़ो
एते लक्षण जीमें आनि । सो नस्तर लीजै पहिचानि ॥

दवा ।

चौ०–सैंधव बच अजवाइनि आनौ।वाइम नस्तरसहि निजजानौ

अन्य खानेकी दवा ।

चौ०–वायविडंग पीपरी लावै । पिपरामूल सौंफ मँगवावै ॥
पाँच पाँच टंके सब लीजै । कूटि छानि मैदा करि दीजै॥
प्रात खवावै घोड़े आनी । वाइमनस्तरसहि निज जानी॥

अन्य ।

चौ०–गोघृत औ तिल तेल मँगावे । चहूँ चरण मालिसि करवावै
यहि विधि मर्दन कीजै प्राता।निर्मल होइ अश्वको गाता॥

अथ पाँव सूजनेकी दवा ।

सोरठा–काटै जो निज पाँव, सूजे चारौ पाँव शिर ।
याको करौ उपाव, शालहोत्र मुनि जो कहो ॥ १ ॥
खुरासानि बच आनि, वै चाँदी अरु खिरहरी ।
और चिरैता जानि, देवदारु सम टंक दश ॥ २ ॥
घृतसों सवन मिलाय, जो दीजै हयको सुघर ।
रुजको देय नशाय, शालहोत्र मुनिके मते ॥ ३ ॥

अथ थनीदोष मिटानेकी विधि ।

दोहा–सज्जी चूना जल मिलै, घसि करि थनी लगाय ।
कई रोज यहि विधि करै, थनी दोष मिटि जाय ॥

अथ भौंरी मिटानेकी विधि ।

दोहा–जहँ भौंरी बद देखिये, सो यहि रीति मिटाय ।
तहँकी खाल तरासिकै, सेंदुर तेल लगाय ॥ १ ॥
बार बराबरि निकरिहैं, जो तनिकौ रहि जाइ ।
फेरि दुबारा लाइयो, कहो सुधीन उपाय ॥ २ ॥

अन्यमत बदन पर चित्ती पड़े उसकी दवा ।

दोहा–बीज कुसुमके लीजिये, आधसेर परमान ।
ताहि पकाय खवाइये, दाना साथ विधान ॥ १ ॥
कईरोज दीजै तुरँग, चित्ती बदन नशाय ।
यहि समान औषध नहीं, जो कीजे मन लाय ॥ २ ॥

अथ अकरेब सितारा मिटानेकी विधि ।

दोहा–भाल सितारा अकरबै, मेटै यही उपाय ।
घिसि घिसि बार उड़ाइ दे, हरदी पीसि लगाय ॥ १ ॥
तजि सितरंग सो अंग रँग, बार निकरि हैं चारु ।
युद्धधीर यहि विधि कहौ, शालहोत्रमत सारु ॥ २ ॥

अथ अगमें बाल बढानेकी दवा ।

दोहा–ले पुरान तंदुल पके, तासु पीच मलि, केश ।
की चावरको धोवनो, मलै बढ़ै कच बेश ॥

अथ विषबेलि कुष्ठ ।

दोहा-पहिले लोहू काढ़िये, चौबन्दी रग खोल ।
पीछे औषध कीजिये, शालहोत्रके बोल ॥

चौ०-प्रथम भेलावाँकी विधि कीजै।एक एक बाढ़ि सोलग दीजै॥
सौते एक एक कम करै। एक रहै तब मलहम धरै ॥

मलहम ।

चौ०-पात बबूर नीबके लीजै । मेष शृंगकी भस्म करीजै ॥
मुर्दाशंख सोहागा लावै । अजै क्षीरमें खरल करावै ॥
खैर पापरी सेंदुर सानै । सर्षपतेल मोमको आनै ॥
सबको खरल करौ दिन एका।मलहम कीजै बुद्धि विवेका
अंग अश्वके लेपन करै। सो विषबेलि कुष्ठ सब हरै ॥

अथ चमड़ा सख्तकी तरकीब ।

दोहा-सख्त चर्म होवे जहाँ, तौ घृत नमक मिलाय ।
कई रोज लावे तहाँ, है पपरी गिरि जाय ॥ १ ॥
तौ फिटकरी लगाइ बहु, पीसि महीन सुजान ।
अतिही सुख पावै तुरँग, भाष्यो सुमति प्रमान ॥ २ ॥

अथ पित्ती उछलनेका लक्षण व दवा ।

दोहा-परै ददोरा गातमें, बहुत भाँति अलसाय ।
ताको पित्ती कहत हैं, जतन किये रुज जाय ॥ १ ॥
केंचुलि लेउ छटाँक यक, गेरू आधा पाव ।
गुड़ यक पाव मिलायकै, घोड़े प्रात खवाय ॥ २ ॥

अन्य मत ।

दोहा-बहुत ददोरा वाजितनु, अकस्मात परि जाहि ।
की असवारीमें परै, पित्ती जानौ ताहि ॥ १ ॥

अथ वछेडा ऊपरका ओठ अपनी ओर ऊपर खींचे उसकी दवा ।

चौ०–ओंठ बीचमें जो नस देखै । खड़ी होय ताको अवरेखै ॥
काटि देइ तबहीं वहि नसकै। हरदी नमक ताहिमें भरिकै॥
कटुकतेल तामें मिलवावे । दिनमें कइउ बेर चुपरावे ॥

अथ घोडा उन्मीलके आगेको हाले उसकी दवा ।

चौ०–हींग पलाशबीज मँगवावे। गुड़ घृत और बिजोरा लावै॥
मिलै कपूर भाग सम कीजै । आगू हालन मिटै जु कीजै॥

अथ घोडा जल्द करनेकी दवा ।

चौ०–हरदी दारुहरद लै आवै । अँवरा सरसों तेल मिलावै ॥
पानी साथ पीसिकै देवै । यकइस दिनमें जल्द करैवे ॥

अन्य ।

चौ०–दारुहरद हरदी लै आवे । गंधक अँवरासार मँगावे ॥
पाँच पाँच दमरी भरि लीजे । तामें सरसौ तेल करीजे ॥
बासी जलसों पीसि पिआवे।नितही नित यह जतन बनावे
शालहोत्र यह वचन बखाने।जल्द होइ अति ही सुखमाने

अन्य चलनेकी दवा ।

चौ०–कुटकी पाव एक लै लीजै । गूगुर और सोहागा दीजै ॥
और अँगथुवाछालि मँगावे।अजमोदा यक भरि सब लावे
हरदी लै सबकी चौथाई । मासे अर्द्ध अफीम मिलाई ॥
सबन पीसि दिन सात खवावे । पानी एकै बार पिआवे ॥
तबलौ हयको अशन न दीजै।अठयों लावा धान सुकीजै॥
नवयें दिन वेसन हय पावे।पिंडा सात दिवसतक खावे॥

लोनु घोरिकै देहमें, प्रथमहि देउ लगाइ ।
ता पाछे औषध कहौ, ताको देउ खवाइ ॥ २ ॥

दवा।

दोहा–दुइ दुइ तोले लीजिये, गेरू सोंठि मँगाइ।
खील सोहागाकी बहुरि, मासे छा मँगवाइ ॥
सोरठा–हरिको देउ खवाइ, मिटै ददोरा देहके।
रोग नीक है जाइ, शालहोत्र यह है कहो ॥

अन्य।

दोहा–बाँसपात लै सेर दश, जलमो ताहि उसेइ ।
सगरी देही वाजिकी, धोइ तासुते देइ ॥

अग्निमे जलनेकी दवा।

दोहा–कुचिलि पिआजैको सुघर, रस सब लेइ निचोय।
जरो जहाँ व्रण पाइये, तहाँ ताहि चुपरोय ॥

अथ बोगमारोगलक्षण व दवा।

दोहा–मनमलीन अतिही बिकल, बहै पसीना जोर ॥
ईश दयाते हय बचै, बोगमा मारो जोर ॥
चौ०–बहुत पसीना हयके छूटै। सर्व अंगते धारा फूटै ॥
पहर एक दुइमा मरि जाही। नकुलमतो यह संशय नाहीं॥
ताकी दवा करौ ततकाला। रोग जानियो हयको काला
आँवाकी बहु भस्म मँगावै। लै लै अश्व बदन मलवावै॥
सूखै स्वेद साध्य तब जानौ। नाहिं सूखै असाध्य अनुमानौ॥

अन्य।

चौ०–दुइ गुल दोउ श्रुति भीतर दागै। एकै गुल दुमनोकमें लागै
चालिस दिन नाहि दाना देवै। बचै तौ फिरि नहि बोगमा होवै

अथ अश्वकी बदी वर्णन ।

चौ०–पानी देखे अधिक डराई । पक्षी उड़त चौकरी जाई ॥
तंग कसत पर पाछे गिरै । सरपटमें नहिं फेरे फिरै ॥
होत सवार थान नहि छोड़ै। असवारीमें पाछ निहारै ॥
घोड़ी देखि न आगे जावै । दगे भुशुंडी पेलि परावै ॥
माजा पकरै उलटै पाछे । करत खरहरा खींचै काछे ॥
शालहोत्र इनको तजि दीनो।ए करि है असवारहि हीनो॥

अथ ऐब छूटनेकी विधि ।

चौ०–पानी देखे जो हय उझकै। करि समीप जलऔगी चटकै॥
आगेते पाछे बड़ गल्ला । तुरतै तुरै मारिगा हल्ला ॥
यहि विधि करै मास जब एकै।छॉड़ि देइ हय जलकी टेकै
जो हय पक्षी उड़ते भटक । ताके उपर भुशुंडी चटके ॥
पग धायेपर करै अवाजै । फेरि कबहुँ नहि करै अकाजै ॥
तंग लेत जो पाछू टूटै । गाठि फराकी कबहुँ न छूटै ॥
गाठि सवारीते रहै थाने।छाँड़ि देउ कछु दिवस विताने॥
मुँहका जोर न माने घोड़ा । खारदार दुइ दै मुख तोड़ा ॥
श्वेत दूब घृत लै मुख मलिये।रोके रुकै चलाये चलिये॥
असवारीसो फेरि लै आवै। पत्थर चून कपोल लगावै ॥
आगे देइ सईसे वासै । पाछे जाइ तुरैके पासै ॥
रुकतीबेर चाबुकै मारै । कबहुँ तुरी अड़ थान न कारै ॥
जो घोड़ा आननकर काचो। आल बराबरि देह कमाचो॥
बाग जेरबँद ढीली बाकै । कबहुँ तुरै पाछे नहिं ताकै ॥

घोड़ी देखि तुरँग जो अड़तो।ताको नकुल मसाला पढ़तो॥
खरी ग्रु लींदि खैरकी बुकनी।सात दिवस लौ दीजै धुकनी

अन्य ।

चौ०–लकरीमेंको कीरा खावै । तनुते मदन दूरि ह्वै जावै ॥

अन्य ।

चौपाई–अंड चिराय आखता कीजै।जासों तुरी बदी नाहि कीजै॥
दगे भुशुंडी जो हय भागे । ताके निकट ग्वाइसि दागै॥
जा दिशि जाय वही दिशि दागै।चौक छुटै कबहूँ नहिं भागै॥

अन्य ।

चौ०–मोजा पकरि करै यहि कामै ।चाम तोंवरी घालि लगामै॥
मुँह मारेते तोंवरी अडिहै । कबहुँ तुरंग न मोजा धरिहै॥

अन्य ।

चौ०–करत खरहरा जो हय पकरै । घास समीपे खंभा जकरै॥
नुकता ऐंचि खंभ ढिग करै। कबहुँ तुरंग सईस न धरै॥

अन्य ।

दोहा–मारै पुस्तक जो तुरग, देइ सवार गिराय ।
कर सँभारि कोड़ा हने, ताहि बुलन्द चढ़ाय ॥ १ ॥
चढ़त चलवली जो करै, चढ़ै न देइ सवार ।
थोर अशन वाहव अधिक,चढ़ि उतरै बहुवार ॥ २ ॥
गृह सॉकरमें मेलि हय, राखै तहँ जन कोय ।
एक हूल मारै सँभारि, मिटै तासु बद खोय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–अधिक चलाकी चलवली,बल दिमाक जिहि माहि ।
मध्य सवारी अड़ करै, तासु भेद अस आहि ॥ १ ॥

अन्य।

दोहा-वाम अंग हय पासुरी, नीचे लहसुन होय।
दुःख देइ अति शूल करि, गोल कठोरनि सोय॥
सोरठा-हृदय व्याधि कृश होय, वाजि अमिसों लीह युत।
तिनहिं मिटावै सोय, सो घृत दीजै जो कहो॥

अन्य छन्द भुजगप्रयात।

बहेरे नयेके सोहै चारि आनै। कहाँ टंक लेकै कुसुंभै प्रमानै॥
तुचा दाडिमै कुमकुमै लै मिलावै। सबै एककै घी गुनै अष्ट लावै॥
करै दूरि आवश्यकै चोट नासै। बढै पौरुषै औ हियेमें विलासै॥
हरै तापको चारु बेगे बढावै। कहौ ग्रथकी रीति सो मीति भावै॥

अथ पित्तशांतिकारक घृत।

छंद-वचहि करो जो कूटि सो मेल लाइये।
अजयाघृत लै प्रमाणसों सब मिलाइये॥
अग्निमाहि परिपक सो अश्व खवाइये।
पित्त शांति करिदेत सो ग्रंथन गाइये॥

अथ खजुलीनाशक घृत।

छंद-त्रै हरदयुत करि जातु गंधक मैनशिलयुत आनिये।
पुनि तिगुन लै नवनीत ताते यहै घृत्त बखानिये॥
परिपक याको करहु नीको तुरी देउ बनाइके।
जाइ खजुली वाजितनुकी अंग अंग मलाइके॥

अन्य। चौपाई।

सहद निंबु नरखगुलको आनौ। घिउ परिपक्व अठगुणो जानौ॥
तिनमें औषध चारि मिलावै। रोग मिटै हय पेलि खवावै॥

लीजै तेल छटाक भरि, तिलको कहौं बखानि ।
रार सफेदा दुहुँनको, तोला तोला जानि ॥ २ ॥
नीव सँभारु बकायनहि, और सरीफा जानि ।
पाती लीजै सबनकी, पुनि भँगराकी आनि ॥ ३ ॥
सोरठा–तिनको रंगनु कढ़ाय, तीनि तीनि तोले सबै ।
राखै तिनहि धराय, अब मलहमकी विधि कहौं ॥
दोहा–रार चून पुनि तेल घृत, कांसे थारी माहि ।
एक उपर शतबारलौं, जलसों धोवै ताहि ॥ १ ॥
अर्क सबै तब डारिकैं, फिरिकै धोवै वाहि ।
डारै औषध फिरि सबै, जब सफेद दरशाहि ॥ २ ॥
कीट होइ जिस जखममें, डारै कीट निकारि ।
लावै मलहम जखमपर, दिनमें बेरा चारि ॥ ३ ॥
फेरि परत नहिं कीट हैं, जखम सूखि अरु जाइ ।
शालहोत्रमें देखिकै, केशव वर्णं आइ ॥ ४ ॥

अथ बहुतरोगहरण औषध ।

दोहा–पात धतूर मदारके, ग्यारह ग्यारह आनि ।
मिर्चें लीजै स्याह पुनि, सौ अरु सोंठि बखानि ॥ १ ॥
मासा एक अफीम पुनि, समुदखारको लाइ ।
दोऊ एक समान करि, पात सहित पिसवाइ ॥ २ ॥
गोली बाँधे तासुकी, झलबेरी परमान ।
दीजै साँझी बेर यक, गोली एक विहान ॥ ३ ॥
दाना देकै साँझको, गोली देउ खवाइ ।
गोली देकै भोरही, देउ नहारी लाइ ॥ ४ ॥

दोहा–जिहि प्रकार सब नकुल मत, घृतको कह्यो विधान ।
रोचक चारु तुरंग हित, वरणो सुकवि-निधान ॥

अथ बछेडा-आरोग्यकरण विधि ।

छंद–विन ऐब बछेरा कियो चाहि।नित भूँजि सोहागा देइ ताहि॥
मासा तीनिक पानी मिलाय।सबरोग दूरि करि तुरँग खाय॥

अन्य । छद ।

चारौ बँदके भीतर सुजान। दागै द्वै द्वै खत करि प्रमान ।
बिन ऐब बछेरा होत आसु । कीजे सुधारि यह रीति तासु ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत फुटकररोगवर्णन नामक
अष्टादश अध्याय ॥ १८ ॥

अथ षट्ऋतुके उपचारवर्णन ।

दोहा–वात पित्त कफते सुमति, उपजै तुरै अजार ।
वरणौ तासु विनाशहित,नासु छ ऋतु उपचार ॥

वसतऋतु ।

चौ०–मीनै मेष वसंत वखानौ । मास चैत वैशाख सुठानौ ॥
नीबपात रस लेउ निकारी । मोथा सोंठि बूँकि तिहि डारी॥
पात दतूनि गर्भपै गेरै । नासु दिये रुज हनत घनेरै ॥

अन्य ।

चौ०–महुआ अरु इंद्रारुनि लावै । खाँड़ और परवर रस नावै॥

ग्रीष्मऋतु ।

चौ०–वृष औ मिथुन ग्रीषमै भाखो।मास ज्येष्ठ आषाढ सुराखो॥
ग्रीषम पिपरामूल मँगावै । ताको कपरछान करवावै ॥
थोरा जल मिलायकै दीजै । नासु दिये सब रोगै छीजै॥

सीना जाको बंद है, अरु मटकानि जो होइ ।
सर्दीको नाशत अहै, कफको डारै खोइ ॥ ५ ॥
सर्दीके महिना विषे, अति गुणज्ञ सो आहि ।
शालहोत्रमत देखिके, श्रीधर वर्णों ताहि ॥ ६ ॥

अथ जिसकी कमर मटकती हो उसकी दवा ।

दोहा–नकछिकनीको लीजिये, पटमासे मँगवाइ ।
दुइ दुइ तोले लीजिये, हर्दी सोंठि मिलाइ ॥ १ ॥
तोला भरि पुनि मिर्च लै, सबको लेउ पिसाइ ।
मुर्गी अंडा एक लै, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
जानो यक मौताज यह, सातरोज लगु देइ ।
दीजै दोनों वखतमें, वाजी नीको लेइ ॥ ३ ॥
औषधि दैकै बाजिको, घटिका चारि बिताइ ।
तब दानाको दीजिये, तुरी नीक हो जाइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–हर्दी तोले तीनि भरि, गूगुल तोले दोइ ।
मांस एक खरगोसको, की सियारको होइ ॥ १ ॥
आधपाव घिउ माहिमो, थोरा ताहि पकाइ ।
सबै औषधी पीसिकै, तामें देउ मिलाइ ॥ २ ॥
लीजे बँगलापान पुनि, यकतालीस मँगाइ ।
औषधमाहि मिलाइकै, यरको देउ खवाइ ॥ ३ ॥
कही एक मौताज यह, सो दीजै दिन सात ।
दाना दीजै नाहि तिहि, तुरी नीक ह्वै जात ॥ ४ ॥
पिछले दोनों पाँइ जो, तुरी पसीटत होइ ।
ताके भातर पाँवकी, रगें दगावे सोइ ॥ ५ ॥

वर्षाऋतु ।

चौ०–कर्क सिंह वर्षाऋतु जानौ । सावन भादौ मास बखानौ॥
नींवपात बेतरा मँगावे । टुकरा टुकरा भरि सन नावै॥
जलसों पीसि नासु दे भाई । पावसमें सब राग बिहाई॥

अन्य ।

चौ०–खाँड़ सफेद सहज सम लीजे । पीपरकी जर तामें दीजे॥
ढाई ढाई टक सुआनौ । पीसि नासु दीजे मतिमानौ ॥

शरदऋतु ।

चौ०–कन्या तुला शरदऋतु कहिये।आश्विन कातिकमास सुलहिये
इंद्रजवा अरु जवाखार बच । तामें मिले धतूर नासु रच॥
सरदीऋतुमें हयको दीजे । नाशै रोग परम सुख लीजे ॥

हिमऋतु ।

चौ०–धन वृश्चीक शिशिर ऋतु बरनौ।अगहन पूषमास सो जानौ
पिपरामूरि बूकिकै छाने । तामें बकरीमूत मिलाने ॥
हिमऋतु नासु बाजिको दीजे।होय सुखी अतिही दुख छीजे

शिशिरऋतु ।

चौ०–मकर रु कुंभ शिशिर ऋतु कही।माघ फाल्गुन महिनासही॥
दाडिमरस कटुतेल मिलावे । अपामार्ग गोमूत्र मँगावै ॥
लै झालरि जर सहित बिचानै।नासु देइ शिशिरमें सुख मानै

अन्य ।

चौ०–लहसुन पिपरामूल हि लावे । मुंडी अहिकेसरि लै नावे ॥
सबको पीसि नासु हय दीजे । होय सुखी तनु रोगहि छीजे॥

अथ मलग्रहणीलक्षण और दवा ।

दोहा–जो पियरो पानी गिरै, मुख अरु नासा माहि ।
मलग्रहणीलक्षण निरखि, यतन करौ हय चाहि ॥
चौ०–मधु अरु दूध मिलायक दीजै।मलग्रहणी ताकी हरिलीजै

अथ शिथिलतारोग–देहमें काम न रहे।

दोहा–बीजा लेउ पलाशके, टंक एक मँगवाय ।
बीज केवाँच समान लै, सैंधव टंक मिलाय ॥ १ ।
गोघृतके सँग दीजिये, जाय शिथिलता रोग ।
औपध करै विचारिकै, भाषत कोविद लोग ॥ २ ।

अथ विषशोधनविधि ।

दोहा–बिन शोधे विष औषधी, खान न दीजौ मीत ।
अतिदुखदायक होति है, करत जीव भयभीत ॥
सोरठा–सुमिलखार ले जानि, जहर शखिया होत जो,।
सुनौ सकल बुधवान, विषशोधनका जतन अब ॥
चौ०–प्रथम शंखियाकी विधि जानौ।एक टका भरि सो परमानौ।
फिरि अमलोनियाँको मँगवावै।चारि टका भरि सो तौलावै
दोनों इकमें खरिल करावै । एक पहर मौताज बतावै ।
पतरी पतरी टिकिया करै । घामें सुखे और विधि धरै॥
लीजै अजयादूध मँगाई । एकसेर पक्के तौलाई ॥
इक माटीकी हाँड़ी लावै। दूध डारि तिहि अग्नि पकावै॥
टिकिया कपरा पोटरि बाँधै।डोरा फांसि हाँडीबिच साधै॥
दूधमें बूड़ी पोटरी राखो।डोलयंत्र या विधि कहि भाखो॥
जस जस दूध कमी ह्वै जावै।तस तस पोटरीको सकिलावै॥
दूधके बाहर जबै निकारी।कपराकी तह करु तब चारी ॥

अथ सितगका नास ।

चौ०-मुंडी सिता तालदल लीजे।पीसि कूपजलसों तिहि दीजे ॥
दीन्हें नासु तुरे सुख मानै । प्रबल सितंग तुरत ही भानै॥

कफसे रोग हो उसका नास ।

चौ०-अँवरा आँविलबेत लै आवै । अजामूत्र गोमूत्र मँगावै ॥
लोन सबै समभाग मिलावै।जलसों पीसि नासु सुख पावै॥

अथ वातरोगका नास ।

चौ०-हर्रकि बकली फोरिक लीजै । पानीके सँग नासु करीजै॥
वातरोगको तुरत नशावै । शालहोत्र यह नासु बतावै ॥

अन्य ।

चौ०-अजामूत्र कटुतेल मिलावै । की गोमूत्र तैल सँग भावै ॥
वातरोग यह नासु विनाशै।शालहोत्र मुनि सार प्रकाशै॥

अन्य ।

चौ०-अपामार्ग पानीसों पीसै । नासु दिये अतिही सुख दीसै ॥
शालहोत्र यह सार बतावै । नासु दिये वाजी सुख पावै॥

अन्य ।

चौ०-लै अहिफेन पीपरामूरै । बायबिडँग नागेश्वर चूरै ॥
लै समभाग सुजलसों पीसै। नासु दिये वाजी सुख दीसै॥

अन्य ।

चौ०-खुरासानि वच सोंठि मँगावै। परवरकी जर गोघृत नावै॥
नासु दिये हय वात विनाशै।अरु शिररोग सकल सो नाशै॥

अथ तलखीका नास ।

चौ०-तलखीको केसरि दे नाशै । रिससों रुजको अन्य प्रकाशै॥

में पोटरी फेरि बँधावै। वाको ऐसो जतन करावै॥
(?)व एक रस छिरका लावै। तिहिमां डोलयत्र पकवावै॥
चौथाई छिरका रहि जावे।तब उतारि टिकिया जल ध्वावै
करिकै साफ सुखैके धरै। सुमिलखार या विधि अनुसरै॥

अथ काष्ठादिविषशोधन।

सोरठा-करियारी बछनाग, और सिंगिया हरदिया।
पुनि कुचिला निर्दाग, काष्ठादी विष जो सबै॥

चौ०-प्रथम एक विष शोधन कीजे।ताको तौलि टका भरि लीजै॥
पानी पांचसेर मँगवावै। महिषाको गोबर लै आवै॥
माटीकी हॉड़ीमें भरै। कंडा ऑच याम त्रय करै॥
जल जरि जाय और फिरि भरै।जहर धोयकै कतरा करै॥
चारि टका भरि लै चौराई। मूल सहित लीजो पिसवाई
सेरक पानीमें घुरवावै। कतरे जहर डारि पकवावै॥
पहर सवा इक ऑच करावै।फेरि उतारि ताहि धुलवावै॥
कपरामें पोटरी करवाई। अजयादूध डेढ स्यर लाई॥
हॉड़ीमें भरि अग्नि पकावै। तिहिमा डोलयंत्र करवावै॥
जस जस दूध घटै हँड़ियामें।तस पोटरी सकिलावै वामें॥
दूध जबै थोरा रहि जावे। पानीमा तब ताहि धुवावै॥
घामें सुखै धरौ तब भाई। दवामाहि याको डरवाई॥
याही विधि सब विष शोधवाई।कुचिले मति डारौ चौराई

अथ सर्वरोगोपर काढा।

छंद हरिगीतिका-भृंगराजहि लै भलीविधि मांसापिंडहि आनि।
लेउ फल इंद्रायनीके औ पुरनवॉ मानि॥

अन्य।

-दुवो सोंठि सित सिरसो लेई। मलिके पानी पीसिक देई॥

अन्य।

चौ०-शखाहूली हर्रा आनै। और शतावरि कुचिला ठानै॥
समकरि जलसे पीसि बनावै।नासु दिये बाजी सुख पावै॥

अथ सर्व नेत्ररोगों पर नास।

सोरठा-नेत्ररोग कछु होय, पिपरी पीसौ शीत जल।
दीजे नासु अनोय, नैन अरोगी होत हैं॥

अन्य।

चौ०-चारि भेद जो नास बतायो। ताको शालहोत्र दरशायो॥
सीठो कटु रूखो चिकनोई। नासु चतुर विधि गुदा गनोई
मीठो पित्त वात कटु दीजे। रूखो कफको शमन करीजे॥
उत्तम टंक बयालिस दीजै। मध्यम चौतिस टंक गनीजै॥
अधम टक छब्बिस परमाना। शालहोत्र यह रीति बखाना

दोहा-बावन दिन उत्तम कहै, छब्बिस मध्यम जान।
तेरह दिन पुनि अधम हैं, यहै नासु परमान॥

छंद भुजगप्रयात।

तुचा दाडिमै कमलगट्टा प्रमानौ। तहा श्वेत लै दूब अंकूर आनौ॥
इन्हें पीसिकै शीत पानी मिलावै। भले नासु दै रक्तदोषै मिटावै॥

अन्य। छन्द भुजगप्रयात।

बहेर औ लौंगे सो मूत्रै मिलावै।कफै नाशको नासु मो वाजि पावै॥
घृतै क्षीर सोंठी भलो सारु आनै।नशै वायु हयके निसैसो बखानै

अथ मलग्रहणीलक्षण और दवा ।

दोहा–जो पियरो पानी गिरै, मुख अरु नासा माहि ।
मलग्रहणीलक्षण निरखि, यतन करो हय चाहि ॥
चौ०–मधु अरु दूध मिलायक दीजै। मलग्रहणी ताकी हरिलीजै॥

अथ शिथिलतारोग–देहसे काम न रहे।

दोहा–बीजा लेउ पलाशके, टंक एक मँगवाय ।
बीज केवाँच समान लै, सैंधव टंक मिलाय ॥ १ ॥
गोघृतके सँग दीजिये, जाय शिथिलता रोग ।
औषध करै विचारिकै, भाषत कोविद लोग ॥ २ ॥

अथ विषशोधनविधि ।

दोहा–बिन शोधे विष औषधी, खान न दीजौ मीत ।
अतिदुखदायक होति है, करत जीव भयभीत ॥
सोरठा–सुमिलखार ले जानि, जहर शंखिया होत जो ।
सुनौ सकल बुधवान, विषशोधनका जतन अब ॥
चौ०–प्रथम शंखियाकी विधि जानौ। एकटका भरि सो परमानौ॥
फिरि अमलोनियाँको मँगवावै। चारि टका भरि सो तौलावै
दोनों इकमें खरिल करावै । एक पहर मौताज बतावै ॥
पतरी पतरी टिकिया करै । घामें सुखे और विधि धरै॥
लीजै अजयादूध मँगाई । एकसेर पक्के तौलाई ॥
इक माटीकी हांड़ी लावै। दूध डारि तिहि अग्नि पकावै॥
टिकिया कपरा पोटरि बांधै। डोरा कासि हाँडी बिच साधै॥
दूधमें बूड़ी पोटरी राखो। डोलयंत्र या विधि कहि भाखो॥
जस जस दूध कमी है जावै। तस तस पोटरीको सकिलावै॥
दूधके बाहर जब निकारी। कपराकी तह करु तब चारी ॥

अन्य ।

चौ०–गुर्च सोंठि मेथी सम आनौ। सरसों तगर सकल लै सानौ।
सन्निपात वाजीको जाई । जो यहि नासै देउ बनाई ।

अन्य ।

सोरठा–लाख शतावरि आन, औरा हर्र इलायची ।
देउ नास परमान, सन्निपात नाशै सकल ॥

दोहा–नासु नकुलमत जो कहे, ते हयके सुख-मूल ।
समय अवस्था रोग बल, समुझि देउ अनुकूल ॥

कुरकुरीका नास ।

दोहा–अदरखको रस लीजिये, एक छटाँके जान ।
आध पाव गोमूत्र मिलि, औरदवा पहिचान ॥

चौ०–सैंधव नमक सोंठि पिसवावै । चारों रकमै एक मिलावै ।
नासु देउ अश्वाको जबही । मिटि है शूल कुरकुरी तबही।

अन्य कुरकुरीका नास ।

चौ०–सेंउड़ा दूध कपूर मिलाई । पैसा पैसा भरि तौलाई ।
फूल पलाश सूख पिसवाई । एक छटाँक देउ मिलवाई ।
नासु देउ रुज नीको लीजै।मिटि है शूल कुरकुरी छीजै।

अन्य मत–नस्य वर्णन ।

दोहा–मिष्ट सचिक्कन रूक्ष कटु, नास चारि विधि होइ ।
वात पित्त कफ रक्तको, दोष नशावत सोइ ॥ १ ॥
मिष्ट रूक्ष है वातको, कवि श्रीधर यह आनि ।
कटु अरु रूक्ष बखानिये, कफको नाशक जानि ॥ २ ॥
वात पित्त कफ रक्तते, श्रम आलस जो होइ ।
कीतौ कास-श्वास जो, ताको डारै खोइ ॥ ३ ॥

मेंं पोटरी फेरि बँधावै। वाको ऐसो जतन करावै॥
पुनि एक रस छिरका लावै। तिहिमा डोलयंत्र पकवावै॥
चौथाई छिरका रहि जावै। तब उतारि टिकिया जल ध्वावै
करिकै साफ सुखैकै धरै। सुमिलखार या विधि अनुसरै॥

अथ काष्ठादिविषशोधन।

सोरठा-करियारी बछनाग, और सिंगिया हरदिया।
पुनि कुचिला निर्दाग, काष्ठादी विष जो सबै॥

चौ०-प्रथम एक विष शोधन कीजै। ताको तौलि टका भरि लीजै॥
पानी पांचसेर मँगवावै। महिषाको गोबर लै आवै॥
माटीकी हाँड़ीमें भरै। कंडा आँच याम त्रय करै॥
जल जरि जाय और फिरि भरै। जहर धोयकै कतरा करै॥
चारि टका भरि लै चौराई। मूल सहित लीजो पिसवाई
सेरक पानीमें घुरवावै। कतरे जहर डारि पकवावै॥
पहर सवा इक आँच करावै। फेरि उतारि ताहि धुलवावै॥
कपरामें पोटरी करवाई। अजयादूध डेढ स्यर लाई॥
हाँड़ीमें भरि अग्नि पकावै। तिहिमा डोलयंत्र करवावै॥
जस जस दूध घटै हँड़ियामें। तस पोटरी सकिलावै वामें॥
दूध जबै थोरा रहि जावै। पानीमा तब ताहि धुवावै॥
घाममें सुखै धरौ तब भाई। दवामाहि याको डरवाई॥
याही विधि सब विष शोधवाई। कुचिले मति डारौ चौराई

अथ सर्वरोगोपर काढा।

छंद हरिगीतिका-भृंगराजहि लै भलीविधि मांसपिंडहि आनि।
लेउ फल इंद्रायनीके ओ पुरनवाँ मानि॥

पीपरि पिपरामूल अरु, बहुरि नींबरस जानि ।
गोपय सैंधव लोन पुनि, टंक टंक सब मानि ॥ ४ ॥
सोरठा-तीनि दिवस उठि प्रात, नासापुटमें दीजिये ।
औषध मासे सात, नाशै कासश्वासको ॥

दोहा-चैतमास खसफेर रस, जवासारको लाइ ।
दोइ ओषधी और पुनि, तामें देउ मिलाइ ॥ १ ॥
त्रिफला शक्कर दूध वट, मिलै वैद्य जो देइ ।
नासापुटमें नासु यह, सबं रोग हरि लेइ ॥ २ ॥
माघमास फागुन विषे, तेजपत्रको आनि ।
कमल गिलोइ मिलाइये, तीनि तीनि पल जानि ॥ ३ ॥
कूपवारि युत वाजिको, नास प्रात उठि देइ ।
शालहोत्रमें यह कह्यो, रोग सकल हरि लेइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा-मिर्च सोंठि भूनींब अरु, सम भागहि करि लेउ ।
कूपवारि गजपल विषे, पिलनास-कहँ देउ ॥ १ ॥
छोटि कटैया तगर पुनि, सरसों केवल श्वेत ।
कूपवारिमें सानिकै, नासु प्रात उठि देत ॥ २ ॥
आठ टका भरि औषधी, तीनि दिवस-महँ देइ ।
सांची जानो बात यह, वातरोग हरि लेइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-श्वेत दूब चन्दन सहित, लीजै मिश्री तोय ।
दीजै याको नासु जो, रक्तदोष नहि होय ॥

वेल लोधो लाख लैकै सेंधवै सब सानि ।
कूपजलमें औटि लीजै अष्टअंग प्रमानि ॥
दोहा-सिद्धिअर्थ काढा कहो, वाजिनके सुखहेत ।
अगरोग नाशै सकल, तुरँग वली बहु होत ॥

अन्य ।

छंद तोमर-लै मोथ महुआ पात । अरु नागकेसरि तात॥
सम लोन सेंहुड़ा दूव । करि काथ देउ अमुग्ध ॥
सब मिटै वाजी सोग । तहँ हैर बाइस रोग ॥
यह मानि लीजो मित्त । अति होय चनलचित्त ॥

अन्य ।

छप्पय-दारु हर्द अरु सहद लेउ सैंधव समान करि ।
सर्पप सरस सफेद सोंड़ सौंफ मिलाय धरि ॥
औरा सम करि देउ लेउ इमि फूल फिरंगहि ।
सम करि तुलसी बीज डारि औषधके संगहि ॥
कीजै काथ कूपजलले सो अंश तीसरो दीजिये ।
वात पित्त कफरोग जे सब अश्वके तनु छीजिये॥

अन्य-छंद भुजगप्रयात ।

सुँठी हर्र लैकै सुमोथा मिलावै।तहाँ फालसी मांस पिड़ा रलावै।
सबली हरिद्रा मालती मिलावै। इकचारमें तीसरो अंश प्यावै।
सोरठा-सन्निपात मिटिजाय, नशै तीजरो वाजिको ।
बहु उपचार बनाय, भाष्यो ग्रंथन नकुलमत ॥
चौं०-मुहुरेठी औ केसरिनागा । लउ मेलावँ पात रज भागा।
शंखाहुलि बहेरे लेहू । त्रिफला ताहियुक्त करि देहू।

अन्य ।

दोहा–पीपरि सैंधव सोंठि अरु, खारीलोन समेत ।
दूरि होइहै श्लेषमा, नासापुटमें देत ॥

अन्य ।

सोरठा–पात सँभारू लाइ, नास्तु दीजिये वाजिको ।
तौ कनार मिटि जाइ, निकासि परत बलगम अहै॥

अन्य ।

दोहा–मिर्च सोंठिको कूटिये, और कसौंजी लेइ ।
होवै श्लेष्मा जाहिको, और शीत नशि देइ ॥

अन्य ।

सोरठा–कंठरोग जब होइ, लटजीरा गोमूत्र लै ।
अजामूत्रमहँ सोइ, खरिल कीजिये पहर भरि ॥

दोहा–दीजै नासापुटविषे, रोग दूरि ह्वै जाइ ।
शालहोत्र मुनि यह कहो, या सम नाहि उपाइ ॥

अन्य ।

दोहा–आँखि ढबैली वाजिकी, बनी रहति जो होइ ।
ताकी औषध कहत हौं, शालहोत्र मत सोइ ॥ १ ॥
कमलगटाको पीसिये, वासी नीर मिलाइ ।
दीजै नासापुट–विषे, आँखि साफ ह्वै जाइ ॥ २ ॥
नेत्र कण्ठ मुख भालमों, नासापुटमें जानि ।
एते ठौरन वाजिके, होत रोग जो आनि ॥ ३ ॥
औषध दीजै नास तब, शालहोत्र मत जोइ ।
वात पित्त कफ रक्तको, दोष देत है खोइ ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहे केशवसिंहकृत सर्वरोगनाशक नास्यवर्णन नामक एकोनविंश अध्याय ॥ १९ ॥

।थ वाजिको दीजै चारू। घॉस मिटावै सुधकर सारू॥
वेन दिन सबल करै उत्साहा। जानि लेउ काढ़ा नरनाहा॥

अथ सर्वरोगनाशन पिंड ।

छंद—कुटकी जेती लीजिये महुरेठी पिपरी प्रमान ।
वच पीसिकै मोथा मिलावहु पंच अमृत ज्ञान ॥
पिंड याको देउ हयको रोग अगन सब नसे।
पुष्ट होय मुनीन्द्र भाषै चारु चरणोंसों लसै॥
ोरठा—दूरि होत सब रोग, जा वाजीको दीजिये ।
कहत सयाने लोग, शूल आदि मिटिजाँय सब ॥

अन्य ।

चौ०—केसरिफल श्रीकमलक आनो।तारामखिगिरिकनिकाजानौ
लै सबको करि पिंड खवावो । वाजी पवन समान चलावो

अन्य ।

छंद चर्चरी—बच कपूर मँगाय सैंधव कीजिये यक ठाँव ।
सहद पीपरि गुर्च मेलो पिंड याको नाँव ॥
देउ प्रथम खवाय वाजी होय हलको अंग।
शालहोत्र विचारिये यह वरणिये शुभ संग ॥

अन्य ।

०—मिर्च स्याह अरु लहसुन लेहू। केसरिनाग युक्त करि देहू॥
मास दुगुनमे ठीको करौ। पिंड बनाय अश्वमुख धरो॥
—यह खवाइ सब दुख हरौ, मारग चलै सचेत ।
शालहोत्र मत पिंड यह, भाषो ग्रंथ निकेत ॥

अथ रसादि (रक्त लेनेकी) विधि।

दोहा-सात रसादिक धातु है, तिनको करौ बखान ।
जो जानेते जानिये, अश्वरोग पहिचान ॥ १ ॥
हयको रुधिर विकारते, होत बहुत विधि रोग ।
ताके रुधिर निदानमो, कीन्हों प्रथम प्रयोग ॥ २ ॥
रुधिर विकार विचारिकै, करौ चिकित्सा चित्त ।
औरौ भाषौ तीनि विधि, पित्त वात कफ मित्त ॥ ३ ॥
छंद-आषाढ फरौ कम वाजि श्रौन। ताको भेषज करु बाँधि भौन॥
सहद घोरि साबुनहि देहु। ह्वै है बलिष्ठ मत ग्रंथ येहु ॥

छन्द भुजगप्रयात।

जहाँ वाजिके अंग लोहू न होई। खवावै कछू रूक्ष संगै न सोई
तहाँ वातको कोप आनै तुरंतै। करै रोगको आनि देहै दुरंतै ॥

अन्य मत फस्द खोलनेकी रगें जाननेकी विधि।

दोहा-बहुत रोग ऐसे अहैं, फस्द खुलाए जाँय।
ताके मै लक्षण कहौं, भिन्न भिन्न बिलगाय ॥
चौ०-ग्रथ पढ़ै अरु गुरुते सीखै। अपने नयनन खोलन देखै ॥
सिरामोक्ष क्रम है बहु गूढा। ताको नहि करिहै नर मूढ़ा ॥
मुनिन कछुक प्रथमै लिखि राखा।तिहिअनुसार करत हौ भाखा॥
सकल शरीर रगनको जारा। है विशेष एकइस रुज हारा॥
जगह ठौरके नाम बखानौ। तामें फस्द खोलिबो जानौ ॥
सकल चौपयाके रग होई। याही ठौर कहै सब कोई ॥
अश्वाके तनु यकइस खोलै। और पशुनके कमकम बोलै ॥

अन्य।

छंद हूलना–पतालफिरंग सोवरु मँगाइये ।
पंकज केसरी आनि जँभीर रलाइये ॥
रक्तदोष मिटि जाय सु पिंड बताइये ।
होत तुरी आनंद सो ग्रंथन गाइये ॥

अन्य।

छंद नराच–तमालपत्र सालिमो सो पुहकरो समानिको।
तहाँ सो लोध चिरचिरा औ तेंदुवा प्रमानिको॥
करौ सुपिंड दूधमो हरौं सो वातरोगको।
सो शालहोत्र देखिकै करौ जु वाजि भोगको॥
दोहा–लेउ चिरैता कूटिकै, छिरका मध्य पचाय।
पिंड खवावै वाजिको, शूल सकल मिटि जाय॥

अन्य।

ह० गी०–मूंगको रस औटि लीजै देउ मिर्च मिलाइकै।
सहिजना रस औटि लीजै देउ नासु बनायकै॥

अथ सर्वरोग–नाशन।

छप्पय–इंद्रायनि फल चारु कमलगट्टा सुलेउ युत।
शिलाजीत दुइ निंबु ,नागकेसरि विशाल अति॥
कमलके फल औ सहद लेउ बुधिमान टंक भरि।
मद्बुरेठी तिहि युक्त जानि लीज समान करि॥
तिहि लेउ सकल घृत अठगुनो शोधि अग्नि परिपक्व करि।
पुनि देउ वाजी पुष्ट करिहैं सबै व्याधि इमि जाय हरि॥

अथ जिह्वामे फस्द खोलनेके लक्षण ।

चौ०–दुइ रग दुऔ तरफ जिह्वातर।दशन सामुहे ताहि कहैं नर
इनकी फस्त जु बुधजन खोलै।हलक नरकसी मुखरुजडोलै

अथ नथुनोंकी फस्दके लक्षण ।

दोहा–नथुननके भीतर अहै, दुऔ तरफ रग दोइ ।
नेत्र श्रवण मुखरुज हरै, फस्द खुलावै कोइ ॥

अन्य काननकी फस्द ।

दोहा–दूनों श्रवणनके तरे, दुइ रग अहै सुजान ।
जौन गई ग्रीवा तरफ, ताको करौ बखान ॥

चौ०–करनखाज्ञुली कचको गिरना।मगजशोथ हर फस्दै खुलना

अन्य मोढोंकी फस्द ।

दोहा–दुइ रग दूनो ओर है, मोढ़न पर बुधिमान ।
जौन गई पीठी अलँग, ताके गुण पहिचान ॥

चौ०–इन फस्दनको खोलै भाई । चारि ठौरके रोग नशाई ॥
कटि अरु पीठीमें रुज जानौ। उठि बैठमें दुख पहिचानौ॥
हाथ पाँव जो खीचै लाई । ताकी फस्दै सही खुलाई ॥

अन्य जाघोंकी फस्द ।

दोहा–दुइ रग दूनों जंघमें, गई पेटकी ओर ।
इनके खोले जात है, सुनो रोगके ठौर ॥

चौ०–सिर्री खफती अरु बेहोसा । शिर दै दै मारै बहु रोसा॥
औरौ एक रोग मुड़हलना । यतने जाँइ फस्दके खुलना ॥

अथ छातीकी फस्द ।

दोहा–दुइ रग छातीमें अहै, गई शीशकी ओर ।
पग छातीके रोगहर, फस्द खोलु यहि ठोर ॥

अथ चारों चरणोंकी फस्दें।

दोहा-चारों चरणन घूटना, ताके नीचे जानु।
भितरी तरफ बखानिये, ताके गुण पहिचानु॥
चौ०-यक तो सुरती सकल शरीरा। दूजे भरा चले मग धीरा॥
कौनो अंगहि शोथ दिखावै। कोई रोग पैरमें आवै॥
जौन चरनमें रुज पहिचानौ। तौनेही लखि फस्द बखानौ॥

अन्य।

दोहा-चारों पगके घूटना, ताके नीचे जानु।
बहिरी तरफ बखानिये, दूसरि विधि पहिचानु॥
चौ०-गरमी देखे जो हय तनमें। कोई रुज देखै जो पगमें॥
ताकी फस्द यहै खुलवाई। नीक होइ सब दुरा मिटि जाई॥

अथ गुदाके नीचे फस्द।

दोहा-दुमके नीचे एक रग, गुदातरे पहिचान।
अंडकोश रुज हरणको, मानों काल समान॥
चौ०-फस्द खुलावो रुज पहिचानी। याके किये न होई हानी॥
एक रोग कौनौ जो होई। फस्द खुलावो ताक्षण सोई॥
दोहा-बाजी रग ऐसी अहै, बाँधे जाहिर देइ।
कोइ कोइ बिन बाँधे लखै, जो पहिचानै कोइ॥
चौ०-जौनी रगै देखि नहिं पावै। तरँके वार तुरत मुँड़वावै॥
दोहा-रुधिर लेउ परमान भरि, पीछू वदिसि खोलि।
ता ऊपर पट जल भिजे, बाँधि देउ रग ठोलि॥
चौ०-जो शोणित नहि बद दिखावै। ताकी जतन और बतलावै॥
कपरा फूँकि भस्म भरवाई। पीतो कागज भस्म लगाई॥

अन्य ।

–मोठ महेला दीजिये, घीव बीस पल सानि ॥
कीतौ करुवा तेलको, आठ टका भरि आनि ॥ १ ॥
मोठ महेलामाहिमो, ताहि नहारी देइ ।
शालहोत्र मुनिके मते, यही रीति करि लेइ ॥ २ ॥

अथ शिशिरऋतु वर्णन ।

दोहा–शिशिर ऋतुहिमें जानिये,माघ फाल्गुन मास ।
मकर कुंभ संक्रांति है, चेतनचंद प्रकाश ॥
चौ०–माघ फाल्गुन शिशिर ऋतु कही। तेल मँगाइ देनेको चही॥
वसु पल यकइस दिन मुख नावै । हरियर जौ की चना खवावै॥
की हरिअरि मसुरी मँगवावै । घृत अरु तेल मिठाई पावै ॥
लहसुन मेथी निमक सु दीजे । होइ पुष्ट तनु रोगै छीजै ॥
दोहा–माघ फाल्गुन शिशिर ऋतु, घीउ महेला सान ॥
मिर्च साथ सो दीजिये, होइ महा बलवान ॥ १ ॥
शिशिर माघ फाल्गुन कहो, दाना दीजे मोठ ॥
गुड़के साथ खवाइये, मिर्च पीपरी सोंठ ॥ २ ॥

अथ बारहों महीनोंके रातिब, सावन भादोंका वर्णन ।

दोहा–खरे चनाके दिउल करि, तिनको लेउ पिसाइ ॥
तामें नीर मिलाइके, लीजै खूब पकाइ ॥
सोरठा–अठगुन नीर मिलाइ, ताहि पकावै पहर भरि ।
जब गाढ़ा है जाइ, लीजै ताहि उतारि तब ॥
दोहा–धरि राखै सो राति भरि, अठगुण दूध मिलाइ ।
ताको मीसै हाथसों, नाहिं गुलथी रहि जाइ ॥

वन्त्रुर गोंदे पीसि मँगावे। छतके ऊपर सो चपकावे ॥
की दंबुल अखवैन भरावे। अरु रूमीमस्तंगि लगावे ॥
शोणित बंद होइ जो करिये।मनमें चिता कछू न धरिये॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीशिरामोक्षणवर्णन नामक विंश अध्याय ॥ २० ॥

अथ वर्षभरकी चिकित्सा ।

दोहा–तीनि फसल पट ऋतु अहै, बारह महिना जानि ।
एक शालमें होत है, जानि लेउ सुखदानि ॥ १ ॥
तासु चिकित्सा कहत हौ, जानि लेउ मतिधीर ।
रोग निकट आवै नहीं, मोटा होइ शरीर ॥ २ ॥

अथ तीन समय (फस्ल) कथन ।

दोहा–औषध दीजै वाजिको, रोग मुनासिब होइ ।
होइ मुनासिब फस्लको, तब गुण हयको सोइ ॥ १ ॥
रोग सरद है वाजिको, गर्मीकेरि बहार ।
औषध दीजे गर्म त्यहि, पै यह करै विचार ॥ २ ॥
ताकी औषध माहिमें, अती गर्म जो होइ ।
औषध आधे भाग करि, डारि दीजिये सोइ ॥ ३ ॥

सोरठा–अहै गरमतर जौन, होइ मुनासिब रोगको ।
हयको दीजै तौन, रोग हरै सब वाजितनु ॥

दोहा–सो बहार बरसातिमो, रोग गरम जो होइ ।
औषध दीजै गर्म त्यहि, खुश्की लीन्हे सोइ ॥ १ ॥
जौही जाड़े माहिमें, रोग रक्तकर आहि ।
औषध दीजै सरदसो, नही वातकर ताहि ॥ २ ॥

सोरठा–ताहि खवावै आनि, साठ रोज नित बाजिको ।
की चालिस दिन जानि, कीतौ दीजै बीसदिन ॥
दोहा–बेसन आधा खॉड़ लै, की तौ गुड़हि मिलाइ ।
दीजै दुपहरके वखत, प्रथमहि नीर पिआइ ॥

अन्य विधि ।

दोहा–गोहूँ दरिया सेर भरि, नीरमाहि पकवाइ ।
अठगुण आठा डारिकै, लीजै फेरि पकाइ ॥ १ ॥
सोंचर लीजै दोइ पल, तामें देउ मिलाइ ।
दोइ पहर दिनके चढ़े, हयको देइ खवाइ ॥ २ ॥
दीजै चालिस रोज तक, बीस रोजकी मानि ।
करत मिठाईते अधिक, तौन फायदा जानि ॥ ३ ॥

अथ आश्विन–कार्तिक–वर्णन ।

दोहा–मोठपत्र फलिका सहित, डारै ताहि गुँदाइ ।
अश्व अगारी माहि सो, दीजै ताहि धराइ ॥ १ ॥
थोरी थोरी रोजप्रति, ताहि बढावत जाइ ।
मन्द मन्द करि घासको, दीजै सबे छड़ाइ ॥ २ ॥
तेल कटुक लै आठ पल, दुइ पल लोन मिलाइ ।
कद अरु बैस विचारिकै, दीजै रोज खवाइ ॥ ३ ॥

अथ अगहन, पौष, माघ, फाल्गुन–भोजनविधि ।

दोहा–जानहु शिशिर हेमन्तमें, बहुविधि भोजन आहि ।
जासों मोटा होइ हय, औ पौरुष सरसाहि ॥

अथ चैत वैशाख–भोजन–विधि ।

दोहा–मधु माधव महिना विषे, दही तीन पल लाइ ।
बाँधे कपरा माहिमों, जब पानी चुइ जाइ ॥ १ ॥

अथ गर्मीकी फस्ल।

दोहा-मौसिम गर्मी माहिमो, कोप पित्तको जानि।
राज्य रक्तकर होत है, कफको सचय मानि ॥ १ ॥
वात भई है नाश अरु, यह लीजै जिय जोइ।
होइ मुनासिव नाहिनै, औषध दीजै सोइ ॥ २ ॥
राखै हयको याहि विधि, गर्मीकी ऋतुमाहि।
बांधे ऐसे पेडमें, गर्मी लागै नाहि ॥ ३ ॥
तीनि वखतमहँ दिनविषे, दीजै नीर पियाय।
निशिमें बांधे वाजि जहँ, प्रथम भूमि छिरकाय ॥ ४ ॥
निशिभरि राखै ओसमहँ, रोज रोज यह जानि।
धोवै दुसरे रोज तिहि, दिनके अत बखानि ॥ ५ ॥
यव भूंजे पिसवाइकै, शक्कर नीर मिलाय।
हयको भोजन दीजिये, हरी घास मँगवाय ॥ ६ ॥
होइ मिजाज मुनासिबै, लेउ विहार विचारि।
औषध दीजै भूखकी, कवि श्रीधर निरधारि ॥ ७ ॥
होइ मुनासिव फस्द जो, ताकी तारू-माहि।
खोलि दीजिये फस्दको, कही तासु विधि आहि ॥ ८ ॥
कोऊ पंडित यह कहत, मधु माधवमो जानि।
कोप होत है रक्तको, सफरा राज्य बखानि ॥ ९ ॥

अथ वर्षाकी फस्ल।

दोहा-राज्य होत है वातको, अरु संजय जिय जानि।
शात रक्त अरु पित्त है, कफको कोप बखानि ॥

सहद मिलावे चारि पल, हयको देउ खवाइ ।
की सेतुआको दीजिये, खाँड़ सु तासु मिलाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—खवहा कुम्हडा छोलिके, घीमें ताहि भुँजाइ ।
गुड़में ताको पागिकै, हयको देउ खवाइ ॥ १ ॥
कुम्हड़ा दीजे तीस दिन, शालहोत्र मत जानि ।
सेतुवा दीजै जेठमों, यही मतौ उर आनि ॥ २ ॥

अथ मसाला ।

दोहा—चारि टका भरि तिर्फला, तासम खांड मिलाइ ।
दाना देके साँझको, हयको देउ खवाइ ॥

अथ ज्येष्ठ-अषाढ-भोजनविधि ।

दोहा—खरी लीजिये वीस पल, सो अरसीकी होइ ।
दूना दूध मिलाइकै, आनि भिजावै सोइ ॥ १ ॥
मांठ महेला साथमें, हयको देउ खवाइ ।
दश दिन दीजै याहि विधि, दशपल और बढाइ ॥ २ ॥
दोइ मास तक दीजिये, खरी दूध मिलवाइ ।
शालहोत्र मुनि यों कहै, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

मसाला ।

दोहा—कचरी लीजै दोइ पल, पल भरि सोचर आनि ।
तीनि टकाभरि तिरफला, यवके आटा सानि ॥ १ ॥
डेढ़पहर दिनके चढे, हयको देउ खवाइ ।
[illegible]री कैजा करे, पाछे नीर पिआइ ॥ २ ॥

सोरठा–क्षुधा मंद परिजाइ, बाजी जाति कनारि है ।
औषध दीजै ताहि, जासों होइ कनार नहि ॥
दोहा–देइ दवाई बाजिको, पीपरि सोंठि मँगाइ ।
दोनों हर्रै सहित पुनि, गऊमूत्र भिजवाइ ॥ १
कटुकतैलके साथमें, हयको देउ खवाइ ।
दीजै गरम मिजाजको, तिलको तेल मिलाइ ॥ २
औषध दीजै साँझको, रोग न आवै तीर ।
हरियरि घास खवाइये, देउ कुआँको नीर ॥ ३
बाँधै शीतल छाँहमें, वायु लगत जहँ होइ ।
देउ धुवां करवाइ तहँ, मच्छड़ भय नहिं सोइ ॥ ४
धोवै तिसरे रोज प्रति, बाजीको सुखदानि ।
दीजै वर्षानीर नहि, सो बलगमकी खानि ॥ ५

अथ जाड़ेकी फस्ल कथन ।

दोहा–कोप होत है वातको, कफकी शांति बखानि ।
पित्त खून संचय अहै, कवि श्रीधर यह जानि ॥ १
बाँधै ऐसे ठौर–महँ, लागै नही बयारि ।
दिनको बाँधै धूपमहँ, श्रीधर कहो विचारि ॥ २
भोजन दीजै बाजिको, हर्दी सोंठि पिलाइ ।
गुड़-या शकर साथमें, तौ मोटो ह्वै जाइ ॥ ३
मेहनति लीजै बाजिसों, जैसी इच्छा होइ ।
देउ मसाला भूँखको, बाजीको गुण सोइ ॥ ४

अथ ऋतुउपचारवर्णन ।

दोहा–अब बाजिनको कहत हौं, षटऋतुको उपचार ।
तामें भोजन विविधविध, शालहोत्रको सार ॥ १

अथ बारहो मासके उपचार–चैत्र–वैशाखवर्णन ।

दोहा--औरा हर्र वहेर पुनि, सैंधव लोन मँगाइ ।
एक एक पल लायके, चारों लेउ पिसाइ ॥ १
कोवरको रसु डारिकै, ताहि खवावै आनि ।
नाशै आलस बल बढ़ै, मधु माधवमा सानि ॥ २
बाँधे राखै बाहिरै, शीतल छाहीं–माहि ।
औषध दीजै प्रात ही, मंदअग्नि मिटि जाहि ॥ ३
सोरठा–धूप होइ जब आनि, भीतर बाँधै थानपर ।
शालहोत्र मतजानि, कवि श्रीधर वर्णन कियो ॥

अथ ज्येष्ठ–आषाढ–वर्णन ।

दोहा–आठ टका भरि तेल घृत, दोऊ लेउ समान ।
तामें डारौ अर्कको, दूध टका परमान ॥ १
एक एक दिन बीच दे, ताहि खवावत जाहि ।
हरी दूब अरु दीजिये, मास अषाढ़हि माहि ॥ २

अथ सावनवर्णन ।

दोहा–लहसुन सोंठि जवाइनी, आठ आठ पल आनि ।
दोइ सेर गुडमाहिमों, इनको लीजै सानि ॥ १
दीजे पिंडा बाँधिके, तीनि रोज लग नित्त ।
सावन महिना माहिमों, हरी घास दे मित्त ॥ २

अथ भादोवर्णन ।

दोहा–दूध विषे जल डारिकै, चौथे अंश प्रमानि ॥
प्यावै भादो मासभरि, रोग नाश यह जानि ॥

भिन्नभिन्न भोजन कहीं, ऋतु ऋतुको मतिधीर ।
जासों पौरुष अति बढे, मोटो होइ शरीर ॥ २ ॥

अथ वसतऋतुवर्णन ।

दोहा-घीउ वाजिको दीजिये, यवकी रोटी-माहि ।
आठ टकाभरि वजन घृत, शालहोत्र मत आहि॥

मसाला ।

दोहा-त्रिफला लीजै तीनि पल, लोन एक पल साथ।
हयको दीजै नित्यप्रति, यह भाष्यो मुनिनाथ॥

अन्यमत ।

दोहा-मीन मेष संक्रांति कहि, चैत्र और वैशाख ।
ऋतु वसत सो जानिये, नकुलमते सो भाष ॥

छं०तो०-ऋतु है वसंत सुभाग । जँह फूलियो वन बाग ॥
तहँ भँवर गुंज अनत । जनु मैन वीज बयत ॥
हय होत उर उत्साह । तहँ चाहिये नरनाह ॥
नितही फिरावत वाजि । पुनि चढ़ै तें नृप साजि ॥
तिहि निबु देउ सलोन । सह तैल भाषत कोन ॥
कछु जानियो जब रोग । तब और औषध भोग ॥

दोहा-एकै ठौर न राखिये, होत वाजि आलस्य ।
मंद अमि तासों बढ़ै, भक्षण भक्षत सस्य ॥

अन्य दवा ।

छंद-यवकूट बराबरिही भुँजाइ । तिहि मोटा अरदावा पिसाय॥
दीजै वसंत सुखतुरे होत। अति मोटो तनु बल अधिक होत

अथ आश्विनवर्णन।

दोहा–दूध लीजिये साठि पल, करै अधाउट ताहि।
ताहि पिआवै वाजिको, आश्विन भरि निर्बाहि ॥ १ ॥
लेउ बकैना फलनको, पुनि रंनिके फल लाइ।
दोनौ लीजै पाँच पल, रोज खवावत जाइ ॥ २ ॥
या विधि करै कुवाँर भरि, कवि श्रीधर मतिधीर।
आलस नाशै वल बढै, मोटा होइ शरीर ॥ ३ ॥

अथ कार्तिकवर्णन।

दोहा–मोठपत्र फलिका सहित, हयको दीजै नित्त।
नीर पिआवै तालको, थोरा फेरै मित्त ॥ १ ॥
देउ मसाला वाजिको, कहो जु आश्विन माहि।
मोटा होत शरीर है, अरु आलस नशि जाहि ॥ २ ॥

अथ अगहन–पौष–वर्णन।

दोहा–मार्गशीर्ष अरु पौषमें, बाँधे घामें माहि।
मोठ चना अरु उर्दको, देउ महेला ताहि ॥ १ ॥
देउ मसाला भूँसको, फेरत नितमति जाइ।
तौ वल बाढ़ै वाजिको, आलस तासु नशाइ ॥ २ ॥

अथ माघ–फाल्गुन–वर्णन।

दोहा–माघफाल्गुन मासमें, मोठ महेला माहि।
तैल मिलावै पांच पल, रोज खवावत जाहि ॥

अथ तीनोंकाल–वर्णन।

दोहा–त्रिफला दीजै खांडसों, ग्रीषम और वसंत।
रोग हरै तनु बल बढ़ै, जानि लेउ बुधिमंत ॥

अन्य ।

चौं०–चैत मास अरदावा दीजै । हरदी तैल लोन युत कीजै

अन्य ।

चौं०–पानीके सँग सत्तू पावै । कबहूँ तुरँग न गरमी आवै

अन्य ।

चौ०–ऋतुवसंत चैते वैशाखा । सैंधव घृत अरु तेलक चाखा
घाम न खाय तो रहै अरोगी । फेरै अति आलस संयोगी

अथ ग्रीष्मऋतु ।

दोहा–ग्रीष्म ऋतुहि बखानिये, जेठ अषाढ़ प्रमानि ।
वृष अरु मिथुन सुजानिये,बुधजन लीजै मानि ॥ १
ग्रीषमऋतुमें दीजिये, यवके सेतुआ लाइ ।
देउ मसाला तिफला, खांड़माहिं मिलवाइ ॥ २

छंद छप्पय–तप्त तरणि आकाश धरणि जलचर थला ।
विकल होत सब मृगा दुखित वनचरनला ॥
जरत नदी नद पीन सकल व्याकुल विहंगगन ।
चीर भीज बहनीर धीर लवेत पटोर तन ॥
यहिविधि तप ग्रीषम मिटै गृही गुलाबसुगंध अति
तहँ चहिय तरुनि पंकज नयनि चंद्रवदनि इमि हंसगति

दवा ।

चौ०–ग्रीषमशीतल भोजन दीजै । औ हयको घृत पान करीजै
शिरामोक्ष हयके अँग करौ । सो घृत पिंड तासु मुख धरौ

दोहा–यहि प्रकार जो कीजिये, वाजीको उपचार ।
होय सबल अंगन बढ़ै, नकुलमते अनुसार ॥

अन्य ।

चौ०-सहद पंदरह टंक मँगावै । ग्यारह टंक कूट लै आवै ॥
बच दश टंक लेउ मँगवाई । पीसि छानि मैदा करवाई ॥
यवके आटा साथ खवावै । अश्वाके तनु सुख उपजावै ॥

अथ वर्षाकाल ।

दोहा-हरदी वर्षा शरदमें, घोड़े दीजै नित्त ।
नित्त नेवाला दीजिये, सुखी रहै तनु चित्त ॥
चौ०-वर्षाजलसो तुरँग न भीजै । धुवाँ बयारि धूरि धोईजै ॥
हरियरि दूब कूपजल पीजै।दाना नमक मिलै तिहि दीजै॥

अन्य ।

चौ०-घुड़बच पंद्रह टंक मँगावै । लोनके पानी साथ पिसावै ॥
आटामें पिडा करि दीजै।वात पित्त कफ किर्मि हरीजै॥

अन्य ।

चौ०-चूना और कपूर मँगावै । टका टका भरि दोनौ लावै ॥
ऊँवरिकै पानीमें दीजै । सात रोजमें किर्मि हरीजै ॥

शीतकाल ।

दोहा-त्रिकुटा दीजै गुड़ सहित, हेम शिशिर ऋतु माह ।
शीतकाल व्यापै नहीं, कहत कविनके नाह ॥
चौ०-लहसुन मिर्चा अरुण मँगावै।टका टका भरि नित्त खवावै
दाना खाय होत तब दीजै । ताके पाछे फेंजा कीजै ॥

अथ आह्निकवर्णन ।

दोहा-राति रहै घरि चारि जब, देउ सईस जगाइ ।
होइ सईस नपाक जो, देउ ताहि अन्हवाइ ॥

अन्य।

चौ०-ग्रीपम जेठ अषाढ़ कहीजै। औ वचदे है शीतल कीजै ॥
घृत अरु भात देय नितही नित।नाशै रोग होय तनु सुखहित

अथ वर्षाऋतुवर्णन।

दोहा-वर्षाऋतुमें जानिये, कर्क सिंह संक्रांति।
सावन भादों मास है, समुझि लेउ यहि भांति ॥

कुण्डलिया-वर्षामे नहि कीजिये, तुरँग सवारी रीत।
निर्बल याते होत है, जानि लेउ तुम मीत ॥
जानि लेव तुम मीत, कूपजल पीवन दीजै।
लै सर्षपको तेल अंगमें मर्दन कीजै ॥
कहै नकुल तहँ बाँधु वायु ना लागै भाई।
होय सबल सो पुष्ट सकल बाधा मिटि जाई ॥

मोदक कथन।

चौ०-अंतर दै एक दिवस खवावै। लोन टका दो तौलि मँगावै॥
सूख रहै तनु औ सुख जानै। क्षीर पिआइ निदान बखानै

दोहा-यहि प्रकार वर्षासमय, सेवहु बाजि विनोद।
शालहोत्र मत समुझिकै, रहै न उरमें खेद ॥

अन्य।

चौ०-साँठीके चावर गुण सेरै। खीर पकाय दूध सँग गेरै ॥
गोघृत शक्कर देउ मिलाई। घोड़ेको नित प्रात खवाई॥
यहि विधि खीर खवावै भाई।ताजा है सब सुख उपजाई

अन्य।

दोहा-सावन भादोंमें कही, जो वर्षाऋतु जानि।
गोहूको गजरा भलो, घीउ खाड़सों सानि ॥

चौ०—फेरि सईस पास हय आवै। लीदि उठावै थान बनावै॥
फिरि दानाको देइ खवाई। मृठिक दीजै घास हलाई॥
दोहा- घास खाइ दुइ चारि मुँह, कैजा देइ कराइ।
करै खरहरा चारि घरि, सो हयको सुखदाइ॥
सोरठा- यक उरमाल भिजाइ, पोंछे हयकी आँखिमहँ।
अड लेउ पुछवाइ, पाछे दोनौ कुक्षि फिरि॥
दोहा -भयो चहे असवार जो, हयको लेउ कसाइ।
दोइ घरीलौ फेरिकै, फिरि टहलावे धाइ॥ १॥
फेरि खरहरा कीजिये, दीजै घास हलाइ।
खाइ रहे सुखसों तुरी, शालहोत्र मत आइ॥ २॥
डेढ़पहर दिनके चढ़े, देउ मसाला ताहि।
दोइ घरी कैजा करे, फिरि जल दीजै वाहि॥ ३॥
सोरठा--पावत रातिव होइ, जलके पाछे दीजिये।
नाहिन दीजै सोइ, पावक दाना होइ सो॥ १॥
थोड़ी घास खवाइ, दोइ घरी कैजा करै।
दीजै घास हलाइ, रात रहै सुखपरवक॥ २॥
दोहा—दाना दैकै साँझको, थोरी घास खवाइ।
फेरि मलै घरि चारि लौ, कैजाको करवाइ॥
सोरठा—गर्मीकी ऋतु माहि, पहर एक दिनके रहे।
फिरि जल दीजै ताहि, शालहोत्र मुनि यों कहे॥
दोहा—एक बखत जल दीजिये, दोइ पहर दिन माहि।
जाड़ेके महिना विषे, रहे वढ़ावत ताहि॥
सोरठा—मलै वाजिको आनि, पहर एक दिन जो चढ़ै।
चारि घरीलौ जानि, फेरि चढावै वाजिको॥

अन्यमत ।

दोहा–सावन भादौं मास दुइ, ऋतु वर्षाकी जानि ।
गोहूँ दरिया खीर करि, देउ खाँड़सों सानि ॥ १ ॥
दूध होइ जो तीस पल, तौ दरिया पल चारि ।
सात टका भरि खाँड़ पुनि, श्रीधर कहो विचारि॥ २ ॥
यासों कम दीजै नहीं, शालहोत्र मत जानि ।
शत पल दरियाते अधिक, देत नही सुखदानि ॥ ३ ॥
दूध लीजिये सतगुणा, आधी शक्कर जान ।
खीर दीजिये अश्वको, कद अरु भूँख समान ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–खीर दीजिये मोठकी, यही प्रकार बनाय ।
फेरि मसाला दीजिये, खीर हजम ह्वै जाय ॥

खीर हजम होनेका मसाला ।

दोहा–हर्दी लीजे चारि पल, दुइ पल सज्जी आनि ।
हयको दीजै साँझको, दाना पाछे जानि ॥
चौ०–बीस टका भरि दरिया कीजै। यतना ताहि मसाला दीजै॥
कमज्यादा दरिया जो कीजै।तिहि मौताज मसाला दीजै॥

अथ शरद–ऋतु–वर्णन ।

दोहा––आश्विन कार्तिक मासमें, कन्या तुला प्रकास ।
शरदऋतुहि ताको कहै, मानि लेउ विश्वास ॥
कुण्डलिया–आई जानौ शरदऋतु, कीजै यही विचार ।
दीजै नीको वाजिको, खीर खाँड़ आहार ॥

दोहा–फिरि दानाको दीजिये, बखत साँझको पाइ ।
रहै बढ़ाये ताहिको, कैजा देउ कराइ ॥ १ ॥
भयो चहै असवार जो, गर्मीऋतुके माहि ।
फेरै ठंढे बखतमें, शालहोत्र मत आहि ॥ २ ॥
सोरठा–जाड़ेकी ऋतु माँहि, चारि घरी दिनके रहे ।
तब सो फेरै ताहि, साँझलगे यह जानिये ॥
दोहा–नही होइ असवार जो, सब महिननमों जानि ।
बागडोरि पर खोलिकै, देखै वाजी आनि ॥
सोरठा–सब महिननमो जानि, दोइ घरी दिनके रहे ।
देखै वाजी आनि, बागडोरि पर खोलिकै ॥ १ ॥
दाना दीजै नाइ, होइ अनमनो वाजि जो ।
जासों कसरि नशाइ, देउ मसाला भूँखको ॥ २ ॥
दोहा–सब विधि वाजी सुख लहै,ताकी या विधि आहि ।
देउ मसाला भूँखको,गयो पहर निशि माहि ॥ १ ॥
देइ मसाला नितप्रति, जाड़ेकी ऋतु जानि ।
एक रोजको बीच दे, गर्मीकी ऋतु मानि ॥ २ ॥
घास अगारी माहिमें, दीजै ताको डारि ।
खाइ चहै तब घासको, सो जाई रुज हारि ॥ ३ ॥

अथ दानावर्णन ।

दोहा–तासों जौ जैसे बनै, दीजै सब ऋतुमाह ।
सुखा कै गोला भुंजे, होत वाजि चितचाह ॥
चौ०–जाको वाजि खाय जौ सदा । विन अहार मासे रह लदा ।
शूल न होइ खाँस नहिं आवै । मलबेकार रक्त हरि जावै ।

खीरखाँड़ आहार शरदमें भोजन दीजै ।
दूध औटिके शीत रातिको पान करीजै ॥
और मधुर दे वाहि उदर करि सक सितलाई ।
देउ मोठ घृत पिड रीति ऐसी चलि आई ॥

अन्य ।

दोहा—आश्विन कातिक शरद ऋतु, मोठ मूँग अधिकात ।
काचो दानो दीजिये, औ हरदी गुड़ मात ॥

अन्य । चौपाई ।

शरद ऋतु औ आश्विन कातिक। भातपकाय देइ रुज नाशक॥
चीनी दूध भात मलि दीजे । औ तड़ागजल पिया करीजै ॥
उठि प्रभात अरदावा दीजै। सकल दुःख अश्वाको छीजै ॥

अन्यमत ।

दोहा—आश्विनकातिक शरदऋतु, जानि लेउ मनमाहि ।
लालि मिठाई दीजिये, मोठ महेला माहि ॥ १ ॥
होइ मिठाई तीस पल, तौ हरदी पल चारि ।
दीजै दुपहर मध्यमें, श्रीधर कहो विचारि ॥ २ ॥
हर्दीकी विधि यह अहै, पयमें देउ भिजाइ ।
भीजी राखै तीन दिन, छाहींमो सुखवाइ ॥ ३ ॥
गुड़ मिलाइकै दीजिये, हर्दी हयको भीत ।
शालहोत्र मुनिके मते, जानि लेउ यह रीत ॥ ४ ॥

अथ हेमन्तऋतुवर्णन ।

दोहा—ऋतु हेमन्त बखानिये, अगहन पूसे मास ।
वृश्चीकै धन होत है, नकुल मते विश्वास ॥

सोरठा-मिलै न जो जिहि ठाव, चना देय तत्काल हीं।
जो न चनाको नॉउ, दीजै मोठ समेत महि॥

अन्य।

सोरठा-मूँग देइ अभिराम, मोठ मिलै ना जाहिको।
होइ सकल बलधाम, तैल सहित दीजे तुरी॥१॥
बाजी दाना हेत, और अन्न दीजै नहीं।
भाष्यो ग्रंथ निकेत, दिये दोष बाढ़ै सदा॥ २॥

अन्य मत।

दोहा-उत्तम दाना मोठको, मध्यम चना बखानि।
साधारण यव जानिये, कवि श्रीधर सुखदानि॥१॥
मोठ महेला दीजिये, जाड़ेकी ऋतुमाँहि।
जौ अरु चना भुँजाइकै, करि अरदावा ताहि॥२॥

सोरठा-गर्मीकी ऋतुमाँहि, अरदावाको दीजिये।
चना दराय भिजाइ, सो दीजै बरषातमों॥

सूखे चनाके देनेकी विधि।

सोरठा-लीजै चना मँगाइ, मटर कंकरी बीनिके।
हयको देउ खवाइ, या विधि दीजै सालभरि॥

अथ देशविभागसे नानाविधि।

दोहा-जोको दाना दीजिये, सिंध नदीके पार।
महिला यमुना पारमें, कीन्हों यह निरधार॥ १॥
शाह जहानाबादके, चारौ तरफ बखानि।
मोट महेला दीजिये, कवि श्रीधर सुखदानि॥ २॥

छंदनाराच--जबै हेमंत आवई क्रिया करै यहै भली।
जहाँ न पवन लागई बँधाइये तुरी थली ॥
घृते कछू पिलाइये चलाइये सो मंद ही।
विचारि वाजि राखिये सो पाइये अंनद ही ॥

अन्य ।

छंद-हिमऋतु जब आवै तेल पिआवै अष्ट टंक परमान मनौ ॥
दिन यकइस दीजै पुनि गुनि लीजै खुइ दिखवावै भाँति भनौ ॥
दिन बीस प्रमानौ यह मत जानौ जौके अंकुर आनि लहौ ॥
वाजी अनुरागै वायु न लागै शालहोत्र यह मते कहौं ॥

अन्य ।

छंद-दाना जौ दीजै यह गुणि लीजै अग्निमाहँ परिपक्व करौ ॥
जब जौ नहि पावै चना खुलावै शुद्ध सकल सब भाँति करौ॥
जब चना न पावै माप मँगावै पीसि मिलावै तेलु तही ॥
यहि भाँती पालौ बाजि विशालौ शत्रुन घालौ जंगमही ॥
दोहा-दाना वरणे जे सबै, तिनमें मोठ विसेखि ।
भाष्यो चेतन चंद यह, शालहोत्र मत देखि ॥
छंद-सब भैषजमहँ कुरथी देहु । घृत तैल वाजिकहँ पंथ एहु॥
करु अग्निमाहँ परिपक्क सोय । जब जौ न होइ तब चना देय ॥
दोहा-ताते जौ दीजै तुरी, अच्छी भांति पकाय ।
होइ वली दूषणरहित, ऋतु हेमंत सुख पाय ॥

अन्य ।

चौ०-अगहन पूसै हिमऋतु भाषौ । घोड़को छाहीमें राखौ ॥
उरद पकाय देइ घृत नाई । कीतौ तिलका तेल मिलाई ॥
चढ़ै थोग अतिही सुख पावै । रोग हरै सब शोक नशावै॥

मध्यदेश पूरव लगे, वाजि मिजाजहि जानि ।
माफिक जौन मिजाजके, दाना दीजै आनि ॥ ३ ॥
सोरठा–पित्तप्रकृति जो होइ, यवको दाना दीजिये ।
वातप्रकृति हय सोइ, देउ महेला मोठको ॥
दोहा–कफको होय मिजाज ज्यहि, चना देउ तिहि आनि
रक्त मिजाजहि माहिंमें, अरदावाको जानि ॥ १ ॥
टका तीस परमानसों, कम ज्यादा नहि देइ ।
टका तीनिसैसे अधिक, दाना कबहुँ न लेइ ॥ २ ॥
या विधि दाना दीजिये, कद अरु भूख विचारि ।
जासों वाजी सुख लहै, सो लीजै निरधारि ॥ ३ ॥
शारँगधर अरु नकुलमत, शालहोत्रको पंथ ।
सो विचारि अनुसार मत, भाषा कीन्हों ग्रंथ ॥ ४ ॥

अथ चना देनेकी विधि ।

दोहा–चना पत्र फलिका सहित, विरवा लेउ मँगाइ ।
तिनको जलमें धोइकै, दीजै धूप धराइ ॥ १ ॥
जबै जायँ ऐलाइ वे, लीजै तबै सँदाय ।
आठ टका भरि तेलको, जलमो लेउ मिलाय ॥ २ ॥
लीजै सोंचर लोनको, चारि टका भरि जानि ।
ताहि मिलावै तेलमें, शालहोत्र मत मानि ॥ ३ ॥
तामें विरवा सांदिकै, हयको देउ धराइ ।
खात रहै सो राति दिन, दाना देउ छुँड़ाइ ॥ ४ ॥
मंद मंद करि घासको, हयको देउ छुँड़ाइ ।
सौंदे विरवा खाइ नहि, ताकी यह विधि आइ ॥ ५ ॥

सोरठा–जब विरवा ऐलाइ, हयको दीजै काटिकै ।
तेल लोनको लाइ, दीजै वेसन सानिकै ॥ ६ ॥

दोहा–खुइदि माहिं जस गुण अहैं, तस याको दरशाइ ।
दीजे चालिस रोज लौ, तुरी मोट ह्वै जाइ ॥

अथ खुइदि देनेकी विधि ।

सोरठा–खुइदि हरी जब होइ, गाँठि परन अरु लागई ।
हयको दीजै सोइ, अब देनेकी विधि कहौं ॥

दोहा–बाँधै ऐसे थान हरि, जहाँ न लागै वाइ ।
और अँधेरा कीजिये, लघु दरवाज रखाइ ॥ १ ॥
दीजै चालिस रोज नित, हरी खुइदिको आनि ।
की तौ दीजे तीसदिन, श्रीधर कहो बखानि ॥ २ ॥

अथ खुइदिके बाद यह मसाला दे ।

दोहा–लालि मिठाई बीस पल, यतनी अदरख जानि ।
लहसुन लीजै ताहि सम, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
ताके हिस्सा तीन करि, प्रातहि एक खवाय ।
चारि घरी फैजा करै, जानि लेउ मनलाय ॥ २ ॥
डेढ़ पहर दिनके रहे, दूसर हिस्सा देइ ।
एक घरी फैजा करै, बाजी रुज हरि लेई ॥ ३ ॥
साझ समयमें दीजिये, तीसर हिस्सा ताहि ।
चारि घरी फैजा करै, जानि लेउ मन माहि ॥ ४ ॥
हलदी लीजे चारि पल, दुइ पल सज्जी लाइ ।
पहर एक रजनी गये, हयको देउ खवाइ ॥ ५ ॥
यहि विधि दीजे खुइदिको, शालहोत्र मतजानि ।
औरो भोजन विधि कहौं, सो अब लीजे मानि ॥ ६ ॥

सज्जी लोन मियंगु पुनि, और बहेरा लाइ ।
यह घोड़ेको दीजिये, तौ खांसी मिटि जाइ ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा—हल्दी सोंचर पीपरी, अरु इन्द्रायन लाइ ।
सो घोड़ेको दीजिये, मूतकर्क मिटि जाइ ॥

अन्य।

दोहा—जेठीमधु पीपरि सहित, देवदारुको जानि ।
गंधक बहुरि हरीतकी, भाग समान बखानि ॥ १ ॥
गोली ताकी बॉधिकै, हरिको देउ खवाइ ।
लीदि करै जो रक्तयुत, सो पीड़ा मिटि जाइ ॥ २ ॥

अन्य।

चौ०—दूनी हल्दी गंधक लाई । करुये तेलहि पिंड बनाई ।
सो घोड़ेको देउ खवाई । रक्तविकार तुरत मिटि जाई ॥

अन्य।

दोहा—वटकलिका अरु नीब लै, अरसीपत्र मिलाइ ।
सो घोड़ेको दीजिये, अतीसार मिटि जाइ ॥

अन्य।

दोहा—जो घोडेकी देहमें, कृमि अव्रण ह्वै जाइ ।
थूहर रडा पात लै, ताको देउ खवाइ ॥ १ ॥
कद अरु मोसम देखिकै, बहुरि मिजाज विचारि ।
पिंडादिक तब दीजिये, श्रीधर कवि निरधारि ॥ २ ॥

अथ तुरग तेज करनेकी विधि।

दोहा—पीपरि सैंधव सोंठि पुनि, सरसों तेल गिलोय ।
ॲमिलबेत पुनि लीजिये, सम करि सबै मिलोय ॥ १ ॥

अथ खिचडी देनेकी विधि।

दोहा-डेढ़ पाव चावर सहित, दालि अढ़ाई पाउ ।
दालि होइ सो मूँगकी, दुइ पल अदरख लाउ ॥ १ ॥
धोवै ताको नीरमें, फिरि भूँजै घी माहि ।
ताहि मीजिये हाथसों, एकमाहि मिलि जाहि ॥ २ ॥
हल्दी लीजै चारि पल, दुइ पल सर्जी लाइ ।
खिचरी माहि मिलाइकै, पिंडा लेउ बनाइ ॥ ३ ॥
वासर बीते पहर दुइ, हयको देउ खवाइ ।
दीजै चालिस रोज लौं, तुरी मोट ह्वै जाइ ॥ ४ ॥

अथ मोठकी खीर ।

छंद-पकवाय महेला मोठ क्यार । लीजौ उतारि तब दूध डार॥
मीठा मिलाय तब आँच राखि । लखि पको खूब धरु भूमि भाषि॥
दाना बदले याही खवाइ । जो थोर होय नहि जल मिलाइ ॥
नहि वजन तासु कीन्हों प्रमान । मौका जितनो तित करु विधान

अथ बछेडेकी तैयारीकी विधि । छंद पद्धरी ।

अतिसेर दूध औटै चढ़ाय । गोहूँ दरिया यकसेर नाय ॥
जब पकै खाँड़ यकसेर पेलि । पानी पिआय हय वदन मेलि॥
दरि मिर्च चारि तोले सुजान । यक पाव मेलु तामें पिसान ॥
याको खवाय तब देइ नीर। दीजै यहि विधि नाहिं भलो खीर॥

अन्य । छंद पद्धरी ।

हर्दी हांड़ीमें धरु कुटाय । तिहिको प्रभात लै आवपाय ॥
पयमें भिगोय वसु याम राखि । यहि खाय नहारी तबहिं भाषि॥
यक पाव करै कम कम वढ़ाय। दिन चालिसलौं यह तुरँग खाय॥
अति करत आशु ही देह पुष्ट । जो होय बुरो लखि परत सुष्ट ॥

औपध यकइस दिनलगे, रोज पाँच पल देइ।
नाशै आलस बल बढ़ै, जल्द तुरत करि लेइ ॥ २ ॥
दोहा–त्रिफला कुटकी चीत लै, मोथा बायविडंग।
औपध दीजै पाँच पल, खरी मदके संग ॥

अन्य।

दोहा–रहसनि पीपरि मधु सहित,केसरि श्रीफल आनि।
औरौ लीजै तालफल, ताकी गूदी जानि ॥ १ ॥
औपध भाग समानसों, चारि टका भरि लेइ।
दीजै प्रातहि सात दिन, अति चंचल करि देइ ॥ २ ॥

अथ बहुत कोश चलानेकी विधि।

चौ०–काला साँपु बड़ा लै आवै। तनु नहि फूटै रुधिर न आवै॥
ताके मुहँमें चना भरावै। गंती यकशत कम न करावै॥
माटीके घट भीतर धरिकै।मोहराबंद बहुत विधि करिकै॥
भूमि खोदि यक गड़हा करै। ताके भीतर घटको धरै॥
आसपास बहु लीदि तुपावै।चालिस दिन यहि भाँति रखावै
ताके पीछे घट खुलवाई। सर्पके मुँहके चना धुवाई॥
घामें सुखै राखु धरि भाई। तीनि चनाको रोज खवाई॥
शीतकालमें ताहि खवावै। तुरँग बहुत सो वृद्धि करावै॥
बहुत दौर दमकस परमानै। दक्षिणके उस्ताद बखानै॥
सत्तरि साठि कोश लगु दौरै।दवा प्रमान कीन शिर मौरै॥
ऐसी दवा और नहि कोई। की सत्तू दाना संग देई॥

अथ बरजतिया सर्प खिलानेके गुण।

दोहा–ज्यों सुमेरु गिरि अचल हैं, औ शस्त्रनमें बान।
त्यौं बाजीको सर्प है, सब औपध परमान॥ १ ॥

अन्य । छंद पद्धरी ।

यक सेर चना बेसन भुँजाय । तिहि सानि चारि रोटी पकाय ॥
यक सेर दूध अरु खांड़ लाय । दे सानि दिवस चालिस दिढ़ाय॥
पानी पिआय फिरि देउ याहि । अति निबल अश्व सो सबल ताहि

अन्य । छद पद्धरी ।

लखि हरितवालि जौकी मँगाय । जित अश्व खाय सो दे खवाय॥
सुख रुके तबहि गलियाइ देय । यक पहर बाद गुड सेर लेय ॥
दे कबहुँ पाव अदरख मिलाय । यक पाव कबहुँ लहसुन खवाय॥
यहि रीति करै तबलौ सुजान । जबलौ रहि हरियर जौ समान॥
जौ भूँजि चहै दीजै सुजान । करि आध सेर घीमें मिलान ॥
चालीस रोज दीजै बनाय । दाना तबलौ नहि तिहि खवाय ॥
राखै हय जहँ अति ही अँधेर । बारै चिराग निशिहू सबेर ॥
जो करि पेशाब अरु लीदि लेइ । हयके तनमें सो लेपि देइ ॥
हत्थी खरहर कुछ नहि मिलाहि । दिन चालिसलौ याही निबाहि॥
जब दिवस पूर खोलै तुरंग । तब देखै तैयारीक ढंग ॥

अथ शिशु तैयारीकी चाशनी ।

दोहा-जौ पिसानकी रोटिको, अति महीन करवाय ।
सर्षपतैलहि सानिकै, शिशुको दइ खवाय ॥

अन्य ।

चौ०-अजवायनि अजमोद मँगावै। खुरासानि अजवायनि लावै॥
लहसुन साँभरि सम करि लीजै । यव पिसानमें गोला कीजै॥
साँझ सकारे गोली दीजै । शिशुको रोग सकल हरि लीजै॥

वरजतिया अहि मारिकै, घुड़शालामें राखि।
देउ ताहि ऋतु शिशिरमें, नकुलमते यह भाखि ॥२॥
चौ०-ज्यों रविकिरण तिमिर हरि लेई।त्यों सब सुख बाजीको देई
शिशिर खवावै सुनु बुधवंता।करत सकल रोगनको अंता॥

अथ मिठाई खिलानेके गुण।

दोहा-मीठामें गुण तीन है, शिता खांड गुड़माहि।
अति गुणदायक सोखकृत,बली करै गुड चाहि॥

अन्य।

दोहा-तिल लै खूब कुटाइये, गुड़ सम देउ मिलाइ।
पिंड बनाइक दीजिये, सेर नित्त यहि भाइ॥
चौ०-माघमास घोड़ेको दीजै। अति बल करै रोगको छीजै॥

अथ तिल देनेकी विधि।

दोहा-एक सैकरा साठि पल, कारे तिल मँगवाइ।
ता सम अरसी लीजिये, दोऊ लेउ भुँजाइ॥
सोरठा-तिलको लेउ कुटाइ, हर्दीको गादा बहुरि।
अदरख लेउ मँगाइ, चारौ चीजै भाग सम॥
दोहा-चारोंके सम लाल गुड़, तामें देउ मिलाइ।
चालिस पिंडा कीजिये, रोज खवावत जाइ॥ १॥
दीजै चालिस रोज लगु, बाजी मोटा होइ।
जाड़ेकी ऋतु देखिकै, हयको दीजै सोइ॥ २॥

अथ जलेबी देनेकी विधि।

दोहा-सेर एक सो दीजिये, पाँच सेर लगु जानि।
देउ जलेबी बाजिको, श्रीधर कहो बखानि॥ १॥

अन्य ।

सोरठा–शिशु तुरंगको देय, हालिम टंकनखार ले ।
अतिमोटो सो होय, ऊपर दूध पियाइय ॥

अन्य ।

चौ०–कनिक मॉड़िकै घोरै पानी । झीने कपरा लीजै छानी ॥
ताहि औटिकै लाटी कीजै । प्रातकाल घोड़े शिशु दीजै ॥

अन्य ।

सोरठा–हरदी गोपय संग, वाजी बालक दीजिये ।
गात बढ़ै सब अंग, वर्ष एकलगु जो करौ ॥

अन्य ।

चौ०–अजवाइनि दूनौ मँगवावे । हरदी हर्रै जंगी लावे ॥
सॉभरि मिलै सुचूरण करै । सकल अजीरण शिशुको हरै ॥

अन्य ।

चौ०–हालिम हरदी सज्जी लेहू । मिर्चं भरंगी मेथी देहू ॥
पोस्ता दाना सरसौ राई । कंचनरिपुकी खील कराई ॥
कुंड कुंड भरि यहि सब लेहू । पल अफीम तिहिमाही देहू ॥
चूरण करि सब एकम लीजै । टंक टंक नित मातै दीजै ॥
वायु अजीरण खाते हरै । भूँख चौगुनी सैधव करै ॥

अन्य ।

चौ०–राई सॉभरि भॉग मँगावै । अजवाइनि कालेश्वर लावै ॥
गऊमूत्रसों भिजै सुखावै । दुइ टंके परभात खवावै ॥
भूँख चौगुनी लागै ताही । बात रोगको दूरि कराही ॥

अन्य ।

चौ०–सुरभी दूध सेर दश लीजै । दुइ टंके हालिम तिहि दीजै ॥
खीर करौ गुड़ सैधव खाता । अश्वा बहुत पुष्ट है जाता ॥

स्याहमिर्च लै दोइ पल, अरु अदरख पल चारि ।
हयको दीजै आनि करि, लोन दोइ पल डारि ॥ २ ॥

अथ मेषकी सींग देनेकी विधि ।

दोहा–सींग मेषको लीजिये, अग्निमाहिं भुंजवाइ ।
जरे सींगको लीजिये, खूब मिही कुटवाइ ॥ १ ॥
माटीकी हाँड़ी–विषै, ताको देउ धराय ।
तामें सहद मिलाइकै, कवि श्रीधर सुखदाय ॥ २ ॥
ना अतिगीली कीजिये, ना सूखो रहि जाइ ।
हाँड़ी पर परिया धरै, माटी देउ लगाइ ॥ ३ ॥
चौ०–फिरि दुइ सेर कंडा लै आवै । हाँड़ीके तर तिनहि जरावै ॥
हाँड़ी जबही जाइ जुड़ाई । औषध तासों लेउ कढाई ॥
पीपरि मिर्च सोंठि लै आवै । सोंचर सज्जी लोन मिलावै ॥
सूख सहतरा तामें दीजै । पीसि कपरछन सबको कीजै ॥
षटमासे अरु मासे तीनी । एक एक ओषधि कहि दीनी ॥
सबै ओषधी लेउ मिलाई । ओषधि सींग समान कराई ॥
दोहा–ओषधि पैसा एक भरि, गूगुर मासे तीनि ।
ओषधि दीजै वाजिको, प्रथम दिवस कहि दीनि ॥
सोरठा–उतने गूगुर माहिं, ओषधि पैसा दोइ भरि ।
हयको देउ खवाइ, जानौ दुसरे दिन विषै ॥
दोहा–ओषधि पैसा एक भरि, रोज बढ़ावत जाइ ।
दीजै वासर सात लौं, गूगुर उतनै लाइ ॥ १ ॥
औषध पैसा पाँचभरि, तामें लेउ मिलाइ ।
चारि टका भरि खांडको, घोड़े देउ खवाइ ॥ २ ॥

अथ दुर्बल घोडेकी दवा।

दोहा-आधपाव चँदसुर मिलै, दूध सेर भरि माहि।
औटि तुरँगको दीजिये, मांस बढ़ै तनुचाहि॥ १॥
कृशतनु अबल तुरंगको, पावसमें घृत देइ।
अनलकोप ताको करै, रोग हरै सुख होइ॥ २॥

अथ तैयारीकी विधि।

चौ०-चावल चौदह पाव मँगावै। सेर पाँच गोदूधहि लावै॥
डेढपाव शक्कर बुध लीजै। भात पकाय एक करि दीजै॥
यहि विधि यकइस रोज खवावै।दुर्बल बहु तनु मांस बढावै

अन्य।

चौ०-सेर पाँच गोदूध औटिकै। निशिमें देय बढै तनु अतिकै॥

अन्य।

चौ०-पकवै मेथी तिलके तेलै। देय तुरँग दुइ मास महेलै॥
असवारी नहि तापर करै। अतिहि मोट है बलको धरै॥

अन्य।

चौ०-अरदावा तिल तेल मिलावै।यकइस दिन लगु तुरै खवावै॥
की अरदावामें घृत दीजै।बाँधि मास भरि बहु सुख लीजै॥

अन्य।

चौ०-कारे उरद कि मसुरी मेलै। मेथी चुरै मेलि तिल तेलै॥
यही महेला अश्व खवावै। मांस बढै सब रोग नशावै॥

अन्य।

चौ०-मास एक यव खुइंदि खवावै। चना हरितकी मसुरी पावै॥
अतिहि मोट हय बलको धारै।शालहोत्र मत यहै विचारै॥

या विधि दीजै सात दिन, फिरि याही विधि जानि ।
औषध पैसा पॉच भरि, आध पाव घिउ सानि ॥ ३ ॥
दीजै वासर सात लौं, वात रोग नशि जाइ।
मोट होइ अरु बल बढै, चोट पुरानी जाइ ॥ ४ ॥

अथ तैयारीकी दवा ।

चौ०-लेउ बकैना-पात मगाई । हरियर ताजे नरम सुहाई ॥
पीसि महीन सेर यक लीजै । आध सेर यव आटा दीजै॥
साँभरि नमक पाव अध लीजै। पिंड बनाइ अश्व मुख दीजै
एक मास भरि देउ खवाई । ताजा होइ बहुत सुख पाई॥

अथ महेला ताजा हो, झोझ बढे ।

दोहा-साग चकैड़ा लीजिये, वर्षाऋतुमें जानु ।
जबलौं नहिं फूलै फरै, करौ जतन यह मानु ॥
चौ०-पाँच सेर यह साग मँगावै । चारि सेर मोथी लै आवै ॥
आध पाव लै साँभरि नमका । पकै महेला देउ तुरँगका ॥
एक माह यह जतन करीजै । रिष्ट पुष्ट बहु झोंझ बढीजै॥

अथ पानी पिलानेकी विधि ।

दोहा-कर्क आदि इमि रीतितै, भाषो मकर प्रयंत ।
दीजै पानी तुरँगको, एक दॉइ बुधवंत ॥ १ ॥
कुंभ प्रथम द मिथुन लग, तीनि बेर जल देय ।
तुरँग सुखी दिन प्रति सदा, जानि लेउ बुध सोय ॥ २ ॥

अथ इंगुरगुटिका ।

दोहा-सुमिलखार ईंगुर सहित, त्रिकुटा गुग्गुल आनि ।
शोधा विष पुनि लीजिये, टक टंक सब जानि ॥ १ ॥

अन्य ।

चौ०–यवकी दरिया खीर खवावे । याहूसों बल बहुत बढावे ॥

अन्य ।

चौ०–बछहि कच्चा क्षीर पियावे । सैधव मेलै बहु सुख पावे ॥
क्षुधा अश्वको ओटि खवावे।अति बल रोस दिनौदिन आवै

अथ जाकी दरिया देनेकी विधि ।

दोहा–यवकी घाली सेर दश, पक्की तौल मँगाइ ।
तिनको सीकुर झुरसिके, लीजे फेरि कुटाइ ॥ १ ॥
लाल मिठाई सेरु भरि, तामें देउ मिलाइ ।
पै भूसा नहि काढिये, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
याको दीजे साँझको, दाना दीजै नाहि ।
बाजी मोटा होइ बहु, औ पौरुष सरसाहि ॥ ३ ॥

अथ हल्दा देनेकी विधि ।

दोहा–हल्दी लीजे आठ पल, ताको लेउ पिसाइ ।
दूध अध उद्य बीस पल, तामें देउ भिजाइ ॥ १ ॥
चारि घरी भीजत रहे, ताकी यह विधि आइ ।
मोठ महेला साथमो, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
दीजे चालिस रोज लगु, यत्ती यत्ती लाइ ।
बहुविधि भोजन बाजिके, कहँलौ बरणे जाइ ॥ ३ ॥
सोरठा–जैने भोजन माहि, वेला ताकी नाँहि कही ।
सो दुपहरके माहि, पानी देके दीजिये ॥ १ ॥
जब भोजनको देइ, होइ नहीं असवार तब ।
जानि मता यह लेइ, पै खाली नित फेरिये ॥ २ ॥

आमिष लीजै साठि पल, ताको साफ कराइ ।
ताको फेरि पकाइये, हर्दी दही लगाइ ॥ २ ॥
घीव लीजिये आठ पल, दुइ पल लेइ पिआज ।
गरममसाला डारिकै, ताहि पकावै साज ॥ ३ ॥
हाड निकारै मासके, रोटी मीसि खवाय ।
सुरुवा राखै नाहिनै, दीन्हों जतन बताय ॥ ४ ॥

आमिष व गूदा देनेका मसाला ।

चौ०–एक टका भरि मिरचैं लावै । ता सम हर्दी आनि मिलावै॥
अदरख और मिठाई लीजै।आठ टका भरि दोनों कीजै॥

दोहा–सो पानीके प्रथम ही, हयको देउ खवाय ।
पानी दैके वाजिको, दीजै आमिष लाय ॥

मेषका मास देनेकी विधि ।

दोहा–लीजै आमिष मेषको, चालिस पल तौलाइ ।
कही पकावन विधि अहै, ताही विधि पकवाइ ॥ १ ॥
जौकी रोटी बीस पल, ताम लीजै सानि ।
दश पल डारै ताहिके, संग मद्यको आनि ॥ २ ॥
बूढ़ तुरंगम होइ जो, दीजै चालिस रोज ।
वाजी होइ जवान जो, ताको बीसै रोज ॥ ३ ॥

मसाला ।

दोहा–लहसुन मिर्चैं सोंठि पुनि, एक एक पल आनि ।
सरसों सैंधव एक पल, श्रीधर कहो बखानि ॥
सोरठा–याको देइ खवाइ, दोय घरी कैजा करे ।
फिरि जल दीजै लाइ,वा पीछे आमिष कहो ॥

दोहा–जो असवार भयो चहै, तौ दौरावै नाहिं ।
और कुदावै नाहिनै, मन्द मन्द लै जाहिं ॥ १ ॥
कही जोन मौताज है, तामें लेउ विचारि ।
कम ज्यादा करि दीजिये,रुट अरु भूँख निहारि ॥ २ ॥

अथ महेलाकी विधि ।

छंदप०–जो चहै महेला गुणद कीन।मेथी मिलाय पकवै मवीन॥
खावै तुरग बहु गुण बढ़ाय। हय उदर व्याधि सगरी नशाय ॥

अन्य। छद पद्धरी ।

कच्चा दाना जो तुरँग खाय। ताको तरकरिकै तिहि खवाय॥
यह हजम करै दाना जु खाय। किंचितहि मसाला तुरँग पाय॥
की सौंफ लेय दश सेर आनि। आधी भुजाय दोउ कूटि धानि॥
दाना खवाय दै आध पाय। अतिही सुखदायक तुरँग खाय॥

अथ हलुवा बनानेकी विधि। छद पद्धरी।

ले सेर अढ़ाई घृत मँगाय। उतनी प्रमाण हरदी पिसाय ॥
अदरख पीसी उतनै सुजान । मेथी ले पीसै सो प्रमान ॥
दीजे कराहमें घृत चढाय। दे छोड़ि खूब हरदी पकाय॥
तब अदरख औ मेथीको डाल। सब भूँजि खूब कीजै सुलाल॥
दै पांच सेर मीठा मिलाय। दश सेर दूध तिनमें रलाय ॥
जब है जावै हलुआ सुढार। तब लेउ आगिपर सो उतार॥
दै पावसेर हय जल पिआय। यक सेर तलक कम कम बढाय॥
अकसीर समुझु हकमें तुरंग। जाड़तक करि दीजै हिरंग॥

शूकरका मास देनेकी विधि ।

दोहा—पल पचास तौलाइये, शूकरमांसहि जानि ।
ताहि पकावै नीरमें, केवल हर्दी सानि ॥ १ ॥
गूलरके फल सात पल, महिषी दही मिलाइ ।
दीजै बूढे वाजिको, मोट सही है जाइ ॥ २ ॥
कही क्षुधाकर ओषधी, सो दीजै नित लाइ ।
या विधि दीजै साठि पल, बूढ तरुण है जाइ ॥ ३ ॥

अखनी देनेकी विधि ।

दोहा—एक सैकरा साठि पल, आमिष छाग मिलाइ ।
थोरे घीमें भूजिये, थोरी हर्दी लाइ ॥ १ ॥
फेरि चुरावै नीरमो, अखनी लेउ कढ़ाइ ।
ताकी विधि अब कहत हौ, जानि लेउ सुखदाइ ॥ २ ॥
ताहि बघारै घीउमें, तीनि बार यह जानि ।
दीजै चालिस रोज लग, सो रोटीमें सानि ॥ ३ ॥

मसाला ।

दोहा—जवाखार साँभरि सहित, सोंचर सैंधव आनि ।
चारी लीजै एक पल, दुइ पल फचरी जानि ॥ १ ॥
कुटकी मिर्चें सोंठि पुनि, डेढ टका भरि लेइ ।
एक रोजको बीच दै, सो वाजीको देइ ॥ २ ॥
फल भोजन जिनके कहे, शालहोत्र मतमाहि ।
यह औषध सबमें उचित, जानि लेउ तुम ताहि ॥ ३ ॥

मुर्गा देनेकी विधि ।

दोहा—मुर्गा दीजै बीस दिन, की चालिस दिन जानि ।
छुट्टा मुर्गा सो चुनै, नितभाति एक बखानि ॥

अथ मूँगका हलुवा देनेकी विधि ।

दोहा-अदरख हल्दी खांड़ घिउ, औरो मूँग पिसान ।
एती चीजैं लेउ सब, तिनको भाग समान ॥ १ ॥
घीसों चौथे भाग कम, लेउ पिआजु मँगाइ ।
घीमें भूँजै ताहिको, डारै फेरि कढ़ाइ ॥ २ ॥
हल्दी आदि पिसानको, घीमें लेउ भुँजाइ ।
पृथक पृथक ये भूँजिये, मन्द आँच करवाइ ॥ ३ ॥
खाँड़माहिं जल डारिकै, लेउ जलाउ बनाइ ।
हल्दी आदि पिसानको, तामें देव मिलाइ ॥ ४ ॥
दीजै चालिस रोज लौ, ताकी यह विधि आहि ।
आठ आठ पल चारि दिन, फेरि बढ़ावै ताहि ॥ ५ ॥
अठयें दिनते तीस पल, रोज खवावत जाइ ।
युवा वाजिको को कहै, बूढ़ तरुण ह्वै जाइ ॥ ६ ॥

अथ सामान्य मोटा करनेकी विधि ।

दोहा-स्याह मिर्च पीपरि सहित, पिपरामूल बखानि ।
लीजै राई सोंठि पुनि, बीस बीस पल जानि ॥
चौ०-मेथी हालिम हर्दी लावै । तीस तीस पल सो तौलावै ॥
तीस टका भरि जो घृत लावै । ताते दूनी खाँड़ मिलावै ॥
दोहा-खोवा लीजै गाइको, पाँच सेर यह जानि ।
तौल पोखता जानियो, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
सबको भूँजै घीउमों, एक माहि मिलवाइ ।
शीतल करिकै ताहिको, पिण्डा लेउ बनाइ ॥ २ ॥

सोरठा–लीजै ताहि पकाइ, जौन पकावन विधि कही ।
हड्डी तासु कढ़ाइ, बासी रोटी सानिके ॥ १ ॥
हयको देउ खवाय, औषध दीजै गरम नहि ।
साँक रोग नशि जाय, दीजै वात बचाइ जो ॥ २ ॥

अन्य मांस देनेकी विधि ।

दोहा–तीतर लवा बटेरको, और कपोत बखानि ।
मांस दीजिये ए सबै, सकल रोग हर जानि ॥

मांस पकानेकी विधि ।

दोहा–आठ टका भरि घीवमें, प्रथमहि भूँजे आनि ।
फेरि पकावे नीरमें, पहर एक यह जानि ॥ १ ॥
गोहूँ रोटी बीस पल, तामें लीजै सानि ।
पानी देके बाजिके, ताहि खवावै आनि ॥ २ ॥
जो बाजीके तनुविषे, वातरोग जो होइ ।
रोटी दीजै मोठकी, बहुरि गर्म करि सोइ ॥ ३ ॥

अथ मुर्गीके अण्डा देनेकी विधि ।

दोहा–अंडा दीजै बाजिको, ताकी यह विधि आहि ।
प्रति दिन एक बढ़ाइये, दश वासर लौ ताहि ॥
सोरठा–ग्यारह दिनमें वाहि, दश अंडा अरु दीजिये ।
फिरि नव वासर माहि, दिनप्रति एक घटाइये ॥
दोहा–प्रति अंडाके भाग अध, लीजे खाँड़ मिलाइ ।
ताते आधा घीव ले, सोऊ लेउ मिलाइ ॥
चौ०–दुइ मासे अदरखरस लीजै । प्रति अंडामें ताको दीजै ॥
मोठ मंहेलामें सनवाई । कच्चे अंडा रोज खवाई ॥

टका अठारह तौलिकै, रोज खवावत जाइ ।
जाड़ेके महिना विषे, तुरी मोट है जाइ ॥ ३ ॥
पानी दीजे बाजिको, दोइ पहर दिन माहि ।
दीजे चालिस रोज लगु, बूढ़ युवा है जाहि ॥ ४ ॥

अथ चारो रोगन देनेकी विधि ।

दोहा–जर्द स्याह रोगन दुवो, शूकर चर्बी आनि ।
तिनको कीजै भाग सम, औरो साबुन जानि ॥

बनानेकी विधि ।

दोहा–घियके चौथे भाग करि, हल्दी लेउ मँगाइ ।
घीमें ताको भूँजिये, राखै फेरि धराइ ॥
सोरठा–घी बाकी रहि जाइ, डारि कराही माहि सो ।
ता तर आगि बराइ, तीनो रोगन मिलै करि ॥
दोहा–चारों रोगन पघिलिकै, एक रूप है जाइ ।
हल्दी भूँजी जो धरी, तामें देउ मिलाइ ॥
सोरठा–लीजै फेरि उतारि, जब ठंढो है जाइ वह ।
पिंडा करौ सुधारि, दश दश पलके तौलिकै ॥
दोहा–एक एक पिंडा बाजिको, दीजै रोज खवाइ ।
चालिस दिनमो बल बढ़ै, तुरी मोट है जाइ ॥

अथ पिण्डादि–वर्णन ।

दोहा–करत यथामतिसों अहौ, शालहोत्र मत जानि ॥
पिंडादिक जे बाजिके, करैं रोगकी हानि ॥ १ ॥
मधुमाखी मोथा सहित, हरैं सैंधव आनि ।
पिंडा बाँधो भाग सम, गऊमूत्रमो सानि ॥ २ ॥

दोहा--बल जाको घटि गयो, अरु जलदी थकिजाइ।
या विधि अंडा दीजिये, जोरु तासु सरसाइ॥

अंडा देनेकी अन्य विधि।

दोहा--अंडा दीजे बीस दिन, दिनप्रति एक बढाइ।
एक एक कमती करै, क्रमसों देउ छुड़ाइ॥ १ ॥
हरदी मासे दोइ लै, ताको लेउ पिसाइ।
एक एक अंडा विषै, दीजे ताहि मिलाइ॥ २ ॥
सो रोटी सँग भिजैके, हयको देउ खवाइ।
शालहोत्र मत कहत हौं, दिन दिन बल सरसाइ॥ ३ ॥
ढीलो वाजी जो चलै, देह हलाबत होइ।
या विधि अंडा दीजिये, सुस्त चलत पुनि सोइ॥ ४ ॥

अंडा देनेकी अन्य विधि।

दोहा--दिनप्रति अंडा दश कहे, सो चालिस दिन देइ।
ताकी विधि अब कहत हौं, जानि ताउको लेइ॥ १ ॥
घीमाँ अंडा भूँजिकै, दुइ पल हरदी लेइ।
अंडनके सम खाइको, दोनो तामें देइ॥ २ ॥
ताहि खवावे वाजिको, कवि श्रीधर यह जानि।
मोटा वाजी होत है, बाढै बलकी खानि॥ ३ ॥

अंडा देनेकी अन्य विधि।

दोहा- अंडा दीजै वाजिको, ताकी यह विधि जोइ।
पहिले दिनमें एक दे, दूजे दिनमें दोइ॥ १ ॥
तीजे दिनमें तीनि दै, या विधि और बढाइ।
दीजै चालिस रोज सो, हयको आनि खवाइ॥ २ ॥

हयको दीजै पाँच दिन, मन्द अग्नि मिटि जाइ ।
भोजन अति रुचि सों करै,दिन दिन तुरी तजाय॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा–लटजीरा तेंदूसहित, पुहकरमूल तमाल ।
लोध दुग्ध युत पिंड करि, वात मिटै ततकाल ॥

अन्य।

दोहा–धूप मूँगके जूसमें, वचको लेउ मिलाइ ।
सैंधव युत करि दीजिये, अग्निदाह मिटि जाइ ॥

अन्य।

दोहा–मिश्री दूध कपूर पुनि, एला पत्रज लाइ ।
सैंधवयुत करि दीजिये, अग्निदाह मिटि जाइ ॥ १ ॥
ग्रीष्मऋतुमे जानिये, कोप पित्तकर होइ ।
तब यह औषध दीजिये, चौरेहनी सो मोइ ॥ २ ॥
लीजै लहसुन तेल पुनि, छाग मासु मिलवाइ ।
ताहि खवावै वाजिको, वात पित्त मिटि जाइ ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा–दूध खाँड़ अरु महिषि घृत, ताहि कपूर मिलाइ ।
सो लै दीजे वाजिको, कफको देत नशाइ ॥

अन्य।

दोहा–औरा गोरोचन सहित, बीज बरेरा लाइ ।
सो लै दीजै वाजिको, गुल्म हृदय मिटि जाइ ॥

अन्य।

दोहा–सहदेई वच कूटि पुनि, अरु इंद्रायनि आनि ।
अतिहि श्वासको हरति है,वरुण सहित सो जानि ॥ १ ॥

सहद रुपैया दोइ भरि, प्रति अंडामो जानि ।
साढ़े दश मासे बहुरि, अदरखके रस सानि ॥ ३ ॥
अंडाके रस मांहिमो, दोऊ देउ मिलाइ ।
भूंजो मोठ पिसान लै, तामें ढील सनाइ ॥ ४ ॥
मोटा वाजी होइ अरु, वल ताको अधिकाइ ।
औरौ वहुत कहा कहौं, वूढ़ तरुण ह्वै जाइ ॥ ५ ॥
सोरठा–विप्रवर्ण जो होइ, अंडा ताको नहिं परै ।
जानि लेउ जिय सोय,औरौ विधि यक कहत हौं ॥
दोहा–अंडा जाको नहि परैं, अरु मुर्गाको मांसु ।
ताकी यह पहिचान है, प्रथमहि कीजै तासु ॥ १ ॥
सूर्यऋचा आकृष्ण है, पढ़े कानमें तासु ।
या अंडा या मुर्गको, तुमको देहौं मासु ॥ २ ॥
यह कहि दीजै कानमें, दीजै राति विताइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, शालहोत्र मत आइ ॥ ३ ॥
प्रात भये फिरि देखिये, जव हीं आवै आँसु ।
ताको अंडा देइ नहि, अरु मुर्गाको मांसु ॥ ४ ॥
हठ करि कोऊ देइ जो, तौ रोगी ह्वै जाइ ।
वाजी दूवर होइ अरु, अकसर करि मरि जाइ ॥ ५ ॥

अथ मछली खिलानेकी विधि।

दोहा–रोहू मछरी साठि पल, तिनकी खल कढ़वाइ ।
घीमें तिनको भूँजिकै, पानीमो पकवाइ ॥ १ ॥
काँटा डारे काढ़ि सव, दश पल घीउ मिलाइ ।
मोटी रोटी साथमें, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥

चौ०-निर्बल अश्वहि देउ खवाई। चालिस दिनमाँ बल बढ़िजाई॥
अति बूढो वाजी जो होई। या सम औषध और न कोई॥

मछली देनेकी अन्य विधि।

दोहा-रोहू मछरी दोइ लै, साठि साठि पल होइ।
की कम ज्यादा होइ कछु, या परमानहि सोइ॥ १॥
तिन मछरिनकी देहमें, देउ पिडोर लेपाइ।
भुँइमे गड़हा खोदिकै, कंडा देउ भराइ॥ २॥
ता मधि मछरी गाड़िकै, दीजै आगि लगाइ।
कवि श्रीधर यह कहत है, तापर और उपाइ॥ ३॥
बारबार घिउ डारिकै, मछरीके मुखमाहि।
सुर्ख होइ जौलौं नहीं, तौलौं डारत जाहि॥ ४॥
सोरठा-पाकि खूब जब जाइ, खाल काँट सब काढिये।
हयको देउ खवाइ, मोटी रोटी सानिकै॥ ५॥

मसाला।

दोहा-सोंठि मिर्च अरु पीपरी, टका टका भरि आनि।
सो छिरका मधि सानिक, हयको दीजै मानि॥

अन्य मछलीके मूड देनेकी विधि।

चौ०-दश शिर रोहूके लै आवै। घीमें तिनको आनि भुँजावै॥
तिनको भेजा लेउ कढ़ाई। बेसनमो फिरि ताहि सनाई॥
दश दिन यहि विधि रोज खवावै। दशदिनते दश और बढ़ावै
बीस रोज या विधिसों दीजै। फेरि और दश ज्यादा कीजै
दोहा-तीस तीस फिरि दीजिये, दिन चालिसलौं जानि।
शालहोत्र मुनिके मते, अश्व होइ बलखानि॥ १॥

चौ॰–नरवचूर औ कुटकी वचुकी। काराजीरी बकली हड़की॥
बीज पलाश रु वायविडगा। चारो नमक करौ यक संगा॥
पाव पाव सब वजन करीजे। एक छटांक हींग तिहि दीजे
राई जौन वनरसी भाई। सेर अढाई तौलि मिलाई॥
सकल दवा पिसवाइ छनावे। माटीके बरतन धरवावे॥
नितप्रति एक छटांक खवावे। वरही मास रोग नहि आवै॥
भीठ पिसान मिले सनवावे। पिंड बनाइ अश्व मुख नावे

अथ तैयारीका मसाला।

दोहा–हर्रे बहेरा आँवरा, कुटकी कचरी जान।
मेथी अजवाइनि सहित राई कहौ बखान॥
चौ॰–यह सब दवा सेर स्यर लीजे।साँभरि नमक तीनि स्यर दीजे
यह सब दवा कूटि छनवावे।महिषी तक्रहि मिले सरावे॥
आधपाव नित तुरँगहि दीजे। होइ बलिष्ट पुष्ट तनु लीजै॥

अथ भूँख बढनेका मसाला।

दोहा–पिपिनि जर हालिम सहित, वायविडग मँगाइ।
अजवाइनि अजमोद लै, सोंठि चिरैता लाइ॥ १॥
पात सँभारु ढाँसके, अरु औराके जानि।
पुनि लहसुनको लीजिये, सेन्धवलोन बखानि॥ २॥
अजवाइनिको लीजिये, दूनो भाग प्रमान।
आधे भागहि हींग लै, सबको भाग समान॥ ३॥

बूढे हयको दीजिये, करि मछरीको प्रेम ।
युवा वाजिको देइ नहि, शालहोत्रको नेम ॥ २ ॥

अथ बोकरेका शिर देनेकी विधि ।

चौ०–यक बोकराको शीश मँगावै। नितप्रति प्रात पकाइ खवावै॥
यकईस दिनलौ या विधि कीजै। वृद्ध अश्वको ज्वान करीजै॥

रुधिर देनेकी विधि ।

चौ०–यक बोकराको रुधिर मँगावै। प्रात खवाइ जवान करावै॥
यकईस दिनलौ नितप्रति दीजै। वृद्ध अश्वको ज्वान करीजै

चर्बी देनेकी विधि ।

चौ०–बोकरा की चर्बी मँगवावै । एक पाव नित प्रात खवावै ॥
यकइस दिन याहको दीजै। वृद्ध होई तिहि ज्वान करीजै॥

अथ वडियाँ देनेकी विधि ।

दोहा–उर्ददालिकी लीजिये, बत्तिस पलै भिजाइ ।
कचरा ताको पीसिकै, बरियाँ लेउ बनाइ ॥ १ ॥
धरि राखै सो राति भरि, हयको देउ खवाय ।
शालहोत्र मुनिके जते, दीन्हों जतन बताय ॥ २ ॥

अन्य

दोहा–बरियां दीजै वाजिको, दहीमाहि भिजवाइ ।
राई लहसुन सोंठि पुनि, चारि कर्ष मिलवाइ ॥

अन्य

दोहा–लाल मिठाई तीस पल, कीजै तासु जलाउ ।
तामें बरियां भिजैके, हयको सोइ खवाउ ॥ १ ॥

अथ गर्मीके दिनोंमें क्षुधाकरण मसाला ।

दोहा–लै अजवाइनि पाव भरि, हर्र सेरु भरि आनि ।
जवाखार पुनि लीजिये, तोले चारि बखानि ॥ १
दही गाइको सेर दुइ, तामें लेउ पकाइ ।
औषध पैसा चारि भरि, दीजै रोज खवाइ ॥ २
दाना दैके साँझको, हयको दीजै आनि ।
क्षुधा तासुकी अति बढ़ै, होइ रोगकी हानि ॥ ३

अथ क्षुधाकरण और बउगम वगैरह जानेका मसाला ।

दोहा–औरा हर्र बहेर पुनि, गोली मिर्च मँगाइ ।
काराजीरी लेउ पुनि, अरु अजवाइनि लाइ ॥ १
पीपरि पिपरामूल अरु, हल्दी राई आनि ।
लीजे अदरख सौंफ पुनि, हालिम सोंठि बखानि ॥ २

सोरठा–पाव पाव ये आनि, दुइ तोले पुनि हींग लै ।
तोले चारि बखानि, खुरासानि अजवाइनिहि ॥

दोहा–कालेश्वर घुड़बच सहित, सोंचर साँभरि आनि ।
आधे आधे पाव सब, जवाखारको जानि ॥ १
नील सोहागाकी बहुरि, आध पाव मँगवाइ ।
गूगुरु तोले चारि भरि, सबको लेउ पिसाइ ॥ २

वरा दीजिये माघभरि, और मासमो नाहि।
आजी मोटा होइ बद्ध, बाढै पौरुष ताहि ॥ २९॥

॥ इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत मासवर्णन
नामक द्वाविंश अध्याय ॥ २२॥

अथ मसाला साठिया-चौपाइ।

जवाखार अरु पापरखारी। सज्जीखार मैनफल डारी ॥
बच अरु पिपरामूरि मँगावै। अजवायनि खुरसानी लावै ॥
लेइ कैफरा और फिटकरी। सैंधव सोंचर लोन साँभरी ॥
पक्के कुआँ कि काई चँदसुर। कटु तुँबरी दल अर्क लेउ वर ॥
याहि षोडश लै दवा पिसावै। एकै एक छटाँक मँगावै ॥
कुटकी कूट भरंगी मेले। बीज चकैड़ा मिरचै गोले ॥
घुड़रहसाति अरु हींग मँगाई। तुचा बकैना फलको लाई ॥
सुर्री अरु हुरहुरके पाता। दश अध पई लेउ सम ताता ॥
हरदी मिरचा धनिआ लावै। हैसिमूलकी छालि मँगावै ॥
भँगरैला असगँध अजमोदा। गरु धुरिय अरु कंजक गूदा ॥
रूसकटैया गोलि नवाली। द्रुत्तो अरफा दुच्चा निकाली ॥
काराजीरी पिपरी लावै। घुघुआरी का गूद मिलावै ॥
मालकाँगनी ग्गुरभैसा। डारु सोहागा भूँजि महीसा ॥
लीजै दवा सत्तरह आनी। पाव पावकी है परमानी ॥
राई दशी भाँग मँगावै। दुइ दुइ सेर वजन करवावै ॥
सोवा सोंठि पाव लै तीनी। सेर अढाई लहसुन देनी ॥
अर्क फूल वडार हु लीजै। मूल धतूरे तुचा करीजै ॥

टका टका भरि ओषधी, हयको देउ खवाइ ।
दाना दैके साँझको, कैजा देउ कराइ ॥ २ ॥
तासु क्षुधा वहुतै बढ़ै, बलगम जाइ नशाइ ।
बीस रोज यह ओषधी, रोज खवावत जाइ ॥ ४ ॥
पीछे जाहि कनारके, क्षुधा मन्द परिजाय ।
यहि चूरणते वाजिको, अतिहि गुणाकर आय ॥ ५ ॥

अन्य क्षुधाकरण मसाला।

दोहा—खुरासानि अजवाइनिहि, राई हर्दी आनि ।
खारी मेंहदीपात पुनि, पाउ पाउ ये जानि ॥ १ ॥
चरसों सज्जी सोंठि तज, अरु घुड़बचको लाइ ।
यक यक देउ छटाँकसों, पुनि फिटकरी गनाइ ॥ २ ॥
कागजीरी फिटकरी, कुटकी बायबिडंग ।
बीज कटैया मिर्च पुनि, अरु कालेश्वर संग ॥ ३ ॥
सोरठा-साँभरि सौंफ मँगाइ, आधे आधे पाव ये ।
लोटा सज्जी लाइ, इन्दरजव गूगुर सहित ॥ १ ॥
खील सोहागा लाय, दुइ दुइ तोले तोलि सब ।
तोला हींग मिलाइ, पुनि अजवायनि पाव भरि ॥ २ ॥
धरिये बासन-माहिं, सबै ओषधी कूटिकै ।
डारत तामें जाहि, गऊ-मूत्र मँगवाइके ॥ ३ ॥

टका टका भरि तीनों मेलौ । कचरी सेर एक तिहि घेलौ ॥
देशी अजवायनि लै त्रिफला । बाँसपात औ अदरख मेला॥
फल इंद्रायनि पाक फूँकिके । मेथी रेंडपात जोगियाके ॥
यहि नौ औषध करौ विधाना । आध आध सेरै परमाना ॥
राई लेउ बनरसी भाई । सेर एक तामें मिलवाई ॥
सहिजनजरकी छालि मँगावे । और पुराना गुड़ लै आवे ॥
दश दश सेर दुऔ परमानै । सकल पीसि कपरामें छानै ॥
भैंसीकेरो दही मँगावे । तामें औषध सब सनवावे ॥
घामें सुखे पीसि फिरि लीजे । तामें छिरका-मर्दन कीजे ॥
तुचा सहीजन सिल पिसवावे । एक कराही जल भरवावे ॥
तामें छाली देव भराई । पीछे डारु मिठाई भाई ॥
दूनों जब पानीमें चुरै । ताके पाछे औषध भरै ॥
दोहा—सकल पकावे एकमें, जब पानी जरि जाय ।
तबहीं धरै उतारिकै, घामें लेइ सुखाय ॥ १ ॥
आध पाव नित दीजिये, तुरँग अरोगी होय ।
भूँख बढ़ै तनु बल करै, उदर व्याधि हरि लेय ॥ २ ॥

अथ प्रथम मसाला बत्तीसा सर्व रोगोंपर ।

दोहा—जिस ओषधिका वजन नहिं, यामें कुछ दरशाय ।
वह ओषधि चोखी लियो,टका टका भरि भाय ॥
चौ०—पिपरी लहसुन पिपरामूरी । कुटकी बायबिडंग कचूरी ॥
मिर्च सोहागा काराजीरी । अजवायनि हरदी बहुपीरी ॥
बच गूगुर अरु हरें मँगाई । सज्जी जवाखारको लाई ॥
मेथीऽ सोंठि मैनफल लेहू । बीज कसौंजी तामें देहू ॥

भीजि ओषधी जाइ, मोहरा देइ लिसाय तव ।
लीदि माहि गड़वाइ, खोलै चालिस दिन नही ॥ ४ ॥
फिरि लीजै निकसाइ, कीट परत है ताहिमें ।
लीजै ताहि सुखाइ, फिरि ताको धरि राखिये ॥ ५ ॥
दोइ टका भरि लाइ, हयको देउ नहार मुँह ।
क्षुधा अधिक ह्वै जाइ, शालहोत्रमें है कह्यो ॥ ६ ॥
दोहा—गोहूँ आटा सँगमें, चालिस रोज खवाइ ।
या औषधको दीजिये, जाड़ेकी ऋतु पाइ ॥ १ ॥
क्षुधा बढ़ै अरु बल बढ़ै, मोटा होइ शरीर ।
चारि टकाभरि दीजिये, हरै शूलकी पीर ॥ ४ ॥

अथ शूल कुरकुरीको आटा।

चौपाई—बायबिडंग जवाइनि लाव। आध पाव दूनौ तौलावै ॥
कुकुरौंधेकी पाती लीजै। साँभरि नमक ताहिमें दीजै ॥
पाव एक दूनौ लै धरिये। पीसि कूटि जल मिलै पकैये
सीर गरम जब जानौ भाई।पाव एक गुड़ मीठ मिलाई॥
नारि भराय पियाय सु दीजै।मिटै कुरकुरी शूल हरीजै॥

अन्य ।

चौ०—मूँगजूस सेर आधक लीजै। घुड़वच दुइ तोला करि दीजै
एक छटाँक सहींजन छाली।जलमें पीसि देउ मुख घाली

चीतो बीज पवाँर विधारो। कालेश्वर जीरा विधि न्यारो॥
सेर आध विजयाको लीजै। हींग टका भरि तामें दीजै॥
लेउ सोहागा और फिटकरी। भुँजि खील सो दूनो धरी
साँभरि सोंचर सैंधव खारी। आध सेर लीजै यह चारी॥
मानुषकी खपरी लै आवै। महिया सींगे ताहि मँगावै॥
दुइ दुइ पलकी राख करावै।ताही क्रमते हींग मिलावै॥
पीसि छानि सब औषध लीजै।चनाके आटामें तिहि दीजै॥
टका टका भरि ताहि खवावै।रोग जाय सब बल उपजावै

अथ द्वितीय मसाला बत्तीसा।

चौ०-भँगरैला औ भाँग भरंगी। सोंठि सोहागा सोवा संगी॥
कुटकी कूटि कैफरा कचरी।मेथी धनिया लहसुन पिपरी॥
दोनों मिर्चं मैनफल राई। त्रिफला डारु फिटकरी भाई॥
अजवाइनि असगंध अजमोदा।वच बडारू पीत बहु हरदा
अजवाइनि लीजै खुरसानी। सातौ खार मिलावौ आनी॥
काराजीरी हींग मँगावै। अदरख अरु मुरी लै आवै॥
सम करि भाग कूटि बहु पीसा।चूरण कहिये यह बत्तीसा
टका टका भरि प्रात खवावै। अश्वाके कोड रोग न आवै॥

अथ तृतीय मसाला बत्तीसा।

चौ०-हरदी अजवायनि अरु राई। हालिम मँगरैलाको लाई॥
धनियाँ काराजीरी सोवा। सौफ हर्र वैशाखी मोवा॥
हर्रै अगी गूगुर मांई। काकजघ मेथी मँगवाई॥
पिपरी सोंठि पीपरामूरी। सनबीजा बंडार सुनौरी॥

अन्य ।

चौ०—बड़ी हरंकी बकली लावै। कटुक चिरैता पीसि मिलावै ॥
रसके शिरकामें सनवाई। तीनों तीनि छटांक कराई ॥
पिंड बनाइ अश्वमुख नावै। शूल कुरकुरी नाश करावै ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत मसालावर्णन नामक
त्रयोविंश अध्याय ॥ २३ ॥

समाप्तमिदं चिकित्सा काण्डम् ।



ग्रीषम ऋतुहि बचायकै, जो घोड़ेको देय ।
होय वलिष्ठ शरीर तिहि, क्षुधा अधिक सो होय ॥ २ ॥

अन्य मसाला क्षुधाकरण ।

चौ०–सज्जी अजवाइनि औ राई । साभरि बायविडंग कटाई ॥
सोंचर सैंधव सम करि लीजै।वजन बराबरि ये सब कीजै
कारा जीरी औ चौराई । लहसुन पिपरामूर मँगाई ॥
दोहा–कूटि छानिकै दीजिये, मोठ महेला माहि ।
टका टका भरि वजन नित, यहि सम औषध नाहि ॥

अन्य ।

चौ०–नीबि बकैना और कसौंजी ।कंज सहित पौधी चारौंजी॥
ता पाछे विपखपरा लीजै । सेर सेर ये सब करि दीजै॥
अदरख पान मिर्चको लेहू । करि गुटका घोड़ेको देहू ॥
चालिस दिन अश्वा जो पावै।क्षुधा अधिक बहु अंग बढ़ावै
सोरठा–भूँजे आटा माहि, प्रातसमय नित दीजिये ।
बल दिन दिन सरसाय, चेतनचंद प्रमाण यह ॥

अथ मसाला तैयारीका ।

चौ०–सेर एक महुआ मँगवावै। अरसी सहित भार भुँजवावै॥
अजवाइनि मेथी औ भाँगा। टका टका भरि खील सुहागा
सकल पीसि मैदा करवाई । सेर दोय गुड़ देइ मिलाई ॥
एक दिनाकी है मौताजा।दिन यकइस याही विधि साजा॥
दोहा–जाय बंद नहि दीजिये, देखत मोटा होय ।
शालहोत्र इमि उच्चरै, बढ़ै पराक्रम सोय ॥

अन्य ।

चौ०–हरदी सेर आठ लै आवै,।सुरभी क्षीरमध्य भिजवावै ॥
दिना सात लौ भीजा करै । छाँह सुखाय पीसिकै धरै ॥

[illegible]

सेर एक सोंठीको लावै। दुइ सेर गोघृत आनि मिलावै॥
पाँच सेर गोहूकी मैदा। सकल मिलाइ धरो कह चंदा॥
पावसेर तिहि नित्य निकारै।दूध खाँड सँग हलुआ करै॥
दोहा-या विधि औषध कीजिये, एक मास नित प्रात।
चेतन चन्द प्रमाण यह, मोटा ह्वै है गात॥

अथ तुच्छाहारी मसाला।

दोहा-तुच्छ करै आहार जो, दुर्बल रहै शरीर।
तुच्छ अहारी नाम तिहि, रोग सुनौ मतिधीर॥ १॥
अजवाइनि अजमोद ले, हरैं दूनौ आनि।
साँभरि संग खवाइये, भूँख ताहि अधिकानि॥ २॥

अथ बलगम व तैयारीका मसाला।

चौ०-कुटकी कूट रु कारजीरी। कालेश्वर हरदी बहु पीरी॥
वायबिडंग सोहागा लीजै। भूँजि फिटकरी तामें दीजै॥
मिर्च कंज औ पिपरामूरी। पीपरि सोंठि समेत कचूरी॥
त्रिफला आँवलतासुको लीजै।असगँध नागोरी तिहि दीजै
अजवाइनि मेथी औ राई। लेउ पुरानो गुरहि मिलाई॥
सब एकत्र करि सम पिसवावै।औषधते गुड़ दून मिलावै॥
आध सेरका पिंड बनाई। घोड़ेको दे प्रात खवाई॥
बलगम जहरवातको नाशै। नीक होय औ रूप प्रकाशै॥

अन्य।

दोहा-लौंग मिर्च औ पान ले, अदरख पिपरामूरि।
नित नेवाला दीजिये, रोग रहै तिहि दूरि॥

अथ ताजा होनेका मसाला ।

चौ०–राई मेथी हालिम हरदी । पीसि छानि कीजै सब गरदी ॥
दोहा–डेढ़पाव तिहि लीजिये, गोहूँ दरि यक सेर ।
तीनि सेर गोदूधमें, साँझ भिजै दे भोर ॥ १ ॥
घोड़ा दुर्बल देखिकै, चालिसदिन नित देय ।
रोग हरे बहु बल करै, हृष्ट पुष्ट तनु होय ॥ २ ॥
चौ०–सोवा अजवाइनि दुइ सेरै । राई लहसुन उतनै गेरै ॥
लेइ पिआज सेर दुइ छीली।आध सेर साँभरि तिहि मेली
छंद–सब कूटि दही दश सेर राषि।धरु सात रोज घामें सो भाषि
ले पाउ किआटा आध सेर । कै बूट माथ हय वदन गेर॥

अन्य क्षुधाकरण मसाला ।

दोहा–गुड़ तीनि सेर गोमूत्र सँग, दीजै ताहि पकाय ।
भूँख बढै बहु बल करै, सुंदर वदन दिखाय ॥

अन्य ।

चौ०–मिर्च लेउ कंकोल मँगाई । मिर्चा अरुण बराबरि लाई ॥
केवडाकी जर खाँड़ मँगाई । जेठी मधु सज्जी मिलवाई॥
सातौ दवा बराबरि लीजै । एकै टंक मात्र नित दीजै ॥
दोहा–गुड़ दुइ स्यर घृतमें मिलै, पिंड करौ नितएक ॥
सात रोज लग दीजिये, हृष्ट पुष्ट तनु झेक ॥

अथ निर्बल घोडेको मसाला ।

चौ०–मेथी सोरह टंक पिसावै । ईंगुर औ कंकोल मँगावै ॥
गंधपसार श्याम जो लीजै।और बिजौरा सम सब कीजै॥

विज्ञापन

नाम.	की. रु. आ.
चरकसंहिता-भाषाटीकासहित ।	१६-
चिकित्सासमूह अर्थात घरू और सफरी वैद्य	१-४
चिकित्साक्रमकल्पवल्ली मूल	३-८
चिकित्साचक्रवर्ती (मुजर्बात अकबरीका हिन्दी अनुवाद)	१-०
चिकित्साञ्जन-भाषाटीकासहित ।	०-१।
चिकित्साधातुसार	०-६
जर्राहीप्रकाश	१-८
ज्वरतिमिरनाशक-भाषाटीकासहित ।	१-०
डाक्टरीचिकित्सासार	०-१।
डाक्टरीचिकित्सार्णव-बड़ा	२-०
तिब्बइहसानी	१-०
तिब्बअकबर-हिन्दीमें अनुवादित	७-०
त्रिशती-संस्कृत टीका तथा भाषाटीकासहित ।	१-८
द्रव्यगुणशतक-भाषाटीकासहित ।	०-६
द्रव्यगुण-भाषाटीकासहित ।	१-०
धन्वन्तरिवैद्यक-भाषाटीकासहित ।	८-०
नपुंसकामृतार्णव-भाषाटीकासहित ।	१-४
नपुंसकचिकित्सा-भाषाटीकासहित ।	०-६
नाडीदर्पण-भाषाटीकासहित ।	०-७
नाडीपरीक्षा-भाषाटीकासहित ।	०-१॥
नाडीविज्ञान-भाषाटीकासहित ।	०-२
नाडीज्ञानतरङ्गिणी-भाषाटीकासहित ।	१-४

सोरठा—अबल सबल है जाय, जो हयको कीजै जतन।
दवा किये रुज जाय, शालहोत्र इमि उच्चरै॥

अथ वृद्ध घोडेको मसाला।

दोहा—अमिष चुरै मधु दधि मिलै, दीजै वृद्ध तुरग।
चौदह दिन नित दीजिये, होय युवा सम अंग॥

अथ घोडेकी तैयारीका मसाला।

चौ०—पिपरी पिपरामूल भरंगी। तोला दुइ दुइ करु यक सगी॥
अदरख पाव एक मँगवावै। मिरचै आध पाव मिलवावै॥
गनिकै लौंग एकइस लीजै। बँगलापान एक शत कीजै॥
कूटि छानि मैदा करवावै। तोला भरि सो नित्त खवावै॥
जौके आटा सानिक दीजै। तुरंग तयार बहुत सुख लीजै॥

अथ पाचकका मसाला।

दोहा—मिर्च जवाइनि मैनफल, पिपरी बचहि मिलाय।
सज्जी सैंधव बौरिया, सम करि सकल पिसाय॥ १॥
बड़े अश्वको दीजिये, दुइ पैसा भरि रोज।
लघुको पैसा एकभरि, दे छिरका सँग मौज॥ २॥

अन्य।

चौ०—हर्रा हर्रे जवाइनि लोनू। पीसि छानि बरतन धरु तौनू॥
एक छटाँक साँझ भिजवावै। प्रात निहारी साथ खवावै॥

अथ खुराक बढनेका मसाला।

दोहा—नमक भाँग अरु काचरी, राई सब सम आनि।
कूटि सबै आटा मिलै, अशन बाद दे जा[illegible]

नाम	की रु आ
नारीदेहतत्त्व	०–१०
पशुचिकित्सा (वृषकल्प द्रुम) छंदोबद्ध भाषा	१–८
पथ्यापथ्य–भाषाटीकासहित।	०–१४
पाकप्रदीप–भाषाटीकासहित।	०–१०
पाकरत्नाकर	०–६
पाकविलास	०–८
पारदसंहिता–भाषाटीकासहित।	१२–०
फिरङ्गादर्श	०–८
बालबोधोदय और पाकमाला	०–२
बालबोधोदय और पाकमाला–भाषाटीकासहित।	०–३
बालसंजीवन	०–८
बालतन्त्र–भाषाटीकासहित।	२–४
बूटीप्रचारवैद्यक	१–०
बृहन्निघण्टुरत्नाकर प्रथम भाग भाषाटीकासहित	४–०
बृहन्निघण्टुरत्नाकर द्वितीय भाग भाषाटीकासहित।	४–८
बृहन्निघण्टुरत्नाकर–तृतीय भाग	५–८
बृहन्निघण्टुरत्नाकर–चतुर्थ भाग। (चिकित्साखण्ड)	३–८
बृहन्निघण्टुरत्नाकर-पञ्चम भाग। (रोगोंका कर्मविपाक)	८–०
बृहन्निघण्टुरत्नाकर-षष्ठ भाग। (रोगोंका चिकित्साभाग)	५–८
बृहन्निघण्टुरत्नाकर–सप्तम अष्टम भाग। अर्थात् "शालग्रामनिघण्टुभूषण" अनेक भाषाओंमें सर्व औषधोंके नाम और गुणोंका वर्णन औषधियोंके चित्रोंसहित।	१०–०

अथ कम पानी पीनेका मसाला ।

दोहा-तोला चारि जवायनी, दाना बाद खवाय ।
पीवै पानी बहुत सो, अति ही सुख दरशाय ॥

अथ अठरोजा मसाला ।

दोहा-कहौ मसाला अठरोजा, अठयें दिन जो देइ ।
भूँख बढ़ै बहु अश्वकी, कोइ रोग न होइ ॥
चौ०-सोंचर नमक भेलावा लीजै । आध आध सेरै दोउ कीजै॥
आधसेर अजमोद मिलावै॥तिहि पाछे विधि और बतावै॥
वायविडंग कूट अरु बचुकी।सोंठि और भीरोरफलनकी॥
सोवा बीज बनरसी राई । घुड़बच लोटा सज्जी लाई ॥
नरकचूर अरु काराजीरी।बीज पलाश ताहिमें डारी ॥
यहि बरहौ औषध तौलावै।पाव पाव सम वजन करावै॥
पीसि कूटि सब छानि धरीजै।दुइ तोला अठयें दिन दाज

अथ मसाला भस्मावती चूर्ण ।

दोहा-भूँख बढ़ै वादी हरै, चारा हजम कराइ ।
भस्मावंती नाम यहि, कहो मसाला आइ ॥ १ ॥
अजवाइनि अजमोदको, लोटा सज्जी लेउ ।
घुड़बच सोंठी बतरा, मिलै ताहिमें देउ ॥ २ ॥
सोवा बीज समीत है, ये पट ओषध जानु ।
आध आध सेरै कही, यह परमान बखानु ॥ ३ ॥